अनुक्रमणिका

महाराजा राजसिंह अव्वल,

अष्टम प्रकरण - ४०१ - ६५४

आठवां प्रकरण.

महाराणा राजसिंह–अव्वल.

इन महाराणाका राज्याभिषेक विक्रमी १७०९ कार्तिक कृष्ण ४ [हिज्री १०६२ ता० १८ ज़िल्क़ाद = ई० १६५२ ता० २२ ऑक्टोबर] को, और राज्याभिषेकोत्सव फाल्गुण कृष्ण २ [हिज्री १०६३ ता० १६ रबीउल् अव्वल = ई० १६५३ ता० १४ फ़ेब्रुअरी] को हुआ था. इनके वास्ते बादशाह शाहजहांने भी टीकेका दस्तूर शाही मन्सबदार गौड़ (नरदमन), और कल्याण झाला (जो महाराणाकी तरफ़से बादशाहके पास गया था) के हाथ भेजदिया.

इन्होंने गादी बैठते ही चित्तौड़के क़िलेकी मरम्मत बड़ी तेज़ीके साथ करवानी शुरू की; इन्हीं दिनोंमें बादशाही मुलाज़िमोंने सूबे मालवा व अजमेरके मन्दिरोंकी ख़राबी करके गोवध आदि करना शुरू किया, तब महाराणा के मुलाज़िम भी क़ाबू पाकर छेड़ छाड़ करनेलगे.

इसी वर्षमें बीकानेर के राजा कर्णसिंहके कुंवर अनोपसिंह के साथ, महाराणाने अपनी बहिनका विवाह किया, और ७१ लड़कियें अपने भाई बेटे राजपूतों की उनके साथवाले दूसरे राजपूतोंको व्याह दीं.

फिर टीका दौड़ (१) करनेका विचार बादशाही मुल्क पर किया, परन्तु कुछ

(१) टीका दौड़ से यह मत्लब है, कि रईस गादी नशीन होकर किसी दुश्मन के शहर या इलाके को लूटे, अगर कोई बड़ा दुश्मन उस वक्त न हो, तो मेवाड़ के महाराणा अपने ही देश के भील, मेर वगैरह के ग्रामों पर उस रीति को पूरा करते थे.

दिलमें ख़ौफ़ था, इस लिये मौक़ा देखते रहे. इनकी यह धूमधाम बादशाह शाहजहांके कान तक पहिले ही पहुंच चुकी थी, और वह वैकुण्ठ वासी महाराणा जगत्सिंहकी बाज़ी बातोंसे भी नाराज़ था; इसके सिवाय महाबतखां देवलियाके रावत हरिसिंहका तरफ़-दार होकर बादशाहको भड़कानेलगा, तोभी शाहजहांने शाहज़ादगीमें उदयपुर रहनेके लिहाज़से यह सब कुछ सहा, और कभी कभी जगत्सिंह भी दबकर तुहफ़ोंके साथ जमइयत नौकरीमें भेजदेते थे. कभी ज़ियादा ज़ोर शोर देखा तो कुंवरको भेजकर नारा-ज़गी दूर करदी, लेकिन् महाराणा राजसिंहने गादी नशीन होते ही बड़ी सख़्त कार्र-वाइयां कीं. मालूम होता है, कि शाहजहां ज़ियादा भड़का होगा, परन्तु दाराशिकोह मेवाड़का मददगार था, इससे वह टालता रहा. आख़िर कार ग़रीबदास जो महाराणा कर्णसिंहके छोटे बेटे, जगत्सिंहके भाई और महाराणा राजसिंहके चचा थे, दिल्ली गये; तब विक्रमी १७१० वैशाख शुक्ल ३ [हिज्री १०६३ ता० १ जमादि-युस्सानी = ई० १६५३ ता० ३० एप्रिल] को शाहजहांने उन्हें डेढ़ हज़ारी ज़ात व सात सौ सवार का मन्सब और जागीर दी. फिर जब बादशाहने उदयपुरकी तरफ़ फ़ौज भेजनेका इरादा किया, तब ग़रीबदास बे रुख़्सत उदयपुर चला आया. बादशाहने नाराज़ होकर जागीर और मन्सब ज़ब्त किया, और महाराणा से बहुत नाराज़ हुआ, क्योंकि इन्होंने ग़रीबदासको यहां आते ही रियासती कारो-बारमें मुसाहिब बना दिया.

मेवाड़पर ज़ोर डालने व बखेड़ा बढ़जानेपर फ़ौजी ताक़त बढ़ानेके लिये आप शाहजहां विक्रमी १७११ आश्विन शुक्ल ४ [हिज्री १०६४ ता० २ ज़िल्हिज = ई० १६५४ ता० १६ ऑक्टोबर] को आगरेसे ख़्वाजह मुईनुद्दीन चिश्तीकी ज़ियारतके बहानेसे अजमेरकी तरफ़ रवाना हुआ, और मौलवी सादुल्लाखां वज़ीरको तीस हज़ार सवार देकर क़िले चित्तौड़की तरफ़ भेजा. कार्तिक कृष्ण १२ [हिज्री ता० २५ ज़िल्हिज = ई० ता० ८ नोवेम्बर] को अजमेर पहुंचकर आनासागर पर बादशाहका क़ियाम हुआ. इस मौक़ेपर महाराणा राजसिंहके मोतमद भी शाह-ज़ादे दाराशिकोहकी मारिफ़त आगरेके पास बादशाहकी ख़िद्मतमें हाज़िर होगये थे; बादशाहने मुन्शी चन्द्रभान ब्राह्मणको महाराणा राजसिंह के समझानेके लिये उदयपुरकी तरफ़ रास्ते ही में से रवाना किया, कि जिससे महाराणा ज़ियादा फ़साद न बढ़ावें; सादुल्लाखां भी विक्रमी कार्तिक कृष्ण १२ [हिज्री ता० २५ ज़िल्हिज = ई० ता० ८ नोवेम्बर] को फ़ौज समेत चित्तौड़ पहुंचा, और क़िला ख़ाली पाया.

महाराणा राजसिंहने चित्तौड़ पर लड़ाई करना ठीक न जानकर अपने आद-

मियोंको बुला लिया था, और सारी मेवाड़ की प्रजाको माल, अस्बाब, मवेशी, औरत व बच्चे लेकर पहाड़ोंमें चले जानेका हुक्म देदिया. विक्रमी १७११ कार्तिक कृष्ण ८ [हिज्री १०६४ ता० २१ ज़िल्हिज = ई० १६५४ ता० ४ नोवेम्बर] को मुन्शी चन्द्रभान भी उदयपुर पहुंचा. महाराणाने क़ाइदेके साथ ख़ातिर की, लेकिन् सादुल्लाख़ांने क़िले चित्तौड़को गिराना और बर्बाद करना शुरू कर दिया.

उदयपुर में मुन्शी चन्द्रभान से रद बदल होने बाद चन्द्रभानकी अर्ज़ी और महाराणाके मोतमद लोग शाहज़ादे दाराशिकोहकी मारिफ़त बादशाही ख़िद्मतमें पहुंचे.

उन अर्ज़ियोंका तर्जुमा किताब 'इन्शाय ब्राह्मण' से यहां लिखाजाता है, जो कि मुन्शी चन्द्रभानने इस मुआमलेकी बाबत बादशाहकी ख़िद्मतमें रवाना की थीं. (अस्ल अर्ज़ियोंको नोटमें देखो (१)-)

मुन्शी चन्द्रभान ब्राह्मणकी पहिली अर्ज़ीका तर्जुमा.

तावेदार दशहरेके दिन हुज़ूरसे रुख़्सत होकर चाहता था, कि एक हफ़्तेके अन्दर मक्सदके मक़ामपर पहुंचे, लेकिन् राजाके आदमियोंकी हमराहीमें तईनाती हुई थी. सफ़र तै करके सोमवारके दिन इक्कीस ज़िल्हिज सन् २८ जुलूसको उदयपुर पहुंचा. पिछले दिनको राना पेशवाईकी मामूली जगहपर आया, और बुज़ुर्ग फ़र्मान् और जड़ाऊ सरपेचसे सरबलन्द हुआ. मामूली अदबकी रस्मोंके बाद हुज़ूरके इस अदना तावेदारको मोतबर जानकर दूसरे क़ासिदोंके बर्ख़िलाफ़ बग़लगीरीके साथ मुलाक़ात की, और बहुत ताज़ीमसे पेश आया. सवारीमें बातें करता हुआ अपने घर तक साथ लेगया, और वहांसे रुख़्सत किया.

---

(۱) عرضداشتے که منشی چندربهان بنام شاهجهان بادشاه نگاشته *

——***——

عرضداشت (۱) * کمترین بندگان عقیدت نشان چندربهان بعد از اداے لوازم بندگی و عبودیت و تقدیم مراسم اخلاص و عقیدت درگاه والا موقف عرض باریافتگان محفل جاه و جلال و ایستادهاے بزم دولت و اقبال میرساند - که روز دسهره از خدمت سراسر سعادت مرخص گشته میخواست که در عرض یکهفته بمطلب رسد - چون برفاقت کسان زبدهٔ راجهاے والاتبار مامور بود همپاے آنها طی مسافت نموده روز مبارک دوشنبه بیست و یکم شهر ذی حجه سنه ۲۸ به اودیپور رسید *

آخر روز رانا در جاے که بجهت استقبال مقرر است آمده بوصول منشور لامع النور و عنایت سرپیچ مرصع سرفراز و ممتاز گردید * بعد از اداے مراسم آداب کمترین بندگان را بندهٔ درست اعتقاد صافی نهاد جناب عالمیان مآب دانسته برخلاف دیگر فرستادها در کنار گرفت - و به تواضعے که درخور فرستادهاے آستان دولت نشان باشد - در سر سواری حرف زنان تا خانه همراه خود برده از آنجا رخصت کرده *

दूसरे दिन एकान्त में बुलाकर अपने ख़ास लोगों के साम्हने हुज़ूरी हुक्मों का मज़्मून पूछा, और अपने कुसूरोंसे ख़बरदार होना चहा. तावेदारने वे हुक्म, जो हुज़ूरकी पाक ज़बानसे सुने थे, बहुत साफ़ और नर्म लफ़्ज़ोंमें उसके समझानेको बयान किये. रानासे कहा, कि अब होश्यारीके साथ बातें सुननेका वक़ हे ज़रा ज़ाहिरी बातिनी हवास दुरुस्त करके सुनना ज़ुरूर है; अपनी और अपने बापकी ख़ताओं पर इत्तिला हासिल करनी चाहिये.

अव्वल, जो कुसूर तुम्हारी और तुम्हारे बापकी तरफ़से ज़ाहिर हुआ, वह क़िले चित्तौड़का बनाना है, और हक़ीक़त में जब कि बादशाही फ़ौजने क़िला फ़त्ह करके बिल्कुल बर्बाद कर दिया, और अव्वल रोज़ यह शर्त होगई-कि क़िला किसी तरह दुरुस्त न किया जावे. इस हुक्म पर कुछ लिहाज़ न रक्खा; इस बातकी ख़राबीसे जो आंख ढक कर क़िलेकी दुरुस्ती शुरू कर दी, वह अक़्लके बिल्कुल ख़िलाफ़ है, तुमसे और तुम्हारे बापसे बड़ा कुसूर हुआ, बादशाही दर्गाहमें इक़ार के ख़िलाफ़ कार्रवाई करना बड़ा गुनाह है. जिस वक़ में कि बादशाही लश्कर आगरेसे दूर गया हुआ था, बहुतसे सवार, पैदल, साथ लेकर बादशाही सरहद पर आना और उसका दर्शन स्नान नाम रखना, क्या समझा जावे; बुज़ुर्ग बादशाहोंके आगे मुल्की ख़िद्मतोंमें कमी करनेसे यह कुसूर ज़ियादह है.

روز دیگر در خلوت طلبیده در حضور معتمدان مدار علیه خود استفسار مضمون احکام لازم الانجام
نمود و خواست که بر جرایم و تقصیرات خود مطلع گردد * بنده با مزید احتیاط آنچه از زبان معجز
بیان اشرف اقدس ارفع اعلی ارشاد یافته بقید قلم در آورده بود آنرا در ظرف اشتهار ربان قریب الفهم
عام فریب خاص پسند شروع در گذارش مقدمات احکام لازم الاعلام نمود — و به رانا گفت که الحال
وقت شنیدن کلمات هوش افزاست لختی حواس ظاهر و باطن خود را فراهم آورده احکام مطاعه را بگوش
هوش بشنوید و بر تقصیرات خود و پدر خود مطلع شوید *

اوّل تقصیری که از پدر شما و شما بوقوع آمده ساختن قلعه چتور است — در واقع قلعه را که پادشاه
آفاق ستان بضرب شمشیر عالمگیر مفتوح ساخته خراب مطلق گردانیده بخاک برابر ساخته باشند
و روز اوّل این شرط میان آمده باشد — که اصلاح های در آن قلعه نسازند و تعمیر نکنند و مرمت نکنند —
پاس این حکم نداشته این عهد موکد را فراموش گردانیده چشم بصیرت پوشیده و از قبح این افعال
نه اندیشیده شروع در ساختن جا ها نموده بمرور ایام کار تا باینجا رسانیده باشند — در اصل چه حساب
و شایسته کدام عقل دوربین است — و این تقصیر عظیم است که از پدر شما و شما که ممد زندگی پدر
شریک این مصلحت بوده اید و هم خود پدر دست درین کار داشته اید ظهور آمده — و در دربار
سلاطین پناه هیچ تقصیر عظیم تر ازین نیست که اندیشهٔ خلاف عهد بخاطر کسی نگذرد — در حینی که
رایات جاه و جلال از مستقر الخلافت اکبرآباد بعزم مهمی بسرحد دور دست تشریف برده باشند —

दूसरे, दुन्याके सब लोगोंपर ज़ाहिर है, कि यह सल्तनत सारी दुन्याके बादशाहोंकी जाय पनाह है. इराक़, खुरासान, मावराउन्नहर, बल्ख़, बदख़्शां, काशग़र वग़ैरह के अमीर, सर्दार, बादशाही ख़िद्मतमें हाज़िर रहते हैं, और मन्सब व दरजे पाते हैं; दक्षिण वालोंकी क्या हक़ीक़त है, जो इस बादशाहतके हरतरह ताबेदार हैं. हर महीने हर वर्ष हर जगहके आदमी यहां इज़्ज़त पाते हैं. दूसरा ज़ाबिता यहांका यह है, कि जिसको कहीं पनाह न मिले, उसका ठिकाना यहां है; जो यहां आया, वह कहीं नहीं जाता; और बग़ैर रुख़्सत कोई नौकर दूसरी जगह नहीं जासक्ता; यह बड़े बादशाहों का दस्तूर है, उनके भागेहुए नालायक़ नौकरको दूसरा अपने पास नहीं रखसक्ता. बड़ी आर्ज़ूके साथ बाज़े लोगोंको मन्सब इनायत किये गये, और बावजूद सर्कारी बाक़ियातके वह जिहालतसे तुम्हारे यहां आकर बैठरहे; तुमने और तुम्हारे बापने उनको अपना मोतबर बनालिया, और कुछ पर्वाह न की; यह कौनसी अक़्लमन्दी की बात है. जिस वक़्त कि क़न्धारकी मुहिम् पेश आई, और ताबेदारोंके इम्तिहानका वक़्त था, इतनी थोड़ी जमइयत भेजी, कि जो किसी गिन्तीके लायक़ न थी. दक्षिणमें जो एक हज़ार सवार रखनेका इक़ार था, उसमें भी कमी रही; इन बातोंसे ख़ैरख़्वाहीका दावा बिल्कुल बेजा है, ज़बर्दस्त बादशाहोंके रूबरू ज़रूरतके वक़्त नौकरीसे बचना, बड़ा क़ुसूर है.

از اودے پور با جمعیت بسیار سوار و پیاده بر آمدن - و در آمدن به ملک بادشاهی از زیارت وصال ناامید شدن - حمل بر چه توان نمود * پیش بادشاهان عظیم الشان به سستی کوتاهی خدمت در معاملات ملکی این تقصیر کلان است *

دیگر آنکه بر عالم و عالمیان ظاهر است که این دولت خداداد مرجع و ملجأ بادشاهان هفت اقلیم است - و امرا و خانان و سرداران عراق و خراسان و ماوراءالنهر و بلخ و بدخشان و کاشغر وغیره آن در رکاب ظفر انتساب کمر خدمت بسته حاضراند - بادنیاداران دکهن که حلقهٔ بندگی در گوش و غاشیهٔ عبودیت بر دوش این درگاه سلاطین پناه اند چه رسد - و در هر ماه و هر سال طبقه طبقه از هر قسم و هر قوم از اطراف و جوانب در درگاه معلی آمده بمناصب و مراتب سرفرازی مییابند - و یکے از لوازم این دولت ابد پیوند آنکه هر کرا در جاے دیگر جاے نباشد جاے او اینجا است - هر که اینجا آمد بجاے دیگر نمیرود * اگر کسے را ضرورتے روی دهد تا از حضرت خلافت رخصت حاصل نه نماید بجاے دیگر نمیتواند رفت - و این ضابطه مخصوص بادشاهان عظیم الشان است - دیگرے نمیرسد که گریختهٔ این درگاه آسمان جاه را بی سعادتی برسد - در پیش خود نگاه دارد * هرگاه قاعده چنین باشد - جمعی که به آرزوی تمام بندگی این درگاه والا اختیار نموده بمنصب و جاگیر یافته در سلک بندها منتظم گشته باشند - و بر ذمهٔ بعضی از آن طلب مطالبهٔ سرکار اعلی بوده باشد - محض از روی جهالت بی اجازت حضور راه پیش گیرند - پدر شما و شما آنها را پیش خود جای داده مدار علیه خود سازند - و از بازپرس اینمعنی حذر نکنند - داخل کدام عقل صواب اندیش است *

जव यह बातें तुमसे ज़ाहिर हुईं, तो इस लिये हज़्रत शहन्शाह अजमेर तशरीफ़ लाये, और ज़बर्दस्त फ़ौजें चित्तौड़की तरफ़ रवानह कीं; जिससे यह मत्लब था, कि राना ख़िद्मतमें हाज़िर हो, या अपने कियेका एवज़ पावे. इस अर्सेमें तुम्हारे वकीलोंने हाज़िर होकर कुसूरोंकी मुआफ़ी चाही, हज़्रतने ज़ाती रहमदिलीसे तुम्हारे पुराने ख़ान्दान को, जो विगड़ता जाता है, तरस खाकर क़ायम रक्खा. और यही वात काफ़ी समझी, कि फ़ौज भेजकर क़िलेकी मरम्मत विगाड़ दी जावे, और तुम्हारा वलीअह्द बेटा अजमेरमें हाज़िर होकर रुख़्सत पावे, और हमेशा मामूली जमइत पूरी तादादमें किसी भाई बन्धुके साथ दक्षिणमें मौजूद रहे, और आगेको कोई वात हुक्मके ख़िलाफ़ ज़ाहिर न हो. अजमेरके पास वाले परगनोंकी वावत हुज़ूरकी मर्ज़ी के मुवाफ़िक़ कार्रवाई होगी; तुम्हें इन मिह्रवानियों की क़द्र अच्छी तरह जाननी चाहिये, और इसका शुक्र अदा करना मुनासिब है. अपने वलीअह्द वेटेको वहुत जल्द भेजना लाज़िम है, इसमें देर लगाना ठीक नहीं है.

जब तावेदारने यह सच्ची, तेज़ और नर्म वातें वादशाही वकीलोंके दरजेकी मुवाफ़िक़ साफ़ साफ़ बयान करदीं, राणा जिसके कानों तक ऐसा हाल कभी न पहुंचा था, इनके

دیگر آنکه در وقتی که مهم قندهار درمیان آمده هنگام امتحان عیار جوهر اخلاص بندهای عقیدت کیش بود - جمعی را که عدم وجود آنها مساوی داشته فرستادند - و در دکهن که قرارداد هزار سوار بود قلیلی نگاهداشتند — این چه دعوی اخلاص است * پیش پادشاهان ممالک ستان کوتاهی در خدمت خصوص در هنگام ضرورت تقصیر کلان است *

چون این قسم تقصیرات از جانب شما ظهور پیوسته در این وقت که خاطر ملکوت ناظر اشرف اقدس اعلی از هیچ طرف نگرانی نداشت و بجهت پاداش این جرایم عساکر ظفر طراز را از اندازهٔ حساب افزون و بیرون طلبداشته متوجه اجمیر گردیدند — و افواج قاهره منصوره بر چتور تعین فرمودند — و خاصه غرض مقدس آنکه یا رانا بملازمت سراسر سعادت اشرف اقدس اعلی مستسعد گردد - یا هرچه بیند از خود بیند * درین اثنا فرستاده های شما رسیدند - و بوسیلهٔ باریافتگان محفل بهشت آئین استعفای تقصیرات شما نمودند - و بندگان اشرف اقدس اعلی بمقتضای فتوت ذاتی و مروت جبلی خانمان آبا و اجداد چندین سالهٔ شما را که نزدیک بزوال و اختلال رسیده بود بحال داشتند — و اکتفا بهمین فرمودند که افواج قاهرهٔ منصوره بر قلعهٔ چتور رفته جاها را که ساخته و مرمت کرده باشند مسمار نموده برگردد - و پسر تیکه در اجمیر بملازمت اشرف اقدس رسیده سعادت ابدی حاصل نماید و رخصت شود - و جمعیت مقرری تماموجودی بقاعدهٔ همیشه با برادر شما تعینات دکهن باشد — و در آینده امری خلاف حکم مقدس از شما سر نزند — در باب عنایت پرگنات نواحی اجمیر در آنچه رضای مقدس باشد بعمل خواهد آمد * قدر این عنایت را بواقع باید دانست و شکر این نعمت را بجا باید آورد و پسر تیکهٔ خود را زود روانه باید نمود — تاخیر درین کار جایز نباید داشت *

چون فقیر این مقدمات درست و راست و تلخ و شیرین را بشرح و بسط برای آئینی که در خور

सुन्नेसे बहुत हैरान और पशेमान हुआ. सिवाय मुआफ़ीके कोई इलाज नज़र नहीं आया; इतना कहा, कि अक्सर बातें मेरे बापके वक्तमें हुईं, लेकिन् मैं सबको अपने ऊपर लेताहूं, और इनकी मुआफ़ी चाहता हूं; आगेको बादशाही मर्ज़ीके ख़िलाफ़ कोई काम न होगा, और अपने बड़ोंसे ज़ियादह मैं ख़ैरख़्वाही करूंगा. राणाके मुसाहिब, जो सलाहमें शरीक थे, उनमें से किसीने कुछ जवाब नहीं दिया, सब चुप रहे; यह तावेदार सर्कारी नौकर बेग़रज़ सच कहने वाला है, और ये लोग भी शुरूसे एतिबार करते हैं, इस लिये वे ख़ौफ़ सब बातें उम्दह तौरपर कहडालीं.

दूसरे दिन राणाने अपने घर मश्वरा करके अपने फ़ायदेके वास्ते यह बात ठहराई. कि अपने वलीअह्द बेटेको तावेदारके साथ हुज़ूर में भेजदे. दूसरी बात बहुत सलाहके बाद यह बयान की, कि सब शह्र और गांवके आदमी फ़ौज के आनेसे घबरा गये हैं, जब लश्कर क़िले चित्तौड़को ख़राब करके लौटेगा. उसी रोज़ लड़केको तुम्हारे साथ अजमेर भेजूंगा. तावेदारने कहा- यह वहम बेफ़ायदह है. उसने जवाब दिया, कि- मैं बेफ़िक्रीसे बेटेका भेजना अपनी इज़्ज़त समझता हूं, लेकिन् इस इलाक़ेके लोग जंगली हैं; बड़ा वहम करते हैं, लश्करके चित्तौड़से लौटते ही तामील होगी. बहुत फ़िक्र और मुश्किलके बाद इस मुआमलेकी अर्ज़ी लिखकर बल्लूके हाथ, जो

فرستادهاے این دولت پایدار باشد - ادا نمود * و رانا که هرگز گوش او آشناے این کلمات نشده بود پی باین تقصیرات برده بمجرّد استماع این سخنان بهوش آمد — آثار حیرت وندامت از ناصیهٔ او مشاهده افتاد - ودانست که در درگاه والا این تقصیرات عظیم بوده است * بعد ازان که یقین او شد که جوابے غیر از ندامت وعذرخواهی ندارد عذر این تقصیرات خواست - وهمین قدر گفت که این جرایم اکثر نسبت به پدر من دارد وکمتر به من - امّا من همه را برخود گرفته قبول دارم عذر میخواهم وامید عفو دارم و بعد ازین اصلا امرے که خلاف مرضیِ طبعِ مقدّس باشد از من بظهور نخواهد آمد — وبرجادهٔ بندگی زیاده از اسلافِ خود ثابت قدم خواهم بود * ومعتمدانِ مدارعلیه رانا که درین خلوت بودند هیچکس را جواب نیامد — پیش سخنانِ معقول ساکت ماندند * وفقیر چون بندهٔ راست ودرست اعتقاد سرکار فیض آثار است — واصلا اغراض نفسانی مطمح نظر ندارد پیش این قوم از آغاز آفرینش یک گونه اعتبارے دارد - مطالب را بے تحاشا و بے باکانه از روے معقولیت ادا نمود *

روز دیگر رانا در خانه مشورت نموده راه بهبود خود برده قرار داد - که پسر تیکهٔ خود را همراه فقیر روانهٔ درگاه والا نماید * سخنے که بعد از کنکایش بسیار بر زبان آورده اینست که چون مردم درون وبیرون از رسیدن افواجِ قاهرهٔ منصوره متوهّم و مضطرب شده اند - همین که لشکر نصرت اثر قلعه چتور را خراب ساخته برگردد پسر را همان روز برفاقت کمترین بندگان روانهٔ اجمیر سازد * فقیر باو گفت که در فرستادنِ پسر واهمه بیجاست * اظهار کرد که خاطر من بالکل جمع شد که فرستادنِ پسر را سعادت میدانم - امّا چون اهل این دیار وحشی نهادند ملاحظهٔ کلی دارند — بمجرّد روانه شدن لشکر از چتور پسر را بلا توقف درهمان روز روانه میسازم * چون رانا وهمراهانش بعد از ردّ و بدل

मुआमलेसे वाक़िफ़ है, और अक्कसे ख़ाली नहीं है, भेजी. चित्तौड़के लश्करके सिवाय मन्दसोरकी तरफ़से भी फ़ौजके आजानेका वहम होगया है. इन लोगोंने पहिलेसे अपने बाल बच्चे और अस्बाबको पहाड़ोंमें भेजकर इरादा किया है, कि जब लश्कर चित्तौड़से लौट जावेगा, उनको उदयपुरमें बुलालेंगे. हुक्मके मुवाफ़िक़ तमाम बातें बे गरज़ीके साथ ज़ाहिर करदीं; राना भी, जो अपने सर्दारोंसे ज़ियादह अक्कमन्द है, अच्छे वर्ताव और नर्मीके साथ हर तरह इस कामका पूरा होना चाहता है. रघुनाथसिंह अगर्चि राजपूत है, लेकिन् समझसे ख़ाली नहीं है. वह अक्सर मौक़ोंपर इत्तिफ़ाक़ रखता है, और अपनी जमइयत समेत हाज़िर है. यह अर्ज़ी ख़्वाजह जमाल आक़िलख़ानी के हाथ हुज़ूरमें भेजी जाती है, अगर उससे कुछ पूछा जावे, शायद ठीक बयान करे.

यहांका मेवा एक क़िस्मकी ख़ास ककड़ी है, गन्ना भी बुरा नहीं है; कुछ अनार रानाके बाग़में से मंगाकर देखेगये, अगर्चि अरक़ ज़ियादह है, लेकिन् मिठास नहीं है. हवा दोपहरको किसी क़द्र गर्म होती है, और रातको कुछ ठंडी; इस मुल्ककी रअय्यत हर तरफ़ भागगई है, आबादी कम नज़र आती है. उदयपुरमें महाजन व्यापारी और शहर वालोंमें से किसीका पता नहीं है, सब इस बातके तै होजाने की फ़िक्रमें हैं. हुज़ूरकी सल्तनत हमेशा क़ायम रहे.

بسیار قرار داد این معنی نمودند که عرضداشت نوشته مصحوب بلو که آشنای معامله است و خالی از راستی نیست فرستاده شد * آنچه ظاهر میشود در فرستادن پسر سعادتمند ایم — امّا همین ملاحظهٔ لشکر چتور و آمدن فوج از جانب مندسور بر آنها مستولی شده - آن سر عنقریب از خاطر آنها بر می آید با حال افواج بحرامواج بچتور رسیده - کاری که باید کرد کرده باشد - همین که این خبر به آنها برسد - چند روز پیش از این اهل و عیال خود را با حمال و اطفال بجبل فرستاده قرار داده اند که چون لشکر ظفر اثر از چتور برگردد — آنها را باودیپور بطلبند * بموجب ارشاد والا ادای احکام واجب الانعام از روی راستی و درستی نمود — سیرچشمی و بیغرضی خود را با ظاهر ساخته - وهم رانا را که معقولتر از ارباب کنگایش خود است - بحسن سلوک و سخنان راست و درست از خود راضی گردانیده امیدوار است - که بکرم کریم کارساز این خدمت بوجه احسن بتقدیم رسد * رگهناته سنگه اگرچه راجپوت است - امّا خالی از معقولیت و معامله فهمی نیست - در خلوت و کثرت او را همه جا با خود متفق ساخته - او با جمعیت خود حاضر است * این عرضداشت را بمصحوب خواجه جمال عاقلخانی روانهٔ ملازمت فیض موهبت نمود — اگر حرفی از او پرسیده شود شاید که درست ادا نماید *

میوهٔ این ملک بالفعل همین بادرنگ کلان است که بزبان اینجا ککڑی گویند - نیشکر هم بد نیست - اناری چند از باغ رانا آورده بود اگرچه سیراب بود امّا شیرینی نداشت - میانه روز هوا بقدری گرم است — شبها مایل بسردی * و رعیت این ملک جا بجا فرار شده — آبادانی کمتر بنظر در می آید — در اودیپور از مهاجن و بیوپاری و اهل شهر نیست — و هم کس نظر بر اصلاح این معامله دارند * ایام دولت و اقبال مستدام باد *

दूसरी अर्ज़ी.

राणाने तमाम हिदायत और हुक्मकी बातें अच्छी तरह सुनी हैं, तामील के लिये अपना फ़ायदह समझकर दिलसे तय्यार है, ख़ैरख़्वाह लोगोंकी कोशिशसे, जिनकी तफ़्सील हुज़ूरमें अर्ज़ की जायगी, कुंवर को सात घड़ी गुज़रनेपर शनैश्चरकी रातमें रुख़्सत करके उदयपुरके बाहर एक ख़ेमे (डेरे) में ठहरा दिया है; अब उसके साथियों का सामान करता है. राणा और उसके मुसाहिब उम्मेद करते हैं, कि फ़त्हमन्द लश्कर चित्तौड़ को उजाड़ कर लौट जावे तो हम अच्छी तरह उदयपुर में रहसकें और कुंवरको बे फ़िक्रीसे अजमेर भेजदिया जावे; तावेदारोंकी तरफ़से कोशिश में कुछ कमी नहीं रक्खी गई, राणाको ऊंची नीची बातोंसे ख़ूब क़ायल करदिया है, और सच सच बग़ैर घटाव बढ़ावके जो बातें इन लोगोंसे सुनीं, अर्ज़ कर दी गईं. हुज़ूर की बादशाहत और नसीबे का सूरज हमेशा चमकता रहे.

तीसरी अर्ज़ी.

हुज़ूर के बुज़ुर्ग रोशन फ़र्मान से, जो अजमेर मक़ाम से जारी हुआ था, इज़्ज़त और सरबलन्दी हासिल की. राणा को जो हुज़ूरकी मिहर्बानीका उम्मेदवार

عرضداشت دوم — ۲ *

کمترین بندهای عقیدت کیش زمین خدمت بلب ادب بوسیده بذروهٔ اسما بموقف
عرض والا میرساند — که رانا جمیع ابواب ارشاد و هدایت را بگوش هوش شنیده نظر
بر انقیاد احکام لازم الاتمام اشرف اقدس ارفع اعلی و بهبود حال و مآل خود دانسته —
بسعی بندهای عقیدت کیش که تفصیل آن در حضور بعرض خواهد رسید — کنور را بعد از
انقضای هفت گهری از شب شنبه رخصت نموده — در نواحی اودیپور خیمه ایستاده کرده
فرود آورد * الحال سامان همراهیان او میکند - و رانا و معتمدان او التماس می دارند -
که لشکر ظفر اثر چتور را خراب ساخته رو برگردد — که تا بخاطر جمع در اودیپور توانیم بود —
و کنور بجمعیت خاطر باجمیر تواند رفت * در کوشش از جانب بندها تقصیر نرفته - و بسخنان عقلی
و نقلی پست و بلند رانا را معقول ساخته شد * اما چون وقت درست نوشتن و راست گفتن
است - آنچه از این جماعه شنیده میشود - بیکم و کاست معروض داشتن لازم است * آفتاب
عالمتاب دولت و اقبال تابان و درخشان باد *

عرضداشت سوم — ۳ *

کمترین بندهای عقیدت نشان بعد از ادای لوازم بندگی ذره وار بموقف عرض باریافتگان
محفل بهشت آئین میرساند — که از طغرای غرای ابهت و جلال که از دار البرکت اجمیر

था, फ़र्मानके मज़्मूनसे ख़बरदार कर दिया, कुंवरकी रवानगीमें बहुत ज़ियादह ताकीद की गई है. राणा अगर्चि फ़र्मानके देखने और हम लोगों के पहुंचने से बेफ़िक्रीके साथ कुंवर के रवाना करने में राज़ी था, लेकिन् निहायत डर के साथ फ़त्हमन्द लश्कर की वापसी का इन्तिज़ार रखता था.

अब हुज़ूर के ताज़ा हुक्मसे, जो उसको बतादिया गया, बहुत तसल्ली होगई है. राणाने अपने फ़ायदेको सोच कर मुसाहिब और पुरोहित एकठे किये हैं; शुक्र के दिन शनैश्चर की रात में से सात घड़ी गुज़रने पर मुहर्रम महीने में अपने बेटे की रवानगीके लिये नेक घड़ी तज्वीज़ की है. मुहूर्तका काग़ज़, जो राणाके पुरोहितोंने लिखा है, उसके साम्हने बन्द करके बजिन्स हुज़ूर में भेजाजाता है.

राणा अर्ज़ करता है, कि मैं ने साफ़ दिलीके साथ हुज़ूरी हुक्मोंकी तामील की है, उम्मेद है, कि मेरे मुल्क और मालपर कुछ नुक्सान न पहुंचाया जायगा, और मैं अपने बुज़ुर्गोंसे ज़ियादह रिआयत, और बराबरी वालोंसे ज़ियादह इज़्ज़त पाऊंगा, और मेरा बेटा जल्दी लौटा दिया जायगा. जंगली लोगोंमें ज़िद और वहम ज़ियादह होता है, हुज़ूरके ताबेदारोंने हर तरह तसल्ली करदी है. यह मुल्क बिल्कुल ख़राब होरहा है, सब आदमी पहिलेसे शहर छोड़ कर पहाड़ोंमें चलेगये हैं, बाज़ार

شرف نفاذ و عز ورود یافت — آداب بندگی و استقبال بتقدیم رسانده سعادت کونین حاصل نمود * و رانا را که منتظر و مترصد نوید عنایت والا بود بر مضمون عنایت مشحون آن مطلع گردانیده بیشتر از پیشتر تاکید در روانه ساختن کنور نمود * رانا اگرچه بعد از مشاهده منشور لامع النور و رسیدن بندهاے عقیدت کیش مطمئن خاطر گشته درصدد روانه ساختن پسر بود — امّا از رعایت هیبت و هراس نظر بر مراجعت لشکر فیروزی اثر داشت * الحال که بتازگی بر مضمون امر لازم الاتباع که درین وقت مخصّ از روے کشف صادر شده بود مطلع گردیده — تقویت ظاهر و باطن حاصل نمود * رانا پے به بهبود و سود خود برده معتمدان و پروهتان را جمع ساخته — بعد از انقضاے روز جمعه پس از گذشتن هفت گهری از شب شنبه شهر محرّم ساعت روانه ساختن پسر اختیار نمود — چنانچه کاغذ ساعت بخط پروهتان و معتمدان رانا بجهت احتیاط در حضور رانا گرفته بجنس ارسال داشته شد *

و رانا اظهار میمون که چون من سعادت خود دانسته اطاعت حکم مقدس بجا آورده ام — یقین که بهیچ وجه من الوجوه فتورے و آسیبی بملک و مال من نخواهد رسید — و زیاده از اسلاف خود رعایت خواهم یافت و بین الاقران سربلندی حاصل خواهم نمود — پسر من زود بمن خواهد رسید * چون صد قلوب وحشی نهادان را لازم است — بندهاے درگاه دلاسا نموده خاطر او را مطمئن میکردند * تزلزل و تفرقه تمام بحال اینملک راه یافته — پیش از رسیدن بندها شهر اودیپور را خالی ساخته مال و متاع را بکوه فرستاده اند — بازارها و جاها خالی افتاده —

और मकान ख़ाली पड़े हैं, सिर्फ़ राणा और उसके नौकर बाक़ी रहगये हैं; यहांके आदमी कहते हैं, कि अगर यह मुआमला तै न पाता, तो राणा अबतक पहाड़ोंमें चला जाता. तावेदारोंके तसल्ली दिलानेसे उसके होश हवास क़ायम रहे हैं. यहां एक सत्तर वर्षकी उम्रका फ़क़ीर नज़र आया, जो चालीस वर्षसे शहरके बाहर अलहदा एक गुफामें आज़ादीसे रहता है, इस वक्त शहरकी वीरानीसे वह भी घबरा गया था. तावेदारोंके पहुंचनेसे कुछ अम्न हुआ है, लेकिन् अभी लोगोंको आपसमें खुशी और त्योहार मनानेकी गुंजाइश नहीं है, सब लोग मुआमलेके तै होनेपर नज़र रखते हैं. कल्याणदास राजपूत वगैरह मौक़ेपर पहुंचे, उनकी ख़िद्मत क़द्रके लायक़ है. हुज़ूरकी बादशाहत और दौलत हमेशा रहे.

चौथी अर्ज़ी.

तावेदारने राणाके बेटेकी रवान्गीकी कैफ़ियत शनैश्चरकी रात चौथी मुहर्रम को उदयपुर शहरसे भेजी है, कि शहरके बाहर एक कोसपर डेरा जमा दियागया है, और राणा लश्करके लौटनेका इन्तिज़ार रखता है, हुज़ूरमें पेश हुई होगी. इन दिनोंमें इज़्ज़तदार सर्दार शैख़ अब्दुल्करीम मिहर्बानीके फ़र्मान समेत यहां पहुंचे; जिनसे राणाको लश्करकी वापसीकी ख़बर सुनकर बहुत तसल्ली हुई; उसने

همین نوکران رانا اند که در شهر می باشند - و مردم اینجا میگویند که اگر اصلاح این معامله نمیشد رانا تا حال در جبل بود * تقویت و دلاسای بندها استقلال او بحال ماند * درویش هفتاد ساله گوشه گزینی درین ملک بنظر افتاد - چهل سال است که کنج خمول گرفته وقت را خوش میگذراند - درینولا که شهر ویران شده تفرقهٔ بجمعیت اوهم راه یافته * واز رسیدن بندهای العمله امنی بهم رسیده - اما بالفعل کسی را دماغ دیدن و صحبت داشتن بدیگری نیست و همه کس را نظر بر اصلاح معامله است * وکلیانداس راجپوت بوقت رسیدند - مجرای خدمت اینها شود * ایام دولت و اقبال مستدام باد *

عرضداشت چهارم - ۴ *

کمترین بندگان عقیدت نشان پس از انجام لوازم بندگی واخلاص ذرهٔ اینا بدرود عرض با صبه سایان آستان ملایک نشان میرساند - که حقیقت بر آمدن پسر رانا شب شنبه چهارم محرم الحرام از شهر اودیپور و نزول آمدن بخیمه که در یک کروهی شهر نصب نموده بودند و داشتن رانا چشم انتظار بر معاودت لشکر فیروزی اثر قبل ازین عرضداشت نموده بود - امید که بسمع والا رسیده باشد * درین اثنا مشیخت و وزارت پناه شیخ عبدالکریم بافرمان مرحمت عنوان رسید - و مژدهٔ صدور حکم مراجعت لشکر نصرت اثر گوش رانا که عبارتی مایهٔ درروانه ساختن پسر بداشت رسانید * رانا که بر همه احکام سابق مطلع گشته پسر را یکهفته پیشتر از شهر بر آورده بود - تازگی زمین منت و احسان عنایت و مرحمت گردید *
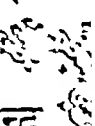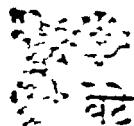
बेटेको एक हफ्तह पहिले शहरके बाहर ठहरा रक्खा था, अब दुबारा बहुत इह्सानमन्द होगया है. इज़्ज़तदार सर्दार शैख़ और ताबेदार और राणाका बेटा इतवारकी सुबह तारीख़ १२ मुहर्रम सन् २८ जुलूसको हुज़ूरकी ख़िद्मतमें रवाना होते हैं. इस कार्रवाईमें ताबेदारोंने बहुत दिलसे कोशिश की है, ऐसे वक्तमें कि राणा निहायत बे क़रारीसे चलदेनेको था. और उसके बेटेको पहाड़ोंसे बुलाकर शहरके बाहर डेरेमें ठहराया. हुज़ूरके दिलपर भी, जो दुन्याका आईना है, रोशन होगा. हुज़ूरकी सल्तनत और दौलत हमेशा रहे.

महाराणा राजसिंहने चन्द्रभानके उदयपुर पहुंचने से पहिले सुलह के पैग़ाम लेकर वज़ीर सादुल्लाख़ां के पास मधुसूदन भट्ट व रायसिंह झाला को भेज दिया था. इन्होंने वज़ीर को बहुत कुछ समझाया, लेकिन् वज़ीर का गुस्सा ठंडा न हुआ. और उसने महाराणाके कई क़ुसूर बतलाये; सबसे बड़ा ताज़ा क़ुसूर यह बयान किया, कि ग़रीबदास रुख़्सत बग़ैर किस तरह चलागया ? तब मधुसूदन भट्ट वज़ीरसे बोला, कि उदयपुरके राजपूतों को दिल्ली और उदयपुर दोनों ठहरनेकी जगह हैं, जिस तरह कि रावत मेघसिंह व शक्तिसिंह बादशाह अक्बर व जहांगीरके पास चलेगये थे, और बुलाने पर महाराणा अमरसिंह व प्रतापसिंह के पास पीछे चलेआये. उदयपुर और दिल्लीका बर्ताव पहिले ही से ऐसा होता रहा है.

यह बात सुनकर वज़ीर और भी भड़का, और कहा कि क्या उदयपुर को दिल्लीके दूसरे दरजे पर समझने लगे ? (यह ज़िक्र राज समुद्र की प्रशस्तिमें छठे सर्गके ग्यारहवें श्लोकसे छब्बीस श्लोक तक खुदा हुआ है).

फिर झाला रायसिंह और मधुसूदन भट्टसे वज़ीरने कहा, कि राणाके पास कितने सवार हैं ? उसने जवाब दिया छब्बीस हज़ार. वज़ीर बोला कि बादशाह के पास अभी एक लाख सवार मौजूद हैं; तुम कैसे मुक़ाबला करसक्ते हो ? तब मधुसूदन भट्टने कहा-कि छब्बीस हज़ार ही लड़ाई करनेके लिये काफ़ी हैं.

[illegible]

ऐसी बातोंने वज़ीरसे तो मेल न होने दिया, परन्तु चन्द्रभान मुन्शीकी मारिफ़त शाहज़ादे दाराशिकोहने अपने दीवान शैख़ अब्दुल् करीमको महाराणाके बड़े कुंवर सुल्तानसिंहके लेनेके लिये भेजदिया था.

महाराणाने भी इस मौकेपर नर्मी इख्तियार की. और बेदलाके राव रामचन्द चहुवान वगैरह आठ बड़े सर्दारोंको कुंवर सुल्तानसिंहके साथ बादशाहके पास रवाना किया; उस समय कुंवरकी उम्र पांच या ६ वर्षकी थी.

मुन्शी चन्द्रभान व दीवान शैख़ अब्दुल्करीमके साथ कुंवर सुल्तानसिंह मालपुरे में विक्रमी १७११ मार्गशीर्ष कृष्ण ७ [हिज्री १०६५ ता० २१ मुहर्रम = ई० १६५४ ता० २ डिसेम्बर] को बादशाह शाहजहांके पास पहुंचे. इस वक्त तक महाराणाके कुंवरका नाम मुक़र्रर नहीं हुआ था; इस लिये बादशाहने सुहागसिंह (१) नाम रक्खा, और मोतियोंका सरपेच, जड़ाऊ तुर्रा, मोतियोंका बालाबन्द, जड़ाऊ उर्बसी दी; और उसके साथियों में से राव रामचन्द चहुवान वगैरह आठ आदमियों को घोड़ा और ख़िलअ़त बख़्शा.

दूसरे दिन अर्थात् इसी संवत् के मार्गशीर्ष कृष्ण ८ [हि० ता० २२ मुहर्रम = ई० ता० ३ डिसेम्बर] को सादुल्लाख़ां फ़ौज समेत चित्तौड़से बादशाही ख़िद्मतमें हाज़िर हुआ; और मार्गशीर्ष कृष्ण १२ [हि० ता० २६ मुहर्रम = ई० ता० ७ डिसेम्बर] के दिन कुंवर को बादशाहने घोड़ा और हाथी देकर उदयपुरकी रुख़्सत दी.

कुंवर उदयपुर आये और बादशाह आगरे पहुंचे, इस मौके पर दबना ही ठीक जानकर महाराणा राजसिंह चुप हो रहे.

विक्रमी १७१३ ज्येष्ठ कृष्ण १० [हि० १०६६ ता० २४ रजब = ई० १६५६ ता० १९ मई] को ख़वासण सुन्दरकी अर्ज़ पर महाराणा राजसिंहने गंधर्व ब्राह्मण मोहनको रंगीली ग्राम रामार्पण दिया– (शेष संग्रह नम्बर १)

चित्तौड़ में इमारतका नुक्सान और मुल्क वीरान होनेके सबब प्रजाको भी बहुत दुःख पहुंचा, इस सबब से महाराणाको ज़ियादा गुस्सा आया, और बखेड़ा करना विचार कर जंगी फ़ौज तय्यार करनेका इरादा किया. शाहजहां बाद-

---

(१) सुहागसिंहका मत्लब मालिकका शुभचिन्तक अर्थात् बादशाही भक्त है, जैसे कि सुहागवती स्त्री, यह बात महाराणा राजसिंहको नापसन्द हुई, और पीछे अपने बेटेका नाम सुल्तानसिंह रक्खा; ज़ाहिरमें तो यह बात कि सुल्तानका किया हुआ सिंह, लेकिन् इसका दूसरा मत्लब यह था, कि सुल्तान पर सिंहकी मुवाफ़िक़ ज़बरदस्त

शाहने जो पुर, मांडल, खैराबाद, मांडलगढ़, जहाज़पुर, सावर, फूलिया, बनेड़ा, हुरड़ा, बदनौर वग़ैरह परगने मेवाड़से निकालकर सूबे अजमेरमें मिला लिये, वे पहिले वक़ोंसे मेवाड़के शामिल रहे हैं, परन्तु विक्रमी १६२४ [हिज्री ९७५ = ई० १५६७] से बादशाह अक्बरकी चढ़ाईके बाद मुग़लोंकी बादशाहत के आख़िर तक कभी ज़ब्त और कभी छूटते रहे हैं; यानी कभी मेवाड़के महाराणाओं ने अपने तहतमें करलिये, और कभी बादशाही फ़ौजने क़ब्ज़ा करलिया. और कभी बादशाहोंने खुशीसे बख़्श दिये, ऐसा ही बर्ताव होता रहा.

महाराणा राजसिंहने मांडलगढ़ पर फ़ौज भेजी, कृष्णगढ़के राजा रूपसिंहको बादशाह शाहजहांने यह क़िला देदिया था, उनकी तरफ़से राघवदास महाजन वहां का क़िलेदार मुक़ाबलेसे पेश आया, लेकिन् एक दो दिन ठहरकर भाग गया.

विक्रमी १७१४ आश्विन शुक्ल १० [हिज्री १०६८ ता० ९ मुहर्रम = ई० १६५७ ता० १८ ऑक्टोबर] को दशहरा पूजनेके बाद महाराणा राजसिंहने टीका दौड़की रस्म पूरी करनेको फ़ौज तय्यार की, और बादशाही मुल्क लूटने पर कमर बांधी. विक्रमी कार्तिक [हि० सफ़र = ई० नोवेम्बर] में उदयपुरसे कूच किया, और चित्तौड़की तलहटी तथा मालवेके लोगोंको मिलाकर विक्रमी १७१५ वैशाख शुक्ल १० [हिज्री १०६८ ता० ९ शअ्बान = ई० १६५८ ता० १२ मई] को चित्तौड़से कूच हुआ, और खैराबादको लूटकर पुर, मांडल व दरीबा को आघेरा. वहां बादशाही थानेके कुछ लोग थे, उनमें से कितने ही तो भागगये, और बहुतसे मारे गये, जिनका सारा सामान महाराणाकी फ़ौजने लूटलिया, और मांडल, पुर व दरीबाके ज़मींदारोंसे बाईस हज़ार रुपये दण्डके लेकर अपने थाने बिठादिये.

इसी तरह बनेड़ेके ज़मीदारोंको मातहत करके छब्बीस हज़ार रुपये दण्डके लिये. शाहपुरेके अधिकारी सुजानसिंह, जो महाराणाके चचा थे, और चित्तौड़पर फ़ौज कशीके वक़ सादुल्लाख़ां वज़ीरके साथ थे; इसी रंजके सबब महाराणाने शाहपुरेपर घेरा डाला, और बाईस हज़ार रुपया जुर्माना लिया, परन्तु इन दिनों सुजानसिंह शाह-जहां बादशाहकी भेजी हुई फ़ौजमें उज्जैनकी तरफ़ था. महाराणा इसी तरह सावर, जहाज़पुर, केकड़ी वग़ैरहसे दण्ड लेते हुए मालपुरे पहुंचे. उन दिनों मालपुरेकी प्रजा मालदार थी. महाराणा नौ दिन तक वहां ठहरे, और शहरको अच्छी तरह लूटा. इस शहरकी लूटका हाल लोग कई तरहपर बयान करते हैं- कोई कहता है कि एक करोड़का माल लूटा, किसीका बयान है कि पचास लाखका माल मेवाड़की फ़ौजने लिया.

टोडेके राजा रायसिंह, महाराणा अमरसिंहके पोते भीमसिंहके बेटे भी सादुल्ला-ख़ांकी फ़ौजके साथ क़िले चित्तौड़के गिरानेमें शामिल थे. इस कारण महाराणाने

अपने प्रधान कायस्थ फ़तहचन्दको तीन हज़ार सवार देकर टोडेपर भेजा. वहां राजा रायसिंहकी माने साठ हज़ार रुपये जुर्माना देकर इलाक़ेको बचाया. उस समय राजा रायसिंह शाहजहांके हुक्मसे बादशाही फ़ौजमें मालवेकी तरफ़ गये थे; वर्सात आजानेके सबब महाराणा तो उदयपुर चले आये, और इस धूम धामकी ख़बर बादशाहके कान तक पहुंची.

कर्नेल् टॉड अपनी किताबमें लिखते हैं, कि इन ख़बरोंको सुनकर बादशाहने कहा. कि मेरा भतीजा (महाराणा कर्णसिंहका पगड़ी बदल भाई होनेसे) लड़कपन से ऐसी बातें करता है, मैं इन बातोंपर ध्यान नहीं देता. हमारी राय कर्नेल् टॉडसे नहीं मिलती, क्यों कि शाहजहांको उदयपुरमें रहनेके इहसान का ख़याल होता तो देवलियाके रावत हरिसिंहको उदयपुरकी मातहतीसे अलग नहीं करता.

दूसरे- पुर, मांडल, मांडलगढ़,जहाज़पुर, भणाय, हुरड़ा, वग़ैरह परगने मेवाड़ से छीनकर सूबे अजमेरमें नहीं मिलाता.

तीसरे- अपने वज़ीर सादुल्लाख़ांको तीस हज़ार सवारके साथ क़िले चित्तौड़ को गिरानेके लिये कभी नहीं भेजता.

इन बातोंसे मालूम होता है, कि वह पुराने इहसानको तख़्तपर बैठनेके बाद भूलगया. और महाराणा राजसिंहकी धूमधामको सुनकर ज़रूर दिलमें जला होगा. परन्तु एक तो बीमारी दूसरे चारों शाहज़ादोंके आपसमें फ़सादके सबब. जिससे कि अपनी बड़ी भारी सल्तनत (हिन्दुस्तान) के उलट पुलट होनेका डर था, बादशाहने मालपुरेकी लूटका ख़याल नहीं किया होगा. इन्हीं दिनोंमें महाराणा राजसिंहने शाहज़ादे औरंगज़ेबसे मेल करनेके इरादेसे चिट्ठियां भेजीं, और औरंगज़ेबने उनके जवाबमें महाराणाको अपना मददगार बनाने के लिये लिखा. उन काग़ज़ोंका तर्जुमा जिनकी नक्ल फ़ार्सी नोटमें कीगई है, यहां लिखा जाता है-

---

औरंगज़ेबका पहिला निशान.

उस नेक इरादह ख़ैरख़्वाहने अर्ज़ किया था, कि उदयकर्ण (१) चहुवान और शंकर भट्टको मए उनके साथवालोंके रुख़्सत दीजावे, और इन दिनोंमें हमारे साम्हने अर्ज़ हुआ, कि बाक़ी जमइयत जो माधवसिंह सीसोदिया के साथ रहेगी,

---

(१) इन्हीं उदयकर्ण चहुवानकी सन्तान इस वक़्त तक कोठारियाके जागीरदार सोलह उमरावों मेंसे है.

वह भी फ़त्हमन्द लश्करमें आगई; इस लिये उस उम्दा सर्दारकी अर्ज़ कुबूल कीगई. इस वक़ में कि फ़त्हमन्द लश्कर बीजापुरकी मुहिम पर रुजूअ़ होने वाला है, और बाक़ी उस ख़ैरख़्वाह साफ़ तबीअ़तकी सब जमइयत अगली और अबकी हमारी ख़िद्मत में रहेगी. इस लिये उदयकर्ण और शंकरभट्टको कुछ साथियों समेत हमने रुख़्सत दी, कि अपने घर जावें.

इन्द्रभट्ट, जो हमारी नामदार सर्कारका पुराना एतिबारी नौकर है, उसको भी हमराह भेज दिया गया है, कि उस ख़ैरख़्वाहको ख़ास इनायत और मिह्रबानियोंसे, जो ज़बानी कह दीगई हैं, ख़बरदार करे.

इस वक़ उम्दा ख़िलअ़त और जड़ाऊ उर्बसी उसकेवास्ते इनायत फ़र्माई गई, कि सर्फ़राज़ करके उस बे शुबह ख़ैरख़्वाह सर्दारकी तन्दुरुस्तीकी ख़बर लावे, और बादशाही मिह्रबानी व बख़्शिशोंको अपनी बाबत रोज़ बरोज़ ज़ियादह समझे, और ख़ैरख़्वाही व साफ़ दिलीका तरीक़ा हाथसे न देकर पुराने दस्तूर बर्तावपर क़ायम रहे.

कम दरजेके ख़ैरख़्वाह ज़ियाउद्दीन हुसैनके रिसाले में जारी हुआ.

نشان مهر محمد اورنگ زیب بهادر که در زمان شاهزادگی - بنام رانا راج سنگه نوشته - بتاریخ
نوزدهم ۱۹ - شهر ربیع الاول سنه ۳۰ جلوس میمنت مانوس *

———***———

خلاصهٔ مخلصان وافی عقیدت نتیجهٔ دودهٔ وفا و الارادت عمدة الاشباه و الاعیان رانا راج سنگه -
بعنایت بیغایت پیشگاه سلطنت مفتخر و مباهی گشته بداند - که چون آن خلاصهٔ مخلصان وافی
عقیدت التماس نموده بود - که اودیکرن چوهان و شنکربهت را با همراهان آنها دستوری دهیم -
و دیولا بموقف عرض والا رسید که بقیه جمعیت که با مادهو سنگه بیسودیه خواهد بود بیرکاب
ظفر انتساب آمده - بنابران ملتمس آن عمدة الاشباه والاعیان را مبذول داشته - درینوقت
که موکب نصرت قرین متوجه مهم بیجاپور است و ما بقی تمامی جمعیت آن نتیجهٔ دولتخواهان
صافی طویت از سابق و لاحق در خدمت والا میباشد موی الیهما را با همسران رخصت
فرمودیم که بوطن مالوف خود روند *

و اندربهت ملازم سرکار نامدار را که بندهٔ معتمد قدیم الخدمت این درگاه است نیز
باتفاق آنها فرستادیم - که آن خلاصهٔ مخلصان بے اشتباه را بر بعض مراتب عنایات و توجهات
خاص که بتقریر او محول است آگهی بخشد * بالفعل از خلعت فاخره و اُرسی مرصع که باو مرحمت
فرموده ایم سرفراز گردانیده خبر صحت و عافیت آن عمدة الاشباه و الاعیان را بیاورد *
اعطاف و الطاف پیشگاه سلطنت را دربارهٔ خویش روز افزون شناسد - و سر رشتهٔ عقیدت و
اخلاص را از دست ندهد بهمان وتیره بر جادهٔ قدیم مستقیم باشد *

برسالهٔ کمترین فدویان ضیاء الدین حسین *

———***———

औरंगज़ेबका दूसरा निशान.

उम्दा सर्दार, बराबरी वालोंसे बिहतर, वफ़ादार ख़ैरख़्वाहोंका बुज़ुर्ग, बलन्द इरादह बहादुरोंका पेश्वा राणा राजसिंह- बेहद मिहरबानी और ख़ास तवज्जुहसे ख़ुश् होकर जाने, कि क़दीमी मुहब्बत पर नज़र रखकर इन्द्रभट्टको जो एतिबारकी लाइक़ है, हमने उस बुज़ुर्ग सर्दारके पास भेजा है, कि जो बातें उससे कही गई हैं, ज़ाहिर करे, और जवाब जल्दी लावे-

यक़ीन है कि बिहतरीकी उम्मेद और बेफ़िक्रीके साथ साफ़ और दुरुस्त जवाब ज़ाहिर करके अपने इक़ारोंके मुवाफ़िक़ बर्ताव रक्खे, और इसे तीन दिनसे सिवाय न ठहरावे, हुज़ूरमें रुख़सत करे.

ख़िलअ़त ख़ासा, एक हीरेकी अंगूठी उसके हाथ भेजी है; व ख़ासा हाथी सामान समेत फ़िदवी ख़्वाजह मन्ज़ूरके हवाले किया गया है, जो भेज देगा.

نشان والا شان كه بدستخط خاص محمد اورنگ زيب بهادر زيب رقم يافته *

عمدة الاعيان مفخر الاقران خلاصهٔ دولتخواهان وفاكيش زبدهٔ متهوران جلادت انديش رانا راج سنگه - بعنايت بی نهايت و توجه خاص الخاص بعنايت خوشوقت گشته معلوم نمايد - كه نظر بر اخلاص درست قديم آن عمدهٔ دولتخواهان كرده اندربهت را كه محل اعتماد است نزد آن مفخر الاعيان فرستاديم تا مقدمات كه باو گفته ايم ظاهر نموده جواب آن را بزودی بياورد -

بايد كه باميدوارئ تمام و جمعيت خاطر مالاكلام باظهار جواب صدق و يكرنگی پرداخته بموجب اقرار عمل نموده زياده برسه ۳ روز نگاه ندارد - و رخصت حضور پرنور كند *

خلعت خاصه بانگشتری الماس مصحوب او عنايت نموديم - فيل خاصه با يراق حوالهٔ فدوی خواجه منظور فرموده ايم - خواهد فرستاد *

शाहज़ादे औरंगज़ेबके ख़ास दस्तख़ती और
पंजेवाले तीसरे निशानका तर्जुमा.

उम्दा वफ़ादार, बुज़ुर्ग सर्दार, बराबरी वालोंसे बिहतर, ख़ैरख़्वाहोंका पेश्वा बहुत मिहर्बानियोंके लायक़, साफ़दिल दोस्त, नेकनियत ख़ैरख़्वाह, बड़े राजाओंका बुज़ुर्ग, (राणा राजसिंह) शाही मिहर्बानियोंसे खुशख़बरी हासिल करके जाने: जिन आदमियोंको कि हमारी फ़ौजके बहादुर हरावल अफ़्सरने उस हिन्दुस्तानके राजाओंके बुज़ुर्गके पास भेजा था, उन्होंने इन्तिज़ारके वक्त हुज़ूरमें पहुंचकर ख़ैरख़्वाही और साफ़दिलीकी बातें, जो नेकइरादा लोगोंका एतिबार बढ़ानेवाली हैं, तफ़्सीलवार अर्ज़ कीं; जिससे उस वफ़ादारपर हज़ारों शाही मिहर्बानियें लाज़िम आईं. यह ज़ाहिर है, कि ज़बरदस्त बुज़ुर्ग नामदार बादशाहोंकी ज़ात ख़ुदाकी नक़्ल और उसका साया समझीजाती है, और इस बुज़ुर्ग तबीअ़त गिरोहकी बलन्द

हिम्मत, जो ख़ुदाई कारख़ानेके थंभे हैं, इस बात पर रुजूत्र्य रहती है, कि मुख़्तलिफ़ क़ौम और हर मज़्हबके आदमी अम्न और आरामके साथ बे फ़िक्रीसे अपनी ज़िन्दगी

نشان شاهزادهٔ محمد اورنگ زیب بهادر که بدستخط خاص و نقش پنجهٔ مبارک زیب تحریر یافته *

عمدهٔ اخلاص کیشان دولتخواه زبدة الاعیان والاشباه خلاصة الاماثل والاقران نقاوة النظایر والاخوان سلالهٔ عبودیت منشان سزاوار الطاف و احسان مخلص با اختصاص عبودیت درست اخلاص زبدهٔ راجهای عالیمقدار مستوجب احسانات بیشمار (رانا راج سنگه) بشمول توجهات شاهی مستظهر و مستبشر بوده بداند — کسانی را که شهامت دستگاه مقدمة الجیش بر آن سرآمد راجهای بلند فرستاده بود آنها را رهین التفات بحضور پرنور رسیده مراتب عقیدت و اخلاص که حد امور مراد یکرنگان خیرسگال است یکایک بعرض عالی متعالی رسانیدند * آن اخلاص کیش مورد هزار عنایت و لطف خسروانه گردید * از آنجا که ذوات نعمت آیات سلاطین با مدار و والا قدر عالیمقدار ظل ظلیل آفریدگار و سایهٔ بلند پایهٔ نعمت پروردگار واقع شده -

पूरी करें, और कोई किसीपर ज़ियादती न करसके. जिस किसीने इस बुज़ुर्ग गिरोह में से तअ़स्सुब और हठ धर्मीके साथ लड़ाई झगड़े और उस ख़ल्क़तकी तक्लीफ़, जो अस्ल में ख़ुदाई दर्गाहकी एक अमानत है, इख़्तियारकी, उसने ख़ुदाई कार्रवाई और उसकी बुन्यादोंके उखाड़ने में कोशिश की, जो इस गिरोहके लिये ख़राब आ़दत और नाक़िस हालत कही जासक्ती है. अगर ख़ुदाने चाहा तो उसके पीछे कि हक़ अपनी जगह पर ठहरजावे, और मुरादकी सूरत एकदिल ख़ैरख़्वाहों की ख़्वाहिशके मुवाफ़िक़ नज़र आवे, तो हमारे बुज़ुर्ग बाप दादोंके क़ाइदे और ज़ाबिते, जो सब लोगोंको बहुत पसन्द हैं, जारी होकर तमाम दुन्याकी रौनक़ बढ़ावेंगे.

उस नेक आ़दत वफ़ादारने परगने मांडल वग़ैरह चार जागीरोंकी बाबत, जिनकी तन्ख़्वाह एक करोड़ तीस लाख दाम होती है, अ़र्ज़ किया, ये जागीरें परगने ईडर समेत उन इक़ारोंके पूरा होने बाद, जो आपसमें क़रार पाये हैं, बख़्शे जानेके लिये मन्ज़ूर की गईं. मुनासिब है, कि हरतरहसे ख़ातिर जमा और मिहर्बानियोंका उम्मेदवार होकर उस बड़े कामके लिये, जिसका हमने इरादह कर लिया है, कमर बांधे; और एक उम्दा फ़ौज किसी नज़्दीक रिश्तेदारके साथ रवाना करदे, कि बुधके रोज़ इस महीनेकी तीसवीं तारीख़ हमारे हरावल लश्करके अफ़्सरके पास आकर शामिल होजावे. बुज़ुर्ग ख़ुदाकी मिहर्बानीसे यक़ीन है, कि बहुत जल्द

همت والانهمت این طبقهٔ علیا که اساطین بارگاه جبروتند مصروف بر آنست که کافهٔ مختلف المشارب و متلوّن المذاهب در مهادِ امن و امان بوده بفراغ بال بگذرانند — واحدے متعرض احوال دیگرے نگردد — و هرکدام ازین گروه اعانی شکوه را تعصب در پیش گرفته بے صبر مجادله و مخاصمه و ایذاے جمهور انام که ودائع بدائع درگاه صمدیت اند گردیده در معنی در تخریب معمورات یزدانی و هدم بنیان ربانی که از صفات مردوده و اوضاع مطرودهٔ این طایفهٔ والاست کوشید * انشاء الله تعالے بعد از آنے که حق بمرکز قرار گرفت و نقش مراد حسب خواهش مخلصان یکدل صورت بست - فوائد مراسم آباء کرام و ضوابط اجداد عظام انار الله براهینهم که مرغوب طبائع عباد است - رونق افزاے معمورات ربع مسکون خواهد گشت *

آن اخلاص کیش وفادار از مرحمت کردن پرگنهٔ ماندل وغیره چهار محال که تنخواه آن یک کرور سی لکهه دام میرسد التماس نموده — با پرگنهٔ ایدر بعد ایفاے عهود و مواثیق که میان آمده بدرجهٔ اجابت مقرون شد * باید که من جمیع الوجوه خاطر جمع داشته و امیدوار عنایات والا گشته کمر همت بتقدیم امرے که پیش نهادِ خاطر معلے است بسته - فوجی شایسته که بسرکردگی یکی از اقربا قرار یافته منظور نظر اعلے گردیده روانه نماید — که چهارشنبه که سیم ماه حال باشد آمده بلشکر خان مزبور ملحق شود * رجا بفضل فیاض مطلق واثق است

हम कोशिशका दर्या तैरकर मुरादके किनारेपर पहुंचेंगे. यह एक पुराना ज़ाबितह है, कि राणाईकी तलवार उसके बुज़ुर्गोंको हिन्दुस्तानके बादशाहोंकी तरफ़से मिलती है, इस लिये हमने तलवार ख़ास ख़िलअ़त समेत, जो हमारे पहननेकी चीज़ोंमेंसे है, तुहफ़ेके तौर उस नेक इरादह सर्दारके लिये इनायत फ़र्माई. जैसा कि हमने उसको दूसरी दुन्याके सफ़र करने वाले (महाराणा जगत्सिंह) की जगह समझा है, वह भी हमको हक़दार बादशाह और मुल्कका मालिक जानकर रियासत और राणाईकी तलवार फ़र्मांबर्दारीके साथ कमरपर बांधे, और ख़ास ख़ुराकके ख़रबूज़े, जो इनायत हुए, इसको नेक शकुन ख़याल करे.

रघुनाथके हाथ भेजीहुई अ़र्ज़ी नज़रसे गुज़रकर पसन्द हुई, रघुनाथ को फ़ौजके साथ रुख़्सत करे, इस क़द्र वक़्त नहीं रहा, कि आज कलमें काम टाले जावें, देरका हर्गिज़ मौक़ा नहीं है, सुस्तीमें हर तरहके नुक़्सान होना मश्हूर बात है. हम शौक़के साथ ऐसे इन्तिज़ार में हैं, कि अगर वह जल्द आवे तो भी देर समझी जावे. उम्दा वक़्तपर यह काग़ज़ लिखागया.

औरंगज़ेबका चौथा निशान.

इन्द्रभट्ट सर्कारी नौकर और ब्रजनाथ अपने नौकर के साथ जो अ़र्ज़ी भेजी थी, नज़रसे

که عنقریب بساحل مراد میرسیم * چون ضابطهٔ قدیم آن بود که عطاے شمشیر رانائی به ساکان
او از مراحم کریم فرمان روایان ممالک هندوستان است - بنا بر آن شمشیر با خلعت خاصه
از ملبوسات خاص بصیغهٔ تهنیت به آن عقیدت سرشت مرحمت فرمودیم - باید که چنانچه
ما اورا بجاے آن سفر گزین اقلیم آخرت (رانا جگت سنگه) دانسته ایم - او نیز مارا خلیفهٔ بحق و
سریر آراے مملکت دانسته شمشیر ریاست و رانائی بر کمر اخلاص و اطاعت بربندد - و الوش خاصهٔ
خربزه که مرحمت شده این را شگون نیکی تصوّر نماید *
عرضداشت مرسل یافتهٔ مصحوب رگهناته رسید - از نظر فیض اثر گذشت مستحسن افتاد *
رگهناته را همراه فوج رخصت کند - وقت آن قدر نمانده که بامروز و فردا گذرد - فرصت را
اصلا محل نیست "فی التاخیر آفات" از اقوال مشهوره است *

— شعر —

.... آنچنان منتظرم در رهٔ شوق * که اگر زود بیاید دیر است * ....
در ساعت مسعود و هنگام محمود زیب نگارش یافت *

———***———

نشان عالیشان اورنگ زیب بهادر

عمدة الاشباه و الاقران زبدة الامثال و الاعیان خلاصهٔ دولتخواهان تمام اخلاص اسوهٔ

गुज़री और तमाम बातें जो कि उसके साथ कहलाई थीं, अर्ज़ मुबारकमें पहुंचीं, और मिहर्बानियोंकी उम्मेदका हाल ज़ाहिर हुआ.

अगर खुदाने चाहा, तो उन कारगुज़ारियोंके पीछे, जिनके लिये वह उम्दह सर्दार मुक़र्रर हुआ है, जैसा कि इक़ार किया, अपने बेटेको अच्छी जमइयतके साथ बुज़ुर्ग दर्गाहमें भेजे, और दोस्तोंकी मर्ज़ीके मुवाफ़िक़ काम हो, तो जैसा कि उसने अर्ज़ किया, राणा सांगासे भी ज़ियादह हमारी तरफ़से इनायात होकर कोई दरजा हिमायत और रिआयतका उस खैरख्वाहके वास्ते न छोड़ा जायगा; और निशान जो ख़ास ख़तसे लिखागया और पंजे मुबारकसे रौनक़-दार होकर क़ौलके तौरपर भेजागया है, खुदाकी मिहर्बानीसे इसमें ज़रा भी फ़र्क़ न पड़ेगा. वे फ़िक्रीके साथ बन्दगीके रास्तेपर साबित क़दम रहकर अपने बेटे को अच्छी जमइयतके समेत हुज़ूरमें भेजे, कि नर्मदासे लश्कर उतरनेके बाद खिद्मतमें हाज़िर हो, और आप उस खिद्मतपर, कि जिसका इक़ार किया, तय्यार हो. पर्वरिशके तरीक़ेसे एक जड़ाऊ तुर्रा उस उम्दा सर्दारके लिये इनायत कियागया. हमारी ख़ास इनायतको अपनी बाबत रोज़ बरोज़ ज़ियादह समझे.

معتقدان وامرالاختصاص رانا راج سنگه — بعنایات و توجهات خاص سرفراز بوده بداند —
عرضداشتے که مصحوب اندر بهت ملازم سرکار دولتمدار و برخابهه نوکر خود ارسال داشته
بود از نظر مقدّس گذشت — و جمیع ملتمسات او که حواله بتقریر آنها کرده بود بعرض مبارک
رسید — و از روے مکرمت و مرحمت ما یحتاج مقرون اجابت گردید * انشاء الله تعالی بعد از اینکه
آن عمدة الاعیان مصدر خدمتے که مامور گردیده و چنانچه تعهد نموده پسر خود را با جمعیت
خوب بدرگاه والا جاه بفرستد و جهان بکام دولتخواهان گردد — چنانچه التماس نموده زیاده
بر آنچه که رانا سانگا داشت از پیشگاه سلطنت مرحمت شده دقیقهٔ از دقایق حمایت و رعایت
نسبت به آن عمدهٔ دولتخواهان فروگذاشت نخواهد شد — و آن نشان عالیشان که بخط خاص زینت
تحریر یافته و به پنجهٔ مبارک مزیّن گردیده و بمنزلهٔ قول است انشاء الله تعالی آنرا هرگز خلل
پذیر نخواهد بود * وثوق تمام حاصل نموده بر جادهٔ اخلاص و بندگی ثابت و مستقیم بوده
پسر خود را با جمعیت خوب بحضور اقدس بفرستد — که بعد عبور رایات عالیات از نربده آمده
بملازمت اشرف مشرّف شود — و خود بخدمتے که تعهد نموده متوجه شود * از روے بنده
نوازی طرّهٔ مرصّع به آن زبدة الاشباه عنایت نموده شد — عنایات خاص ما را نسبت بخود
روز افزون داند *

***

इन ऊपर लिखे हुए कागज़ोंसे साफ़ ज़ाहिर होता है, कि औरंगज़ेब दिलसे हिन्दुस्तानकी सल्तनतका मालिक बनना चाहता था, और उसको यह भी ख़याल होगा, कि उदयपुरका राणा हमारा रास्ता न रोके. इस लिये यह निशान लिख कर तरफ़दार बनाना चाहा.

महाराणा राजसिंह तो शाहजहांसे बिगड़ ही रहे थे, इस शाहज़ादेकी हिमायतसे उन्होंने मांडलगढ़ वगैरह परगनोंपर क़ब्ज़ा करके मालपुरेकी लूटसे टीकादौड़की रस्म पूरी की. जब शाहज़ादे औरंगज़ेबने शाहज़ादे मुराद समेत नर्मदा उतर कर महाराजा जशवन्तसिंह पर भारी लड़ाई के बाद फ़त्ह पाई, तो उसके बाद महाराणा राजसिंहके नाम यह कागज़ लिखा.

नर्मदाकी फ़त्हका निशान.

✓ नर्मदासे लश्कर पार उतरने बाद उज्जैनसे छः कोसके फ़ासिले पर पहुंचनेके वक्त ख़ानहज़ादपर्वरी और क़द्रदानीसे राजा जशवन्तसिंहको हमने कहला भेजा, कि हम आला हज़रत (शाहजहां) की मुलाज़मतके इरादे पर अक्बराबाद (आगरा) की तरफ़ जाते हैं. उसको चाहिये कि सूबे मालवासे, जो उसके नाम मुक़र्रर हुआ, ख़बरदार होकर लड़ाई और झगड़ेका ख़याल, जिसकी वह ताक़त नहीं रखता, हर्गिज़ न करे; लेकिन् उसने कम लियाक़तीसे ख़राब इरादे पर हैसियतसे ज़ियादह क़दम बढ़ाया, और फ़ौज तय्यार करके लड़ाईको साम्हने आया; इस लिये हम भी अपने प्यारे नाम्वर भाईके इत्तिफ़ाक़से जो गुजरातसे हमारी मुलाक़ातको आये थे, राजाके गुरूर की सज़ा और अदब देनेके लिये फ़त्ह मन्द लश्करको दुरुस्त करके उसका फ़साद दूर करनेके लिये तय्यार हुए. ✓

٥- عمدة الاشباه والاعیان زبدة الامثال و الاقران خلاصهٔ دولتخواهان بااخلاص اسوهٔ متخصصان تمام اختصاص رانا راج سنگه بعنایت بیغایت سرافراز و ممتاز بوده بداند — که چون بعد از عبور رایات عالیات نصرت آیات از دریاے نربده و رسیدن به شش کروهی اجین هرچند از روے خانه زاد پروری و قدردانی براجه جسونت سنگه گفته فرستادیم که ما بارادهٔ ملازمت اعلی حضرت متوجه دارالخلافه اکبرآباد ایم — باید که از صوبهٔ مالوه که بعهدهٔ او مقرر گردیده خبردار بوده اندیشهٔ مجادله و محاربه که نه یاراے امثال اوست نکند — اصلا توفیق قبول آن نیافته بارادهٔ فاسد قدم از اندازهٔ خود فراتر گذاشته افواج آراسته بقصد جنگ پیش آمد — بنابران ما نیز باتفاق برادر بجان برابر امیر ارشد کامگار نامدار عالیمقدار که از گجرات براے ملاقات ما آمده بودند بجهت تنبیه و تادیب و جزاے غرور او لشکر ظفر اثر فتح رهبر را ترتیب نموده متوجه دفع شر او شدیم — و بکرم الهی لشکر آنطرف را که زیاده بربست هزار سوار با توپخانهٔ بسیار بوده در عرض دو پهر شکست فاحش دادیم —

چنانچه اکثر سرداران آن لشکر با شش هفت هزار سوار در میدان جنگ کشته شدند —

खुदाकी बुजुर्गीसे उस तरफ़के लश्करको, जो बड़े तोपखानेके सिवाय बीस हज़ार सवारसे ज़ियादह था, दो पहरके अ़र्सेमें साफ़ शिकस्त दी, और उस लश्कर के अक्सर सर्दार छः सात हज़ार सवारों समेत लड़ाईके मैदानमें मारेगये, और राजा मज़्कूरने सख़्त ज़स्म खाकर भागनेकी बदनामी इख़्तियार की; जिससे तमाम सामान तोपखानह, ख़ज़ानह, हाथी वग़ैरह बर्बाद हुए. इस बड़ी फ़त्हका शुक्र, जो हमको हासिल हुई, किसी तरह हमसे अदा नहीं हो सक्ता. यक़ीन है, कि वह उम्दा ख़ैरख़्वाह इस नेक ख़बरसे ख़ुशी हासिल करेगा, और अपने बेटेको एक अच्छी जमइयतके साथ इक़ारके मुवाफ़िक़ जल्दी हुज़ूरमें रवाना करेगा, और आप उदय-पुरसे कहीं नहीं जायगा. अब मिहर्बानीके तरीक़ेसे जो परगने कि उसके इलाके़ में से निकालकर जागीरदारोंको तनख़्वाहमें देदिये गये थे, उस उम्दा ख़ैरख़्वाहको इनायत कियेगये; उनपर जल्दी क़ब्ज़ा करले.

जिस वक्त़ उसका बेटा मुनासिब जमइयतके साथ हमारी ख़िद्मतमें पहुंचेगा, और ज़माना दोस्तोंके मत्लबके मुवाफ़िक़ हो, तो उन मिहर्बानियोंसे जिनका कि उसकी अ़र्ज़के मुवाफ़िक़ पहिले इक़ार कियागया है, सर्बलन्दी दीजावेगी.

इस मुआमलेमें पूरी ताकीद जानकर हुक्मके मुवाफ़िक़ अ़मल रक्खे, और किसी तरह देर और बहाना न करे.

इसके बाद दाराशिकोह पर आगरेके पास समूनगर में शाहज़ादे औरंग-ज़ेब और मुरादने फ़त्ह पाकर दाराका पीछा किया. विक्रमी १७१५ आषाढ़ शुक्ल १ [हि० १०६८ आख़िर रमज़ान = ई० १६५८ ता० १ जुलाई] को सलीम-पुर मक़ामपर महाराणाके कुंवर सुल्तानसिंह अपने चचा अरिसिंह समेत गये, और इस फ़त्हकी मुबारक्बाद दी.

و راجهٔ مذکور زخمهای کاری برداشته فرار اختیار نموده تمام سامان و توپخانه و خزانه و
فیلخانه را برباد داد * شکر این فتح عظیم و نصرت جسیم که روزی روزگار فرخنده آثار
ما گردیده بهیچ طریق ادا نتوان نمود — یقین که آن عمدهٔ دولتخواهان تمام اخلاص
ازین خبر بهجت اثر ابواب شادمانی و مسرت بر روزگار خویش مفتوح خواهد داشت
و پسر خود را با جمعیت شایسته موافق تعهدے که نموده بزودی روانهٔ حضور پرنور نموده
خود از اودیپور حرکت نخواهد کرد * بالفعل از روے تفضل پرگناتے که از ولایت متعلقهٔ او
که درینولا به تنخواه جاگیرداران داده شده بود به آن زبدهٔ مخلصان مرحمت فرمودیم — بزودی
متصرف شود — که هرگاه پسر او با جمعیت لایق درین سفر خیر اثر بملازمت اقدس برسد و
جهان بکام دولتخواهان گردد — عنایاتے که قبل ازین حسب الالتماس او وعده شده سرفراز خواهد
شد * درین باب تاکید تمام دانسته بموجب حکم والا عمل نماید — اصلا تاخیر و تعلل نکند *

शाहज़ादे औरंगज़ेबने ख़िलअ़त, मोतियोंकी कंठी, सर्पेच, जड़ाऊ छोगा दिया, और महाराणा राजसिंहको देनेके लिये बड़ी क़ीमतका जड़ाऊ सर्पेच भेजा. फिर औरंगज़ेबके साथ यह मथुरा आये; वहां भी कुंवर सुल्तानसिंहको सर्पेच और जड़ाऊ तुर्रा दिया गया. और महाराणाके भाई अरिसिंहको जड़ाऊ धुकधुकी देकर कुंवरको विदा किया. इसके बाद शाहज़ादे मुरादको क़ैद करके औरंगज़ेबने लाहोर तक दाराका पीछा किया.

जब औरंगज़ेब बादशाह बनाहुआ लाहौरकी तरफ़ बढ़रहा था, महाराणाके कुंवर मुल्तानसिंहको मथुरासे रुख़्सत देदी, और अरिसिंह साथ रहे, जिनको राय-रायांकी सरायसे विक्रमी १७१५ भाद्रपद कृष्ण ३ [हि० १०६८ ता० १७ ज़ीक़ाद = ई० १६५८ ता० १६ ऑगस्ट] को ख़िलअ़त, जड़ाऊ जम्धर, मोतियोंकी कंठी, घोड़ा मए सामानके देकर रुख़्सत किया, और महाराणा राजसिंहके नाम फ़र्मान व उम्दा ख़िलअ़त, एक हाथी और हथनी भेजी. फ़र्मानकी नक्ल फ़ार्सी नोटमें और तर्जमा यहां लिखाजाता है.

महाराणा राजसिंहके नाम औरंगज़ेब बादशाहके फ़र्मानका तर्जमा.

बिस्मिल्ला हिर्रहमा निर्रहीम.

मामूली अल्क़ाब व आदाबके पीछे मालूम हो- इन दिनोंमें जो अर्ज़ी साफ़ ख़ैरख़्वाही और उम्दा ताबेदारीसे हमारी ज़बर्दस्त दर्गाहमें भेजी थी, बुज़ुर्ग नज़र से गुज़र कर हमारी मिहर्बानीके बढ़नेका सबब हुई. उस में बाज़ी जागीरोंके मिलने की उम्मेद कीगई है, जो पहिले दिनों में उस ख़ैरख़्वाहके बाप, राणा जगत्सिंह के इलाक़े में थीं, निहायत मिहर्बानी और बहुतसी ख़ुशीके साथ, जो हमको उस उम्दा नेक ख़ैरख़्वाहपर है, उसका पहिला मन्सब जो पांच हज़ारी ज़ात और पांच हज़ार सवार था, छः हज़ारी ज़ात व छः हज़ार सवार और एक हज़ार सवार दो अस्पा सिह अस्पा मुक़र्रर किया गया; और इसके सिवाय पांच ह-

रुपये इनुआमके तौरपर इस मिहर्बानी में जियादा कियेगये– परगने बदनौर और मांडलगढ़, जो एक मुद्दतसे उस उम्दह ख़ैरख़्वाह तावेदारसे उतार लियेगये थे, उन में से पहिला उम्दा राजा, बलन्द ख़ान्दान, बहादुर आदत, मिहर्बानीके लायक़ महाराजा जशवन्तसिंहसे और दूसरा रूपसिंहसे उतार कर शुरू सियाली (ख़रीफ़ ईत ईल) से और परगने डूंगरपुर, बांसवाड़ा, बसावर, ग़यासपुर, जो मुद्दत

بسم اللہ الرحمن الرحیم

(نقل طغرا)

مشور لامع النور
محمد اورنگ زیب بہادر
بادشاہ غازی *

(نقل مہر)

اللہ اکبر
ابن صاحب قران ثانی
زیب
محمد اورنگ شاہ
بہادر غازی ۱۰۶۸

هو الغالب *
العمدهٔ دولتخواهان تمام
اخلاص - نوید ابن الطاف نمایان
ومراحم بیکران استظهار وامتثال
فرا وان الدوحلهٔ بمراسم شکر
گذاری و خدمتگاری قیام نماید -
و بوجهات والا راسا مل حال و
کافل آمال خود داند * چون
مدوا تو عرایض آن زبدة الاعیان
مشتمل بر التماس رخصت ارسی
برادر او از نظر انور گذشت - از
روی عنایت اورا مرخص ساختیم
و خلعت فاخرهٔ با فیل خاصه و
مادهٔ فیل مصحوب او بآن خلاصهٔ
مخلصان مرحمت فرموده ایم *

زبدهٔ نیکخواهان عقیدت
کیش خلاصهٔ هواخواهان
خیراندیش - نتیجهٔ دودمان
وفاجوئی - بقیهٔ خاندان
رضاجوئی - سلالهٔ فدویت
منشان - سزاوار الطاف و
احسان - مطیع الاسلام
رانا راج سنگه — بعنایات
بی نهایت شاهانه مستظهر بوده بداند — عرضداشتی که دریولا از روی خلوص ارادت و رسوخ
عقیدت بدرگاه جهان پناه فرستاده بود از نظر اشرف اعلی گذشت — وباعث مزید مرحمت
والا گشت * وآنچه درباب عطای بعضی محال که درسوالف ایام باقطاع رانا جگت سنگه پدر
آنموده مراحم تعلق داشت معروض واقعان سدهٔ سنیه گردانیده بود بیرایهٔ معلومیت معلی
یافت — از راه نهایت عنایت وعاطفت مرحمتی که نسبت به آنخلاصهٔ صلاح اندیشان عبودیت
کیش داریم - منصب اورا که پنجهزاری ذات و پنج هزار سوار بود - شش هزاری ذات و
شش هزار سوار - یکهزار سوار دواسپه وسه اسپه مقرر فرمودیم - ودوکرور دام دیگر بطریق انعام ضمیمهٔ

से राणा जगत्सिंहकी हुकूमतसे अलहदा होगये थे, गिर्धर पूंजा और हरिसिंह देवलिया वगैरहसे इसी फ़स्लसे उतारकर मन्सबकी ज़ियादह तन्ख़्वाह और इन्आममें नीचे लिखे मुवाफ़िक़ हमने इनायत किये. अब मुनासिब है, कि हमारी बुज़ुर्ग मिहर्बानियों और बलन्द बख़्शिशों को अपने हाल और उम्मेदके मुवाफ़िक़ जानकर इस बड़ी मिहर्बानीका शुक्र अदा करे, और लिखी हुई जागीरोंपर क़ब्ज़ा करके हमेशा ताबेदारी और ख़ैरख़्वाही और ख़िद्मत गुज़ारीके तरीक़ेपर अपने क़दमको मज़्बूत रक्खे, और हमारे पाक हुक्मोंकी तामीलको बलन्द मिहर्बानियोंके ज़ियादा होनेका सबब समझे. लाला कुंवर उस उम्दा ख़ैरख़्वाहका बेटा, और अर्सी उसका भाई हमारी बादशाही दर्गाहमें पहुंचे; जिन्होंने सलाम और हाज़िरीकी बुज़ुर्गी हासिल करके बादशाही मिहर्बानियोंका मौक़ा पाया. उस उम्दा सर्दारकी अर्ज़के मुवाफ़िक़ उसके भाईको बहुतसी बुज़ुर्ग मिहर्बानियोंके साथ इज़्ज़त देकर जल्द वापस जानेकी रुख़्सत बख़्शी जावेगी- तारीख़ १७ ज़ीक़ाद सन् १०६८ हिज्री.

این عاطفت گرانبها دیدیم - و پرگنهٔ بدنور و پرگنهٔ ماندل گده که از مدتی از تعهد نیک خواهان
دولت اندیش تغیر یافته بود - بدستور از تغیر عمدهٔ راجهای والا تبار زبدهٔ متهوران شهامت
شعار سزاوار عنایات بی پایان مهاراجه جسونت سنگه - و دومین از انتقال روپ سنگه از سر آغاز
فصل خریف ایت ئیل - و پرگنهٔ دونگرپور و بانسواله و بساور و غیاث پور را که از دیر باز از تصرف
رانا جگت سنگه برآمده بود - از تغیر گرد هر پونجا و هری سنگه دیولیه وغیره - از ابتداء فصل مزبور در
طلب اضافهٔ منصب و انعام بموجب مفصلهٔ ضمن باو مرحمت کردیم * می باید که الطاف و اعطاف
اشرف ارفع را شامل حال و کافل آمال خود دانسته شکر این عطیهٔ عظمی و موهبت کبری بجا آورده
و محال مزبور را متصرف گردیده - همواره بر مسلک اطاعت و فرمان برداری و منهج عبودیت و
خدمتگذاری راسخ دم و ثابت قدم باشد - امتثال قدسی احکام را موجب زیادتی عواطف و
عوارف معلی داند * دیگر لاله کنور پسر و ارسی برادر آن زبدهٔ هواخواهان عقیدت کیش بجناب
سلطنت رسیدهٔ دولت بار کورنش اقدس یافته مشمول مراحم شاهانه گردیدند - حسب الالتماس
آن عمدة الاعیان برادر اورا عنقریب بگوناگون مرحمت و الا سرفراز ساخته دستوری معاودت
خواهیم بخشید * بتاریخ هفتدهم شهر ذی قعدهٔ سنه ۱۰۶۸ هزار و شصت و هشت هجری تحریر
یافت *

برساله نواب قدسی القاب - نوباوهٔ بوستان خلافت - گزین
ثمر شجرهٔ عظمت - چراغ دودمان ابهت - فروغ خاندان
شوکت - قرهٔ باصرهٔ دولت و اقبال - غرهٔ ناصیهٔ حشمت و اجلال -
گرامی نسب سمی المکان - الممدوح بلسان العبد و الحر
شاهزادهٔ نامدار کامگار بختیار محمد سلطان بهادر * فقط

***
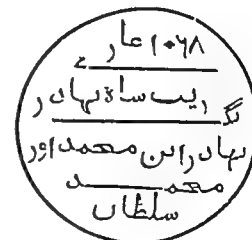
पेशानीकी खास लिखावट (जो शायद बादशाहके हाथसे लिखीगई).

वह उम्दा साफ़ ख़ैरख़्वाह हमारी बहुतसी मिहर्बानियोंसे निहायत मज़्बूती और खुशी हासिल करके शुक्रगुज़ारी और ख़िद्मत गारीके तरीक़े पर क़ायम रहे, और हमारी बलन्द मिहर्बानियों को अपने हाल और उम्मेदोंके मुवाफ़िक़ जाने; इस सबबसे कि उस उम्दा सर्दारकी कई अर्ज़ियां बराबर उसके भाई अर्सीको रुख़्सत मिलनेके वास्ते नज़रसे गुज़रीं; मिहर्बानीसे उस को रुख़्सत दीगई, और उम्दा ख़िल्अ़त और ख़ासा हाथी व हथनी इसके साथ उस उम्दा ख़ैरख़्वाहके वास्ते इनायत फ़र्माई गई.

पीठकी लिखावट.

नव्वाब बादशाही बाग़के नये दरख़्त, बुज़ुर्गीके दरख़्तके फल, बुज़ुर्ग ख़ान्दानके चराग़, इज़्ज़त और नसीब की आंखकी पुतली, बड़े दरजेके नामदार मक्सदवर बख़्तयार, शाहज़ादह मुहम्मद सुल्तानके रिसाले में जारी हुआ.

सुल्तान मुहम्मद
बहादुर, इब्न मुहम्मद
औरंगज़ेब शाह बहादुर
गाज़ी १०६८

मुक़र्रर तफ्सील
छः हज़ारी
छः हज़ार सवार.

दो अस्पा सिह अस्पा-	दूसरे—
एक हज़ार सवार.	पांच हज़ार सवार.

मुक़र्रर तनख़्वाह मए इनआम—
८८००००००० आठ किरोड़, अस्सी
लाख दाम.

مقرره صدی
ششهزاری
۶۰۰۰ — سوار

دو اسپه سه اسپه	برآوردی
۱۰۰۰ — سوار	۵۰۰۰ — سوار

مقرره طلب مع انعام
۸۰۰۰۰۰۰۰ — کرور
۸۰۰۰۰۰۰ — لاکهه
دام
موافق منصب
ششهزاری
۶۰۰۰ — سوار

मुवाफ़िक़ मन्सब-
छः हज़ारी.
छः हज़ार सवार.

दो अस्पा सिह अस्पा-	दूसरे-
एक हज़ार सवार.	पांच हज़ार सवार.

मुक़र्रर तन्ख़्वाह-
६८००००००
छः किरोड़ अस्सी लाख दाम.

आगेकी मुवाफ़िक़-	इन दिनोकी तरक़्क़ी-
पांच हज़ारी.	एक हज़ारी ज़ात.
पांच हज़ार सवार.	एक हज़ार सवार
मुक़र्रर तन्ख़्वाह-	दो अस्पा सिह अस्पा.
५००००००००	मुक़र्रर तन्ख़्वाह-
पांच किरोड़ दाम.	१८००००००
	एक किरोड़ अस्सी लाख दाम.

دو اسپه سه اسپه	بر آوردی
۱۰۰۰-سوار	۵۰۰۰-سوار

مقرره طلب
۶۰۰۰۰۰۰۰- کرور
۸۰۰۰۰۰۰-لاکهه
دام

بدستور سابق	درینولا اضافه
پنجهزاری	یکهزاری ذات
۵۰۰۰-سوار	۱۰۰۰-سوار دو اسپه سه اسپه
مقرره طلب	مقرره طلب
۵۰۰۰۰۰۰۰-کرور	۱۰۰۰۰۰۰۰-کرور
دام	۸۰۰۰۰۰۰-لاکهه
	دام

بصیغهٔ انعام
دوکرور دام
۴۰۰۰۰۰۰۰ کرور
۴۰۰۰۰۰۰-لاکهه　　از پرگنهٔ اودیپور وغیره بدستور سابق
دام

इन्आमके तौर—
२०००००००० दो किरोड़ दाम.
४४०००००० चार किरोड़ चालीस लाख दाम,
परगने उदयपुर वगै़रह से साबिक़ दस्तूर—
४४०००००० चार किरोड़
चालीस लाख दाम.

मन्सबकी तरक़्क़ी और इन्आम—
३७०००००० दाम.

मन्सबकी तरक़्क़ी— इन्आम—
१८०००००० दाम. १९०००००० दाम.

परगने कोटगीर इलाक़े
तिलंगानाके एवज़—
२१०००००० दाम.
पहिले परगने चित्तौड़से—
७०००००० दाम.

मुक़र्रर तनख़्वाह शुरू फ़स्ल ख़रीफ़ ईत ईलसे देख भालकर इनायत कीगई—
४४०००००० दाम.

परगना बदनौर वगै़रह ज़िले
चित्तौड़ सूबे अजमेरसे—
१८००००००, दाम.

डूंगरपुर वगै़रह—
२६००००००

سایر اضافهٔ منصب انعام
۳۰۰۰۰۰۰۰-کرور
۷۰۰۰۰۰۰-لاکهه
دام

سایر عیوض پرگنه کوت گیر
از صوبه تلنگانه
دو کرور ۱۰۰۰۰۰۰-لاکهه
دام

سابق پرگنهٔ حویلی چتور
۷۰۰۰۰۰۰-لاکهه دام

منصب
سایر اضافه
۱۰۰۰۰۰۰۰-کرور
۸۰۰۰۰۰۰-لاکهه
دام

نصیعهٔ انعام
۱۰۰۰۰۰۰۰-کرور
۹۰۰۰۰۰۰-لاکهه
دام

مقرره تنخواه از ابتداء فصل خریف ئیل مرحمت شد طلب اضافه دیدهٔ و د استه
۴۰۰۰۰۰۰۰-کرور
۴۰۰۰۰۰۰-لاکهه
دام

پرگنه بدنور وغیره از سرکار چتور صوبهٔ اجمیر
۱۰۰۰۰۰۰۰-کرور
۸۰۰۰۰۰۰-لاکهه دام

پرگنهٔ ڈونگرپور وغیره
۲۰۰۰۰۰۰۰-دو کرور
۶۰۰۰۰۰۰ لاکهه دام

वदनौर महाराजा जश्वन्तसिंह से उतार कर- १००००००० , एक किरोड़ दाम.

परगना मांडलगढ़ रूपसिंह राठौड़से उतार कर- ८०००००, अस्सी लाख दाम.

डूंगरपुर वगै़रह ज़िले चित्तौड़ सूबे अजमेरसे- २४००००००, दो किरोड़ चालीस लाख दाम.

परगना बसावर वगै़रह ज़िले मन्दसौर सूबा मालवा देवलिया के हरिसिंह से उतारकर- ३००००००, तीस लाख दाम. इन दिनोंमें १००००००, दामकी कमीसे २०००००० दाम.

डूंगरपुर गिर्धर पूंजासे उतार कर- १६००००००, दाम.

बांसवाड़ा रावल समरसी से उतार कर ८००००० दाम.

परगना बसावर २०००००० दाम- इन दिनों ६००००० दामकी कमी से- १४००००० दाम.

परगना ग़यासपुर १०००००० दाम- इन दिनोंमें ४००००० दामकी कमी से- ६००००० दाम.

—∗—

پرگنۂ بدنور از تغیر مہاراجہ جسونت سنگہ
١٠٠٠٠٠٠٠ ـ کرور
دام

پرگنۂ منڈل گڑہ از انتقال روپسنگہ راتہور
٨٠٠٠٠٠ لاکھہ
دام

پرگنۂ ڈونگرپور وغیرہ از سرکار چتور صوبۂ اجمیر
٢٤٠٠٠٠٠٠ ـ دوکرور ٤٠٠٠٠٠ ـ لاکھہ
دام

پرگنۂ بساور وغیرہ از سرکار مندسور صوبۂ مالوہ از تغیر ہریسنگہ دیولیہ
٣٠٠٠٠٠٠ ـ لاکھہ
دام
١٠٠٠٠٠٠ ـ لاکھہ تخفیف دریںولا مرحمت شد
دام
٢٠٠٠٠٠٠ ـ لاکھہ
دام

ڈونگرپور از تغیر گردہر پونجا
١٦٠٠٠٠٠٠ ـ کرور ٦٠٠٠٠٠ ـ لاکھہ
دام

بانسوالہ از تغیر راول سمرسی
٨٠٠٠٠٠ ـ لاکھہ
دام
فقط

پرگنۂ بساور
٢٠٠٠٠٠٠ ـ لاکھہ
٦٠٠٠٠٠ ـ لاکھہ
تخفیف دریںولا
١٤٠٠٠٠٠ ـ لاکھہ
دام

پرگنۂ غیاث پور
١٠٠٠٠٠٠ ـ لاکھہ
٤٠٠٠٠٠ ـ لاکھہ
تخفیف دریںولا
٦٠٠٠٠٠ ـ لاکھہ
دام

—∗∗∗—

औरंगज़ेबने पंजाबसे बंगालेमें पहुंच कर शाहज़ादे शुजाअ्को मुक़ाबले में शिकस्त दी. इस लड़ाईमें महाराणा राजसिंहके छोटे कुंवर सर्दारसिंह भी मौजूद थे, जो पेश्तर औरंगज़ेबके पास पहुंच गये थे; इनको बादशाहने मोतियोंकी एक कंठी, जड़ाऊ सर्पेच और छोगा दिया.

औरंगज़ेब इलाहाबाद (प्रयाग) की तरफ़से लौटा, और शाहज़ादह दाराशिकोह पंजाबसे सिन्ध व कच्छकी तरफ़ होता हुआ गुजरात पहुंचा; वहांसे औरंगज़ेबका मुक़ाबला करनेको विक्रमी १७१५ फाल्गुण शुक्ल २ [हि० १०६९ ता० १ जमादियुल्आख़र = ई० १६५९ ता० २३ फ़ेब्रुअरी] को रवानह होकर सिरोहीमें आया, और वहांसे एक निशान महाराणा राजसिंहके नाम लिखा, जिसका तर्जुमा यह है- (अस्ल फ़ार्सी नोटमें देखो)

शाहज़ादे दाराशिकोहके निशानका तर्जुमा—

मुहरकी नक्ल

अल्लाह
२९
शाह बलन्द इक्बाल मुहम्मद
दाराशिकोह इब्न साहिब
क़िरान सानी शाहजहां
बादशाह ग़ाज़ी
१०६५
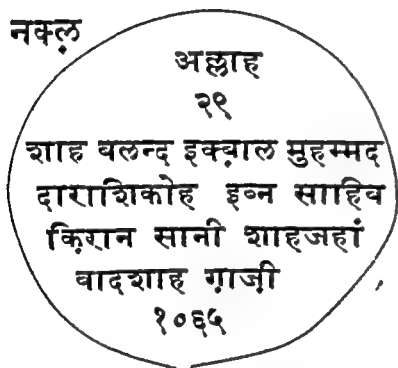
तुग़्राकी नक्ल

मुहम्मद दाराशिकोह
इब्न शाहजहां बाद
शाह

मामूली अल्क़ाबके बाद मालूम हो, हम लश्कर समेत सिरोही आगये हैं, और

هوالغالب

نقل طغرا

شاه جهان بادشاه
محمد دارا شکوه ابن

نقل مهر

* الله *
شاه جهان بادشاه غازی
* ٢٩ * * * * * * * * * *
* صاحب قران ثانی *
* محمد دارا شکوه ابن *
* شاه بلند اقبال *
* ١٠٦٥ *

عمدهٔ راجهاے بلند مکان - قدوهٔ رایان عالیشان - امارت و ایالت پناه شوکت و حشمت دستگاه - سزاوار توجهات گوناگون شایستهٔ الطاف روز افزون - رانا راج سنگه - بوفور عنایات

जल्द अजमेर पहुंचेंगे; हमने अपनी शर्म सब राजपूतों पर छोड़ी है, और अस्लमें हम सब राजपूतोंके मिहमान होकर आये हैं; महाराजा जश्वन्तसिंह भी इस बातपर तय्यार होगया है कि हाज़िरी दे, और वह (महाराणा) हर क़िस्मकी मिहर्बानियोंके लायक़ तमाम राजपूतोंका सर्दार है.

इन दिनोंमें अर्ज़ हुआ कि उस राजाओंके सर्दारका बेटा उस (औरंगज़ेब) के पाससे चला आया है, इस सूरतमें उस उम्दा राजासे हमको यह उम्मेद है, कि तमाम राजपूतोंको साथ लेकर हमारे पास आजावे, कि आपसमें एका करके आला हज़्रतको छुड़ावें. यह नेकनामी उस उम्दह राजाके ख़ान्दानमें वर्षों और युगों तक यादगार रहेगी, अगर आनेमें मुश्किल हो, तो अपने किसी रिश्तेदारको दो हज़ार अच्छे सवारों समेत हमारी ख़िद्मतमें भेजदे, कि मेड़तेमें जल्द पहुंच जावें. हमारी मिहर्बानी अपने हालपर बहुत ज़ियादा समझे.

ता० २० जमादियुलूअव्वल सन् ३२ जुलूस हि० १०६८.

—∞✻✻✻∞—

شاهی مسرور و مباهی بوده باشد - که ما بدولت و اقبال بالشکر فیروزی اثر بسرونج رسیدیم -
و درین نزدیکی باجمیر میرسیم - شرم را بر جمیع رجپوتیه انداختیم - و درمعنی مهمان همه رجپوتان
شده آمده ایم - و بندهٔ راجهاے زمان مهاراجه جسونت سنگه نیز مستعد و طیار شده که آمده
حصول سعادت ملازمت نماید - و آن سزاوار عنایات گوناگون سردار همه رجپوتان است - و
درینولا بعرض رسیده که پسر آن بندهٔ راجها سردار آنجا برخاسته آمده - درینصورت توقّع ازان
عمدهٔ راجها این داریم - که خود تمام رجپوته را با خود گرفته آمده دریافت دولت ملازمت
والا نماید - که باتفاق یکدیگر رفته حضرت اعلی را خلاص سازیم - که این نیکنامی تا سالها و
قرنها درقبیلهٔ آن شایستهٔ توجّهات روز افزون یادگار خواهد ماند * و اگر بداند که آمدن بندهٔ
رایان بلند مکان نمیشود - یکے از خویشان خود را با جمعیت دو هزار سوار کار آمدنی بخدمت
والا بفرستند - که زود آمده در میرته بملازمت والا برسد * عنایات شاهانه را نسبت بحال خود
بمرتبهٔ اعلی تصوّر نماید * تحریر فی التاریخ ۲۰ شهر جمادی الاولے سنه ۳۲ جلوس فقط *

—∞∞—

महाराणा राजसिंह तो दोनों तरफ़का तमाशा देखना चाहते थे, जो उनको मुनासिब था, क्योंकि वे फ़ायदह अपनी ताक़त घटाना ठीक न था. जो बादशाह बनता उसीसे दबना पड़ता; परन्तु महाराजा जश्वन्तसिंहको ज़रूर था, कि दाराशिकोहका साथ देते; क्योंकि शाहजहां जश्वन्तसिंहको अपना तरफ़दार जानता था, और दाराशिकोहका भी उसपर पूरा इत्मीनान था. इसके सिवाय महाराजा जश्वन्तसिंहके लिखने हीसे दाराशिकोह गुजरातसे आगे बढ़ा था. परन्तु महाराजा जश्वन्तसिंह महाराजा जयसिंहके बहकानेमें आकर अपनी जगहसे न हिले, औरंगज़ेब दाराके मुक़ाबलेको अजमेरकी तरफ़ आरहा था, फ़त्हपुरके मक़ामपर महाराणा राजसिंहकी तरफ़से दो तलवार जड़ाऊ सामान समेत और जड़ाऊ बर्छा मीनाकारीके कामका पेश हुआ; और महाराणाके कुंवर सर्दारसिंह, जो शुजाअ़की ही लड़ाईके वक़्से औरंगज़ेबके साथ थे, उनको ख़िलअ़त, मोतियोंकी सुमर्णी, जड़ाऊ छोगा और हाथी, ज़र्दोज़ीकी झूल सहित देकर उदयपुरकी रुख़्सत दी.

महाराणा राजसिंहको गद्दीनशीन होते ही दिल्लीके बादशाहके बर्ख़िलाफ़ कार्रवाई करना मन्ज़ूर था, और बादशाह शाहजहांसे पहिले ही कुछ बिगाड़ हो चुका था, परन्तु इस कुसूरका एवज़ आगरेके क़िलेमें बादशाहके साथ ही क़ैद होगया; और यह आलमगीरके शुरूसे ही तरफ़दार थे, लेकिन् हमेशहसे यह क़ाइदह चला आता है, कि बलन्द हिम्मत आदमी किसीके क़ाबूमें नहीं रहना चाहता, और ज़बरदस्त हाकिम ताक़तवर आदमीका हमेशह बल घटाना चाहता है.

मांडलगढ़ व बदनौरके परगनों पर महाराणा राजसिंहने विक्रमी १७१५ ज्येष्ठ, [हि० १०६८ रमज़ान = ई० १६५८ जून] में ही क़ब्ज़ा करलिया था. दारासे लड़ाई जीतने व शाहजहां को क़ैद करनेके बाद आलमगीरने इन परगनोंके सिवाय डूंगरपुर, बांसवाला, ग्यासपुर, बसावर वग़ैरह परगनोंका भी फ़र्मान बहुतसे इन्आ़म समेत महाराणा राजसिंहके खुश करनेके लिये इसी विक्रमीके भाद्रपद [हि० ज़िल्हिज = ई० सेप्टेम्बर] में लिखभेजा, परन्तु डूंगरपुरके रावल गिर्धरदास, बांसवालाके रावल समरसी और देवलियाके रावत हरिसिंहने उस फ़र्मानके मुताबिक़ ताबेदारी कुबूल नहीं की; इस लिये महाराणाने विक्रमी १७१६ वैशाख कृष्ण ९ [हि० १०६९ ता० २३ रजब = ई० १६५९ ता० १६ एप्रिल] मंगलवारको अपने प्रधान फ़त्हचन्द कायस्थ को नीचे लिखे सर्दार और पांच हज़ार फ़ौज समेत बांसवाले भेजा.

सर्दारोंके नाम- कोठारियेका रावत रुक्माङ्गद, घाणेरावका राठौड़ दुर्जनसिंह, सलूंबरका रावत रघुनाथसिंह, भींडरका महाराज मुहकमसिंह शक्तावत, बेगमका रावत

राजसिंह चूंडावत, माधवसिंह सीसोदिया, कान्होड़का रावत मानसिंह सारंगदेवोत, देसूरीका सोलंखी दलपत, कोठारियेका कुंवर उदयकर्ण चहुवान, शक्तावत गिर्धर, शक्तावत सूरसिंह, ईडरिया राठौड़ जोधसिंह, झाला महासिंह, रावल रणछोड़दास; और सर्दारोंके सिवाय रणजंग हाथी, जो लड़ाईके कामका था, साथ दिया.

वांसवालेसे रावल समरसीने फ़ौजके साम्हने आकर सुलह की, और एक लाख रुपया फ़ौज ख़र्च व दस ग्राम तथा देश दाण (साइर), एक हाथी और एक हथनी महाराणाके लिये नज़ देकर ताबेदारी कुबूल की.

प्रधान फ़त्हचन्द कुछ दिनों तक तो बांसवाले ठहरा, फिर रावल समरसी को साथ लेकर उदयपुर आया. महाराणा राजसिंहने उसे अपना मातह्त समझ कर खुशीके साथ देश दाण और दस ग्राम छोड़दिये, और बीस हज़ार रुपये ख़िल्अ़तके इनायत किये. फिर प्रधान फ़त्हचन्द उसी फ़ौजके साथ देवलियाके रावत हरिसिंहसे लड़नेको गया. रावत हरिसिंह दिल्लीकी तरफ़ भाग गया, और फ़त्हचन्द प्रधानने उनके ठिकानेको लूटकर वर्बाद किया. रावत हरिसिंहकी मा अपने पोते प्रतापसिंहको लेकर फ़त्हचन्दके साथ उदयपुर आई, और पांच हज़ार रुपये सहित एक हथनी महाराणा राजसिंहको नज़ की.

राजसमुद्रकी प्रशस्तिके आठवें सर्गके २३ वें श्लोकमें बीस हज़ार रुपया नज़ करना लिखा है, जो रणछोड़भट्टने ग़लतीसे लिखदिया होगा, क्योंकि फ़त्हचन्द प्रधान ने अपनी बनवाई हुई ग्राम वैड़वासकी बावड़ीकी प्रशस्तिमें, जो उसी वक्तकी है, पांच हज़ार रुपये लिखे हैं, और राजसमुद्रकी प्रशस्ति इस मुआमलेके अठारह वर्ष पीछे तय्यार हुई, इस सबबसे फ़त्हचन्दकी बावड़ीकी प्रशस्तिका लेख सच और माननेके लायक़ मालूम होता है- (देखो पृ० ३८१).

इसके बाद डूंगरपुरके रावल गिर्धरने आपसे ही ताबेदारी मन्जूर करली, और महाराणाने भी उसको इन्आ़म देकर तसल्लीके साथ मातह्त बना लिया.

इसी विक्रमीके श्रावण [हि० ज़ीक़ाद = ई० जुलाई] में महाराणा पहाड़ी दौरा करनेके ख़यालसे पहिले बहुतसी फ़ौज लेकर बांसवालेकी तरफ़ गये. रावल समरसीने दिलसे ख़ातिर तवाज़ो की, जैसा कि मातह्तोंको लाज़िम है.

रावत हरिसिंह, प्रधान फ़त्हचन्दके ख़ौफ़से भागकर बादशाह आलमगीरके पास गया, परन्तु वह पूरा मत्लबी था, कब ऐसे वक्तपर, जब कि वह लड़ाइयोंमें फंसा हुआ था, महाराणा राजसिंहको रन्जीदा करता. वहां सुनवाई न होनेके कारण हरिसिंह लाचार देवलियाको आया, और महाराणा राजसिंह बांसवाले रवाना हुए. इनके देवलियापर चढ़ाई करनेकी ख़बर सुनकर रावत हरिसिंह

बहुत घबराया, और सादड़ी राज सुल्तानसिंह व बेदले राव सबलसिंह, सलूंबरके रावत रघुनाथसिंह, भींडर महाराज मुहकमसिंह, चारों सर्दारोंकी मारिफ़त बात चीत करके रावत हरिसिंह महाराणाके पास हाज़िर हुआ, और ग्यासपुर बसावर वगै़रह परगनोंका दावा छोड़कर ताबेदारी इख्तियार की. रावत हरिसिंह फ़तहचन्द प्रधानके साथ ही हाज़िर होजाता, क्योंकि महाराणा राजसिंह व आलमगीरके बर्तावसे तो वाक़िफ़ ही था, और यह भी निश्चय होगा कि आलमगीर ऐसे वक्तमें महाराणाको नाराज़ नहीं करेगा, लेकिन् इसको अपनी जानका खौफ़ होगा- जैसे कि इसके बाप रावत जश्वन्तसिंहको महाराणा जगत्सिंहने विश्वास देकर बुलाया, और चम्पाबाग़में घेरकर मरवाडाला. कहावत मश्हूर है- कि "दूधका जला छाछको भी फूंक फूंक कर पीता है". राजा व बादशाहों को अपनी ज़बानका विश्वास खोदेनेसे बड़े बड़े नुक्सान उठाने पड़ते हैं.

महाराणा राजसिंह उदयपुर आये, और आलमगीरको राज़ी रखनेके लिये एक हाथी और हथनी चांदीके सामान समेत तथा उम्दा जवाहिरात देकर उदयकर्ण चहुवान को दिल्लीकी तरफ़ रवाना किया. विक्रमी १७१६ आश्विन कृष्ण ८ [हि० १०६९ ता० २२ ज़िलहिज = ई० १६५९ ता० ९ सेप्टेम्बर] को यह सारा सामान दिल्लीमें बादशाहके नज़ हुआ. इसके बाद इसी विक्रमीके पौष कृष्ण ८ [हि० १०७० ता० २२ रबीउल्अव्वल = ई० १६५९ ता० ६ डिसेम्बर] के दिन बादशाहने उदयकर्ण चहुवानको एक घोड़ा और महाराणा राजसिंहके लिये जाड़ेके मौसमका खिलअ़त देकर रवाना किया; और इसी दिन कृष्णगढ़के राजा रूपसिंहके बेटे राजा मानसिंहको जड़ाऊ जम्धर और मोतियोंकी कंठी देकर घर जानेकी रुख्सत दी.

महाराणा राजसिंह बाण विद्या (निशानाबाज़ी) में भी पूरे थे, जिन्होंने इसी संवत् में सन्तूके मगरेमें एक सांभर पर तीर मारा, और वह एक ही तीरमें मरगया, जिसकी यादगारके लिये उस जगह पर एक स्तम्भ बनायागया, और उस पर प्रशस्ति खुदवाई गई; जो अब तक मौजूद है- (शेष संग्रह नम्बर २).

इन महाराणाके वक्त में खवासण सुन्दरने विक्रमी १७१७ [हि० १०७० = ई० १६६०] में उदयपुरसे २॥ मील ईशान कोणको ग्राम पारड़ाके पास सुन्दर बाव नामकी बावड़ी बनवाई, और उसकी प्रतिष्ठा में महाराणाने व्यास गोविन्दराम, व्यास बलभद्रको भवाणा ग्राम में ७५ बीघा ज़मीन दी. इस ज़मीन पर गोविन्दरामकी माने बावड़ी कराई, और उसीने लालीकी सराय बनवाई- (शेष संग्रह नम्बर ३).

विक्रमी १७१७ [हि० १०७० = ई० १६६०] में जिस तरह महाराणा राजसिंह और बादशाह आलमगीरके बिगाड़ हुआ, वह लिखाजाता है--

कृष्णगढ़ व रूपनगरके राजा रूपसिंहकी बेटी चारुमती बहुत खूबसूरत थी, इसलिये बादशाह आलमगीरने उसकी तारीफ़ सुनकर राजा रूपसिंहके बेटे मानसिंहको हुक्म दिया, कि तुम्हारी बहिनसे हम शादी करेंगे. मानसिंहने इस बातको मन्जूर किया, क्यों कि जहांगीर बादशाहने यह रीति निकाली थी, कि बादशाही हुक्मके बगैर राजा या रईस कोई भी आपसमें विवाह न करे; इससे ज़ाहिरा मत्लब यह होगा, कि आपसकी रिश्तेदारीसे एका करके सल्तनतमें खलल न डालें, परन्तु अन्दरूनी मन्शा यही होगा, कि स्वरूपवती लड़कियें बादशाही हरमखानेमें दाखिल की जावें.

फ़ार्सी तवारीखोंमें यही बात इस तरह लिखी है, कि फ़लाने राजाने अर्ज़ की, कि मेरी बेटी खूबसूरत है, सो कुबूल होकर बादशाही हरमखानेमें दाखिल हो; लेकिन् यह बात माननेमें नहीं आती, क्यों कि उस समय भी राजपूत लोग अपनी बेटियां मुसल्मान बादशाहोंको देनेमें अपनी कम इज़्ज़ती समझते थे; जैसे कि जयपुरके राजा भारमल्ल और भगवान्दासकी बेटियां अक्बर और जहांगीरको ब्याहनेके सबब मानसिंह और महाराणा प्रतापसिंहमें विक्रमी १६३० प्रथम आषाढ़ [हि० ९८१ सफ़र = ई० १५७३ जून] को उदयसागर तालाबकी पालपर इसी तानेके सबब खाना खानेसे इन्कार और बड़ी ज़िद हुई, जिसका हाल महाराणा प्रतापसिंहके ज़िक्रमें पूरे तौरपर लिखागया है.

दूसरे, रीवांके बघेलोंने बादशाहको प्रसन्न करके वचन लेलिया, कि हम बादशाहोंको बेटियां न दें; और इसी तरह बूंदीके राजाओंने मेवाड़से अलग होते समय बादशाह अक्बरसे इक़ार करलिया था, कि हम बादशाहोंको बेटी न देंगे; अगर बेटी देनेमें वे इज़्ज़ती न जानते, तो ऐसे इक़ार न करते.

तीसरे, जोधपुरके महाराजा अजीतसिंह और जयपुरके राजा सवाई जयसिंहको विक्रमी १७६५ [हि० ११२० = ई० १७०८] में महाराणा अमरसिंहने अपनी बहिन और बेटी ब्याही, तो उन दोनों राजाओंने यह इक़ार लिखदिया, कि अब हम तुर्कोंको हर्गिज़ बेटियां न देंगे. इन बातोंके लिखे हुए अस्ल कागज़ मेवाड़के कारखानेमें मौजूद हैं, और वे इस किताबमें भी मौक़ेपर दर्ज कियेजावेंगे.

इन्हीं बातोंसे हरएक शख़्स खयाल कर सक्ता है, कि मुसल्मान बादशाहोंको राजा लोग अपनी बेटियां खुशीसे नहीं देते थे. अक्बर बादशाहने राजनीतिसे यह रस्म जारी करदी, इसी कारण बादशाहोंके मांगने पर लाचारीसे राजा लोग बेटियां

देते होंगे; अगर वे लोग खुशीसे बादशाहोंको अपनी लड़कियां ब्याह देनेकी आर्जू करते, तो दूसरे मुसल्मान सर्दारोंके साथ और और राजपूत भी इसी तरह बरतते, और एक आम रिवाज होजाता; परन्तु सिवाय बादशाहोंके आम मुसल्मानोंके साथ यह रिवाज बिल्कुल नहीं पायागया, सिवाय इसके कि गुजरातके सूबेदारोंने बाज़ ज़मींदारोंसे हाकिमाना तौरपर बेटियां लीं.

मानसिंहने अपने घर आकर ज़िक्र किया, कि बाई चारुमतीकी सगाई बादशाह आलमगीरसे करनेकी पक्की बात चीत होगई है.

राजपूतानह में तो यह भी मश्हूर है कि आलमगीरने अहदी और नाज़िर लोगोंको रूपसिंहकी बेटीका डोला लेआनेके लिये रूपनगर भेजदिया था. रूपसिंहकी बेटी चारुमती बाईने भी सुना कि मैं मुसल्मान बादशाहके साथ ब्याही जाऊंगी; उनके घरानेमें वल्लभीय संप्रदायका मत नाथद्वारेकी उपासनाके साथ पहिले ही से था. रूपसिंहको इस मत और श्रीनाथजीकी मूर्तिपर ऐसा विश्वास था, कि दारा और औरंगज़ेबकी समूनगरकी लड़ाई में जब वह घायल होकर ज़मीन पर गिरपड़ा, उस आख़िरी वक़्में एक ब्राह्मणसे जो वहां मौजूद था यह कहा, कि मेरे गलेमें जो हीरोंका जड़ाऊ बेश क़ीमती कंठा है, उसे तू खोलकर लेजा, और श्रीनाथजी की भेट करना; इसके एवज़में गुसांईजी पांच हज़ार रुपया तुझे इन्आम देंगे. वह ब्राह्मण कंठा लेकर मथुरा पहुंचा, जहां उन दिनों श्रीनाथजीका मश्हूर मन्दिर था; वह कंठा खूनमें भरा देखकर गुसांईजीने साफ़ करनेके लिये किसी सुनारको दिया. गुसांई लोग व उनके मानने वाले वैश्नव बहुतसी करामाती बातें उस कंठेके विषयमें कहते हैं, जिनका यहां लिखना फुज़ूल है, परन्तु उनमेंकी एक यह बात यहां लिखी जाती है, कि राजा रूपसिंह श्रीनाथजीका ऐसा सच्चा भक्त था, कि जिसका भेजा हुआ खूनसे भराहुआ कंठा आधी रातके वक़् सुनारके घरसे लाकर श्रीनाथजीने धारण करलिया. इस बातके लिखनेसे हमारा मत्लब यह है, कि अक्सर मत वाले (मज़्हबी) लोग दूसरे लोगोंको अपने मतमें मिलानेके लिये ऐसी बातें बना लिया करते हैं.

राजा रूपसिंहका इन गुसांई लोगोंपर बहुत यक़ीन था. ये गुसांई लोग दूसरे मतवालोंसे बड़ा बचाव रखते हैं, यहां तक कि जिस शहर या आदमीके नाम में कोई फ़ार्सी या अरबी शब्द हो, तो उसका नाम मन्दिरमें कभी नहीं लेते, और उसके एवज़ समझौतीके लिये संस्कृत नाम रखलेते हैं. इसी ज़िदसे राजा रूपसिंहकी बेटी चारुमती बाईने अपनी मा और भाईसे कहा, कि अगर मेरा विवाह मुसल्मान बादशाहसे करोगे, तो अन्न जल छोड़कर या ज़हर खाकर जान खो-

दूंगी. यह सुनकर घर में और भी रंज हुआ; परन्तु आलमगीरसे ज़ियादा ऐसा कौन राजा था, कि जो इस कन्यासे विवाह करे. फिर कुटम्बके सब लोगोंने एकट्ठा होकर यह सलाह की, कि हम लोग तो बादशाहके फ़र्मांबर्दार बने रहें, और यह लड़की खुद अपनी अर्ज़ी महाराणा राजसिंहके पास भेजे, और वे आकर ज़बर्दस्ती विवाह लेजावें, तो इसके प्राण बचें, और हमारी ख़राबी न हो; वर्ना और दूसरी कोई तदबीर नहीं नज़र आती. सबकी सलाहसे चारुमती बाईने एक अर्ज़ी अपने हाथसे लिखकर किसी ब्राह्मणके हाथ महाराणा राजसिंहके पास भेजी, जिसमें यह लिखा था, कि जिस तरह भीष्म राजाकी बेटी रुक्मणीके ब्याहनेको दुष्ट राजा शिशुपाल चढ़आया, और रुक्मणीकी अर्ज़ी जानेपर श्रीकृष्णचन्द्र द्वारिकासे चढ़े, और शिशुपालको हराकर रुक्मणीको लेआये, उसी तरह मुसल्मान बादशाह आलमगीरके पंजेसे मुझको छुड़ाइये, और मेरा धर्म और प्राण रखकर विवाह लेजाइये, यदि आप देर करेंगे तो मैं विष खाकर मरूंगी, और यह गुनाह आपके सिर रहेगा.

इस अर्ज़ीके आते ही महाराणा राजसिंहने बहुतसी फ़ौजके साथ कृष्णगढ़की तरफ़ कूच किया, वहां पहुंचकर राजा मानसिंहको तो नामके लिये एक महलमें क़ैद किया, और उनके लोगोंका आना जाना बन्द करके शादी करनेके बाद सबको छोड़कर वहांसे रवाना हुए, और राणी राठौड़को लेकर उदयपुर चले आये. कृष्णगढ़वाले यह भी कहते हैं, कि मांडलगढ़का क़िला जो बादशाही तरफ़से मिला था, इसी शादीके दहेज़में महाराणाको महाराजा मानसिंहने दिया; परन्तु राजसमुद्रकी प्रशस्तिमें इस विवाहसे दो वर्ष पहिले इस क़िलेको लेना लिखा है.

इस बातकी चर्चा फैली, और लोगोंको यह अन्देशा हुआ, कि आलमगीर नाराज़ होकर महाराणा पर ज़रूर फ़ौज भेजेगा. देवलियाका रावत हरिसिंह तो ऐसा मौक़ा देख ही रहा था, दौड़कर आलमगीरके पास पहुंचा, और इस बातकी ख़बर दी. यह सुनकर बादशाह नाराज़ तो हुआ, लेकिन् ज़ाहिरा इस बातको टाल दिया. क्यों कि ज़ाहिरा इसपर गुस्सा करनेसे ज़ियादह फ़ज़ीहत होती, कि बादशाहकी मगनी कीहुई लड़की राजसिंह विवाह लेगये. परन्तु दिलसे तो नाराज़ हुआ, और इसीसे ग्यासपुर व बसावर देवलियाके रावत हरिसिंहको पीछा देकर महाराणा राजसिंहके नाम फ़र्मान लिख भेजा, जिसका ज़िक्र आगे आता है.

जब बादशाह आलमगीरने ग्यासपुर और बसावर उदयपुरसे अलग करके रावत हरिसिंहको देदिये, और महाराणाने सुना तो बर्दाश्त न हुई, बल्कि देवलिया पर फ़ौज भेजनेका इरादह किया; परन्तु मन्त्रियोंकी सलाह और सब मुलाज़िमोंकी एक मति होनेके सबब बादशाहके नाम एक अर्ज़ी लिखी, जिसकी नक़्ल उसी वक़्की हमारे पास मौजूद है; उसका तर्जमा फ़ार्सी नोट समेत नीचे लिखाजाता है.

अर्ज़ीका तर्जमा.

आदाब व अल्क़ाबके बाद अर्ज़ है- कि सुबह शाम, बल्कि हमेशा आपकी उम्र, दौलत और बादशाहतकी ख़ैरियत मुद्दत तक बरक़रार रहनेकी दुआ ईश्वरसे करता रहता हूं, कि वह हरतरहसे आपका मर्तबा बलन्द करे.

दूसरे अर्ज़ है, कि जो बुज़ुर्गीका फ़र्मान बहुत मिहर्बानीसे मेरे पास आया, उसका ताज़ीमके साथ इस्तिक़्बाल करके तस्लीम और ताज़ीमके साथ दोनों जहानकी बुज़ुर्गी (बड़प्पन) हासिल की. उसमें लिखा था, कि बादशाही हुक्मके बग़ैर शादीके वास्ते कृष्णगढ़ गया, जो ज़ाती बन्दगीसे दूर दिखलाई दिया; सो क़िब्ले दीन और दुन्याके सलामत, राजपूतोंका रिश्ता सदासे राजपूतोंहीके साथ होता आया है, और इस सूरतमें कोई मनाई भी जानने में नहीं आई; पहिले राणा भी पुंवारोंके घर अजमेरके पास ब्याहे थे, इसी सबबसे मैंने भी हुक्मकी दर्ख़्वास्त नहीं की, और न कोई बादशाही मुल्कमें फ़साद पैदा हुआ, कि अर्ज़ करे.

मैंने आपकी शाहज़ादगीके मुबारक वक़्से ही अपनी साफ़ नीयतीके साथ जहान में ख़ास इनायतों और दौलतसे तरक़्क़ी पानेकी ग़रज़से बुज़ुर्गी पानेकी उम्मेद रक्खी है.

هو الغالب

اشرف اقدس ارفع اعلى

عرضداشت که بدرگاه جهان پناه ارسال داشته * بندهٔ درگاه خیرخواه بلا اشتباه رانا راج سنگه - مراسم آداب بندگی و لوازم عبودیت و پرستندگی بجا آورده بموقف عرض بوسیلهٔ ایستادهای پایهٔ سریر سلطنت سلیمانی میرساند - که صبح و شام بلکه على الدوام در وظایف دعاگوئی دولت و خلافت ابد طراز اشتغال داشته درگاه کارساز حقیقی استدعا مینماید - که الهی سایهٔ بلندپایه برفرق جمیع خیرخواهان تا انقراض دهر ممدود و مخلد باد - آمین - ثانیاً التماس میدارد - که قبلهٔ جهان و جهانیان سلامت - فرمان عالیشان که از روی عنایات بیغایات بنام بندهٔ درگاه شرف صدور یافته بود - بقدم اطاعت استقبال آن نموده لوازم تعظیمات و تسلیمات بجا آورده سرافراز کونین گردید - مزین بود که بی صدور حکم جهان مطاع آفتاب شعاع که جهت کتخدا شدن بکشن گده رفته بود - از آداب ذاتی بعید نمود * قبلهٔ دین و دنیا سلامت - پیوند راجپوتان براجپوتان شده آمده است - درین صورت هیچ منافی ندانسته - و سابق رانایان نیز بخانهٔ پنواران متصل دار الخیر اجمیر کتخدا شده بودند - ازین جهت بندهٔ درگاه استدعای حکم ننموده - هیچگونه درملک بادشاهی فتور واقع نگشته که بعرض برساند *

و بندهٔ درگاه از ایام مبارک شاهزادگی بعقیدهٔ خاص دست بدامن دولت ابد پیوند

और यह भी लिखा था कि हरिसिंह, बेकुसूर था, इस वास्ते उसको बसावरका परगना और ग़यासपुर हमने इनायत फ़र्माया है. क़िब्ले ज़मीन और ज़मानेके सलामत- अक्बर और जहांगीरके समयसे देवलिया हुक्मके मुवाफ़िक़ मेरे बाप दादेकी हुकूमतमें था; शाहजहांके वक्में दूसरी तरह हुआ, वह भी अर्ज़में पहुंचा होगा. और परगनों मज़्कूरके इनायत होनेके वक़ भी भाई अर्सीने तीन चार बार अर्ज़ किया कि हुक्मसे कुछ चारा नहीं, पर आख़िरको उसे इनायत फ़र्मावेंगे; फिर हुक्म सादिर हुआ कि हुक्म बादशाहोंका सिकन्दरकी दीवारके मानिन्द मज़्बूत है, हर्गिज़ नहीं बदलेगा, ख़ातिर जमासे क़ब्ज़ा करे. इसी तरह इसी मज़्मूनकी दो तीन बार अर्ज़ी भेजकर फ़र्मान हासिल किया; उसमें लिखा है, कि जिस तरह जाने अमल करे, कि इहतियातन् आख़िरको सनद हो; काका जयसिंहके साथ वैसे ही बुजुर्ग हुक्म जारी हुआ. जहानके इन्तिज़ामकी जड़ ख़ास मज़्बूत हुक्मपर है.

رده - که از عنایات خاص الخاص در میان عالمیان باضافهٔ و ترقی دولت سرافرازی خواهد یافت -
و نیز مرقوم بود "که چون هریسنگه بے تقصیر بود - بنابر آن پرگنهٔ بساور و غیاث پور بار با و مرحمت
فرمودیم" *
کعبهٔ زمین و زمان سلامت - اولا هریسنگه مذکور از عهد حضرت عرش آشیانی و حضرت
جنت مکانی بموجب احکام متعلق خدمت آبا و اجداد بندهٔ درگاه بود - چندگاه در عهد حضرت
صاحب قران ثانی نوع دیگر شده - آن نیز بعرض رسیده باشد * و در وقت عنایات پرگنات مذکور
برادر ارسی سه چهار مرتبه بعرض رسانیده - که از حکم هیچ چارهٔ نیست - اما تا فی الحال با و مرحمت
خواهند فرمود - حکم صادر شد "که حکم بادشاهان چون سد سکندر است - هرگز تبدیل نخواهد شد -
بخاطر جمع تگیرید" * همین آئین مشتمل بر همین مضمون دو سه کرت عرضه داشت ارسال داشته
فرمان عالیشان حاصل نمود - دران چنین مرقوم است که "بهر وجهی که بداند عمل نماید" *
از جهت احتیاط که تا فی الحال دست آویز باشد بمصحوب عموی جے سنگه بعرض رسانیده -
آن چنان حکم شرف نفاذ یافت - مطابق چندین حکم جهان مطاع عالم مطیع که مدار انضباط
عالم خاص بر حکم محکم است متصدیان خود را با چندے راجپوتان به آن پرگنات فرستاده -
هریسنگه مذکور از روے ناعاقبت اندیشی و بدطینتی خلاف حکم نموده رعایاے پرگنات مذکور
را بدراه ساخته - حیله آموزي درپیش آورد - بعد از چند روز هر دو پرگنه را مطلقاً برهم نموده
برخاسته رفت - و کسان خود را در بے گذاشته که اصلا این جا را آبادان شدن ندهید * بالضرور
بموجب احکام مقدس جمعیتے را به آن ضلع فرستاده * آن ناعاقبت اندیشان مواضعات را زده
زده در کوهستان در آمده میگشتند - فصل خریف را این قسم خوردند و فصل ربیع را سر اثر نموده
رعایا را قرار داده هر دو فصل را همچنین نمودند - چنانچه یکدانه محصول پرگنات مزبور
بدست بندهٔ درگاه نیامده - و تصرف جمعیت و پریشانی به واقفان درگاه سلاطین سجده گاه
روشن است که در حیلے تصرفات افتاده - و الحال از بے طالعی چنین حکم شرف نفاذ یافته *

बहुतसे बादशाही हुक्मोंके मुवाफ़िक़ अपने मुत्सद्दियोंको कितनेएक राजपूतों समेत उन परगनोंमें भेजा, जिसपर हरिसिंहने हुक्मके बर्ख़िलाफ़ बेसोचे बदज़ातीसे परगनोंकी रअ़य्यतको गुमराह करके हीला किया, थोड़े दिनोंके बाद उन परगनोंको बिल्कुल् ऊजड़ करके आप भी उठगया, और अपने आदमियोंको वहां छोड़ गया कि इस जगहको हर्गिज़ आबाद न होनेदेवें. तब ज़रूरतसे बुज़ुर्ग हुक्मोंके मुवाफ़िक़ एक जमइयत उस जगह भेजी; वह बेवकूफ़ रअ़य्यतको उजाड़कर पहाड़ोंमें फिरता था. सियालीको तो इस तरह खोया, और उन्हालीको भी ख़राब करके रअ़य्यतको परेशान किया- दोनों फ़स्लोंको ऐसा खोया कि एक दाम भी परगनों मज़्कूरका मेरे हाथ नहीं आया. जमइयतका ख़र्च और परेशानी आपको रौशन है, कि बहुत ज़ेरबार हुआ, अब बे नसीबीसे ऐसा हुक्म हुआ; उस शख़्सकी अजब नेक बख़्ती है, कि जो हुक्मसे ख़िलाफ़ करे, उसको ऐसा हुक्म हो; और वह शख़्स, जो कि दौलत ख़्वाहीमें कुर्बान हुआ हो, उसको ऐसा हुक्म हो! इस सूरतमें कुछ इलाज नहीं, इन्साफ़ हुज़ूरके हाथ है. बाक़ी हक़ीक़त उदयकर्ण चहुवानके रवाना करनेके पीछे हरिसिंहको परगनोंके इनायत होनेकी ज़ाहिर हुई. इसवास्ते अब पीछेसे अर्ज़ करके उम्मेदवार है कि जो कुछ चहुवान मज़्कूर अर्ज़ करे, कुबूल फ़र्माया जावे.

यह अर्ज़ी लेकर कोठारियेका उदयकर्ण चहुवान आलमगीर बादशाहके पास दिल्ली पहुंचा. वहां जाकर इन परगनोंके मिलने और रावत हरिसिंहको मातह्त करनेकी बहुत कोशिश की, लेकिन् सब बे फ़ायदह गई.

विक्रमी १७१८ पौष शुक्ल १० [हि० १०७२ ता० ८ जमादियुल्अव्वल् = ई० १६६१ ता० ३१ डिसेम्बर] को तसल्लीका फ़र्मान और ख़ास ख़िल्अ़त

زہے سعادت شخصے کہ چنیں خلاف حکمی نمودہ اورا چناں حکم شد- وآں کسے کہ در راہ دولتخواہی فدا شدہ است آں را ہمچنیں حکم صادر گشت * دریںصورت ہیچ چارہ نیست- انصاف وعدل بدست واقتدار حضور پرنور است * وبعد از روانہ نمودن اودیکرن چوہان از واقعۂ دربار عالم مدار حقیقت پرگنات کہ بہ ہریسنگہ مرحمت شدہ ظاہر گردیدہ- بنابر آں از عقب عرضہ داشت نمودہ امیدوار است- آنچہ کہ عرض چوہان مذکور نماید- مقرون اجابت گردد * آفتاب اقبال از مشارق اجلال ساطع ولامع باد- آمیں *

देकर उदयकर्ण चहुवानको किसी बादशाही इज़्ज़तदार मुलाज़िमके साथ उदयपुर भेजा. उस शाही मुलाज़िमने ज़बानी बातोंसे महाराणाको हिम्मत दिलाई, परन्तु कहावत मश्हूर है, कि- "दामोंका लोभी बातोंसे राज़ी नहीं होता"- दिन दिन नाइत्तिफ़ाक़ी बढ़ती जाती थी.

कृष्णगढ़वाले राजा मानसिंहने भी अपनी कम उम्री, नाताक़ती और महाराणा राजसिंहकी ज़बर्दस्ती जतलाकर अपनी बहिनके विवाह लेजानेका ज़िक्र आलमगीर से किया, और यह भी कहा कि मैं तो हर तरह ताबेदार हूं, मेरी दूसरी बहिन हाज़िर है. तब आलमगीर बादशाहने विक्रमी १७१८ माघ शुक्ल ६ [हि० १०७२ ता० ९ जमादिउस्सानी = ई० १६६२ ता० २६ जैन्यूअरी] को महाराजा मानसिंहकी दूसरी बहिनसे बड़े शाहज़ादे मुअ़ज़्ज़मकी शादी करदी, जिस वक़् कि शाहज़ादेकी उम्र १७ वर्षकी थी.

महाराणा राजसिंहको इमारतका बहुत शौक़ था. इन्होंने महाराणा जगत्सिंह के सामने अपने कुंवर पनेमें "सर्व ऋतु विलास" बाग़ और उसमें महल, हौज़, फ़व्वारे तथा बावड़ी, महाराणा कर्णसिंहकी बनवाई हुई कर्णबाव नामकी बावड़ीके पास बनवाई, और उसी ज़मानेमें इन महाराणा (राजसिंह) का पहिला विवाह बूंदीके राव शत्रुशालकी बेटीके साथ हुआ था. उन्हीं दिनोंमें राव शत्रुशालकी दूसरी बेटीके व्याहनेके लिये जोधपुरके महाराजा जश्वन्तसिंह भी आये थे, और तोरण बांधने पर कुंवर राजसिंहसे तक़ार भी होगई थी, क्योंकि जश्वन्तसिंहने कहा कि हम क़दीमी राजा और जयचन्दकी औलादमें हैं, जिनको कि हिन्दुस्तानके सब राजा बड़ा मानते थे. महाराज कुमार राजसिंहने कहा कि हम 'हिन्दवा सूर्य' और चित्तौड़के राजा हैं, तुम्हारे बाप दादोंने हमारे बाप दादोंकी नौकरी की है; इस लिये पहिले तोरण बांधना हमारा हक़ है.

ऐसी बातोंपर ज़िद बढ़कर दोनों तरफ़से लड़नेको फ़ौजें तय्यार होगईं, तब राव शत्रुशालने महाराजा जश्वन्तसिंह और उनके साथियोंको समझाया, कि उदयपुर के राणा क़दीमसे हिन्दवासूर्य कहाते हैं, और मुसल्मान बादशाहोंके समयमें भी इन्हीं के सबब हमारा धर्म रहा, वर्ना सबको बादशाह मुसल्मान करडालते. इस तरह समझाकर जश्वन्तसिंहको ख़ामोश किया. और कुंवर राजसिंहने पहिले तोरण बांधा. राव शत्रुशालने दोनोंमें मिलाप करवादिया, परन्तु इस बखेड़ेके सबब दोनोंकी ज़िन्दगी तक दिलसे रंजका दाग़ न मिटा.

जश्वन्तसिंहने महाराणा जगत्सिंहके समयमें उनका बधनोरका परगना शाहजहां बादशाहसे अपनी जागीरमें लिखवा लिया था, सो इन महाराणा

(राजसिंह) ने मौक़ा देखकर जश्वन्तसिंहसे पीछा छीन लिया; इसी तरह बिगाड़ होता रहा.

विक्रमी १६९८ [हि० १०५१ = ई० १६४१] में महाराणा राजसिंह का दूसरा विवाह जैसलमेर हुआ. विवाहसे वापस आते समय गोमती नदी को देखकर वहीं एक सुन्दर तालाब बनवानेकी मर्ज़ी हुई थी, वह उस वक़ तो न बना और विक्रमी १७१८ मार्गशीर्ष [हि० १०७२ रबीउ़स्सानी = ई० १६६१ नोवेम्बर] में जब रूपनारायणके दर्शनके लिये महाराणा राजसिंह उधर गये, तब पहिले मन्सूबेके मुवाफ़िक़ फ़र्माया, कि हम यहां एक तालाब बनवाना चाहते हैं. पुरोहित ग़रीबदासने अ़र्ज़ किया, कि यह तो होसक्ता है, परन्तु इसमें तीन बातोंका बन्दोबस्त होना चाहिये- अव्वल तो रुपयेके ख़र्चकी तरफ़ ख़याल न रक्खाजाय; दूसरे कामके अन्जाम तक ऐसी ही तवज्जुह रहे; तीसरे मुसल्मान बादशाहोंसे झगड़ा न हो; वर्ना वे इसको पूरा न होने देंगे.

महाराणाने तीनों बातों का इक़ार किया, और विक्रमी १७१८ माघ कृष्ण ७ बुधवार [हि० १०७२ ता० २१ जमादियुल् अव्वल = ई० १६६२ ता० १२ जैन्यूअरी] को राज समुद्र तालाबकी नीवका खातमुहूर्त किया गया. इस तालाबके बनवानेके कई सबब लोग बयान करते हैं- कोई कहता है, कि जब महाराणा जैसलमेरसे शादी करके वापस आते थे, तो बारिशकी ज़ियादतीसे गोमती नदीका बहाव बढ़गया, इससे दो तीन दिन ठहरना पड़ा, तब महाराणाने विचारा कि इस नदीको रोकना ज़रूर है. किसीका कहना है कि महाराणाने अपने एक पुत्र, एक बारहठ, एक पुरोहित व महाराणीको मारडाला था, इस लिये वह हत्या उतारनेके वास्ते यह तालाब बनवाया, जिसका ज़िक्र इस तरहपर है--

महाराणाके पास कोई बादशाही मुलाज़िम (१) दिल्लीसे आया, तब इन्होंने शाहाना दर्बार किया, और हुक्म देदिया कि कोई ताज़ीमी सर्दार दर्बारमें पीछेसे न आवे, अगर आवेगा तो हम ताज़ीम न देंगे. बारहठ उदयभाणने कहा कि आजके दिन बादशाही एल्चीके साम्हने ताज़ीम न हो तो फिर इज़्ज़तके लिये और कौनसा दिन होगा. महाराणा दर्बार किये हुए बिराजे थे, कि बारहठ उदयभाण मना करने

(१) विक्रमी १७११ [हि० १०६४ = ई० १६५४] में जो शाहजहां बादशाहकी तरफ़से एल्ची बनकर मुन्शी चन्द्रभाण आया था, सो शायद यही हो.

पर भी आया और मामूलके मुवाफ़िक़ आशीर्वाद दिया, लेकिन् महाराणा नहीं उठे; तब बारहठने नाराज़ होकर मारवाड़ी भाषामें निशाणी छन्द कहा, जिसके आख़िरी मिस्रे ये हैं-

गया राणा जगतसिंह जगका उजवाला ॥
रही चिरम्मी बप्पड़ी कीधां मुंह काला ॥

इन दोनों मिस्रोंका यह अर्थ है- कि जगतको रोशन करनेवाले महाराणा जगतसिंह संसारसे उठगये, और उस जगहपर काले मुंहकी चिरमिटी (घूंघची) रहगई है.

महाराणा इस शाइरीको न सुन सके, और गुस्सेमें आकर एक लोहेका गुर्ज़, जो पास रक्खा था, बारहठके सिरपर मारा, जिससे वह वहीं मरगया. कोई इस बात को इस तरह भी कहता है, कि उदयभाणको क़ैद किया, और वह क़ैदमें ही अपने हाथसे फांसी लगाकर मरगया.

इन्हीं महाराणाकी राणीने (१) अपने बेटे सर्दारसिंहको युवराज बनानेके लिये बड़े कुंवर सुल्तानसिंहकी तरफ़से महाराणाको शक दिलाकर उनका चित्त कुंवर की तरफ़से हटाया, और महाराणाने नाराज़ होकर उसी गुर्ज़से कुंवर सुल्तानसिंह का काम तमाम किया. थोड़े दिन पीछे अपने पुरोहितको उसी राणीने एक पत्र लिखा, कि मैंने सुल्तानसिंहको तो इस फ़रेबसे मरवाडाला, अब दर्बारको भी ज़हर देदेना चाहिये, जिससे कि मेरा बेटा राज्यका मालिक बने. पुरोहितने उस काग़ज़ को अपनी कटारीके खीसेमें रखदिया. पुरोहितके पास एक महाजन दयाल नामी नौकरी करता था, उसकी शादी किसी महाजनके यहां ग्राम दिवाली में हुई थी, जो कि उदयपुरसे दो मीलके फ़ासिलेपर है. एक दिन त्यौहारपर पहर रातगये दयाल अपने मालिक पुरोहितसे छुट्टी लेकर ससुराल जानेको था, रात होनेके सबब पुरोहितसे एक शस्त्र मांगा, पुरोहितने अपनी कटारी देदी. वह रातको अपनी ससुराल गया, और वहां एक घरमें ठहरा, वह कटारीका खीसा खोलकर उस काग़ज़को वांचने लगा, वांचतेही वह वहांसे दौड़ा और उदयपुर आया; आधी रातके समय महाराणाको ज़रूरी

---

(१) बड़वा भाटोंकी पोथियोंमें महाराणी भटियाणीके गर्भसे सुल्तानसिंह, सर्दारसिंह वगैरह कुंवरोंका होना लिखा है, परन्तु इस हालके सुननेसे मालूम होता है, कि सुल्तानसिंह किसी दूसरी महाराणीके पेटसे थे.

कामकी अर्ज़के वहानेसे वाहर वुलवाया, और काग़ज़ नज़् किया. महाराणाने भीतर जाकर गुर्ज़से उस राणीका भी काम तमाम किया, और पुरोहित (१) को वुलाकर उसी गुर्ज़से मारडाला. कुंवर सर्दारसिंह, जो इन वातोंसे विल्कुल वे ख़वर थे, कुंवरपदेके महलोंमें ही ज़हर खाकर मरगये, और मरते समय यह दोहा लिखकर अपने सिरके पास रखदिया-

दोहा.

पाणी पिंड तणाह पिंड जातां पाणी रहे॥
चींतारसी घणाह सुपना ज्यूं सर्दार सी॥ १॥

इसका यह अर्थ है, कि- 'इज़्ज़त वदनकी है, परन्तु वदन जाय और इज़्ज़त रहे, तो उसे आदमी स्वावकी तरह याद करेंगे'.

कुंवर सर्दारसिंहकी पूजा शम्भूनिवासके पास कुंवरपदेके महलकी छत्रीमें अव तक होती है, और लोग अवतक उनकी वहुतसी करामाती वातोंके ख़यालसे उनको देवताके समान मानते हैं.

महाराणाने इन ऊपर लिखी वातोंके पापसे छुटकारा पानेके उपाय ब्राम्हणों से पूछे, तव ब्राम्हणोंने धर्म रीतिसे तीन तदवीरें वतलाईं- पहिली यह कि सूखे हुए पीपलके पेड़में वैठकर आगमें जलमरना चाहिये- दूसरी, कोई एक वड़ा तालाव वनवाना- तीसरी, लड़ाईमें माराजाना. महाराणाने पिछली दो वातें मन्जूर कीं; और इसी कारण यह राजसमुद्र तालाव वनवाया, और उस दयाल महाजन का वहुत दरजा वढ़ाकर अपना प्रधान वनाया.

वाज़े लोगोंका वयान है, कि विक्रमी १७१८ [हि० १०७२ = ई० १६६१] में वड़ा भारी अकाल पड़ा, और चार पांच वर्ष तक वर्षाकी कमी रही, इस कारण महाराणाने ग़रीवोंकी पर्वरिशके लिहाज़से यह तालाव वनवाना शुरू किया.

ये ऊपर लिखी हुई वातें लोगोंमें मश्हूर हैं, लेकिन् नहीं मालूम कहां तक सच हैं या ग़लत हैं, अल्वत्ता अकाल पड़ना तो राजसमुद्रकी प्रशस्तिमें भी लिखा है- (शेष संग्रह नम्बर ४).

विक्रमी १७१९ [हि० १०७३ = ई० १६६२] में मेवल ज़िलेके पहाड़ी भीलोंने सिर उठाया, ज़िन पर महाराणा राजसिंहने अपने प्रधान फ़तहचन्द

(१) पाटवी पुरोहित इन दिनोंमें ग़रीवदास था, परन्तु उसका माराजाना नहीं पाया जाता, शायद यह कोई उसके भाई वन्धुमेंसे होगा.

के साथ उमराव सर्दारोंकी फ़ौजके सिवाय अपनी भी फ़ौज भेजी. इस फ़ौज ने बारापाल, नठारा, पडूना, वीलक, सगतड़ी, सराड़ा, धनकावाड़ा वगैरह पालोंको तबाह करके माल अस्बाब, गाय भैंस वगैरह सब लूट लिया; भीलों के सिर काट काट कर पेड़ोंमें लटकाये गये, और महुवा तथा आमके सब दरख़्त कटवादिये गये, क्यों कि यही इनकी बड़ी आमदनीके ज़रीए थे.

उसके बाद गमेती (ग्रामके मुखिया भील) मुसाहिबोंके पैरों पड़े, तब दुबारा बसाये गये, और थोड़े दिनोंके बाद महाराणाने इस मुल्कको अपने उमराव सर्दारोंकी जागीरमें इस मन्शासे बांट दिया, कि लुटेरी ज़ातको हमेशह दबाये रहें.

विक्रमी १७२० [हि० १०७४ = ई० १६६३] में सिरोहीके राव अक्षयराज के कुंवर उदयसिंहने मौक़ा पाकर अपने बापको क़ैद किया, और आप सिरोहीका राज्य करने लगा. यह ख़बर महाराणाके पास पहुंची, तब कई बार उसको नसीहतें लिख भेजीं, परन्तु कुछ असर न हुआ; निदान महाराणाने रामसिंह राणावतको फ़ौज देकर सिरोही भेजा, इसके पहुंचते ही कुंवर उदयसिंह पहाड़ोंमें भागगया. रामसिंहने राव अक्षयराजको पीछा गादीपर बिठाया, तब अक्षयराजने रामसिंहकी मारिफ़त महाराणाका शुक्रिया अदा किया.

विक्रमी १७२१ [हि० १०७५ = ई० १६६४] में बांधूके बघेला राजा अनोपसिंहके कुंवर भावसिंहके साथ महाराणा राजसिंहने अपनी बेटी अजबकुंवर बाईका विवाह किया. बघेले लोग खाने पीनेमें बहुत पर्हेज़ रखते हैं, लेकिन् उदयपुरमें राजपूतानाके रिवाजके मुवाफ़िक़ इतना ख़याल नहीं है, आख़िरकार खानेके वक्त भावसिंहने अर्ज़ की कि आपके साथ भोजन करनेमें हमारी इज़्ज़त है, बल्कि हम उसको जगदीशका प्रसाद समझते हैं. इस तरह यह विवाह बड़े स्नेहके साथ हुआ. अजबकुंवर बाईके साथ अठानवे लड़कियां अपने भाई बेटोंकी दूसरे अच्छे राजपूतोंको विवाहीगई. इसी संवत्में शहरके पश्चिमोत्तर कोणमें तालाबकी तीरपर अम्बा माताका मन्दिर बनवाकर प्रतिष्ठा कीगई–(शेष संग्रह नम्बर ५).

विक्रमी १७२१ फाल्गुण कृष्ण १२ [हि० १०७५ ता० २६ रजब = ई० १६६५ ता० १२ फ़ेब्रुअरी] को आगरेमें पेशाब बन्द होजानेकी बीमारीसे बादशाह शाहजहांका देहान्त होना सुना.

महाराणा राजसिंह ने इसी संवत् के माघ शुक्ल १५ [हि० ता० ९

रजब = ई० ता० ३१ जैन्यूअरी] के दिन चन्द्रग्रहण होनेके सबब दो हज़ार मुहर और बहुतसे सामान समेत कामधेनु गऊ का दान किया. विक्रमी १७२१ मार्गशीर्ष कृष्ण १० [हि० १०७५ ता० २४ रबीउस्सानी = ई० १६६४ ता० १५ नोवेम्बर] को इन महाराणाने अपनी माता राठौड़ राजसिंह मेड़तिया की बेटी और महाराणा जगत्सिंहकी राणी जनादे बाईजी राजके नामसे तालाब बनानेका मुहूर्त बड़ी नाम ग्राम में किया, और विक्रमी १७२५ माघ शुक्ल १० [हि० १०७९ ता० ८ रमज़ान = ई० १६६९ ता० ११ फ़ेब्रुअरी] को प्रतिष्ठा करके उसका नाम 'जना सागर' रक्खा - (शेषसंग्रह नम्बर ६).

इस तालाबके बनानेमें २६१००० दो लाख इकसठ हज़ार रुपया ख़र्च पड़ा, और प्रतिष्ठाके समय दो ग्राम गलूंड और देवपुरा पुरोहित ग़रीबदासको दिये. यह तालाब उदयपुरसे वायव्य (उत्तरी पश्चिमी) कोणमें छः मीलके फ़ासिले पर है (१). इस तालाबकी प्रतिष्ठाके वक़ महाराणा राजसिंहकी माताका देहान्त होगया.

इन्हीं दिनोंमें महाराणाके कुंवर जयसिंहने पीछोला तालाबके उत्तर अम्बाव-गढ़के नीचे उदयपुरके पास रंगसागर नामका एक तालाब बनवाया, और उसकी प्रतिष्ठाके समय भी बहुतसा दान पुण्य किया.

राजसमुद्रकी पालपर मिट्टी विक्रमी १७१८ माघ कृष्ण ७ [हि० १०७२ ता० २१ जमादियुल् अव्वल = ई० १६६२ ता० १२ जैन्यूअरी] में पड़नी शुरू होगई थी, जिसमें हज़ारों आदमी काम करते थे.

विक्रमी १७२२ वैशाख शुक्ल १३ सोमवार [हि० १०७५ ता० ११ शव्वाल = ई० १६६५ ता० ८ मई] के दिन गोमती नदीको बांधनेके लिये दोनों पहाड़ों के बीच पालकी पक्की बुन्याद डालनेका मुहूर्त हुआ, और विक्रमी १७२८ आश्विन कृष्ण ४ [हि० १०८२ ता० १८ जमादियुल् अव्वल = ई० १६७१ ता० २६ सेप्टेम्बर] को राजसमुद्र तालाबमें नावका मुहूर्त एक गड्ढेमें पानी भरवाकर किया, क्योंकि फिर सिंह राशिपर वृहस्पति आता था, और इसमें भले काम करनेकी ज्योतिषके मतसे मनाई है.

इस राजसमुद्र तालाबमें - सिवली, भीगावदा, भाणा, लुहाणा, बांसोल

---

(१) वि० १९३२ [हि० १२९२ = ई० १८७५] की अति वृष्टिसे पालकी बहुतसी मिट्टी बहगई थी, जिसका बयान महाराणा सज्जनसिंहके हालमें लिखा जायगा.

और गुड़ली ग्राम आये; और मोरचणा, पसूंध, खेड़ी, छापरखेड़ी, तासोल और मंडावरकी सीम इस तालावके पेटेमें आई.

इस राजसमुद्रमें गोमती. ताली और केलवाकी नदीका पानी आता है. इस तालावकी पुख़्ता पाल (बन्द) छः हज़ार चार सौ तेरह गज़की है. इसमें पानीके तीन मुख्य निकास हैं, और चौथा अधिक भरजानेके समय गौघाटकी चटानों परसे बहता है.

विक्रमी १७३१ श्रावण शुक्ल ५ [हि० १०८५ ता० ३ जमादियुल् अव्वल् = ई० १६७४ ता० ८ ऑगस्ट] को इस पानीसे भरे हुए तालावमें एक नाव छोड़ी; और विक्रमी १७३२ माघ शुक्ल ७ [हि० १०८६ ता० ५ ज़िल्क़ाद = ई० १६७६ ता० २३ जेन्यूअरी] को कृष्णगढ़के राजा रूपसिंहकी बेटी चारुमती महाराणी राठोड़ने राजनगर ग्रामके पश्चिम तरफ़ सफ़ेद पत्थरकी बावड़ी बनवाई, जिसमें तीस हज़ार रुपये ख़र्च पड़े. महाराणा राजसिंहने माघ शुक्ल ९ [हि० ता० ७ ज़िल्क़ाद = ई० ता० २५ जेन्यूअरी] को राजसमुद्रकी प्रतिष्ठा की, और शास्त्रानुसार लाखों रुपयेका दान ब्राम्हणोंको दिया, और जप होमके बाद राजसमुद्रकी परिक्रमा करनेके लिये राणियों समेत पैदल चले - नौचौकियोंसे पश्चिमकी तरफ़ होकर मोरचणा, पसूंध, तासोल, भाणा और कांकरौली होते हुए १४ कोसके घेरेको पूरा किया.

विक्रमी १७३२ माघ शुक्ल १५ [हि० १०८६ ता० १४ ज़िल्क़ाद = ई० १६७६ ता० १ फ़ेब्रुअरी] के दिन इसकी प्रतिष्ठा पूरी हुई. चारण तथा ब्राम्हणोंको लाखों रुपयेका दान दिया, और अपने पुरोहित ग़रीबदासको बारह ग्राम बख़्शे. सबसे ज़ियादा धन ब्राम्हणोंके हिस्सेमें, दूसरे चारण और तीसरे दरजेमें सर्दार पासबान मुत्सद्दियोंने पाया.

महाराणाने अपनी पाटवी राणी और कुंवर समेत सुवर्णकी तुला की; और पुरोहित ग़रीबदासने सोनेकी और उसके बेटे रणछोड़रायने चांदीकी तुला की. टोडेके राजा रायसिंहकी माता, व सलूंबरके राव चहुवान केसरीसिंह, और बारहठ चारण केसरीसिंहने चांदीकी तुला की. इसी जल्सेमें तालाबका नाम 'राजसमुद्र' पहाड़ परके महलका नाम 'राजमन्दिर' और शहरका नाम 'राजनगर' रक्खागया. इस तालावके बड़े भारी जल्सेमें छयालीस हज़ार ब्राम्हण एकठे हुए थे; इनके सिवाय रिश्तेदार और राजपूत वग़ैरह बहुतसे लोग थे, और जो राजा लोग

इस जल्सेपर किसी ख़ास कारणसे नहीं आये थे, महाराणाने उनके लिये नीचे लिखे अनुसार तुहफ़े भेजेः-

जोधपुरके राजा जश्वन्तसिंहके लिये ९००० रुपये, परमेश्वर प्रसाद हाथी, नरतन, फत्ते और कनक कलश नामके तीन घोड़े और तीन दुशाले रणछोड़ भट्टके साथ भेजे.

आंबेरके राजा रामसिंह कछवाहेके वास्ते १०२५० दस हज़ार दो सौ पचास रुपये, सुन्दरगज हाथी, और सुन्दर व हद्द नामके दो घोड़े और छः दुशाले पुरोहित रामचन्द्रके हाथ भेजे.

बीकानेरके राजा अनूपसिंहके लिये ७५०० साढ़े सात हज़ार रुपये, मदन मूर्ति हाथी, शाहश्रृंगार व तेजनिधान दो घोड़े और ११ दुशाले माधव जोषी (ज्योतिषी) के हाथ भेजे.

बूंदीके राव भावसिंह हाड़ाके लिये होनहार हाथी, नरतन, सर्वशोभा और सिरताज नामके तीन घोड़े तथा कई दुशाले देकर भास्कर भट्टको भेजा.

रामपुरेके राव मुहकमसिंह चन्द्रावतके वास्ते फ़तह दौलत हाथी, मोहन और एक दूसरा, दो घोड़े द्वारिकानाथ ब्राह्मणकी मारिफ़त भेजे.

जैसलमेरके रावल अमरसिंह भाटीके वास्ते प्रतापश्रृंगार हाथी, हयमुकुट तथा रतिमुकुट नामके दो घोड़े और दुशाले देवनन्द जोषी (ज्योतिषी) के संग पहुंचाये.

डूंगरपुरके रावल जश्वन्तसिंहके लिये सारधार हाथी, जहतरंग व कनक नामके दो घोड़े हरजीके साथ भेजे.

अपने प्रधानको प्रतापश्रृंगार हाथी, और राणावत रामसिंहको सिंहनाद हाथी दिया.

राजसमुद्र तालाबके जुदे जुदे दारोग़ोंको ६० घोड़े वस्त्र और ज़ेवर समेत दिये. दो सौ छः घोड़े चारण भाट और कवियोंको, और बांधूगढ़के राजा भावसिंह बघेलाको अनूप हाथी, विनयसुन्दर व एक दूसरा, दो घोड़े तथा दुशाले गहना लादू महासहाणीके साथ भेजे; और बहुतसे घोड़े उन लोगोंको, जो राजाओंके बुलानेको गये थे, दिये. टोडेके राजा रायसिंहके बेटोंके लिये सहेली नामकी हथनी उनकी माके साथ भेजी, और महाराणा जगत्सिंह, कर्णसिंह, अमरसिंह, प्रतापसिंह व महाराणा हमीरसिंह और रावल समरसी तकके भी दिये हुए सासणिक चारण व भाटों को जुदे जुदे घोड़े दिये. इसके सिवाय दूसरे पंडित तथा चारणोंको एक लाख बाईस हज़ार दो सौ अड़सठ रुपयेके ख़रीदे हुए ५५२

घोड़े और एक लाख दो हज़ार एक सौ दस रुपये में मोल लिये हुए १३ हाथी व हथनी सिरोपाव गहने वगैरह समेत बांटे.

इस राजसमुद्र तालावके वनवाने तथा जल्से आदिमें १०५४७५८४ एक किरोड़ पांच लाख सैंतालीस हज़ार पांच सौ चौरासी रुपये ख़र्च पड़े (१). विक्रमी १७१८ माघ कृष्ण ७ [हि० १०७२ ता० २१ जमादियुलअव्वल् = ई० १६६२ ता० १२ जैन्यूअरी] के दिन यह काम शुरू हुआ, और विक्रमी १७३२ आपाढ़ [हि० १०८६ रवीउस्सानी = ई० १६७५ जून] तक वरावर ख़र्च होता रहा, जिसकी तफ़्सील यह है-- राणावत रामसिंहके द्वारा २७३६४९७॥ सत्ताईस लाख छत्तीस हज़ार चार सौ सत्तानवे रुपया आठ आना ख़र्च पड़ा; महाराणाके काका की मातहतीमें ५०४८८०। पांच लाख चार हज़ार आठ सौ अस्सी रुपये चार आने उठे; कुंवर मुह्कमसिंहके अधिकारसे २१२५३८ दो लाख वारह हज़ार पांच सौ अड़तीस, और कायस्थ श्यामल-दासके हस्ते ४७८१०७ चार लाख अठत्तर हज़ार एक सौ सात रुपये ख़र्च हुए; और चोकड़ियोंकी खुदवाईमें ३२६०१। वत्तीस हज़ार छः सौ एक चार आने ख़र्च पड़े.

इन सवका जोड़ रु० ३९६४६२३॥। जिसमेंसे रु० ३२००२८०। तो मिट्टीसे पाल की भरवाई और चूनेकी चुनाईके काममें ख़र्च हुए, और रु० ७६१७४३॥ पत्थर की खुदाई, पुराई आदि में लगे (२); कुल १०५४७५८४ एक किरोड़ पांच लाख सैंतालीस हज़ार पांच सौ चोरासी रुपये ख़र्च हुए, जिनमें से रु० ३९६४६२३॥। तो केवल तालाव के काममें ख़र्च हुए, वाक़ी रु० ६५८२९६०। इनआम, ख़ैरात और जल्से वगैरह में उठे.

इस तालावके शुरू से ख़त्म होने, तक जो जो और वातें हुईं, वे नीचे लिखी जाती हैं:--

विक्रमी १७१७ भाद्रपद शुक्ल ९ [हि० १०७१ ता० ७ मुहर्रम = ई० १६६०

---

(१) राजसमुद्रकी प्रशस्तिके २१ वें सर्गके १६ वें श्लोकमें लिखा है कि एक पक्षमें ऊपर लिखे हुए यानी ३९६४६२३॥। और उसी सर्गके २२ वे श्लोकमें लिखा है कि १०५०७५८४ रु० दूसरे पक्षमें लगे, इससे यदि यह मानाजाय कि ऊपरकी रक़म तो तालावके कार्यमें लगी और दूसरी दूसरे कामोंमें; तव तो सव मिलाकर १४४७२२०७॥। होते हैं, लेकिन् हमने इन श्लोकों का अर्थ इस तरह पर समझा है कि एक पक्षमें तो पहली रक़म जो तालावके काममें लगी वह लिखीगई हे, और दूसरे पक्षमें विशेप ख़र्चको मिलाकर सव जोड़ लिख दिया है, अगर १४४७२२०७॥। भी ख़र्च पड़गये हों तो तअ़ज्जुव नहीं है.

(२) अस्ल प्रशस्तिके २१ वे सर्गके १४ वें श्लोकमें ७६०७४४॥ लिखे हैं, परन्तु ऊपरकी जोड़ से ९९९ का फ़र्क़ पड़ता है.

ता० १४ सेप्टेम्बर] को महाराणा राजसिंहकी तरफ़से सूरसिंह आलमगीरके पास गया था, जिसको बादशाहने घोड़ा और ख़िल्अ़त देकर विदा किया.

श्री नाथजीकी मूर्तिका ब्रजसे मेवाड़में पधारना.

नाथद्वारेके गोसाईं लोगोंने तो इन सब इतिहासी बातोंको अपनी पुस्तकोंमें करामाती ढंगसे लिखा है, और ज़ाबिता यह रक्खा है कि अपने चेलोंके सिवाय और किसीको अपने मतकी पुस्तकें न दीजावें, बल्कि चेलोंको भी पुस्तक देते वक्त हिदायत करते हैं कि इसमेंका एक शब्द भी किसी दूसरेके सामने न कहा जावे, क्यौंकि दूसरोंको कहदेनेसे पुस्तक भ्रष्ट समझी जाती है, और कहने वाला पापी ठहरता है. अक्सर इसी सबबसे इन गोसाईं लोगोंके अस्ली हाल ग़ैर लोगोंको कम मिलते हैं- गोसाईंजी और सातों स्वरूपका बयान किसी और मौक़ेपर लिखा जायगा, यहां केवल गिरिराजसे श्री नाथजीके पधारने और सिहाड़ ग्राममें विराजनेका हाल लिखा जाता है.

पहिले मथुराके पास गिरिराज पर्वत पर श्री नाथजीका मन्दिर था, आलमगीरने गोसाईं लोगोंके पास एक आदमी भेजकर कहलाया, कि तुम लोग मथुराके फ़क़ीर हो तो कुछ करामात दिखलाओ, वर्ना निकाले जाओगे. इससे गोसाईं विठ्ठलदासजी के पुत्र गिरिधारीजीके बेटे दामोदरजी घबराये, और श्री नाथजीकी मूर्तिको एक रथमें बिठाकर अपने काका गोविन्दजी, बालकृष्णजी, वल्लभजी और गंगाबाईके साथ मथुरासे विक्रमी १७२६ आश्विन शुक्ल १५ [हि० १०८० ता० १४ जमादियुल् अव्वल् = ई० १६६९ ता० १० ऑक्टोबर] को घड़ीभर दिन बाक़ी रहे निकले, और आगरे पहुंचे; १६ दिन तक वहीं छिपे रहे. फिर कार्तिक शुक्ल २ [हि० ता० १ जमादियुस्सानी = ई० ता० २६ ऑक्टोबर] को आगरेसे चलकर बूंदीके राव राजा अनिरुद्धसिंहके पास आये, बर्सातका मौसम कोटेके ज़िले कृष्णाविलास में काटा; वहांसे पुष्कर होकर कृष्णगढ़ पधारे, तब कृष्णगढ़के राजा मानसिंहने कहा, कि आपको छिपकर रहना मन्जूर हो तो यहां रहिये, क्यौंकि मैं ज़ाहिरा नहीं रख सक्ता. निदान बसन्त और किसी क़द्र गर्मी कृष्णगढ़में ही पूरी की; उसके बाद मारवाड़ की तरफ़ गये. जोधपुरके महाराज जश्वन्तसिंह अपनी ननिहालमें थे. गोसाईंजीने जोधपुरसे तीन कोस की दूरीपर चांपासेणी ग्राममें श्री नाथजीको पधराया, और बर्सातके आख़िर तक वहीं रहे. मथुरासे निकलनेके बाद पहिला बर्सातका मौसम संजेतीधारके पास कृष्णपुर में, दूसरा कोटेके पास कृष्ण विलास और तीसरा चांपासेणी में बिताया.

ये गोसाईं लोग बादशाह आलमगीरके डरसे सारे रजवाड़ोंमें फिरे, परन्तु बादशाही नाराज़गीको झेलनेकी ताक़त किसीमें न पाई: लाचार मारवाड़में महाराजा जशवन्तसिंहके पास गये, लेकिन् जब उनके मुलाज़िमोंकी भी ताक़त न देखी, तब टीकेत गोसाईं दामोदरजीके काका गोविन्दजी महाराणा राजसिंहके पास आये, और श्री नाथजीके बारेमें जो अपनी ख्वाहिश थी ज़ाहिर की. महाराणाने खुशीके साथ मन्जूर किया, और कहा कि, "जब मेरे एक लाख राजपूतोंके सिर कट जावेंगे, उसके बाद आलमगीर इस मूर्तिको हाथ लगा सकेगा". गोविन्दजी बड़े प्रसन्न होतेहुए चांपासेणी गये, और वहांसे विक्रमी १७२८ कार्तिक शुक्ल १५ [हि० १०८२ ता० १४ रजब = ई० १६७१ ता० १७ नोवेम्बर] को चले, और उदयपुरसे १२ कोस उत्तरकी तरफ़ बनास नदीके तीर सिहाड़ ग्रामके पास मन्दिर बनवाकर श्री नाथजी को विक्रमी १७२८ फाल्गुण कृष्ण ७ [हि० १०८२ ता० २१ शव्वाल = ई० १६७२ ता० २० फ़ेब्रुअरी] शनिवारके दिन पाट बिठाया.

श्री नाथजी जब मेवाड़की सीमामें आये, तो महाराणा वहींसे पेश्वाई करके उनको लाये थे, और श्रद्धासे उत्सव में शामिल थे. इसका हाल यहां पर बिल्कुल् कमीके साथ लिखागया है.

सलूंबरका रावत रघुनाथसिंह चूंडावत कृष्णावत, जो महाराणा जगत्सिंहके समय ही से मुसाहिबी करता था, महाराणा राजसिंहके वक्तमें भी पास रहता था; जब बादशाह शाहजहांका भेजाहुआ चन्द्रभान मुन्शी उदयपुर आया, तो उसने शाहजहांकी खिदमतमें रावत रघुनाथसिंहकी तारीफ़ लिखी थी. शायद उसने इसी सबबसे घमंडमें आकर महाराणाको नाराज़ किया होगा, या आपसकी फूटसे लोगोंने महाराणाको उससे नाराज़ किया हो. निदान महाराणाने और सब पट्टों समेत सलूंबर, रावत रघुनाथसिंहसे छीनकर चहुवान रामचन्द्रके छोटे बेटे केसरीसिंहको रावका खिताब देकर जागीरमें लिखदिया.

बेदलाका राव बल्लू जिसको महाराणा अमरसिंहने गंगारका पट्टा दिया था, उसका बेटा राव रामचन्द्र और इसका बड़ा पुत्र राव सबलसिंह बेदलाकी जागीर पर क़ायम रहा, और छोटे पुत्र केसरीसिंहको पारसौलीका पट्टा व रावका खिताब मिला.

केसरीसिंहसे यह महाराणा बहुत प्रसन्न थे, इसी सबब रावत रघुनाथसिंह पर नाराज़ होने बाद सलूंबर भी इसीको लिख दिया. चहुवान और चूंडावतोंमें लड़ाई पहिले ही से चली आती थी, क्योंकि महाराणा अमरसिंहने जब बेगमका पट्टा राव बल्लूको दिया था तब सलूंबरके रावत कृष्णदासका भतीजा रावत मेघसिंह महाराणासे बिगड़कर दिल्लीमें बादशाह जहांगीरके पास चला गयाथा- कुछ दिनोंके

बाद फिर महाराणाने उसको बुलाकर बेगमका पट्टा पीछा लिखदिया, और राव बल्लूको उसके बदलेमें गंगार और बेदला दिया. इस समय चहुवानोंका पेच चला, तो सलूंबर, जो सब चूंडावतोंका पाटवी ठिकाना है, ले लिया. आख़िरकार रावत रघुनाथसिंह इस बातसे नाराज़ होकर बादशाह आलमगीरके पास विक्रमी १७२६ ज्येष्ठ शुक्ल १४ [हि० १०८० ता० १३ मुहर्रम = ई० १६६९ ता० १३ जून] को लाहौर पहुंचा, जिस वक्त कि हयात बाग़में बादशाहके डेरे थे; बादशाहसे महाराणा की नाराज़गी तथा बीती हुई सारी कैफ़ियत कह सुनाई. आलमगीरने उसको एक हज़ारी ज़ात व तीन सौ सवारका मन्सब और एक हज़ार रुपयेकी क़ीमतका जम्धर इनायत किया.

इन्हीं दिनोंमें टोडेके राजा रायसिंह भीमसिंहोतका देहान्त हुआ; इनके बेटे १ मानसिंह, २ महासिंह, और ३ अनोपसिंह विक्रमी १७३० वैशाख शुक्ल पक्ष [हि० १०८४ मुहर्रम = ई० १६७३ एप्रिल] में बादशाह आलमगीरके पास हाज़िर हुए; बादशाहने तीनों को तसल्लीके साथ ख़िलअत दिये.

महाराणाने विक्रमी १७३१ श्रावण शुक्ल ५ [हि० १०८५ ता० ३ जमादियुल्-अव्वल = ई० १६७४ ता० ८ ऑगस्ट] को दैबारी दर्वाज़े पर किवाड़ चढ़वाये, जिसकी प्रशस्ति उसके बाईं तरफ़ लिखी है-(शेष संग्रह नम्बर ७).

महाराणा राजसिंहके लिये आलमगीर बादशाहने विक्रमी १७३१ पौष शुक्ल २ [हि० १०८५ ता० १ शव्वाल = ई० १६७४ ता० ३० डिसेम्बर] को अपने अठारहवें जुलूस पर ख़ासा ख़िलअत, जड़ाऊ जम्धर और फ़र्मान भेजा.

विक्रमी १७३२ [हि० १०८६ = ई० १६७५] में महाराणी रामरसदे ने त्रिमुखी बावड़ी बनवाई-(शेष संग्रह नम्बर ८). इस ज़मानेमें आलमगीर बादशाहने अपने मतके पक्षसे अथवा मुसल्मानोंको प्रसन्न रखनेके विचारसे दूसरे मज़्हब वालों को तक्लीफ़ पहुंचाना, मन्दिरोंको तुड़वाना और दूसरे मतकी धर्म पुस्तकें न पढ़ने देना वग़ैरह शुरू किया; इससे सारी प्रजाका नाकमें दम आगया. अक्बर बादशाहने अपनी फ़ौजके तीन हिस्से इसी मत्लबसे रक्खे थे, और वह १ शीआ, २ सुन्नी और ३ राजपूतोंका गिरोह था; अगर एक दल बदलजाय, तो दो उसको सज़ा देनेके लिये तय्यार रहते; परन्तु आलमगीरने अक्बरके बर्ख़िलाफ़ कार्रवाई की, कि सुन्नियोंको राज़ी रखनेके लिये शीआ (अलीको बड़ा मानने वाले मुसल्मान) और राजपूतोंका दिल तोड़दिया, जिससे एक न एक झगड़ा अक्सर बना रहता था.

महाराणा राजसिंहकी हर एक कार्रवाई बादशाहके मन्शाके बर्ख़िलाफ़

होती थी, दिन दिन नये मन्दिरोंका बनना, मथुराके गोसाईं, जो श्री नाथजीकी मूर्तिको लेकर आये, उन्हें अपनी पनाहमें रखना, संस्कृत विद्याकी शिक्षाका जारी करना, जोधपुरके राठौड़ोंको मदद पहुंचाना वगैरह बहुतसी बातोंसे आलमगीर बादशाहने मौक़ा देखकर विचार किया होगा कि, महाराजा जशवन्तसिंह तो इन दिनों काबुलकी तरफ़ भेजेही गये हैं, अगर इस मौक़ेपर उदयपुरके महाराणाको दबादें तो सारे राजपूत दबजावेंगे, और फिर कोई सिर न उठावेगा.

यह इरादह करके विक्रमी १७३५ माघ शुक्ल ८ [हि० १०८९ ता० ६ ज़िल्हिज = ई० १६७९ ता० २० जैन्यूअरी] को ख्वाजह मुईनुद्दीन चिश्तीकी ज़ियारत (दर्शन) के बहानेसे बादशाह अजमेरकी तरफ़ आया, और विक्रमी १७३५ फाल्गुण शुक्ल १४ [हि० १०९० ता० १३ मुहर्रम = ई० १६७९ ता० २४ फ़ेब्रुअरी] को रास्तेहीमें आंबेर के राजा रामसिंह का पोता विष्णुसिंह उसके पास हाज़िर हुआ; चैत्र कृष्ण ४ [हि० ता० १८ मुहर्रम = ई० ता० १ मार्च] के दिन बादशाह अजमेर पहुंचा; महाराणाने उसका मन्शा पहचानकर अपने वकील उसके पास भेजदिये, और जो हुक्म हुआ मन्ज़ूर किया.

विक्रमी १७३६ चैत्र शुक्ल ११ [हि० १०९० ता० ९ सफ़र = ई० १६७९ ता० २३ मार्च] के दिन कुंवर जयसिंहके डेरे बाहर खड़े करवाये. आलमगीरने शाहज़ादे कामबख़्शकी सर्कारके बख़्शी मुहम्मद नईमको महाराणाकी दर्ख़्वास्त पर कुंवरके लेनेके लिये उदयपुर भेजा, जिसकी बाबत यहां अस्ल फ़र्मानका तर्जमा और उस की नक़्ल फ़ार्सी नोटमें लिखीजाती है:-

---

बादशाही फ़र्मानका तर्जमा.

बिस्मिल्लाहि र्रहमानि र्रहीम.

तुग़रामें कुरआनकी आयत.	अतीउल्लाहः व अतीउर्रसूलः व उलिल् अम्रे मिन कुम.	अर्थ. आदमियोंको खुदा और पैग़म्बर की और जो उनमें हाकिम हो उसकी इताअत करनी चाहिये.

मुहरकी नक्ल

वफ़ादार ख़ैरख़्वाह- नेक सर्दारोंका बुज़ुर्ग-
बराबरी वालोंसे बिहतर- फ़र्मां बर्दारोंका सरताज

बहुतसी मिहर्बानियोंके लायक़ राणा राजसिंह बादशाही मिहर्बानियोंसे इज़्ज़त-दार और ख़बर्दार होकर जानें, जो अर्ज़ी कि साफ़ दिली और सच्ची ख़ैरख़्वाहीसे केसरीसिंह और नरसिंहदास अपने नौकरोंके हाथ बादशाहोंकी पनाहवाली दर्गाहमें भेजी थी, बुज़ुर्ग सल्तनतके हाज़िर रहनेवालोंकी मारिफ़त पाक साफ़ नज़रसे गुज़री. उस उम्दह सर्दारकी बाज़ दर्ख़्वास्तें बुज़ुर्ग वज़ीर बड़े दरजेके सर्दार जुम्दतुल्मुल्क असदख़ां, और बुज़ुर्ग ख़ान्दान बहादुरीके निशान बहुत मिहर्बानियोंके लायक़ बख़्शियुल्मुल्क सर्बलन्दख़ांके [illegible]रीएसे मालूम हुईं.

बुज़ुर्ग द[illegible] मन्दि[illegible] अर्ज़ हुआ कि वह अपने बेटेको बादशाही दर्गाहमें हाज़िरीसे बुज़ुर्गी ह[illegible] करनेको भेजना चाहता है, और उम्मेद रखता है, कि एक सर्कारी आदमी उसके लानेको हुज़ूरसे मुक़र्रर किया जावे; इसलिये सबके माननेके लायक़ बुज़ुर्ग हुक्म जारी होता है, कि हम उसको पुराने मज़्बूत इरादह वफ़ादार कारगुज़ारोंमें से जानते हैं- ख़ान्दानी बहादुर मुहम्मद नईमको, जो नेक-बख़्त नाम्दार, बादशाही आंखकी पुतली, सल्तनतके बाग़के ताज़ा फूल, आ़ली ख़ान्दान, जहानवालोंकी ताज़ीमके लायक़, बादशाहज़ादह मुहम्मद काम्बख़्शकी सर्कारका बख़्शी है, इनायतके तरीक़ेसे उस उम्दह सर्दारके बेटेको लाने
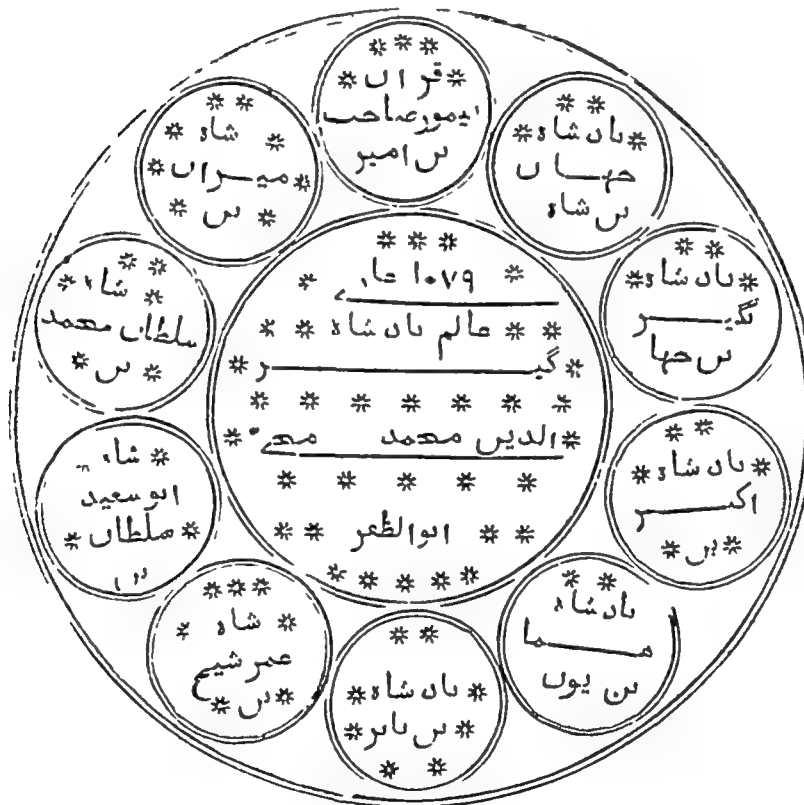
के लिये उस तरफ़ रुख़्सत फ़र्माया है. लाज़िम है कि तवीअ़त को बादशाही मिहर्वानियोंसे जमा रखकर उसको ज़िक्र कियेहुए आदमीके हमराह बुज़ुर्ग दर्गाह में भेजदे, कि सलामसे बुज़ुर्गी हासिल करने बाद बहुतसी मिहर्वानियोंके साथ वापसीकी इजाज़त पावेगा- तारीख़ २५ मुहर्रम साल २२ जुलूस = १०९० हिज्री को लिखा गया.

بسم اللہ الرحمن الرحیم

نقل طغرا

اطیعوا اللہ واطیعوا الرسول
واولی الامر منکم

نقل مہر

عمدة اخلاص کیشان دولتخواه زبدة الاعیان والاشباه خلاصة الاماثل
والاقران نقاوة النظایر والاخوان سلالة عبودیت منشان سزاوار لطف
واحسان مطیع الاسلام رانا راج سنگه بعنایت بادشاهی مفتخر و مباهی گشته بداند - عرضه داشتی
که از روی صدق اخلاص و خلوص بندگی مصحوب کیسریسنگه و برسنگه اس نوکران خود بدرگاه
خواقین پناه ارسال داشته بود - بتوسط ایستادهای پایهٔ سریر خلافت مصیر از ربع اعلی از نظر انور

पीठकी इ़बारत और मुहर.

*
* १९ *
मुहम्मद मुअ़ज़्ज़म
शाह आ़लम, इब्न आ़लम-
गीर बादशाह गाज़ी
* १०८७ *
* * *

नव्वाब बुज़ुर्ग अल्क़ाब जहानवालों की पनाह, बलन्द दरजे वाले, दीन दुन्याकी रौनक़, बुज़ुर्गी और नसीबहके बाग़के दरख़्त, बुज़ुर्गी और बड़ाईके दरख़्तके फल, नसीबहवर, बलन्द ख़ान्दान, ख़ुदाई कारख़ानेके पसन्दीदह, बादशाही ताजके मोती, ख़ुदाई रहमतोंके नमूने, बुज़ुर्ग क़द्र, बादशाहज़ादह नाम्दार, मुहम्मद मुअ़ज़्ज़मके रिसाले में,
अदना दरजेके वफ़ादार असदख़ांकी मारिफ़त (जारीहुआ).

اظهار گذشت - و بعض ملتمسات آن عمدة الاعيان بوساطت عمدهٔ وزراے رفيع الشان زبدهٔ خوانين
بلند مكان خان شجاعت نشان عمدة الملك مدار المهام اسد خان و شرافت و نجابت پناه شجاعت و
شهامت دستگاه مورد مراحم بيكران بخشي الملك سربلند خان بموقف عرض مقدس معلى رسيد *
و معروض پيشگاه سلطنت عظمى گرديد كه ميخواهد پسر خود را بجهت احراز دولت آستانبوس
والا بفرستد - اميدوار است كه يكے از بندهاے پادشاهى براے آوردن او از حضور لامع النور
تعين شود * حكم جهان مطاع واجب الاتباع شرف نفاذ مے يابد كه چون او از بندگان قديم برجادهٔ
بندگى مستقيم ميدانيم سيادت و شجاعت انتساب محمد نعيم بخشي سركار فرزند سعادتمند
برخوردار نامدار قرهٔ باصرهٔ دولت غرهٔ ناصيهٔ سلطنت نوباوهٔ نهال حشمت دارهٔ گل بوستان
جلالت والاگوهر عالى نسب پادشاهزادهٔ عالم و عالميان محمد كام بخش را از راه عنايت
جهت آوردن پسر آنزبدة الاشباه رخصت آنطرف فرموديم - بايد كه خاطر از مراحم پادشاهانه
جمع داشته او را برفاقت مشار اليه روانهٔ بارگاه سلطنت گرداند - كه بعد استلام عتبهٔ رفيع مرتبهٔ
جلالت مشمول نوازش گرديده اجازت انصراف خواهد يافت * بيست و پنجم شهر محرم الحرام
سال بيست و دوم از جلوس والا نوشته شد ٥

برسالهٔ نواب قدسى القاب عالم مآب رفيع جناب
غرهٔ ناصيهٔ دين و دولت قرهٔ باصرهٔ ملك و ملت
بهين دوحهٔ حديقهٔ ابهت و اقبال - گزين ثمرهٔ شجرهٔ
عظمت و جلال - شاهزادهٔ نامدار كامگار عالى نسب
والا تبار - منظور نظر حضرت آفريدگار - درة التاج
سلطنت عظمى - واسطة العقد جلالت كبرے - مهبط
انظار عنايت الهى - مطلع انوار مرحمت ظل اللهى
جليل القدر منيع الشان - عظيم المنزلت سمو المكان
فروع دودمان مجد و كرم - پادشاهزادهٔ محمد
معظم شاه عالم ٥

* غازى *
بن عالمگير بادشاه
محمد
معظم شاه عالم
سنه ۱۰۸۷

مهر شاهزاده

بمعرفت كمترين فدويان
اسد خان *

बादशाह विक्रमी चैत्र शुक्ल ९ [हि० ता० ७ सफ़र = ई० ता० २१ मार्च] को अजमेरसे दिल्लीकी तरफ़ रवाना हुआ; जब दिल्ली दो कोस रहगई तो कुंवर जयसिंह, चन्द्रसेन झाला और गरीबदास पुरोहित सहित बादशाहके दर्बारमें विक्रमी वैशाख कृष्ण ३० [हि० ता० २९ सफ़र = ई० ता० ११ एप्रिल] को दाखिल हुए. शाही डेरोंकी ड्योढ़ी तक नागोरका राव इन्द्रसिंह पेश्वाई करके अन्दर लेगया. कुंवरके पहुंचने पर बादशाहने खासा खिलअत, पन्ने और मोतियों की कंठी, उर्बसी, जड़ाऊ पहुंची, तथा हथनी दी.

विक्रमी ज्येष्ठ कृष्ण ४ [हि० ता० १८ रबीउल्अव्वल् = ई० ता० ३० एप्रिल] के दिन कुंवर जयसिंहको खिलअत, मोतियोंका सर्पेच, कानोंके लालके बाले, जड़ाऊ तुर्रा, अरबी घोड़ा सुनहरी सामान समेत और हाथी देकर घर जानेकी रुख़्सत दी; इनके साथ महाराणाके लिये खिलअत, जड़ाऊ सर्पेच, बीस हज़ार रुपया नक्द और फ़र्मान भेजा. कुंवर जयसिंह मथुरा वृन्दावनकी तरफ़ तीर्थ करते हुए विक्रमी प्रथम ज्येष्ठ शुक्ल १५ [हि० ता० १४ रबीउस्सानी = ई० ता० २६ मई] के दिन महाराणाके पास आये.

इस वक्त तो मेल करना ही मुनासिब जानकर रज़ामन्दीके साथ बादशाहको अजमेरसे वापस लौटाया; परन्तु भगवानकी इच्छा हज़ारों आदमियोंका खून ज़मीन पर बहानेकी थी- एक नया झगड़ा बादशाहने आम मुसल्मानोंको खुश करनेके लिये उठाया; वह यह था, कि एक लागत (टैक्स) जिज़्यह नामी दूसरे मत वालों पर जारी की.

जिज़्यहके लगानेसे कुल हिन्दू नाराज़ थे, लाखों आदमी बादशाहके पास फ़र्यादी गये, यहां तक कि एक दिन बादशाह जामिअ् मस्जिदको जाते थे, फ़र्यादी हिन्दू लोगोंके हुजूमसे रास्ता नहीं मिला, गुर्ज़ बर्दारोंने बहुतसे आदमियोंके हाथ पैर तोड़डाले, आख़िर कार एक हाथी सवारीके आगे कियागया, जिसकी टक्करसे बहुतसे आदमियोंको नुक्सान पहुंचा; लेकिन् आलमगीरने जिज़्यह मुआफ़ करनेका हुक्म नहीं दिया. यह जिज़्यहकी लागत शुरूमें हज्रत मुहम्मद पैग़म्बरने जारी नहीं की थी, उनके पीछे दूसरे खलीफ़ा उमरने खर्चकी तंगीसे इस तरह पर जारी की, कि अव्वल दरजेके मालदार आदमीसे सालानह ४८ दिरम, और मंझले दरजेके आदमीसे २४ दिरम, और तीसरे दरजेके आदमीसे १२ दिरम लियाजावे. शहन्शाह अक्बरके हुक्मके मुवाफ़िक़ अबुल् फ़ज़्लने आईन अक्बरीकी पहिली जिल्दके सफ़ह २३६ में लिखा है, कि हर मुल्कमें इस तरहके इरादे फ़साद पैदा करते हैं, और लोगोंको तक्लीफ़ पहुंचाते हैं, इस वास्ते शहन्शाह अक्बरने जिज़्यहकी बुरी रस्मको मौकूफ़ करदिया, और इस

को एक तरहका जुल्म खयाल किया. आलमगीरने तो अक्बरको अपनी दानिस्तमें बेसमझ ठहराया होगा. आलमगीरने हिन्दुओंको ही तक्लीफ़ नहीं दी, बल्कि मुसल्मानोंसे भी रु० २॥ सैकड़ा सालानह ज़कातके नामसे जब्रन् वसूल करनेका हुक्म जारी किया- यह ज़कात मुहम्मदी मज़्हबमें ईमान्दार आदमियोंको खैरात करनेके लिये मुक़र्रर हुई है, और बादशाहोंको जब्रन् वसूल करनेकी इजाज़त नहीं है. इन बातोंसे कुल हिन्दुस्तानमें बेदिली फैलरही थी.

इसके सुन्ते ही महाराणा राजसिंहको बहुत रंज हुआ, और यह सोचा कि हिन्दुओंको बेदीन जानकर यह कर लगाया है, यह विचारकर एक अर्ज़ी आलमगीर बादशाहके नाम भेजी, जिसका तरजमा कर्नेल् टॉडकी किताबसे नीचे लिखा जाता है-

अर्ज़ीका तरजमा.

आदाब अल्क़ाबके बाद - ज़ाहिर हो कि मैं आपका खैरख्वाह अगर्चि आप की हुज़ूरसे दूर हूं, परन्तु फिर भी ताबेदारी और नमकहलालीके कामोंमें तय्यार हूं. मैं हिन्दुस्तानके बादशाहों, अमीरों, मिर्ज़ाओं, राजाओं, रावों और ईरान, तूरान, रूम, शामके सर्दारों, सातों विलायतोंके रहनेवालों तथा खुश्की और दर्याके मुसाफ़िरोंकी खैरख्वाही में मश्गूल हूं; यह मेरा कहना बहुत साफ़ तरह पर है, इस बातको सब जानते हैं, और मुझे भरोसा है कि इसमें आपको भी कोई शक न होगा. मैं अपनी पहिली चाकरी और आपकी मिहर्बानी पर नज़र करके हुज़ूरसे यह अर्ज़ रखता हूं, कि उन बातोंकी तरफ़ कि जिनमें आपकी और दुन्यावालोंकी बिहतरी है, और जो नीचे लिखी जाती हैं, ध्यान देंगे-

मैंने सुना है कि आपने बहुतसा रुपया मुझ खैरख्वाहकी खराबीकी तदबीरों में खर्च किया है, और हुज़ूरने अपना खज़ानह भरनेके लिये जिज़्यहका महसूल लगाया है. हुज़ूर पर रौशन है कि मुहम्मद जलालुद्दीन अक्बर ने, जो आपके बाप दादाओंमें से थे, बादशाही कामोंको ५२ वर्ष तक बड़े इन्साफ़के साथ पूरा करके हर एक क़ौमको आराम पहुंचाया. ईसाई, मूसाई, दाऊदी, मुसल्मान और ब्राह्मण तथा दिहरिये, जो दुन्याको आपसे आप पैदा होनेके क़ाइल हैं, उनकी निगाहमें बराबर थे; और सब पर एकसी मिहर्बानीकी नज़र जारी रहती थी, उनका इन्साफ़ और रहम इस क़द्र ज़ियादह था कि प्रजाने उनका लक़ब जगत् गुरु रक्खा था. नूरुद्दीन मुहम्मद जहांगीरने भी २२ वर्ष तक अपनी प्रजाकी हुकूमत और हिफ़ाज़त की, और कभी अपनी

कार्रवाईमें सुस्ती नहीं की, उन्होंने अपने नेक इरादोंके सबब हर एक जगह काम्याबी हासिल की. मश्हूर शाहजहांने भी ३२ वर्ष तक अच्छे इन्साफ़के साथ बादशाहत चलाई. और ऐसा नाम पैदा किया कि हमेशह दुन्याके पर्देपर क़ायम रहेगा; यह नतीजा उनको रहम दिली और नेकीके तुफ़ैल मिला था. आपके बाप दादोंकी ख्वाहिश दिलसे भलाईकी तरफ़ थी, जैसा कि ऊपर लिखा गया.

वह सख़ावत और रहमदिलीकी बातों पर अमल करते थे, इससे जिधर को क़दम उठाते थे. फ़त्ह उनके साथ चलती थी. और साफ़ नियत होनेके सबब बहुतसे क़िले फ़त्ह. और अक्सर मुल्क ताबे होगये थे; आपके अ़ह्दमें बहुतसे ज़िले बादशाहतसे निकल गये हैं. बहुतसी नई ज़ियादती होनेसे और भी इलाक़े हाथसे जाते रहेंगे. आपकी प्रजा कंगाली और तक्लीफ़में फंसी हुई है, ख़राबी फैलती जाती है, कई मुश्किलें बढ़ती जाती हैं. जब ग़रीबीने बादशाहों और शाहज़ादोंके घरमें क़दम रक्खा हो तो अमीर और रअ़य्यतका तो ईश्वर ही मालिक है; सिपाही शिकायत करते हैं, सौदागर फ़र्यादी हैं, मुसल्मान नाराज़ हैं, हिन्दू और दूसरे लोग ज़रूरतोंसे इस क़द्र तंग होगये हैं कि शामको खाना भी नहीं मिलता, और सारे दिन दुःखसे बेचैन रहते हैं.

यह कब हो सक्ता है, कि जो बादशाह अपनी कंगाल प्रजापर सख़्त २ महसूल डालता है, क़ायम रहे. पूर्वसे पश्चिम तक यह अफ़्वाह फैली हुई है, कि हिन्दुस्तानका बादशाह हिन्दू पुजारियोंसे जलनके कारण सब ब्राह्मणों, जोगियों, सन्यासियों, वैरागियोंसे ज़बर्दस्ती महसूल लेना चाहता है, वह तीमूरी ख़ान्दानकी इज़्ज़तकी तरफ़ ख़याल न करके, लाचार कोनेमें बैठने वाले पुजारियों पर ज़ोर दिखाना चाहता है. अगर आप उस किताब पर विश्वास रखते हैं, जिसको कलामि इलाही समझा जाता है, तो उसमें साफ़ लिखा है कि "ख़ुदा सिर्फ़ मुसल्मानों ही का मालिक नहीं है, बल्कि सारे जगत्का पालने वाला है" (अल् हम्दो लिल्लाहे रब्बिल आलमीन - الحمد لله رب العلمين -) हिन्दू और मुसल्मान उसकी नज़रमें एकसे हैं, रंग और सूरतका फ़र्क़ ईश्वरकी कुद्रतसे है, और वही सबका पैदा करने वाला है; मुसल्मानोंके इबादत ख़ानों में भी उसीका नाम लिया जाता है, और मन्दिरोंमें भी मूर्तिके साम्हने, जहां घंटे बजते हैं, उसीकी तारीफ़ और पूजा होती है. दूसरी क़ौमोंके मज़्हबों और रीतोंको दूर करना ईश्वरकी मरज़ीके ख़िलाफ़ है; जब हम किसी तस्वीरका मुंह बिगाड़ते हैं, तो उसके बनाने वालेको नाराज़ करते हैं.

किसी शाइरने यह बात बहुत ठीक लिखी है कि- "ख़ुदाई कारख़ानेमें
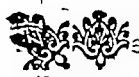
एतिराज़ न करो"– मत्लब यह है कि हिन्दुओंपर, जो जिज़्यहका महसूल लगाया है, इन्साफ़से दूर है, और मुल्की इन्तिज़ामसे भी दुरुस्त नहीं है; उससे मुल्क ग़रीब और तबाह होजावेगा. इसके सिवाय वह एक नई घड़न्त है, और हिन्दुस्तानके पुराने दस्तूरोंके ख़िलाफ़ है, यदि अपने मज़्हबी ख़यालोंकी पैरवीसे यह बात पसन्द की है तो इन्साफ़ यह चाहता है, कि अव्वल जिज़्यहका महसूल रामसिंह (जयपुर वाले) से जो हिन्दुओंका सरगिरोह है, और फिर मुझ ख़ैरख़्वाहसे मांगना चाहिये, जहांसे कि महसूल वसूल करनेमें आपको ज़ियादह दिक़्क़तें न उठानी पड़ेंगी; परन्तु चेंटी और मक्खियोंको तक्लीफ़ देना बेजा है, और हिम्मतवर तथा बहादुरोंके लायक़ नहीं है. तअज्जुब है कि बादशाही वज़ीरोंने इज़्ज़त और रास्तीकी बाबत सलाह नहीं दी.

कर्नेल् टॉडनें चिट्ठीकी बाबत जो नोट दिया है उसका तर्जमा भी यहां लिखाजाता है—

"यूरोप वालोंको इस चिठीका हाल ऑर्मे साहिबकी लिखावटसे पहिली बार ज़ाहिर हुआ. ऑर्मे साहिबका यह बयान कि जशवन्तसिंह मारवाड़ वालेने यह चिट्ठी लिखी थी ग़लत है, क्योंकि जिज़्यहका हुक्म जारी होनेके पहिले वह मरचुका था. जशवन्तसिंहकी मौतका हाल रामसिंहके नाम की लिखावटसे साफ़ ज़ाहिर है. जयसिंह रामसिंहका बाप जशवन्तसिंहके वक़्त में था, वह उसके मरनेके बाद एक वर्ष तक हुकूमत करता रहा, मेरा मुन्शी उदयपुरसे अस्ल चिट्ठीकी नक़्ल करलाया, इससे मालूम होता है कि वह राणाकी लिखीहुई थी; उस चिट्ठीका मज़्मून सर डब्ल्यू० बी० रोज़ने उम्दह इबारतमें लिखा है, इस सबबसे अस्ल चिट्ठीका तर्जमा करना फ़ुज़ूल समझा.

अब इस नोट पर हमारी यह राय है कि इस अर्ज़ीके लिखनेमें यह शक करना कि दूसरे राजाओंने लिखी है, बेजा है; क्योंकि कर्नेल् टॉडके लिखनेके मुवाफ़िक़ ही महाराजा जशवन्तसिंह तो पहिले मर चुके थे, और आंबेरके राजा रामसिंह का इसी अर्ज़ी में हवाला है, इससे आपही साबित है कि इसका लिखनेवाला कोई और है, सोचनेकी जगह है कि हिन्दुस्तान में उदयपुरके सिवाय और कौन ऐसा ज़बर्दस्त राजा था, जिसने इस ज़ोर शोरके साथ आलमगीरको चिट्ठी लिखी.

कर्नेल् टॉडने महाराजा जशवन्तसिंह का हमअस्र आंबेर के राजा जयसिंह कछवाहेको बताकर यह लिख दिया है, कि उसके एक वर्ष बाद जीतारहा;

अगर इससे आंवेरके राजा जयसिंह ख़याल कियेजावें, तो वे जशवन्तसिंहसे दस वर्ष पहिले मरचुके थे, और रामसिंह ख़याल किये जांय, तो जशवन्तसिंह की मौत के दस वर्ष बाद मरे थे; इस सबबसे टॉड साहिब का पिछला बयान ग़लत है.

आलमगीर इस चिट्ठीको देखते ही आग होगया, और फ़ौरन् उदयपुरकी तरफ़ फ़ौजकशी करनेका हुक्म दिया; इसी आगमें ईंधन डालने का सामान दूसरा यह हुआ कि महाराजा जशवन्तसिंह का बेटा अजीतसिंह, जो दिल्ली से छिपकर भागआया था. उसे महाराणाने अपने पास मेवाड़में रखलिया.

वह इस तरह पर है- कि दुर्गादास वग़ैरह राठौड़ोंने सोचा कि अकेले हम लोगोंसे आलमगीरकी फ़ौजका मुक़ाबला होना कठिन है. इसीसे महाराजा अजीतसिंहको लेकर उदयपुर चलेआये. महाराणा राजसिंहने अजीतसिंह और उसके खटलेके ठहरनेको केलवा ग्राम सुपुर्द किया. और दुर्गादास वग़ैरह राठौड़ों को तसल्ली देकर कहा कि एक लाख सीसोदिया और राठौड़ोंकी फ़ौजको आलमगीर आसानीसे नहीं दबासकेगा. तुम बेफ़िक्र रहो. बादशाह महाराणा पर तो जिज़्यहकी चिट्ठीसे चिड़ ही रहा था, अब अजीतसिंहको यहां रखलेनेसे और भी बिगड़ा, और विक्रमी १७३६ भाद्रपद शुक्ल ९ [हि० १०९० ता० ७ शअ्बान = ई० १६७९ ता० १५ सेप्टेम्बर] को जंगी फ़ौजके साथ दिल्लीसे उदयपुरकी तरफ़ चला, और उसी दिन बालम क़स्बेसे शाहज़ादह मुहम्मद अक्बर को आगे रवाना किया, कि अजमेर में ठहरे. आश्विन शुक्ल १ [हि० ता० २९ शअ्बान = ई० ता० ७ ऑक्टोबर] को बादशाहने अजमेर पहुंचकर ख़्वाजह मुईनुद्दीन चिश्ती की ज़ियारत करने बाद जहांगीरके बनवायेहुए महलोंमें आनासागरकी पालपर क़ियाम किया.

विक्रमी कार्तिक शुक्ल ३ [हि० ता० १ शव्वाल = ई० ता० ७ नोवेम्बर] के दिन तहव्वुरख़ांको ख़िलअ्त, हाथी और तीर कमान इनायत करके मांडल वग़ैरह परगनोंकी ज़ब्तीके लिये भेजा, और नागोरके राव इन्द्रसिंहको नीमच, रघुनाथसिंहको सियाना वग़ैरह, मुहकमसिंह मेड़तियाको पुरकी थानेदारी पर फ़ौजके साथ रवाना किया; और एक फ़र्मान दक्षिणमें शाहज़ादे मुअज़्ज़मके नाम लिखा, कि फ़ौरन् हुक्मके मुवाफ़िक़ उज्जैनमें आकर कार्रवाई करे. दूसरा फ़र्मान बंगालेमें शाहज़ादे आज़मके पास भेजा, कि जिस तरह होसके, बहुत जल्दी हमारे पास हाज़िर हो. इस तरह कार्रवाई करके बादशाह ने विक्रमी १७३६ मार्गशीर्ष शुक्ल ९ [हि० १०९० ता० ७ ज़िल्क़ाद = ई० १६७९ ता०

१३ डिसेम्बर [को अजमेरसे उदयपुरकी तरफ़ कूच किया, और उसी दिन मेड़तेकी तरफ़से शाहज़ादह मुहम्मद अक्बर हाज़िर हुआ.

जब बादशाही लश्कर मेवाड़के इलाकेमें पहुंचा, उसी वक्त विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल १५ [हि० ता० १४ ज़िल्क़ाद = ई० ता० १९ डिसेम्बर] को शाहज़ादह आज़म भी बादशाहकी ख़िझत में हाज़िर होगया; कुछ दिनों तक मांडल में ठहरनेके बाद विक्रमी माघ कृष्ण १ [हि० ता० १५ ज़िल्हिज = ई० १६८० ता० १८ जैन्यूअरी] को उदयपुरकी तरफ़ चढ़ाईका हुक्म हुआ.

महाराणाने सर्दार, उमराव और कामदार वगैरहको एकट्ठा करके सलाह की. उस समय महाराणाके छोटे भाई अरिसिंह, फ़तहसिंह और गुमानसिंह अपने तीनों कुंवरों सहित और महाराजकुमार जयसिंह तथा छोटे कुंवर भीमसिंह, रावल जशकर्ण, राणावत भावसिंह, महाराज मनोहरसिंह, महाराज दलसिंह, बेदलेका चहुवान राव सबलसिंह, सादड़ीका झाला राज चन्द्रसेन, बान्सीके रावत केसरीसिंहका कुंवर गंगादास, देलवाड़ेका झाला राज जैतसिंह, बीजोल्यांका पुंवार राव वैरीशाल, बेगमका रावत महासिंह चूंडावत, रावत रत्नसिंह चूंडावत कृष्णावत रघुनाथसिंहोत, बदनोरका राठौड़ ठाकुर सांवलदास, आमेटका रावत मानसिंह चूंडावत जग्गावत, चहुवान राव केसरीसिंह बान्सीका, भींडरका शक्तावत महाराज मुहकमसिंह, गांव समदड़ी इलाके मारवाड़का राठौड़ दुर्गदास, सोनगरा सामन्तसिंह, देसूरी रूपनगरका सोलंखी विक्रमादित्य, कोठारिये रावत रुक्माङ्गद चहुवान, गोगूंदेका राज जशवन्तसिंह झाला, घाणेरावका मेड़तिया ठाकुर गोपीनाथ राठौड़, पुरोहित ग़रीबदास बड़ा पल्लीवाल ब्राह्मण, नीमड़ीका महेचा राठौड़ अमरसिंह, खीची रत्नसिंह, प्रधान साह दयालदास ओसवाल वगैरहने अपनी अपनी बुद्धिके अनुसार अर्ज़ की. किसीने कहा कि अजमेरसे निकलते ही शाही लश्कर पर छापा मारें, किसीने सलाह दी कि मेवाड़में आते वक्त लड़ाई कीजाय, किसीने बयान किया कि चित्तौड़ गढ़में रहकर लड़ाई करना चाहिये. इसी तरह सबकी तरफ़से बयान होनेके बाद पुरोहित ग़रीबदासने अर्ज़ किया, कि राजपूतोंका यही हक़ है कि अपने बलसे बढ़कर जवाब दें, क्योंकि जिसे मरनेकी फ़िक्र नहीं होती, वह नफ़े नुक्सानको नहीं विचारता; परन्तु मेरी समझमें बादशाहसे बराबरीके तौर पर मुक़ाबला करना ठीक नहीं है, क्यों कि पहिले भी जब बादशाह अक्बरसे काम पड़ा था, तब महाराणा प्रतापसिंह और महाराणा उदयसिंहने चित्तौड़ और उदयपुर छोड़ा, और पहाड़ों में चलेगये, दिन या रातको जिस वक्त मौक़ा पाते, छापा मारते, और बादशाही मुल्क बर्बाद करते; और जब कठिन पहाड़ोंमें फ़ौज आती, तब घाटियोंमें मौक़ेसे सामना करते,

जहांपर बादशाही तोपखाने, हाथी और घोड़े बिल्कुल बेक़ाबू रहते थे. इन्हीं कारणोंसे बादशाह अक्बर, जहांगीर और शाहजहांने तंग होकर सुलह को ही ग़नीमत समझा था; इस लिये आपको भी चाहिये, कि उदयपुर छोड़कर कठिन पहाड़ोंमें पधारें, और अपने बहादुर राजपूतोंको चारों तरफ़से सामना व धावा करने और बादशाही देश लूटनेका हुक्म दें. पालवी भील व ग्रासियों (भील ज़मींदार) को बादशाही लश्करकी रसद लूटने पर तय्यार रहनेकी ताकीद करें.

महाराणा राजसिंहको यह सलाह पसन्द आई, और उसी वक़ उन्होंने शहरकी रअय्यत समेत अपने कुंवर व ज़नानेको उदयपुरसे रवाना कराके पहिला मक़ाम देवी माताके पहाड़ोंमें, जो उदयपुरसे दक्षिणकी तरफ़ ४ कोसपर है, किया; दूसरा भोमट के ज़िलेमें कठिन पहाड़ोंके बीच नेणवारे गांवमें हुआ, और इसी जगह मेवाड़ व मारवाड़के राजपूतोंके बालबच्चे और दोनों देशकी प्रजा रही. इन सबकी हिफ़ाज़तका भार महाराणा ही पर था. बड़े कुंवर जयसिंह चारों तरफ़की फ़ौजोंकी मददके लिये तेरह हज़ार सवारों समेत मुक़र्रर हुए.

बदनोरके ठाकुर सांवलदास राठौड़, देसूरीके विक्रमादित्य सोलंखी और घाणेरावके मेड़तिया ठाकुर गोपीनाथको देसूरी, घाणेराव और बदनोर तक के पहाड़ी ज़िलोंकी तरफ़ तईनात किया; प्रधान साह दयालदास मालवेकी फ़ौजोंके हम्ले रोकने को तय्यार रहा; दूसरे कुंवर भीमसिंहको एक फ़ौजका हाकिम बनाकर गुजरातकी तरफ़ भेजा; और ओगना, पानड़वा, जवास, मादड़ी वगैरह के भील सर्दारोंको हुक्म दिया कि अपने ज़िलेके भीलों समेत तीर कमान लेकर घाटों और नाकोंका बन्दोबस्त करें, और रसद लूट लूटकर हमारे पास पहुंचावें.

मेवाड़ में तो इस तरह पर लड़ाई का बन्दोबस्त हुआ, और बादशाह ने जब मांडलसे कूच किया, उसी वक़ देबारी के घाटेसे आदमियोंके उठजाने और महाराणाके उदयपुर छोड़कर पहाड़ों में चलेजाने की ख़बर मिली, फिर अमीनख़ांने अर्ज़ किया, कि मेरे नोकर पहाड़ोंपर चढ़कर देखआये हैं, उदयपुरके आसपास कोई आदमी नज़र नहीं आता.

इस बारेमें ख़फ़ीख़ांने लिखा है कि उदयपुरके राणाने उदयपुरको मए गिर्द नवाहके ख़ुद वीरान करदिया. निदान बादशाह बहुतसी फ़ौजके साथ विक्रमी माघ कृष्ण ८ [हि० ता० २२ ज़िल्हिज = ई० ता० २५ जैन्यूअरी] को देबारीके बाहर आपहुंचा, और शाहज़ादह आज़म व ख़ानेजहां बहादुर को देखनेके लिये उदयपुर भेजा.

यक्का ताज़ख़ां और रूहुल्लाख़ांको मन्दिरों और मूर्तियोंके तोड़नेके लिये हुक्म

मिला. जब ये लोग उदयपुर पहुंचे, तो अव्वल बारहठ नरू मारागया, जिसका हाल इस तरह पर है - कि महाराणा राजसिंहके पहाड़ोंमें जाने बाद सर्दार लोग अपने अपने बाल बच्चोंको लेकर उदयपुरसे रवाना होतेजाते थे, उस समय महाराणाके बारहठ (१) नरूको किसी आदमीने ताना दिया कि, "जिस दर्वाज़े पर नरूजीने बहुतसे दस्तूर (नेग) लिये हैं, उसको लड़ाईके वक़ कैसे छोड़ेंगे". नरूने उससे तो कुछ भी न कहा, लेकिन् आप अपने बालबच्चोंको महाराणाके पास भेजकर चुनेहुए बीस आदमियों समेत उदयपुरमें महलोंके दर्वाज़ेके साम्हने श्री जगन्नाथरायजीके मन्दिरमें जा बैठा. जब यक्का ताज़खां और रूहुल्लाखां फ़ौज समेत मन्दिरके पास आये, तो जगन्नाथरायजीके मन्दिरकी उत्तरीय खिड़कीसे एक एक आदमी निकलने और मरने मारने लगा. इसी प्रकार जब बीसों आदमी मुक़ाबला करके मरचुके, तब नरू बाहर आया, और बड़ी बहादुरीसे लड़कर मारागया, जिसका चबूतरा मन्दिरके पास बड़के पेड़के नीचे अब तक मौजूद है. इस मुआमलेका मारवाड़ी भाषामें एक गीत छन्द (२) मश्हूर है.

बादशाहने शाहज़ादह मुहम्मद अक्बरको चालीस हज़ारकी क़ीमतका सर्पेच देकर विक्रमी माघ कृष्ण १० [हि० ता० २४ ज़िल्हिज = ई० ता० २७ जैन्यूअरी] को उदयपुरकी तरफ़ भेजा, और हसन अलीख़ांको बहुत बड़ी फ़ौज देकर महाराणा का पीछा करनेके लिये पहाड़ोंकी तरफ़ रवाना किया.

---

(१) "बारहठ" उन चारणों को कहते हैं जिनको, कि राजपूत लोग अपनी पौल का नेग देते हैं, यानी दुलहा ब्याहनेको आवे तो दुलहनके बापका चारण दर्वाज़े पर खड़ा रहता है, और दुलहा हाथी या घोड़े पर चढ़कर तोरण बांधता है, उस हाथी वा घोड़ेका हक़ उसी चारणका होता है. "बार" दर्वाज़ेको कहते हैं, और दर्वाज़े पर हठ करके अपना नेग लेनेसे "बारहठ" का पद चारणों में अक्सर होता है, और बच्चोंकी पैदाइशके वक़ भी ये लोग नेग लेते हैं.

(२) कहियो नरपाळ आविया कटकां । धूण छड़ाळ धरापै धौळ ॥
पौळ बड़ा गज बाज पामतो । पड़तै भार न छोडूं पौळ ॥ १ ॥
शज़ड़ कियो राण छळ रूड़ो । कानों दे नीसरूं कठै ॥
अर घोड़ो फेरण किम आवे । तोरण घोड़ो लियो तठै ॥ २ ॥
आखा पीळा करे ऊजळा । तौ दो रोदां कळह सझ ॥
करग मांडिया नेग कारणै । कलम खांडिया नेग कज ॥ ३ ॥
उदयापुर सौंदे अजरायल । कलमां हूं भारत कियो ॥
दत लेतो आवे दरवाजै । देवळ जावे मरण दियो ॥ ४ ॥

मीर बख़्शी सर्बलन्दखां बीमार होकर मरगया, उसकी जगह रूहुल्लाखां मीर बख़्शी बनायागया, और रूहुल्लाखांकी जगह तोपखानहका दारोगा सलावतखां मुक़र्रर हुआ; तहव्वुरखांको "बादशाह कुलीखां" का ख़िताब मिला.

विक्रमी १७३६ माघ शुक्ल ४ [हि० १०९१ ता० २ मुहर्रम = ई० १६८० ता० ५ फ़ेब्रुअरी] को बादशाह उदयसागर की पालपर आये, और महाराणा उदयसिंह के बनवाये हुए तीन मन्दिरोंको गिरवादिया. यहां ही मालूम हुआ, कि महाराणाकी फ़ौजपर हसन अलीख़ांने विक्रमी माघ शुक्ल १ [हि० ता० २९ ज़िल्हिज = ई० ता० २ फ़ेब्रुअरी] के दिन हम्ला किया, जिससे डेरे और अनाज वग़ैरह बहुतसा सामान हसन अलीख़ांके हाथ आया. फिर विक्रमी माघ शुक्ल ९ [हि० ता० ७ मुहर्रम = ई० ता० १० फ़ेब्रुअरी] को हसन अलीख़ां महाराणाकी फ़ौजसे छीने हुए सामानके बीस ऊंट लदवाकर बादशाह के पास हाज़िर हुआ. इसके बाद अर्ज़ कीगई कि उदयपुरमें बड़े मन्दिरोंके सिवाय १७२ मन्दिर तोड़ेगये; इस पर खुश होकर हसन अलीख़ां को "हसन अलीख़ां बहादुर आलमगीर शाही" का ख़िताब दिया. विक्रमी माघ शुक्ल १० [हि० ता० ८ मुहर्रम = ई० ता० ११ फ़ेब्रुअरी] को ख़ानेजहां बहादुरको ख़िलअ़त, जड़ाऊ ख़ंजर और सोनेके सामान समेत घोड़ा देकर मन्दसौरकी तरफ़ भेजा.

विक्रमी फाल्गुण शुक्ल ३ [हि० ता० १ सफ़र = ई० ता० ५ मार्च] को बादशाहने चित्तौड़की तरफ़ कूच किया, और वहां पहुंचकर ६३ मन्दिर तुड़वा डाले. विक्रमी फाल्गुण शुक्ल ७ [हि० ता० ५ सफ़र = ई० ता० ९ मार्च] को ख़ानेजहां बहादुर चित्तौड़ आया, जिसे विक्रमी फाल्गुण शुक्ल ११ [हि० ता० ९ सफ़र = ई० ता० १३ मार्च] को दक्षिणकी सूबेदारी मिली. इसके पीछे हाफ़िज़ मुहम्मद अमीनख़ांको ख़िलअ़त और हाथी देकर अहमदाबादकी तरफ़ रवाना किया. विक्रमी फाल्गुण शुक्ल १४ [हि० ता० १३ सफ़र = ई० ता० १६ मार्च] को शाहज़ादह मुहम्मद अक्बरको बहुतसी फ़ौज समेत चित्तौड़के क़िले पर रहनेका हुक्म दिया, और हसन अलीख़ां व रज़ियुद्दीनख़ां वग़ैरह सर्दारोंको भी शाहज़ादहके मातह्त किया. इसके बाद विक्रमी फाल्गुण शुक्ल १५ [हि० ता० १४ सफ़र = ई० ता० १७ मार्च] को बादशाह चित्तौड़से अजमेरको चला, और मुकर्रमख़ांको बदनोरका फ़साद दूर करनेके लिये भेजा.

विक्रमी १७३७ चैत्र शुक्ल ३ [हि० १०९१ ता० १ रबीउ़ल्अव्वल = ई० १६८० ता० २ एप्रिल] को बादशाह अजमेर पहुंचा, उस वक़्त तोपख़ानहका दारोगा सलावतख़ां किसी कुसूरके सबब मन्सबसे बर तरफ़ हुआ,

और हामिदखां, सोजत व जैतारणकी तरफ़के फ़साद दूर करनेको भेजा गया. विक्रमी आषाढ़ कृष्ण १२ [हि० ता० २६ जमादियुल्अव्वल = ई० ता० २५ जून] को मुहम्मद अक्बरकी जगह शाहज़ादह मुहम्मद आज़मको चित्तौड़ भेजा, जो विक्रमी आषाढ़ शुक्ल ९ [हि० ता० ७ जमादियुल्आख़िर = ई० ता० ७ जुलाई] को चित्तौड़ पहुंचा, और शाहज़ादह मुहम्मद अक्बर इस बेजा तब्दीलीके सबबसे नाराज़ होकर सवारीमें ही बड़े भाईसे मिलनेके बाद सोजत व जैतारणकी तरफ़ चलागया. आंबेरमें ६६ मन्दिरोंको तोड़कर विक्रमी भाद्रपद कृष्ण १० [हि० ता० २४ रजब = ई० ता० २१ ऑगस्ट] को अबूतुराब, अजमेरमें बादशाहके पास आया. इसके बाद बादशाहने ख़िद्मतगुज़ारख़ांको चित्तौड़की बख़्शीगरी और वाक़िआ नवीसी दी, फिर ग़ज़न्फ़रख़ां और मुहम्मद शरीफ़को बहुतसे बन्दूक़ची व ४०० सवारोंके साथ राजसमुद्र तकके मक़ाम (१) मुक़र्रर करनेको भेजा.

विक्रमी मार्गशीर्ष कृष्ण १२ [हि० ता० २६ शव्वाल = ई० ता० २० नोवेम्बर] को हामिदखां मेड़तेकी बग़ावत मिटानेको रवाना हुआ.

रूहुल्लाखां विक्रमी मार्गशीर्ष शुक्ल ३ [हि० ता० १ ज़िल्क़ाद = ई० ता २६ नोवेम्बर] को शाहज़ादह मुहम्मद अक्बरके पास सोजतकी तरफ़ भेजा गया, और इसी दिन मुग़लख़ांको सांभर और डीडवाणेकी हिफ़ाज़तके लिये भेजा. विक्रमी पौष कृष्ण ४ [हि० ता० १८ ज़िल्क़ाद = ई० ता० ११ डिसेम्बर] को मुहम्मद नईम शाहज़ादह काम्बख़्शका बख़्शी भी अपनी जमइयतके साथ शाहज़ादह मुहम्मद अक्बरके पास गया. इसी दिन भदौरिया उद्योतसिंहको चित्तौड़की क़िलेदारी मिली. विक्रमी पौष शुक्ल ८ [हि० ता० ६ ज़िलहिज = ई० ता० ३० डिसेम्बर] को राठौड़ राजसिंह और पृथ्वीसिंहको बादशाहने दो दो हज़ार रुपया इनआम दिया.

यह ऊपर लिखा हुआ बयान 'मआसिरे आलमगीरी' से लिया है, परन्तु 'मुन्तख़बुल्लुबाब' में ख़फ़ीख़ां इस तरह पर लिखता है—

बादशाह आलमगीर उदयसागर तालाब पर थे, और शाहज़ादह आज़मकी फ़ौज राठौड़ोंको मारने और क़ैद करनेमें मश्ग़ूल थी, ग़ल्लेको मेवाड़में जानेसे रोकती, और खेती बर्बाद करती थी. महाराणा राजसिंहकी मददके लिये महाराजा जशवन्तसिंहके पच्चीस हज़ार सवार एकठे होगये. उन्होंने तेज़ीके साथ बादशाही फ़ौजसे मुक़ाबला किया, कई बार शाही फ़ौजकी रसद लूटी; एक बार दो ढाई हज़ार शाही फ़ौजके सवारोंको धोखा देकर पहाड़ोंमें

(१) इन मक़ामोंके मुक़र्रर करनेसे मालूम होता है कि फिर आलमगीरका इरादह अजमेरसे उदयपुरकी तरफ़ जानेका था, या शाहज़ादहको सुलहके लिये भेजनेका.
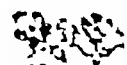
ले गये, जहां खूब लड़ाई हुई, और शाही मुलाज़िम मारे गये; बहुतों का तो पता तक नहीं मिला; इस पर बादशाही सर्दारोंको बहुत गुस्सा पैदा हुआ, और एक दम लड़ाई करनेका विचार किया. राजपूतोंने भी रसद लूटनी बन्द करके पहाड़ और घाटियोंको रोककर रात बिरात बेख़बर पाकर छापा मारना शुरू किया. बादशाही मुलाज़िम तहव्वुरख़ांने राजपूतोंकी बस्तियोंको उजाड़कर मकानोंको गिराया, दरख़्तों व बाग़ोंको काटडाला. और बाल बच्चे, स्त्री, वग़ैरह, जो पाये, क़ैद किये; ऐसे ही अहमदाबादके सूबेदार मुहम्मद अमीनख़ांने भी अक्सर राजपूतों को मार कर हटादिया.

इस ज़मानेका अब ब्योरेवार ठीक ठीक हाल मिलना कठिन है, अगर्चि फ़ार्सी तवारीख़ोंसे सिलसिलेवार हाल मिलता है, परन्तु ख़ुशामदसे भरा हुआ है, जैसे कि 'मिरात अहमदी' की पहिली जिल्दके ४६२ एष्ठमें लिखा है—कि, "जिस वर्ष बादशाही ज़बर्दस्त फ़ौज राजपूतानह के सर्दारों और ख़ास कर राणाके धम्काने व पीछा करने पर मुक़र्रर थी, राजपूत लोग घरोंको छोड़ कर पारेकी तरह उछलते, और एक जगह नहीं ठहर सक्ते थे. दूसरे— हज़रत बादशाह थोड़े दिनोंके लिये चित्तोड़में ठहरे थे. उस वक़ भीमसिंह राणाका छोटा बेटा बादशाही फ़ौजके डरसे एक फ़ौजकी टुकड़ीके साथ तंग पहाड़ोंसे निकल कर गुजरातके इलाक़े को भागा, और वहां जाकर कमअक़्लीसे बड़नगर वग़ैरह क़स्बे और गांवोंको लूटने बाद फिर पहाड़ोंमें चलागया"

अब सोचना चाहिये कि यदि महाराणाके छोटे कुंवर भीमसिंह डरे होते, तो पहाड़ों को छोड़कर साफ़ मुल्क गुजरातमें क्यों जाते, फिर डरके मारे तो उधर गये, और वहां जाकर गांव और क़स्बा लूटा. तीसरे— जिन पहाड़ोंसे डरकर भागे थे, गांव वग़ैरह लूटकर फिर उन्हींमें आघुसे. सिर्फ़ इस लिखावटसे ही 'मिराते-अहमदी' वालेकी तरफ़दारी और ख़ुशामद लोगोंके ध्यानमें आजायगी.

अब जो राजपूतानह के बड़वा भाटों अथवा ख्यात व शाइरोंकी पुस्तकों पर तवज्जुह कीजाय, तो वे भी घमंड और शेख़ीसे ख़ाली नहीं हैं. इसके सिवाय फ़ार्सी तवारीख़ों ही से काम लें तो उनमें मुसल्मानोंकी शिकस्त और राजपूतोंकी कारगुज़ारी का ज़िक्र नहीं मिलता. निदान यही सोच विचार कर राजपूत लोगोंका बाक़ी हाल राजसमुद्रकी प्रशस्तियों, पत्रों और पुस्तकोंसे, जो उसी वक़्की हैं, छांट छांटकर लिखा जाता है.

यह एक बात इस देशके लोगोंकी ज़बानी सुनीगई है, कि महाराणा राजसिंह

ने राजसमुद्र तालाबकी पाल तोड़नेके इरादेपर आलमगीरकी अवाई सुनकर उसी जगह लड़ाईका इरादह किया था, इसपर कुल सर्दारोंने मुनासिब समझकर महाराणाको तो मना किया, और आप सब लोग लड़नेके लिये पालपर जा जमे, लेकिन् सीसोदिया गरीबदास कर्णसिंहोतके बेटे श्यामसिंहने, जो बादशाही फ़ौजमें था, अर्ज़ी लिख भेजी, कि बादशाह तालाबको उम्दह बना हुआ देखकर उसकी पालको हर्गिज़ नहीं तुड़ावेगा, और अपने राजपूत सर्दारोंके नाहक़ मारे जानेसे आगेको तक्लीफ़ उठानी पड़ेगी, इसलिये दर्बारके पालपर रहनेके वक़ जैसी होती है, वैसी तय्यारी करादीजावे, और सर्दारोंको बुला लिया जावे. यह सलाह पक्की होनेपर सर्दारोंके नाम बुलावेका काग़ज़ लिखा गया, उसमें सब सर्दारों के नाम, जो पालपर मौजूद थे, लिखे, लेकिन् बणोलके ठाकुर सांवलदास (१) के भाई राठौड़ अनन्दसिंहका नाम भूलसे रहगया.

यह पत्र आने पर सब लोग महाराणाके पास चलेगये, और राठौड़ अनन्दसिंह अपने कितने एक साथियों समेत बादशाही फ़ौजसे लड़कर पालपर ही मारा-गया, जिसकी छत्री महाराणाने बनवाई, जो अबतक मौजूद है.

बादशाहने तालाब और पालकी खूबसूरती और तय्यारी देखकर उसका कुछ भी बिगाड़ न किया.

जब आलमगीर बादशाह मांडलसे रवाना होकर उदयसागरके पास पहुंचा, तो पहिले रास्तेमें राजसमुद्र तालाबके पास मंगरोप महाराज सबलसिंह पूरावत, भींडरके महाराज मुहकमसिंह शक्तावत और कई चूंडावत सर्दारोंने शाही फ़ौजपर छापा मारा; इससे बीस नामी राजपूत कई बादशाही मुलाज़िमों को मारकर मारे गये.

चीरवेके घाटेके पास, जहां शाहज़ादह अक्बर और तहव्वुरखां ठहरे हुए थे, झाला प्रतापसिंहने छापा मारा, और शाहज़ादहकी फ़ौजसे दो हाथी लेजाकर महाराणाको नज़ कियें. इसी तरह भदेसरके जागीरदार बछा राजपूतोंने भी कई बार छापा मारा.

बादशाह आलमगीरने नीचे लिखे हुए मक़ामों पर थाने बिठाये-

चित्तौड़, पुर, मांडल, मांडलगढ़, बैराठ, भैंसरोड़, नीमच, चलदू, सतखंडा, जीरण, ऊंटाला, कपासण, राजनगर और उदयपुर.

---

(१) इस सांवलदासके बेटे कृष्णदासको महाराणा जगत्सिंहने कैलवा जागीरमें दिया था, जो अबतक उसकी औलादके क़ब्ज़ेमें है.

कुंवर उदयभान और अमरसिंह चहुवानने २५ सवारोंके साथ उदयपुरके शाही थानेपर छापा मारा; और सहीह सलामतीसे निकलकर माल अस्बाव, जो हाथ आया, महाराणाको नज़ किया- इन्हें महाराणाने खुश होकर १२ ग्राम इनायत किये.

घाणेरावके ठाकुर मेड़तिया राठौड़ गोपीनाथ और देसूरीके ठाकुर सोलंखी विक्रमादित्यने बड़ी बहादुरीके साथ इस्लामख़ां रूमीको, जो १२ हज़ार फ़ौज लिये आता था, रोका, और घाटेमें नहीं घुसने दिया, खूब लड़ाई हुई, आख़िर इस्लामख़ां रूमी शिकस्त खाकर हटगया. महाराणाने चार हज़ार फ़ौजके साथ कुंवर भीमसिंहको गुजरातकी तरफ़ भेजा, इन्होंने बड़नगरके ज़िलेको लूटा, और तीन सौ छोटी मस्जिदें तुड़वा डालीं. फिर बड़नगरके निवासियोंसे फ़ौज ख़र्चके चालीस हज़ार रुपये लेकर पहाड़ोंमें चले आये; हसनअलीख़ां जंगी फ़ौज लेकर पहाड़ोंमें घुस आया, और ऊंदरी, पेई, कोटड़ा और गोराणाकी नालमें होताहुआ झाड़ौल पहुंचा.

महाराणाने रावत रत्नसिंह चूंडावत कृष्णावत रघुनाथसिंहोत, सलूंबर व पारसोलीके चहुवान राव केसरीसिंह, चूंडावत रावत महासिंह मेघावत राजसिंहोत और डोडिया ठाकुर नवलसिंह, चारोंको एक फ़ौजके साथ लड़नेके लिये भेजा. इन्होंने रातमें दुश्मनकी फ़ौज पर छापा मारा.

राजसमुद्रकी प्रशस्तिमें हसनअलीख़ांके साथ दूसरे सर्दार अब्दुल्लाख़ांका नाम लिखा है, परन्तु फ़ार्सी तवारीख़ोंमें इसका नाम कहीं नहीं है. अल्बत्ता यक्का ताज़ख़ां, जिसे कि आलमगीरने उदयपुरके मन्दिर तोड़नेपर मुक़र्रर किया था, उसके तीन बेटोंमेंसे एक का नाम अब्दुल्लाख़ां था, शायद वही हसन-अलीख़ांके साथ हो.

इस लड़ाईसे शाही फ़ौजका ज़ियादह नुक्सान हुआ, और हसनअलीख़ां जान लेकर बादशाहके पास पहुंचा. डोडिया ठाकुर नवलसिंह अपने बेटे मुहकमसिंह और कृष्णसिंह समेत इस लड़ाईमें बड़ी बहादुरीके साथ काम आया. महाराणाने नाहीं, व कोटड़े ग्राममें आकर अपने सब सर्दारोंको हुक्म दिया, कि मेवाड़में, जो मुसल्मानोंने थाने बिठाये हैं, एक दम सब उठा दो.

बादशाह अपनी फ़ौजका नुक्सान सुनकर उदयपुरसे चित्तौड़की तरफ़ रवाना होगया.

बान्सीके रावत केसरीसिंहके बेटे गंगादास शक्तावतको महाराणाने शाही फ़ौज के पीछे भेजा; उसने जाते ही हाथियोंके गिरोहपर छापा मारा, नौ हाथी छीन लाया,

और महाराणाको नज़ किये (१). आलमगीर तीसरे शाहज़ादह अक्बरको अपनी जगह छोड़कर चित्तौड़से अजमेरको चल दिया.

महाराणाने बद्नौरके ठाकुर सांवलदास राठौड़को कुछ फ़ौज देकर बदनोरकी तरफ़ भेजा, जिसने रूहुल्लाख़ां पर फ़त्ह पाई, महाराणाने बड़े कुंवर जयसिंहको तेरह हज़ार सवार और छब्बीस हज़ार पैदल देकर चित्तौड़की तरफ़ शाहज़ादह अक्बरसे लड़नेको भेजा. कुंवरने विक्रमी १७३७ आषाढ़ [हि० १०९१ जमादियुस्सानी = ई० १६८० जुलाई] को सादड़ीके झाला चन्द्रसेन, बेदलाके राव सबलसिंह चहुवान, रावत रत्नसिंह चूंडावत, बान्सीके कुंवर गंगादास शक्तावत, बीजोल्याके पुंवार वैरीशाल, बान्सीके रावत केसरीसिंह, भींडरके महाराज मुह्कमसिंह शक्तावत, सलूंबर व पारसौलीके राव केसरीसिंह चहुवान, महाराज भगवन्तसिंह, कोठारियाके रावत रुक्माङ्गद चहुवान, राव रत्नसिंह खीची, आमेटके चूंडावत रावत मानसिंह, शक्तावत रावत मुह्कमसिंह, चूंडावत रावत केसरीसिंह, चूंडावत माधवसिंह, शक्तावत कान्हजी, वगैरह सर्दारोंको दस हज़ार सवार और दस हज़ार पैदल देकर चित्तौड़की तलहटीमें शाहज़ादहकी फ़ौजपर हम्ला करनेको भेजा. उस वक्त अंधेरी रात और पानीकी बूंदें गिरती थीं; राजपूत लोग एक दम टूट पड़े, किसीने सामना किया, कोई यों ही भागा, बहुतसे आदमी आपस हीमें लड़ मरे. राजपूतोंने खूब दिल खोलकर तलवार, कटार, और बछोंसे सवाल जवाब किये. फिर हाथी, घोड़ा, डेरा, अस्बाब, नक़ारा निशान, जो हाथ आया, लूट लिया; और सूर्य निकलनेसे पहिले कुंवर जयसिंहके पास चलेआये.

---

(१) इस लड़ाईके बारेमें कर्नेल् टॉड लिखता है, कि बादशाह आलमगीरकी सर्केशियन बेगमको महाराणा राजसिंहने गिरिफ़्तार किया, और उसको बहिन बनाकर वापस बादशाहके पास भेजदिया. इसके सिवाय नाथद्वारेके गोसांइयों की 'प्रागट्य' नाम पुस्तकमें भी लिखा है, कि आलमगीरकी रंगी चंगी बेगमको महाराणाने गिरिफ़्तार किया था, लेकिन् हमको इन लेखोंके सिवाय और कोई पुख़्ता सुबूत नहीं मिला है. नाथद्वारेकी पुस्तकमें औरंगज़ेबकी बेगम औरंगाबादीको बिगाड़ कर रंगी चंगी लिखा हो तो वह बेगम बादशाहके उदयपुरसे अजमेर पहुंचनेके बाद आगरेसे अजमेरमें विक्रमी १७३७ ज्येष्ठ कृष्ण २ [हि० १०९१ ता० १६ रबीउस्सानी = ई० १६८० ता० १७ मई] को आई थी- शाय्यद बादशाहके आते जाते वक्त कोई दूसरी बेगम पर यह हाल गुज़रा हो तो मालूम नहीं, क्योंकि निर्मूल बातकी ज़ियादह प्रसिद्धि नहीं होती, और यह बात बहुत मश्हूर है, और फ़ार्सी तवारीख़ोंका इस बातसे एतिबार नहीं है कि उन्होंने मुसल्मानोंकी शिकायतें बिल्कुल छोड़ दीं.

कुंवरने इन लोगोंकी तारीफ़ करके हिम्मत दिलाई, और इज़्ज़त बढ़ा बढ़ा कर जागीरें दीं; लूटे हुए सामानमें से, जो रखनेके लायक़ था, लिया; बाक़ी इन्हीं लोगोंको बांट दिया.

इसके बाद कुंवर जयसिंह अपने साथी सर्दारों समेत पूर्वी पहाड़ोंमें ठहरकर यहांसे मालवा वगैरह बादशाही मुल्कोंको नुक्सान पहुंचाते रहे, परन्तु बर्सातका मौसम आजानेके सबब लड़ाईपर ज़ियादह ज़ोर नहीं दिया, और बादशाही तरफ़से भी हम्ला न हुआ.) कुंवर जयसिंहकी इस हम्ला आवरीका हाल फ़ार्सी तारीख़ वालोंने बिल्कुल छोड़दिया, शाहज़ादह अक्बरके एवज़ आज़मको चित्तौड़ भेजना, और अक्बरका नाराज़ होकर मारवाड़की तरफ़ जाना, इस लड़ाईके हालको ज़ाहिर करता है; क्योंकि आलमगीरने नाराज़ होकर अक्बरकी बदली की होगी. इस बड़ी लड़ाईके सिवाय इन महाराणाका और कोई हाल जिसके ख़त्म होनेसे पहिले वह गुज़रगये, लिखनेके लायक़ नहीं मिलता.

विक्रमी १७३७ कार्तिक शुक्क १० [हि० १०९१ ता० ८ शव्वाल = ई० १६८० ता० ३ नोवेम्बर] को महाराणा राजसिंहने कुंभलगढ़ परगने नलाके ग्राम ओड़ा में इन्तिक़ाल किया. इनके देहान्तकी बाबत अक्सर लोगोंका ख़याल है, कि उनको ज़हर दियागया.

रईस, आदमी बीमार होकर मरे तो जादूसे जान देनेका शुब्ह, और एकदम किसी बीमारीसे प्राण निकल जांय तो ज़हर देनेकी फ़र्याद होती है, परन्तु किसी वक़् बेशक बे ईमान लोग ज़हर देकर भी अपने मालिकको मार डालते हैं. बहुतसे लोग इनको विष देनेके बारेमें यह कारण बताते हैं. पहिला- तेज़ मिज़ाजीके सबब सब लोगोंकी नाराज़गी; दूसरे- महाराणाका यह विचार था कि राणी, कुंवर, पुरोहित, और बारहठके मार डालनेका पाप दूर करनेके लिये लड़ाईमें माराजाना, चाहिये; इससे लोगोंकी यह राय थी, कि इन्हें तो आप पाप उतारना है, लेकिन् दूसरे हज़ारों आदमियोंकी जान देकर देशको क्यों बर्बाद करते हैं.

तीसरे- आलमगीर और उसके बेटोंके मुवाफ़िक़ इन महाराणाके कुंवर भी उनके स्वभावसे कांपते थे, कि हमारी जान भी कभी ख़तरेमें न आजावे, क्योंकि कुंवर सुल्तानसिंहको महाराणाने मारडाला था, और कुंवर सर्दारसिंह भी ज़हर खाकर मरगये थे. अगर इन ऊपर लिखी हुई बातोंसे महाराणाको विष दियागया हो तो तअ्ज्जुब नहीं है, और दूसरी यह बात भी ज़हर देनेकी ताईद करती है कि महाराणाने हुक्म दिया कि कोठारियासे पूर्व चौगान (मैदान) में तलवार, बर्छे और

कटारसे लड़ मरना उचित है- यही सोचकर शाहज़ादह आज़मको लिख भेजा, उसने भी खुशीसे कुबूल करके लड़ाईकी तय्यारी की, क्योंकि इसे महाराणापर फ़त्ह पानेकी बहुत आर्जू थी. आख़िरकार बादशाही फ़ौज रुक्मगढ़के पास आपहुंची, परन्तु महाराणाको सब मुसाहिबोंने रोका और कहा, कि अपनी सब फ़ौज पहिले एकट्ठी कर ली जावे, फिर लड़ना चाहिये. इसपर महाराणाने कहा, कि मुसल्मानोंको मैं बुलवा चुका हूं, उनसे झूठा पड़ूंगा; जिसपर कोठारियाके रावत रुक्माङ्गदने कहा, कि आपके एवज़ बादशाही फ़ौजसे मैं लड़ूंगा, और यह बहादुर सर्दार उसी प्रकार अपने राजपूतों समेत लड़नेको जा पहुंचा; बड़ी बहादुरीके साथ लड़ाई की (१). इसके बाद महाराणा नेणवारा ग्रामसे निकलकर कुंभलमेर जाते थे, सुब्हके वक्त ओड़ा नाम ग्राममें पहुंचे, वहां खिचड़ी तय्यार करवाई, और दधिवाड़िया चारण खेमराजके बेटे आशकरणको, जिसे महाराणा भाई कहकर पुकारते थे, साथ लेकर भोजनको बैठे, थोड़ी देरके बाद दोनोंका देहान्त होगया.

इसी बातपर एक कविका मारवाड़ी भाषामें बनायाहुआ दोहा इस तरह मश्हूर हैः-

दोहा.

ओड़ै रतन संघारिया । राजड़ आश करन्न ॥
ऊ हिंदवाणी पातशा । ऊ पातशा वरन्न ॥ १ ॥

इनका जन्म विक्रमी १६८८ कार्तिक कृष्ण २ [हि० १०४१ ता० १६ रबीउल्अव्वल = ई० १६३१ ता० १२ ऑक्टोबर] को मेड़तिया राठोड़ राजसिंहकी बेटी जनादे बाईसे हुआ था.

इन महाराणाका छोटा क़द, बड़ी आंखें, चौड़ी पेशानी और गेहुआं रंग था; मिज़ाज तेज़ व सख़्त, लेकिन् किसी किसी मौक़ेपर रहम भी करते थे, ऐश आराम व फ़य्याज़ी ज़ियादह पसन्द थी; दूसरेकी सलाहपर कम चलने वाले और ख़ुद बहादुर थे. इनके समयमें प्रजा प्रसन्न और ख़ज़ाना भरपूर था, धर्मके पक्के और आक़िबत (परलोक) का पूरा विचार रखते थे.

इन्होंने ब्राह्मणोंको बहुतसा दान दिया, और लाखों रुपया चारण आदि

---

(१) कोठारिया वालोंके बयानसे रुक्माङ्गदका इसी लड़ाईमें माराजाना ज़ाहिर होता है, परन्तु महाराणा जयसिंहकी जब आलमगीरसे सुलह हुई, तब उसका उस वक्तके काग़ज़ोंसे ज़िन्दा होना साबित है, इससे मालूम होता है, कि ज़ख़्मी होकर बचा, या छापा मारकर चला आया होगा.

कवियोंको इनायत किया था. (१) इनके खौफ़से मुलाज़िम हमेशह डरे हुए रहते थे, तो भी राजपूत लोग सच्चे खैरख्वाह और बहादुर थे.

इन महाराणाके महाराणियां नीचे लिखे अनुसार थीं:-

१ बूंदीके राव शत्रुशालकी बेटी महाराणी हाड़ी कुंवरांबाई.
२ राव मनोहरदासकी बेटी महाराणी भटियाणी कृष्णकुंवर.
३ राठोड़ राव कल्याणदासकी बेटी महाराणी राठौड़ आनन्द कुंवर.
४ झाला विजयराजकी बेटी महाराणी झाली केसर कुंवर.
५ बीझोल्यांके पुंवार राव इन्द्रभाणकी बेटी महाराणी पुंवार सदा कुंवर.
६ झाला विजयराजकी बेटी महाराणी झाली रूपकुंवर.
७ बीरपुरा जशवन्तसिंहकी बेटी महाराणी बीरपुरी दुर्गावती.
८ बेदलाके पूर्बिया चहुवान राव रामचन्द्रकी बेटी महाराणी चहुवान जगीस कुंवर जिनके पुत्र राजा भीम हुए.
९ पुंवार जुझारसिंहकी बेटी महाराणी पुंवार बदन कुंवर.
१० चहुवान राव पृथ्वीराजकी बेटी महाराणी चहुवान रत्नकुंवर.
११ झाला कर्णसिंहकी बेटी महाराणी झाली पैप कुंवर.
१२ सादड़ीके झाला रायसिंहकी बेटी झाली रत्नकुंवर.
१३ पुंवार दयालदासकी बेटी महाराणी पुंवार आसकुंवर.
१४ खीची राव मानसिंहकी बेटी महाराणी खीचण सूरजकुंवर.
१५ राठौड़ जोधसिंहकी बेटी महाराणी राठौड़ हरकुंवर.

---

(१) यह महाराणा आप भी कविता करते थे, जिन्होंने एक छप्पय अपना कहा हुआ राजसमुद्र तालावकी पालपर महलके गोखड़ेकी पूर्वी फेटमें खुदाया था, महाराणा श्री सज्जनसिंहके समयमें जब कि मरम्मत कीगई, तो कारीगरोंने भूलसे उन अक्षरोंपर क़लई फेरदी, जिससे वह अब साफ़ नहीं पढ़े जा सके.

छप्पय.

कहां राम कहां लखण । नाम रहिया रामायण ।
कहां कृष्ण बलदेव । प्रगट भागोत पुरायण ॥
बालमीक सुक व्यास । कथा कविता न करंता ।
कुण सरूप सेवता । ध्यान मन कवण धरंता ॥
जग अमर नाम चाहो जिके । सुणो सजीवण आखरां ।
राजसी कहै जग राणरो । पूजो पांव कवीसरां ॥ १ ॥

१६ कृष्णगढ़के राजा रूपसिंहकी वेटी महाराणी राठौड़ चारुमती बाई.

१७ पुंवार जुझारसिंहकी बेटी महाराणी पुंवार रामरसदेकुंवर, जिनके पुत्र महाराणा जयसिंह हुए.

१८ जैसलमेरके भाटी रावल सबलसिंहकी वेटी महाराणी भटियाणी चन्द्रमती बाई, जिनके पुत्र इन्द्रसिंह, गजसिंह, सुल्तानसिंह, सर्दारसिंह, बहादुरसिंह, और कन्या अजबकुंवर बाई थी.

ये १८ महाराणियां और आठ कुंवर थे, जिनमें से कुंवर सूरतसिंहकी माता का नाम मालूम नहीं कि कौनसी महाराणीसे थे.

महाराणी राठौड़ चारुमती बाई कृष्णगढ़के राजा रूपसिंहकी बेटीने एक बावड़ी राजनगरमें पश्चिमकी तरफ़ बनवाई, और उसकी प्रतिष्ठा विक्रमी १७३२ [हि० १०८६ = ई० १६७५] में हुई थी, दैवारीके भीतर झरणाकी सरायके पास त्रिमुखी बावड़ी महाराणी पुंवार रामरसदे बाईने बनवाई थी, जिसकी विक्रमी १७३३ [हि० १०८७ = ई० १६७६] में प्रतिष्ठा हुई, चौबीस हज़ार रुपये इस बावड़ीके बनवानेमें लगे थे- (शेषसंग्रह नम्बर ९).

महाराणा राजसिंहने कुंवरपदेमें "सर्वऋतु विलास" बाग़, और महल बनवाया, और फिर दैवारी (देवड़ावारी- देववारी मश्हूर) के घाटेका कोट, दर्वाज़ा, बावड़ी और छोटा तालाब बनवाया.

इस घाटेका कोट और छोटा दर्वाज़ा पहिले महाराणा उदयसिंहका बनवाया हुआ, विक्रमी १६७१ [हि० १०२३ = ई० १६१४] में शाहज़ादह खुर्रमने गिरवा दिया था, उसी छोटे घाटेका नाम "देववारी" इस तरह पड़ा होगा, कि या तो वहां किसी देवताका मन्दिर बनाया हो, या देवड़ा लोगोंके नामसे रक्खा गया हो.

इन महाराणाके छोटे भाई अरिसिंहकी धायने जगन्नाथरायजीके मन्दिरसे उत्तरी तरफ़ बाज़ारमें एक मन्दिर बनवाया था, जिसकी प्रतिष्ठा विक्रमी १७०० माघ शुक्ल १२ [हि० १०५३ ता० १० ज़िल्क़ाद = ई० १६४४ ता० २१ जैन्युअरी] को हुई- (शेषसंग्रह नम्बर १०).

बीकानेरका इतिहास.

जुग़्राफ़ियः

[महाराणा राजसिंहने गद्दीपर बैठतेही अपनी बहिनका विवाह बीकानेरके महाराजा कर्णसिंहके कुंवर अनूपसिंहके साथ किया था, इस लिये वहांका तारीख़ी हाल यहां लिखाजाता है.]

बीकानेरका राज्य २७ अंश १२ कला और ३० अंश १२ कला दक्षिणोत्तर, और ७२ अंश १५ कला और ७५ अंश ५० कला पश्चिम पूर्व है; रक़्बा २२३४० मील मुरब्बा है. सालाना आमदनी राजपूताना गज़ेटियर में दस लाख पांच हज़ार रुपये लिखी है, जिसमें ज़मीनी महसूलके चार लाख पचासी हज़ार नौ सो सत्तानवे रुपये हैं, बाक़ी दाण दण्ड वग़ैरहसे लिया जाता है; आबादी ५०९०२१ आदमीकी है. मुल्कमें पानी बहुत कम और रेता कसरतसे है.

३५० वा ४०० फुटतक खोदनेसे कुओंमें पानी निकलता है, लेकिन् किसी २ कुएका पानी ऐसा ज़हरीला होता है, कि आदमी या जानवर पेट भरके पीवे, तो मर जावे, इसको वहां वाले "बिराहिया" पानी बोलते हैं. बाज़े मालदार आदमी पक्के हौज़ बनवाकर बर्साती पानी भररखते हैं. इस मुल्कमें कोई नदी नहीं है, एक छोटासा नाला शेखावाटीकी तरफ़से आकर रेतमें ग़ायब होजाता है.

यहांपर खेजड़ी, कैर, फोग, और बेरके पेड़ अक्सर होते हैं. ग़ल्ला ज़ियादहतर बाजरी और मौठ होता है, इसके सिवाय तिल, मूंग भी पैदा होते हैं, और नमककी एक झील सुजानगढ़की तरफ़ छः मील लंबी और दो मील चौड़ी है, पर थोड़े दिनोंमें ही सूख जाती है; दूसरी बीकानेरसे ४० मील पूर्वोत्तरको है, लेकिन् इन दोनों झीलोंका नमक ख़राब होता है, जिसको ग़रीब लोग ही काममें लाते हैं.

यहांकी आब हवा देसियोंके लिये किसी क़द्र अच्छी. और यूरोपियन वग़ैरह लो[illegible] के लिये ख़राब है. मौसम गर्म और सर्द दोनों सख़्त होते हैं, यानी सर्दीके [illegible] में पालेसे दरख़्त जलजाते हैं, और गर्मीमें लूसे अक्सर आदमी मरजाते हैं [illegible] बहुत कम होती है, यहांतक कि एक मेह पड़नेसे [illegible] दरजा, और [illegible] मामूली बात, और तीन मेह पड़जानेको बहुत [illegible] मानते हैं.

इस मुल्कका उम्दह मेवा तर्बूज़ है, मवेशी सब क़िस्मके होते हैं, परन्तु ऊंट और बकरी इस मुल्कके निहायत उम्दह होते हैं.

आदमी मिहनती होते हैं, उनका खाना और पहन्ना थोड़े ख़र्चमें होसक्ता है, पानीकी कमीसे ग़िलाज़त इस दरजेपर है, कि नहाना तो दूर किनार बल्कि हाथ मुंह धोनेमें भी किफ़ायत कीजाती है.

तवारीख़.

जोधपुरके राव रणमल्लके बेटे राव जोधाका छोटा बेटा बीका, जिसका जन्म विक्रमी १४९५ श्रावण शुक्ल १५ (१) [हि० ८४२ ता० १४ सफ़र = ई० १४३८ ता० ७ जुलाई] को हुआ था, विक्रमी १५२२ आश्विन शुक्ल १० [हि० ८७० ता० ८ सफ़र = ई० १४६५ ता० १ ऑक्टोबर] को अपने पिता जोधासे विदा होकर नई ज़मीनपर क़ब्ज़ा करनेके लिये जांगलूकी तरफ़ रवाना हुआ; उस वक़ उसके हमराह नीचे लिखे हुए आदमी थे-

काका कांधल, काका रूपा, काका मांडण, काका मंडला, काका नाथू, भाई जोगायत, भाई बीदा, सांखला नापा, परिहार बेला साहणी; और कामदारोंमें से बैद लाला, लाखणसी, कोठारी चौथमल्ल, बछावत वरसिंह, पुरोहित विक्रमसी, साहूकार राठी साला वग़ैरह १०० सवार और ५०० पैदलकी भीड़भाड़ थी.

जब बीका देश्णोकमें पहुंचा, तो वहां उसको चारण ख़ान्दानकी करणी नामी एक स्त्री, जिसे कि चारण लोग अपनी कुल देवीका अवतार मानते हैं, मिली; और बीकाको वरदान दिया कि तुम्हारा राज्य इस देशमें बहुत बढ़ेगा.

फिर बीका श्री करणी देवीकी इजाज़तसे तीन वर्षतक चूंडासरमें, छः वर्ष तक देश्णोक में, इसके बाद तीन वर्ष कोड़मदेशरमें, और दस वर्ष जांगलूमें रहा. फिर भाटियों वग़ैरह वहांके रहने वालोंसे लड़ाइयां कीं; एक लड़ाईमें भाटी कलकर्ण तीन सौ भाटी राजपूतों समेत मारागया, और पूंगलके भाटी शेखाने श्री करणीदेवीके समझानेसे अपनी बेटी बीकाको ब्याहदी. इसके बाद बीकाको अपनी राजधानी और क़िला बनानेकी फ़िक्र हुई, तब सांखला नापा वग़ैरह राजपूतोंकी सलाहसे विक्रमी १५४२ [हि० ८९० = ई० १४८५] में

---

(१) हमको एक जन्मपत्री राव बीकाकी मिली, जिसमें विक्रमी १४९७ प्रथम श्रावण शुक्ल १५ [हि० ८४४ ता० १४ सफ़र = ई० १४४० ता० १६ जुलाई] लिखा है, लेकिन बीकानेरकी तवारीख़में विक्रमी **१४९५** है, इस लिये मूलमें वही लिखा गया.

राती घाटीपर क़िला बनानेकी नीव डाली, और विक्रमी १५४५ वैशाख शुक्ल २ [हि० ८९३ ता० १ जमादियुल्अव्वल = ई० १४८८ ता० १५ एप्रिल] शनिवारको वहां शहर बसाकर उसका नाम बीकानेर रक्खा, और उसे अपनी राजधानी बनाया; उस वक़्का एक दोहा मारवाड़ी भाषामें बनाहुआ इस तरहपर है-

दोहा.

पनरै से पैंतालवै । सुद वैशाख सुमेर ॥
थावर बीज थरप्पियो । बीके बीकानेर ॥ १ ॥

इस देशपर शुरूमें जाट लोग हुकूमत करते थे, राव बीकाने उन्हें दबाकर अपने मातहत बनाया.

बीकानेरका हिन्दी इतिहास, जो कर्नेल् पाउलेट् साहिब रेज़िडेण्ट मारवाड़की मारिफ़त हमारे पास आया है, उसमें राव बीकाका तीन हज़ार ग्रामोंपर क़ब्ज़ा करना लिखा है; और कर्नेल् टॉड दो हज़ार छः सौ सत्तर गांवोंपर इख्तियार होना बयान करते हैं. बीकाने भाटी, बिलोच और जाटोंसे छीनकर इस देशको अपने क़ब्ज़ेमें किया; रावको उसी चारण वंशकी श्री करणीदेवीपर ज़ियादह विश्वास था, जिससे सारे काम उसीकी हिदायतसे करते थे.

बीकाका काका कांधल तिहत्तर वर्ष की उम्र में हिसारके सूबेदार सारंगखां (शायद इसका सहीह नाम शाहरुख़ होगा) से लड़कर मारागया, जिसके बदलेमें बीकाने चढ़ाई करके उस मुसल्मानको मारा.

इसी तरह अजमेरके सूबेदार मलिकखान्ने मेड़ताके मालिक राव जोधाके बेटे बरसिंहको अजमेरमें क़ैद कर दिया था, उसके भाई दूदाको बीकाने मदद पहुंचाकर बरसिंहको छुड़ाया. बीकानेर वाले मलिकख़ान्को मांडूके बादशाहका सूबेदार बतलाते हैं, लेकिन् यह लोहानी खान्दानका पठान था, और गुजरात राजस्थानमें इसका नाम मलिक यूसुफ़ लिखा है, जो पश्चिमी अफ़ग़ानोंमेंसे हिन्दुस्तानमें आया था.

जब विक्रमी १५४५ [हि० ८९३ = ई० १४८८] में राव जोधाका देहान्त हुआ, और राव सांतल मारवाड़की गद्दीपर बैठा. विक्रमी १५४८ [हि० ८९६ = ई० १४९१] में यह भी मुसल्मानोंसे लड़कर मारागया; जिसपर उसका भाई सूजा जोधपुरका मालिक बना, इस वक़्त राव बीकाने जंगी फ़ौजके साथ जोधपुरपर चढ़ाई की, क्योंकि सांतलके बाद जोधाके बेटोंमें यही सबसे बड़ा था, इसलिये जोधपुरको दबाना चाहा. वहां तो सांतलकी गद्दीपर सूजा बैठ चुका था; उसने जोधपुरके

क़िलेको मज़बूत किया. बीकाने शहर और क़िलेपर घेरा डाला, आख़िर इस शर्तपर फ़ैसला हुआ, कि जो चीज़ें इज़्ज़त और करामातकी समझी जाती थीं, और जो नीचे लिखी हैं, राव बीकाने लेलीं, और जोधपुरका राज मारवाड़ समेत सूजाके क़ब्ज़ेमें रहा.

राव जोधाकी ढाल, तलवार, तख़्त, छत्र, चंवर, और सांखला हरबूकी दीहुई ढाल, तलवार, कटार, लक्ष्मी नारायण हिरण्यगर्भ और नागणेची कुलदेवीकी मूर्ति, करंडभंवर ढोल, वैरीशाल नक़ारा, दलशृंगार घोड़ा, वग़ैरह. यह चीज़ें लेने बाद राव बीका देष्णोकमें श्री करणी देवीका दर्शन करके बीकानेर आया. जोधपुरके इतिहासमें इस हालको बहुत कम लिखा है.

राव बीकाने अपने काका और भाइयोंको नीचे लिखी जागीरें दीं–

कांधलका बड़ा बेटा बाघ तो लड़ाइयोंमें मारागया था, दूसरे राजसिंहको राजासर, और बनीर बाघावतको चाचावाद और गांघूकी जागीर मिली. अरड़कमल्ल कांधलोतको साहिबा जीविकामें मिला, और रूपसिंहको चाखूका परगना दियागया. काका मंडलाको सारूंडा मिला, नाथूने चानी जागीरमें पाया.

विक्रमी १५६१ आश्विन शुक्ल ३ [हि० ९१० ता० १ रबीउस्सानी = ई० १५०४ ता० १४ सेप्टेम्बर] में बीकाका परलोक वास हुआ. उनके दस पुत्र थे– नरा, लूणकर्ण, घड़सी, राजसी, मेघराज, केलण, देवसी, विजयसिंह, अमरसिंह, और बीसा.

---

२ नराका गद्दीपर बैठना.

बड़ा कुंवर नरा गद्दीपर बैठा, जिसका जन्म विक्रमी १५२५ कार्तिक कृष्ण ४ [हि० ८७३ ता० १८ रबीउल्अव्वल = ई० १४६८ ता० ७ ऑक्टोबर] को हुआ था, इनका देहान्त गद्दीपर बैठनेके चार महीने बाद विक्रमी १५६१ माघ शुक्ल ८ [हि० ९१० ता० ६ शअ्बान = ई० १५०५ ता० १५ जैन्युअरी] को हुआ.

---

३ लूणकर्ण.

नराके कोई बेटा न होनेके कारण उनका दूसरा भाई लूणकर्ण गद्दीपर बैठा, जिसका जन्म विक्रमी १५२६ माघ शुक्ल १० [हि० ८७४ ता० ८ रजब = ई० १४७० ता० १३ जैन्युअरी] को हुआ था.

विक्रमी १५६१ फाल्गुण कृष्ण ४ [हि० ९१० ता० १८ शअ्बान = ई० १५०५ ता० २४ जैन्युअरी] को गद्दी उत्सव हुआ. विक्रमी १५६६ [हि० ९१५ = ई० १५०९] में ददरेवाके चहुवान बदलगये थे, जिनपर यह फ़ौज लेकर गये. ददरेवाका मानसिंह चहुवान तीन सौ आदमियोंके साथ मारागया; और राव लूणकर्णके एक सौ सैंतीस आदमी कामआये. ददरेवा क़ब्ज़े करके राव बीकानेर आये, और विक्रमी १५६९ [हि० ९१८ = ई० १५१२] में फ़तहपुरके क़ायमख़ानी दौलत-ख़ांपर फ़तह पाकर १२० ग्राम फ़ौज ख़र्चमें लिये. विक्रमी १५७० फाल्गुण कृष्ण ३ [हि० ९१९ ता० १७ ज़िल्हिज = ई० १५१४ ता० १२ फ़ेब्रुअरी] को महाराणा रायमल्लकी बेटी (१) से विवाहकरनेको राव लूणकर्ण चित्तौड़ आये, इस शादीमें लूणकर्णने इनआम इक्रराममें बहुत धन लुटाया.

फिर जैसलमेरके रावल देवीदास चाचावतसे विक्रमी १५८३ [हि० ९३२ = ई० १५२६] में राव लूणकर्णने लड़ाई की, देवीदास क़ैद हुआ, लूणकर्णने जैसलमेरके क़िलेको घेरलिया. इसके बाद सुलह करके राव लूणकर्ण बीकानेरको आता था, कि जैसलमेरकी मददके लिये सिंधका नव्वाब (२) आपहुंचा, लड़ाईके वक़ बीकानेरके भाटी और बीदावत राजपूत भाग निकले, जिससे राव लूणकर्ण विक्रमी १५८३ श्रावण कृष्ण ४ [हि० ९३२ ता० १८ रमज़ान = ई० १५२६ ता० २९ जून] को अपने बेटे प्रतापसिंह, नेतसी, बैरसी, और पुरोहित देवीदास समेत मारे गये: इनके साथ तीन राणियां सती हुईं.

राव लूणकर्णके १२ बेटे थे १ जैतसी जो गद्दीपर बैठा, २ प्रतापसी से प्रतापसिंहोत बीका कहलाये. ३ बैरसीके बेटे नारायणसी से नारायणोत बीका कहलाये, चौथे रत्नसीकी औलाद महाजनके ठाकुर रत्नसिंहोत बीका हैं, ५ तेजसीके तेजसिंहोत बीका, ६ नेतसी, ७ कर्मसी, ८ कृष्णसी, ९ सूरजमल्ल, १० रामसी, ११ कुशलसिंह, और बारहवां रूपसिंह था.

इनमेंसे कर्मसीने नीचे लिखेहुए दोहेपर सिरोहीके चारण बारहठ आसाको

---

(१) इस शादी में रायमल्लका ज़िन्दा होना पाउलेट साहिबके गज़ेटियर और बीकानेरकी तवारीख़से साबित होता है, और उन्होंने लिखा है कि महाराणा रायमल्लका कुंवर सांगा पेश्वाईको आया; परन्तु ऐसा नहीं है, रायमल्लका देहान्त तो विक्रमी १५६५ में होगया था; यह विवाह महाराणा सांगाने अपनी बहिनका लूणकर्णके साथ किया होगा.

(२) इस नव्वाबका नाम बीकानेरकी तवारीख़ व पाउलेट साहिबके गज़ेटियरमें भी कुछ नहीं लिखा.

एक किरोड़का दान दिया बतलाते हैं, लेकिन् किरोड़ रुपये पास नहीं थे; इसलिये अपने बेटे कीर्तिसिंहको रुपयोंके एवज़में दे दिया, जिनकी औलादके सिरोहीमें कर्मसिंहोत बीका कहलाते हैं.

दोहा.

सह दूजो संसार । माटी सूं घड़ियो महण ॥
तो घड़ियो करतार । काया हूंता कर्मसी ॥ १ ॥

४ राव जैतसी.

राव लूणकर्णकी गद्दीपर राव जैतसिंह बैठे; इनका जन्म विक्रमी १५४६ कार्तिक शुक्ल ८ [हि० ८९४ ता० ६ ज़िल्हिज = ई० १४८९ ता० २ नोवेम्बर] को हुआ था. जब राव लूणकर्ण मारेगये, तो बीदावत उदयकर्ण द्रोणपुरका ठाकुर बीकानेर लेनेके इरादहपर आया, परन्तु जैतसिंहने उसे शहरमें न आने दिया, और गादीपर बैठनेके बाद द्रोणपुर छीन लिया.

विक्रमी १५८५ [हि० ९३५ = ई० १५२८] में जोधपुरके राव गांगा बाघावत और उनके काका शेखा सूजावतके लड़ाई हुई. इस लड़ाईमें नागौरका ख़ान दौलतखां शेखाकी मददपर था, और राव जैतसी राव गांगाकी मददपर बीकानेरसे गया; इस लड़ाईमें शेखा मारागया. नागौरका ख़ान भागगया, और राव गांगाकी फ़त्ह हुई, राव जैतसी देश्णोकमें करणी देवीका दर्शन करके बीकानेर आया, इसके बाद विक्रमी १५९५ चैत्र शुक्ल ९ [हि० ९४४ ता० ७ शव्वाल = ई० १५३८ ता० ९ मार्च] को करणीजीका देहान्त हुआ. यह देवी जैसलमेरके रावल जैतसीको अच्छा करने गई थी, जब कि उनका बदन खूनकी ख़राबीसे बिगड़गया था; जैसलमेर से लौटते वक़ गड़ियाला ग्राममें खराद्या तालावपर इस देवीका देहान्त हुआ. लोग बयान करते हैं कि उन्होंने शरीरसे अग्नि उत्पन्न करके योगशास्त्रकी रीतिसे अपनी देह को भस्म किया था. इनका मन्दिर देश्णोकमें बनवायागया, जिसको अबतक बीकानेरकी रियासतमें बहुत बड़ा मानते हैं; जैसे उदयपुरमें श्री एकलिङ्गजीका मन्दिर है, वैसे ही बीकानेरमें करणी देवीका स्थान मानाजाता है. राजपूतानहमें भी कई जगह इस देवीके मन्दिर बनेहुए हैं. पहिले उदयपुरमें करणीजीका मन्दिर नहीं था, इसलिये श्री वैकुण्ठवासी महाराणा सज्जनसिंहने एक मन्दिर हाथी पौल दर्वाज़हके बाहर मेरे (कविराज श्यामलदासके) बाग़में, और दूसरा चित्तौड़ गढ़की तलहटीमें मेरी (उक्त कविराजकी) बावड़ीके पास रेलकी सड़कपर बनवाया.

विक्रमी १५९५ [हि० ९४५ = ई० १५३८] में बाबर बादशाहका बेटा और हुमायूंका भाई कामरां जंगी फ़ौजके साथ बीकानेरपर चढ़ा, परन्तु राव जैतसीसे हारकर भागा. इस फ़तहका होना भी करणी देवीकी करामातसे बयान कियाजाता है; उस वक़्के मारवाड़ी भाषामें कहे हुए ये दोहे हैं-

दोहा.

कांटा करना देवरा कांटां ऊपर वट्ट ॥
राव हकारे जैतसी भागे काबुल थट्ट॥१॥
करनांदे आछी करी राखी बीकानेर ॥
काढ खज़ाना गैबका फ़ौजां दीधी फेर॥२॥

इसमें काबुलका थट्ट (गिरोह) इस वास्ते कहा है कि इन दिनों कामरां काबुलका जागीरदार था.

फिर जोधपुरके राव मालदेवने बीकानेरपर चढ़ाई की, और राव जैतसी भी बीकानेरसे चढ़कर सोवा ग्राममें पहुंचा, लेकिन् रातके वक़् राव जैतसी किसी ज़रूरी कामके लिये छिपकर बीकानेर चला आया. यह हाल देखकर फ़ौजके राजपूतोंने जाना कि राव भागगये, जिससे फ़ौजके सर्दार भी निकल भागे, प्रातःकालके समय राव जैतसी पीछे आये, तो मालदेवकी फ़ौजने उनको घेरलिया, इसमें राव जैतसी बड़ी बहादुरीके साथ विक्रमी १५९८ चैत्र कृष्ण ११ [हि० ९४८ ता० २९ ज़िल्क़ाद = ई० १५४२ ता० १२ मार्च] को लड़कर मारेगये, जिनके साथ नीचे लिखेहुए आदमी काम आये-

सोनगरा सारंगदेव जयमलोत, साहणीराम वेलासरका, दर्बारी माधव जैतमालोत, पुरोहित लक्ष्मीदास देवीदासका.

इसके बाद राव मालदेवने बीकानेर आ घेरा, जैतसीकी राणी और बेटी तो निकलकर सरसामें चलीगई, और बीकानेरका क़िलेदार रूपावत भोजराज व सांखला महेशदास अच्छी तरह लड़कर १५०० आदमियों समेत मारेगये, बीकानेर मालदेवके क़ब्ज़ेमें आगया.

राव जैतसीके १३ बेटे थे- कल्याणसिंह, भीमराज, ठाकुरसी, मालदे, कान्ह, शृंग, सूर्जन, कर्मसेन, पूर्णमल्ल, अचलदास, मान, भोजराज, और तिलोकसी.

५ कल्याणसिंह.

इनका जन्म विक्रमी १५७५ माघ शुक्ल ६ [हि० ९२५ ता० ४ मुहर्रम = ई० १५१९ ता० ७ जैन्युअरी] को हुआ था; इन्होंने सरसा ग्राममें गादी बैठनेका दस्तूर अदा किया, क्योंकि बीकानेर राव मालदेवके क़ब्ज़ेमें था. थोड़ासा इलाक़ा इनके पास रहा, जिससे गुज़ारा करते थे, लेकिन् उसी अर्सेमें शेरशाह सूर दिल्लीका बादशाह होगया, इससे कल्याणसिंहने अपने छोटे भाई भीमराज को दिल्ली भेजदिया. इधर मेड़तियोंसे भी मालदेवने मेड़ता छीन लिया, जिससे वे लोग भी शेरशाहके पास पहुंचे, तब शेरशाह मालदेव पर चढ़ा, जिसका हाल जोधपुरके इतिहासमें लिखाजायगा.

मालदेव तो शेरशाहसे लड़नेकी फ़िक्रमें लगे, और बीकावतोंने राव कल्याणसिंह को कुछ फ़ौज देकर शेरशाहके पास भेजदिया. बाक़ी राजपूत एकट्ठे होकर हम्ला करने लगे, जिनमें राव लूणकर्णके बेटे कृष्णसिंहने, जो उनमें मुखिया था, जोधपुरके कुल थाने उठादिये, जहां सामना हुआ वहां बहुतसे आदमी मारेगये. कृष्णसिंहने बीकानेरको आघेरा, तब राव मालदेवने कूंपा महराजोतको लिखभेजा कि बीकानेर छोड़कर चले आओ, उसने वैसा ही किया.

कल्याणसिंहके राजपूतोंने विक्रमी १६०१ पौष शुक्ल १५ [हि० ९५१ ता० १४ शव्वाल = ई० १५४४ ता० २९ डिसेम्बर] को बीकानेर छीन लिया; और शेरशाहसे विदा होकर राव कल्याणसिंह भी बीकानेर आया. कुछ दिनोंके बाद वीरमदेवके पुत्र जयमल्लपर राव मालदेवने चढ़ाई की. यह ख़बर सुनकर बीकानेरसे राव कल्याणसिंहने मददके लिये फ़ौज भेजी. राव मालदेव जयमल्लके मुक़ाबलेसे भागकर जोधपुर गये. यह लड़ाई विक्रमी १६१० [हि० ९६० = ई० १५५३] में हुई थी.

विक्रमी १६१३ [हि० ९६४ = ई० १५५६] में दिल्लीके अगले बादशाह शेरशाह सूरका पठान सर्दार हाजीख़ां बादशाह अक्बरकी फ़ौजसे ख़ौफ़ खाकर अजमेर आया, और राव मालदेवने उसका माल अस्बाब छीनना चाहा, तब महाराणा उदयसिंहने मदद करके हाजीख़ां को बचाया; और महाराणा उदयसिंह व हाजीख़ांसे बिगाड़ होनेपर राव मालदेव हाजीख़ांके मददगार बनगये, और महाराणा के शामिल बीकानेरके राव कल्याणसिंह थे- (इसका मुफ़स्सल हाल महाराणा उदयसिंहके बयान पृष्ठ ७१ में दर्ज है).

अक्वर नामहमें लिखा है, कि-" अक्वर बादशाह अजमेर होताहुआ विक्रमी १६२७ मार्गशीर्ष कृष्ण २ [हि० ९७८ ता० १६ जमादियुल्आख़र = ई० १५७० ता० १५ नोवेम्वर] को नागोर पहुंचा, वहांके हाकिम खानेकलां वगैरह ने पेशवाई की; और थोड़े अर्से बाद गिर्द व नवाहके जागीरदार व सर्दार बादशाही ख़िद्मतमें हाज़िर हुए. इनमें एक राव मालदेवका बेटा चन्द्रसेन था, जो हिन्दुस्तान के बड़े जागीरदारोंमें से है; दूसरा राव कल्याणमल्ल बीकानेरका अपने बेटे रायसिंह समेत हाज़रीसे सर्बलन्द हुआ, बादशाही मिहर्बानीसे उसने इज़्ज़त पाई. उसने हुज़ूरी मुसाहिबोंकी मारिफ़त अपने भाई कान्हकी बेटीके वास्ते अर्ज़ किया कि बादशाही महलमें दाख़िल कीजावे. हज़रत बादशाहने उसकी दर्ख्वास्त अवामकी तसल्लीकी नज़रसे मन्ज़ूर फ़र्माई; और पाक दामन लड़की महलकी पर्दहदारोंमें दाख़िल हुई" (१).

बीकानेर वाले लिखते हैं कि हाजीख़ांकी लड़ाईमें राव कल्याणसिंह भी महाराणाके शामिल था.

विक्रमी १६२८ वैशाख कृष्ण ५ [हि० ९७८ ता० १९ ज़िल्क़ाद = ई० १५७१ ता० १४ एप्रिल] को राव कल्याणसिंहका परलोकवास हुआ. इन के दस बेटे - रायसिंह, रामसिंह, पृथ्वीराज, अमरसिंह, भाण, सुर्तान, सारंगदे, भाखरसी, गोपालसिंह, और राघवदास थे.

---

८ राव रायसिंह.

राव रायसिंहका जन्म विक्रमी १५९८ श्रावण कृष्ण १२ [हि० ९४८ ता० २८ रबीउलअव्वल = ई० १५४१ ता० २० जुलाई] को हुआ था. इन की शादी चित्तोड़के महाराणा उदयसिंहकी बेटी जसमादेके साथ हुई थी. बीकानेरकी तवारीखमें लिखा है, कि इस शादीमें रायसिंहने दस लाख रुपये त्यागके और ५० हाथी व ५०० घोड़े दिये थे; उनमें से जिन कवि लोगोंको बहुतसा माल और हाथी दिये, उनके नाम तवारीख़ी यादके वास्ते यहां लिखेजाते हैं- १ दूदा

---

(१) अक्बर बादशाहको राजाओंकी बेटियोंके साथ शादी करनेकी कमाल आर्ज़ू थी, और वह इस ख्वाहिशको पूरा करनेके लिये दिवागत, नसीहत और बख़्शिश वगैरह बड़ी बड़ी कोशिशें करता था. मूलमें जो अक्बरनामहका तरजमा लिखागया वह खुशामदी लफ़्ज़ोंसे भराहुआ है.

आसिया, २ देवराज रत्नू, ३ बारहठ लक्खा, ४ मैपा संडायच, ५ सांइयां झूला, ६ भाट खेतसी वगैरह- लिखा है कि यह विवाह बड़ी धूम धामसे हुआ.

इन्होंने राजपर बैठते ही कर्मचन्द बछावतको अपना प्रधान बनाया. फिर उसकी सलाहसे जब विक्रमी १६३३ [हि० ९८४ = ई० १५७६] में अक्बर बादशाह अजमेर और उदयपुरकी तरफ़ आया, तब राव रायसिंह बादशाही हुक्मसे अजमेरमें हाज़िर होगये. अक्बरनामहमें लिखा है, कि- इनका बाप पहिले ही से इताअत कुबूल करचुका था, और यह भी उसके साथ हाज़िर हुए थे; कुछ दिनके बाद जब पंजाबकी तरफ़ पठानोंने सिर उठाया, तब उनपर बादशाहने आंबेरके कुंवर मानसिंह और राव रायसिंहको भेजा. इन्होंने फ़सादियोंको सज़ा देकर बादशाहको खुश किया. बादशाह अक्बरने राव रायसिंहको राजाका ख़िताब (१) और चार हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सब दिया.

विक्रमी १६३७ [हि० ९८८ = ई० १५८०] में जब कि बादशाह अक्बरकी गुजरातपर चढ़ाई हुई, उस वक्त राव रायसिंह भी उस फ़ौजमें शामिल थे, जिसमें इन्होंने बड़ी बहादुरी दिखलाई, और इनके बहुतसे राजपूत काम आये, इससे बादशाह इनपर बहुत राज़ी हुआ. जब राव रायसिंह गिरनार और अहमदाबाद की तरफ़ जारहे थे, उस वक्त राव सुल्तानने अपना आधा राज सिरोहीका बादशाहको देना कुबूल किया, और रायसिंहको अपना मददगार बनाया. बादशाहने सिरोहीका आधा राज उदयपुर वाले महाराणा उदयसिंहके बेटे जगमालको दिया, लेकिन् जगमाल सुल्तानसे लड़कर मारा गया. यह बयान पूरे तौरपर महाराणा प्रतापसिंहके हालमें लिखा गया है. लेकिन् बीकानेरकी तारीख़में यह सिवाय लिखा है कि, "जगमालके सिरोहीमें मारेजानेके कुसूरपर अक्बर बादशाहने राव रायसिंहको फ़ौज देकर सिरोही भेजा. उन्होंने चार दिन तक लड़ाई की, और पांचवें दिन सिरोहीके रावको पकड़लिया, जिसपर सिरोहीके रावके चारण दूदा आसियाने राव रायसिंहको शाइरी सुनाकर खुश किया, तब रायसिंहने उससे शाइरीके इनआममें राव सुल्तानको बादशाह से सिरोही दिलानेका वादा किया, और बादशाहके पास पहुंचकर इस इक़ारको पूरा किया". इस विषयकी कविता भी बीकानेरकी तवारीख़में लिखी है.

---

(१) फ़ार्सी तारीख़ोंसे बीकानेरवालोंको शाहजहांके अहद तक राजाका ख़िताब मिलना साबित नहीं होता, लेकिन् यह बीकानेरकी तवारीख़से लिखागया है.

(१) राव रायसिंहने जोधपुर मालदेवके बेटे राव चन्द्रसेनसे छीन लिया; फिर चन्द्रसेनके भाई उदयसिंहको बादशाहसे वापस दिलादिया, परन्तु जोधपुरका इतिहास जो तिथि वार लिखा हुआ हमारे पास है, उसमें इन बातोंका कुछ ज़िक्र नहीं मिलता; न मालूम ये बातें ग़लत हैं या सहीह हैं.

विक्रमी १६४५ [हि० ९९६ = ई० १५८८] में एक नया क़िला राजधानीमें बनवाना शुरू किया, जो विक्रमी १६५० [हि० १००१ = ई० १५९३] में बनकर तय्यार होगया. रायसिंह तो बादशाही नौकरीपर दक्षिणकी तरफ़ गये थे, और उनके हुक्मसे प्रधान महता कर्मचन्द बछावतने तय्यार करवाया, जिसकी पूर्वी दीवार ४०१ गज़, दक्षिणी ४०३ गज़, पश्चिमी ४०७ गज़, और उत्तरी दीवार ४०६ गज़ की है; दीवारकी उंचाई १९ गज़ और पड़कोटेके बाहर खन्दक़की चौड़ाई २० गज़की है.

विक्रमी १६५२ [हि० १००३ = ई० १५९५] में राव रायसिंहको दग़ासे मारकर उनके कुंवर दलपतको गद्दीपर बिठा देनेका विचार नीचे लिखे आदमियोंने किया:—

प्रधान महता कर्मचन्द बछावत सांगाका बेटा, खुड़िया ग्रामका बारहठ चौथदान, तोलीसर ग्रामका पुरोहित मान महेश, सूजा नगराजोत, राजासरका जाट भरथा सारण, और ईसर वग़ैरह कई सर्दार इस सलाहमें शामिल थे.

इस भेदकी खबर रायसिंहको होगई, जिसपर उन्होंने कर्मचन्दको मरवाडालना चाहा, लेकिन् वह भागकर बादशाह अक्बरके पास चलागया, और बादशाही मुलाज़िम होकर राव रायसिंहकी शिकायतें पेश करने लगा. जिससे बादशाहने भरथनेर वग़ैरह परगने खालिसे करके उन (रायसिंह) के कुंवर दलपतको जागीर में दिये. इस वक़्से बाप बेटोंमें बराबर फ़साद बना रहा. दलपतने गुज़रके लायक़ बादशाहसे जागीर न पाई, इस कारण बीकानेरके कई परगनोंमें अपना इख़्तियार जमा लिया. बादशाह भी कर्मचन्दकी शिकायतोंके सबब राव रायसिंहसे नाराज़ होगया था. जब राव रायसिंह दिल्ली गये, और विक्रमी १६६४ [हि० १०१६ = ई० १६०७] में महता कर्मचन्द बीमार होकर मरने लगा, तो राव रायसिंह उसका आराम पूछनेको गये.

---

(१) फ़ार्सी तवारीखोंमें लिखा है—कि जोधपुर हुसैनकुलीखां वग़ैरहने फ़तह किया था. जो बादशाहने राजा उदयसिंहको उनकी कारगुज़ारीसे खुश होकर वापस दिया.

और ज़ाहिरा बहुत रंज किया और आंखोंमें आंसू भर लाये. रायसिंहके चले जाने बाद कर्मचन्दने अपने बेटोंसे कहा, कि महाराजाके आंसू आनेका सबब मेरी तक्लीफ़ नहीं है, बल्कि यह सबब है कि मैं उनके हाथसे सज़ा न पासका; तुम लोग उनके धोखेमें आकर बीकानेर मत जाना. यह कहकर कर्मचन्दने ६८ वर्षकी उम्रमें देह त्याग किया.

इसके बाद रायसिंहने कर्मचन्दके बेटोंकी बहुत ख़ातिर की. अक्बरके बाद बादशाह जहांगीर राव रायसिंहसे बिल्कुल नाराज़ होगया, इसलिये यह दिल्लीसे बीकानेर चलेआये. थोड़े ही दिनोंके बाद बादशाहने इन्हें दक्षिण की तरफ़ भेजदिया. यह बुर्हानपुरमें रहते थे, वहां बीमारी बढ़गई, तब उन्होंने अपने छोटे बेटे सूरसिंहसे कहा कि कर्मचन्द तो मरगया, परन्तु उसके बेटोंको मारकर तोलेश्वरके पुरोहित और खुड़ियाके बारहठ वगैरहको सज़ा देना, क्योंकि वे लोग मुझे मारकर दलपतको राज्य दिलाना चाहते थे. इसपर सूरसिंहने अर्ज़ किया कि अगर मुझे इख़्तियार मिला तो आपके हुक्मके मुवाफ़िक़ उन लोगोंको ज़ुरूर सज़ा दूंगा.

विक्रमी १६६८ [हि० १०२० = ई० १६११] में राव रायसिंहका देहान्त होगया.

---

७ दलपतसिंह.

दलपतसिंहको राज्य मिलने की बाबत जहांगीर बादशाह तुज़क जहांगीरीमें लिखता है, कि—

"दलीप दक्षिणसे हाज़िर हुआ, उसका बाप रायसिंह मरगया था, इसलिये मैंने उसको रावका ख़िताब देकर ख़िलअ़त पहनवाया. रायसिंहके एक दूसरा बेटा सूरजसिंह भी था, जिसकी माके साथ ज़ियादह मुहब्बत होनेके सबब बड़े दलीप के एवज वह उसका गद्दीनशीन होना चाहता था. जिस वक़ कि रायसिंहकी मौतका हाल मेरे साम्हने बयान किया जाता था, सूरजसिंह कम अ़क्ली और कम उम्रीसे अर्ज़ करनेलगा, कि बापने मुझको वलीअ़हद बनाकर टीका दिया है. यह बात मुझको पसन्द न आई, और फ़र्माया कि अगर बापने तुझको टीका दिया है, तो हम दलीपको सर्बलन्द करके देते हैं. मैंने अपने हाथसे उसके टीका लगा-कर उसके बापकी जागीर वगैरह इनायत की."

लेकिन् बीकानेरकी तवारीख़में दलपतका बीकानेरमें और सूरसिंहका रायसिंहके पास होना लिखा है.

दलपत गादीपर बैठा, और सूरसिंहको फलौदीका पट्टा मिला. प्रधान महता राजसी वैद्य और पुरोहित मानमहेश दलपतके मुसाहिब बने. जब पुरोहित मानमहेशकी अर्ज़से दलपतने फलौदीके पट्टेके सारे ग्राम ज़ब्त किये, तो सूरसिंह के पास सिर्फ़ फलोदी रहगई, तब वह नीचे लिखे आदमियोंको साथ लेकर बीकानेर आया—

कृष्णसिंह मनोहरदासोत श्रंगोत, कर्मसेन मनोहरदासोत श्रंगसरके जिनकी औलाद अब भूकरकेमें है. जयसलमेरकी भायपके भाटी, पुरोहित लक्ष्मीदास हरदासोत, गाडणचोला. सडायच कृष्ण, राठी कल्याणदास केसरीदासोत, कोचर ओसवाल डूंगा. पोंवरणा व्यास जीवराज विठ्ठलदासोत वगैरह.

इन सबकी सलाहसे सूरसिंहने पुरोहित मानमहेशको बहुत कुछ कहा, परन्तु फ़ायदा न हुआ. फिर किसी वहानेसे दिल्ली जानेकी निश्चय ठहराई, और इसी सलाहके मुवाफ़िक़ सूरसिंह अपनी माताको गंगा स्नान करानेका वहाना करके सोरम घाट जापहुंचा. और वहांसे दिल्ली जाठहरा. राजा दलपत गद्दीपर बैठनेके बाद एकही बार बादशाहके पास गये थे, और वहांसे आनेके पीछे बादशाही तलबीके फ़र्मान आनेपर टाला टूली करके नहीं गये. जब दलपत बादशाहके बुलानेपर नहीं गया. तब वह नाराज़ हुआ. और अपने मुलाज़िम ज़ियाउद्दीनख़ांके साथ फ़ौज देकर सूरसिंहको बीकानेरका मालिक बनानेके लिये दलपतपर भेजदिया. जब बीकानेरकी सरहदपर शाही फ़ौज पहुंची, तब दलपत भी तय्यार होकर सामना करनेको आ मौजूद हुआ. पहिले तो बादशाही फ़ौजने शिकस्त पाई. फिर सूरसिंह और ज़ियाउद्दीनने अपने मुसाहिबोंसे सलाह करके दलपतके सर्दारोंको अपनेमें मिलालेनेका विचार किया, और नीचे लिखे राजपूतोंको मिला लिया—

महाजनके ठाकुर देवीदास जशवन्तोतका भाई तेजसी, ठाकुर कृष्णसिंह रायसिंहोत, जिसकी सन्तानके क़ब्जेमें सांखूका ठिकाना है. ददरेवाका ठाकुर सुन्दर-सेन पृथ्वीराजोत, भूकरकाके ठाकुर मनोहरदास भगवानदासोत, हरदेसरका ठाकुर कृष्णसिंह अमरसिंहोत, गारवदेसरका ठाकुर कृष्णसिंह रायसिंहोत, बाणूदेका ठाकुर बीका केशवदास साहुलोत, सासरका ठाकुर राजसिंह गोवर्धनसिंहोत, बींदासरका ठाकुर वीरमदेव बलभद्रोत नारायणोत, गोपालपुरका ठाकुर तेजसिंह गोपालदासोत, फोगां का ठाकुर बीकासावन्तसी गोपालोत, घड़सीसरका ठाकुर भाण अमरसिंहोत, खारवेका ठाकुर मथुरादास सुरताणोत, रावतसरका ठाकुर उदयसिंह, जैतपुरका ठाकुर गोपीनाथ

उदयसिंहोत, साहिबाका ठाकुर जयमल्ल साईंदासोत, चूरूका ठाकुर भीमसिंह बलभद्रोत, मगरासरका ठाकुर भोपत नारायणोत, सारूंडेका ठाकुर महेश इन्द्रभाणोत, सिरकालीका ठाकुर लखधीर भारमल्लोत मांडणोत, तिहांणदेसरका ठाकुर सांवलदास जयमल्लोत, जैतासरका बीका ठाकुर लाखणसी रायमल्लोत जैतसोत, सांडवेका ठाकुर जशवन्तसिंह गोपालोत, हरासरका ठाकुर पृथ्वीराज जशवन्तोत, सोभागदेसरका ठाकुर गिर्धर मानसिंहोत बीदावत, पूंगलके भाटी आसकरण कान्हावत, जयमल्लसरका ठाकुर साहुल अमरसिंहोत, बीठिणोकका भाटी सिरंग खेतसीयोत.

इन सबको मिलाकर खारवाके ठाकुर तेजमालसे भी कहलाया, तो उसने कहा, कि मेरी बेटीसे सूरसिंह शादी करे तो मुझे विश्वास हो; तब उसकी ख्वाहिशके मुवाफ़िक़ सूरसिंहने डोला मंगाकर उसी दिन शादी करली. यह भाटी ५०० राजपूतोंका मालिक था; इसके बाद महता ठाकरसी वैद्यको भी कहलाया, परन्तु उसने इन्कार करके कहा, कि बीकानेरकी गद्दीपर जो बैठेगा उसीका मैं नौकर हूं. आख़िरकार दूसरे दिन दोनों फ़ौजें लड़ाईके लिये तय्यार हुईं. दलपत भी अपनी फ़ौजको दुरुस्त करके हाथीपर चढ़ा, ख़वासीमें चूरूका ठाकुर भीमसिंह था, और दोनों फ़ौजोंके लोग हुक्मके मुन्तज़िर थे, पर इशारा होते ही ख़वासीसे चूरूके ठाकुर भीमसिंहने पीछेसे दलपतके दोनों हाथ बांधलिये, और लोगोंने सूरसिंहसे जाकर सलाम किया; दलपतको घोड़ेपर चढ़ाकर ५० पचास सवारोंके साथ हिसारके क़िलेके सूबहदारके पास भेजदिया, और सूबहदारने पैरोंमें बेड़ी, हाथोंमें हथकड़ी डालकर बादशाहकी ख़िझ्मतमें अजमेर भेजदिया.

---

८ राव सूरसिंह.

इन दिनोंमें बादशाह जहांगीर उदयपुरकी चढ़ाईके लिये अजमेरमें ठहरा हुआ था, दलपतको एक जगह क़ैद करके उसके चारों तरफ़ सिपाहियोंके पहरे खड़े करवादिये. इन्हीं दिनोंमें हाथीसिंह चांपावत गोपालदासोत अपनी औरतको साथ लिये ससुराल जाता हुआ अजमेरकी तरफ़ आनिकला, और दलपतको सलाम कहलाया; दलपतने कहा मुझसे मिलते जाओ, तब हाथीसिंह मिलनेको गया; बादशाही सिपाहियोंके रोकनेपर उन्हें मारकर भीतर जाघुसा, और दलपतकी बेड़ियां वग़ैरह काटदीं. इसपर अजमेरके सूबहदारने चार हज़ार सिपाही हाथीसिंहको सज़ा देनेके लिये भेजे, जिन्होंने इसे घेरलिया. हाथीसिंह अपनी

औरतोंको मारकर बादशाही सिपाहियोंसे लड़ मरा, और दलपत भी अपने दो सौ राजपूतों (१) समेत लड़कर मारागया. यह बात बीकानेरकी तवारीख़से लिखी है, और इसका यह सुबूत है, कि बीकानेरमें चांपावत राठौड़ घोड़े सवार हाथी-पोल तक चढ़ा जासक्ता है, औरोंको वहां सवारीपर नहीं जानेदेते; चांपावत राठौड़ोंकी यह इज़्ज़त हाथीसिंहके मारेजानेसे बढ़ाईगई, परन्तु बादशाह जहांगीर अपनी तुज़क जहांगीरी किताबमें थोड़ेसे लफ़्ज़ोंमें इस बातको इस तरह लिखता है कि--

"हि० १०२२ ता० ११ रजब [विक्रमी १६७० भाद्रपद शुक्ल १३ = ई० १६१३ ता० २९ ऑगस्ट] को ख़बर मिली कि रायसिंहका बेटा दलीप जो बड़ा फ़सादी और बाग़ी है, अपने छोटे भाई राव सूरजसिंहसे, जो उसपर तईनात कियागया था, बड़ी शिकस्त खाकर ज़िले हिसारके किसी इलाक़ेमें क़ैद है, इसके साथ ही हाशिम ख़ोस्ती फ़ौज्दार और दूसरे उस तरफ़के जागीरदारोंने दलीपको क़ैद करके हुज़ूरमें भेजदिया, उससे बहुतसे क़ुसूर ज़ुहूरमें आये थे, इस लिये क़त्ल कियागया".

ऊपर लिखेहुए बयान और बादशाही तहरीरसे इतना फ़र्क़ नज़र आता है, कि उसने सज़ामें किसी जल्लादसे क़त्ल करवादिया हो, या बादशाहके लिखने का यह मतलब हो कि मैंने उसके क़त्ल करनेका हुक्म दे दिया; परन्तु मुर्दोंके क़ौलसे कोई शुबह तहक़ीक़ करना बड़ी मुश्किल बात है, क्यों कि उनकी तबीअ़तका हाल मालूम नहीं होसक्ता.

जब दलपतके मारेजानेकी ख़बर भटनेर में राणियोंके पास पहुंची, तो नीचे लिखी हुई राणियां आगमें जलकर सतीहोगईं-

भटियाणी जादमदे, भटियाणी नौरंगदे, सोनगरी सन्तोषदे, भटियाणी कनकदे, भटियाणी सदाकुंवर, निरवाण मदनकुंवर.

सूरसिंह इसी वर्षमें गादीनशीन होकर अजमेरमें बादशाह जहांगीरके पास आये; बादशाहने पहिले मन्सबके सिवाय पांच सौ ज़ात और दो सौ सवार बढ़ाये. जब सूरसिंह बादशाह जहांगीरसे रुख़सत होने लगा, तब कर्मचन्दके दोनों बेटों लक्ष्मीचन्द और भागचन्दको अपने पास बुलाकर पूरी तसल्ली दी; वे दोनों भी सूरसिंह के दममें आकर बीकानेर चलनेको तय्यार हुए, और दिल्लीसे अपने बालबच्चों व औरतोंको लेकर बीकानेर पहुंचे. सूरसिंह भी बादशाहसे विदा होकर बीकानेर

(१) यह बात ख़याल तो नहीं कीजासक्ती, कि क़ैदकी हालतमें भी उसके पास दो सौ राजपूत हों, लेकिन् शायद कि यह लोग अजमेर शहरमें किसी जगह मौक़ेके मुन्तज़िर रहे हों.

आये. लक्ष्मीचन्द और भागचन्द दोनों शहरके पास अपने पुराने मकानमें रहने लगे, सूरसिंहने महता राजसी वैद्यसे दीवानीका काम छीनकर उन दोनोंको दिया; और दो महीने तक ऐसी मिहर्बानी रक्खी, कि ये लोग पुरानी दुश्मनीको भूलकर बिल्कुल गाफ़िल होगये. लेकिन् पांच सौ अच्छे राजपूत हमेशह इनके पास हाज़िर रहते थे, आख़िर एक दिन सूरसिंहने चार हज़ार राजपूतोंको रातके वक्त लक्ष्मीचन्द, भागचन्द पर भेजदिया (१). इन्होंने भी सूरसिंह की दग़ाबाज़ीको पहचानलिया, और जीनेसे नाउम्मेद होकर फ़ौरन् अपने बालबच्चों व औरतोंको मारनेके बाद ५०० राजपूतों समेत बड़ी दिलेरीके साथ लड़कर क़त्ल हुए; और राव सूरसिंहके भी बहुतसे राजपूत इनके मुक़ाबलेपर मारेगये. बाक़ी रहे सहे उनके बालबच्चोंको सूरसिंहने क़त्ल करवाडाला, एक अकेली कर्मचन्दकी दूसरी औरत भामाशाहकी बेटी जगीसा बची, जिसके पेटका एक लड़का भाणा (२) उदयपुरमें बाक़ी रहा, जिसकी औलादमें बछावत महताओंकी हवेलियां उदयपुर में अबतक मौजूद हैं.

इसके बाद राव सूरसिंहने पुरोहित मानमहेश और बारहठ चौथदानकी जागीरें ज़ब्त कीं, जिसपर यह लोग धरणा और जौहर करके मरे, लेकिन् उसी दिनसे तोलियासरके पुरोहितोंसे पुरोहिताई और बारहठोंसे बारहठपन निकलगया. फिर सारण भरथा जाटको भी गोपालदास सांगावतके हाथसे मरवाडाला, इस तरह सूरसिंहने अपने बापकी हिदायतको पूरा किया.

विक्रमी १६७२ [हि० १०२४ = ई० १६१५] में चारण चोला गाडणने एक "बेल" नामी ग्रन्थ सूरसिंहकी तारीफ़में कहा, जिसके इनआममें उसको लाख पसाव मिला, और बारहठपनके नेगचार चांदासरके बारहठ भादरेसा दीतावतने पाये. सूरसिंह उस वक्त जब कि बाग़ी शाहज़ादह खुर्रम और उसके भाई पर्वेज़का मुक़ाबला नर्मदा नदीपर हुआ, बादशाही फ़ौजमें था. फिर शाहजहानी फ़ौजके साथ विक्रमी १६८६ चैत्र कृष्ण ६ [हि० १०३९ ता० २० रजब = ई० १६३०

---

(१) उदयपुरमें जो कर्मचन्द बछावतके वंशके बछावत महता हैं, उनकी तवारीख़में कर्मचन्दका एक ही बेटा भोजराज लिखा है, और बीकानेरकी तवारीख़में लक्ष्मीचन्द, भागचन्द दो हैं; इससे मालूम होता है, कि कर्मचन्दके तीन बेटे होंगे. भोजराज, लक्ष्मीचन्द और भागचन्द. शायद एक भोजराजकी औलाद बाक़ी रही होगी.

(२) उदयपुरके महताओंकी तवारीख़में भोजराजका बेटा भाणा लिखा है.

ता० ४ मार्च] को सूरसिंह दक्षिणकी लड़ाइयोंमें चार हज़ारी ज़ात व तीन हज़ार सवारका मन्सब पाकर भेजागया; जिसके मरनेकी बाबत बादशाह नामहमें इस तरह लिखा है-

"हिज्री १०४१ (१) ता० ५ रबीउल्अव्वल [वि० १६८८ आश्विन शुक्ल ७ = ई० १६३१ ता० ३ ऑक्टोबर] को अर्ज़ हुआ- कि राव सूरकी ज़िन्दगीके दिन पूरे हुए, इस लिये उसके बेटे कर्णको दो हज़ारी ज़ात, डेढ़ हज़ार सवारका मन्सब और रावका ख़िताब इनायत करके उसका वतन बीकानेर जागीर में बहाल रक्खा. राव सूरके दूसरे बेटे शत्रुशालको पांच सौ ज़ात और दो सौ सवारके मन्सब पर इज़्ज़त बख़्शी".

राव सूरसिंहके साथ चार स्त्रियां (भटियाणी प्राणकुंवर खारवाके ठाकुर तेजमालकी बेटी, भटियाणी रानादे, रंगरेखा पातर, और बडारण (२) गुणकली) सती हुईं.

---

९ राव कर्णसिंह.

सूरसिंहके बाद उनके बड़े कुंवर कर्णसिंह विक्रमी १६८८ कार्तिक कृष्ण १३ [हि० १०४१ ता० २७ रबीउल्अव्वल = ई० १६३१ ता० २४ ऑक्टोबर] को गादीपर बैठे. इनका जन्म विक्रमी १६७३ श्रावण शुक्ल ६ [हि० १०२५ ता० ४ रजब = ई० १६१६ ता० २१ जुलाई] को हुआ था.

इन्होंने अपने शुरू वक्तमें खारवेके फ़सादी ठाकुर तेजमाल कृष्णावतको उसके बेटे खंगार समेत मरवाडाला, और पीछे बादशाह शाहजहांके पास दिल्ली गये, जहांपर इनको अपने बाप सूरसिंहकी बराबर मन्सब हासिल हुआ, यह बादशाही फ़ौजके साथ दक्षिणकी लड़ाइयोंपर भेजदियेगये, जिसका हाल इस

---

(१) सूरसिंहके इन्तिकालकी ठीक तारीख़ किसी जगह नहीं मिली, बीकानेरकी तवारीख़में सिर्फ़ वि० १६८८ ही लिखा है. शाहजहांके साम्हने अर्ज़ होनेसे महीना बीस दिन पहिले उनका इन्तिकाल समझना चाहिये.

(२) लौंडीको बडारण कहते हैं.

तरहपर है- कि वज़ीरख़ांको पांच हज़ारी ज़ातका मन्सब देकर उसके साथ अजमेर का राजा विठ्ठलदास गौड़, माधवसिंह, जांनिसारख़ां बीकानेरके राव कर्णसिंह और एथ्वीराज राठौड़ वग़ैरहको घोड़े, ख़िल्अ़त देदेकर दक्षिणकी तरफ़ दौलताबाद भेजा. इन लोगोंने वहां जाकर फ़ौजके हरावल अफ़्सर ख़ानेज़मांकी मातह्ती की, और राव कर्णसिंह, राव शत्रुशाल और तिलोकचन्द वग़ैरहने बीजापुरकी लड़ाइयोंमें बड़ी बड़ी कारगुज़ारियां दिखलाईं.

बीकानेरकी तवारीख़में जवारीका परगना कर्णसिंहकी बहादुरीसे फ़त्ह होना लिखा है; राजा कर्णसिंह बहुत वर्षों तक दक्षिणकी लड़ाइयोंमें नौकरी देते रहे. विक्रमी १६९२ फाल्गुन शुक्ल १० [हि० १०४५ ता० ८ शव्वाल = ई० १६३६ ता० १७ मार्च] को आदिलख़ां बीजापुरीकी फ़ौज और दक्षिणी मरहटे साहूने मिलकर बादशाही अर्थात् शाहजहां बादशाहकी अमल्दारीमें फ़साद करना शुरू किया, जिनको दबानेके लिये सय्यद ख़ानेजहां, सिपहदारख़ां, शाहनवाज़ख़ां सफ़वी, सफ़्शिकनख़ां रज़वी, बीकानेरका राजा कर्णसिंह, तोपख़ानहका अफ़्सर हरीसिंह राठौड़, राजा रोज़अफ़्ज़ूंका बेटा राजा बिहरोज़, राजा अनूपसिंहका बेटा जयराम, इन्द्रशाल हाड़ा बूंदीके राव रत्नका पोता वग़ैरह, दस हज़ार आदमियोंकी फ़ौज मुक़र्रर की गई.

जब विक्रमी १६९३ चैत्र शुक्ल १ [हि० १०४५ आख़िर शव्वाल = ई० १६३६ ता० ६ एप्रिल] को शाहगढ़की तरफ़से धारोर पहुंचे, और वहां सब अस्बाब व खटला छोड़कर सय्यद ख़ानेजहां सिपहसालार हुआ, तो हरावलका अफ़्सर शाहनवाज़ख़ां सफ़वीको बनाया, उसके साथ बीकानेरके राजा कर्णसिंह, मुरादख़ां, राठौड़ हरीसिंह, क़िलेदारख़ां, राजा अनूपसिंहके बेटे जयराम वग़ैरह भेजेगये, और मुर्तज़ाख़ांको फ़ौजके एक हिस्सेका अफ़्सर बनाकर राजा रामदास व राजा देवीसिंहको साथ दिया. फिर ये लोग बीजापुरकी तरफ़से सराधौनमें पहुंचे, जहां अंबर हबशी निगहबानीके लिये आमके बाग़में बैठा था. इन लोगोंको देखकर क़िलेकी तरफ़ भागा, उसके कुछ आदमी मारेगये, और बाक़ी ज़ख़्मियों समेत क़िलेमें जाघुसा. बादशाही फ़ौजने तीन दिनके मुहासरेमें क़िला ज़ीतलिया. सय्यद ख़ानेजहां वहांका माल अस्बाब अपने क़ब्ज़ेमें लाकर फ़ौज समेत धारासेवनकी तरफ़ रवाना हुआ, और अंबर हबशी, जो गिरिफ़्तार हुआ था, उसको मरहटोंका साथ न देनेका इक़ार लेकर छोड़दिया, और सराधौनके क़िलेको कृष्णाजी शिर्ज़ा रावकी हिफ़ाज़तमें छोड़ा.

आगे बढ़ने बाद तेवल, रैहान, और शोलापुरके परगनोंको लूटकर बर्बाद और वहांके लोगोंको माल अस्बाब समेत गिरिफ़्तार किया. फिर धारसेवनमें पहुंचकर माल अस्बाब नाज वगैरह जो हाथ लगा सब लूट लिया, और अब्दुल्लाखां बहादुर फ़ीरोज़जंगके भतीजे अबुलबकाको धारासेवनका थानेदार मए जमइयतके बनाया. इसके बाद कान्तिके क़िले और क़स्बेको जा घेरा, जो शोलापुरसे छः कोसपर है; वहांके क़िले वालोंने लड़ाई की, लेकिन् आख़िरमें बादशाही फ़ौजने फ़त्ह पाई. क़िलेके लोगोंको क़त्ल करके गोला बारूद वगैरह सामान जो पाया उसे अपने तह्तमें किया. वहांसे चलकर इसी तरह देव गांव को लूटता हुआ साहुरा क़स्बेकी तरफ़ रवाना हुआ. इस मौकेपर आदिलखांकी फ़ौज उसके फ़ौजी अफ़्सर रन्दौला हबशीके मातह्त मुक़ाबलेको आई, परन्तु बीजापुरी फ़ौजवाले मुक़ाबला होनेके थोड़ी देर बाद भागगये.

विक्रमी चैत्र शुक्ल ७ [हि० ता० ५ ज़िल्क़ाद = ई० ता० १२ एप्रिल] को बीजापुरी फ़ौजने आकर बादशाही फ़ौजपर हम्ला किया, दो कोसतक लड़ाई हुई, इसमें रन्दौला हबशी घायल होकर घोड़ेसे गिरा; लेकिन् अपने दोस्तोंकी मददसे दुश्मनोंके क़ाबूसे निकलगया, दोनों तरफ़के बहुतसे लोग मारेगये, और बीजापुरी फ़ौज थककर वहीं ठहरी, और बादशाही फ़ौजने धारासेवनमें आकर विक्रमी चैत्र शुक्ल १४ [हि० ता० १३ ज़िल्क़ाद = ई० ता० १९ एप्रिल] तक आराम लिया. विक्रमी चैत्र शुक्ल १५ [हि० ता० १४ ज़िल्क़ाद = ई० ता० २० एप्रिल] को बीजापुरी फ़ौजका आना सुनकर ये लोग भी मुक़ाबले को तय्यार हुए, सात कोसपर तुलजापुरके परगनेमें दोनों फ़ौजोंका मुक़ाबला हुआ. अगर्चि रन्दौला हबशी घायल हुआ था, फिर भी ख़ानेजहां और उसके बाद सिपहदारख़ांसे ख़ूब मुक़ाबला करतारहा. सिपहदारख़ांने बड़ी बहादुरी के साथ एक कोसतक बीजापुरी फ़ौजको पीछे हटाया, पहर दिन चढ़ेसे दो पहरतक ख़ूब लड़ाई हुई, आख़िरमें बीजापुरी फ़ौज भागनिकली, दोनों तरफ़के बहुतसे आदमी काम आये.

सय्यद ख़ानेजहांने सराधौनमें आकर खटला व अस्बाब वहीं छोड़ा, और फ़ौज समेत ओसा और नलदरक (नलदुर्ग) की तरफ़ गुलबर्गेको जानेका इरादह किया.

विक्रमी वैशाख कृष्ण ८ [हि० ता० २२ ज़िल्क़ाद = ई० ता० २८ एप्रिल] को रवाना होकर रास्तेके गांवोंको बर्बाद करताहुआ चला, तो विक्रमी वैशाख शुक्ल ३ [हि० ता० १ ज़िल्हिज = ई० ता० ८ मई] को ओसासे तीन कोसपर बीजापुरी

लश्करने एक पहर रात बाक़ी रहे हम्ला किया, लेकिन् बादशाही फ़ौजके मुक़ाबला करनेसे वे लोग भागकर छिपगये; दूसरे दिन शाहजहानी फ़ौजका कूच हुआ, तब फिर बीजापुरी फ़ौजने सिपहदारख़ां और राजा देवीसिंहसे टक्कर ली. उस समय अपने मातहत अफ्सरोंकी मददके लिये सय्यद ख़ानेजहांने भी एक फ़ौज भेजी, और ख़लीलुल्लाख़ां दूसरी तरफ़से सिपहदारख़ांके पास जापहुंचा, दो कोसतक दोनों फ़ौजोंने ख़ूब मुक़ाबला किया. आख़िरमें बीजापुरी फ़ौज भाग निकली- फिर बर्सातका मौसम आजानेसे सय्यद ख़ानेजहां अपनी फ़ौज लेकर काम्बेरकी तरफ़ चला, जब यह फ़ौज सरायोंनसे आठ कोसपर पहुंची, तब विक्रमी वैशाख शुक्ल १३ [हि॰ ता॰ ११ ज़िल्हिज = ई॰ ता॰ १८ मई] को फिर बीजापुरी फ़ौज हम्ला करनेको आजमी. इस समय भी दोनों तरफ़के बहुतसे आदमी काम आये, परन्तु बीजापुरी फ़ौज तो वहीं ठहरी, और सय्यद ख़ानेजहांकी शाही फ़ौज सरायोंनमें आई, वहां से बारेर पहुंची.

इस लड़ाईका हाल बीकानेरकी तवारीख़में कर्णसिंहके नामपर क़ियासी तौरसे लिखा है; और हमने यह पूरा हाल बादशाहनामह शाहजहानी तवारीख़से लिखा है. अगर्चि इस तवारीख़में भी बादशाही फ़ौजकी बड़ाई और सारा हाल तारीफ़के साथ लिखा है, परन्तु बीकानेरकी तवारीख़से बादशाहनामहका यह हाल ठीक मालूम होता है.

अपने मालिकोंकी ग़ैर मौजूदगीमें नागोरके राव अमरसिंह और बीकानेरके राजा कर्णसिंहके राजपूत फ़ौजें लेकर लाखाणिया ग्रामपर लड़ बैठे, अमरसिंह इस सरहदी तकारके रंजसे आगरे में सलाबतख़ांको मारकर मारागया, जिसका पूरा ज़िक्र जोधपुरके हाल में लिखा जायगा.

इसके बाद कर्णसिंह दक्षिणी लड़ाइयोंसे फ़ुर्सतके साथ रुख़्सत लेकर बीकानेर आये, और उन्हीं दिनोंमें पुंगलके भाटियोंने फ़साद उठाया. भाटी राव सुन्दरसेनने बीकानेरके मुल्कको बर्बाद करनेपर कमर बांधी, तब कर्णसिंहने फ़ौज लेकर पुंगलको जा घेरा; एक महीनेतक लड़ाई रही, आख़िर सुन्दरसेन क़िलेसे निकलकर भागगया. कर्णसिंहने पुंगलके गढ़को गिरवादिया, और परिहार लूणा, कोठारी जीवनदासको वहांका थानेदार मुक़र्रर किया. सुन्दरसेन भागता हुआ लखवेरे पहुंचा, कर्णसिंह भी पीछा करता चला गया, वहांपर जोइया राजपूत, जो वहांके जागीरदार थे, हाज़िर हुए, और कुछ नज़राना देकर मिलाप करलिया; वहां हासिलपुरके पास राजा कर्णसिंहका टीबा अबतक मशहूर है. इसके

बाद कर्णसिंह बीकानेर लौट आये, और पुंगलके ५६१ ग्राम भाटी राजपूतोंको बांटदिये.

पहिले विक्रमी ९१५ [हि० २४४ = ई० ८५८] में जब कि पंवारोंसे पुंगल भाटी देवराज विजयराजोतने ली थी, उस वक्त पुंगलके दो सौ ग्राम थे, फिर भाटी हमीर, और उसका बेटा जैतसी, इसका राणकदे और इसका बेटा सादा था, जिसको जोधपुरके राव चूंडाके भाई गोगादेवने मारा था, जिसका बयान इस तरहपर है कि- लखवेराके जोइया राजपूत मुसल्मान होकर दिल्लीमें चाकरी करते थे. जब दल्ला जोइयाने मौका पाया, तो चार लाख मुहर, और एक मश्हूर 'समाध' नामी घोड़ी लेकर वहांसे चलदिया. मारवाड़के इलाके महेवामें राठौड़ मल्लीनाथ तथा उसके भाई वीरमदे राज करते थे, दल्लाने उनके पास आकर पनाह ली. मल्लीनाथके बड़े बेटे जगमालकी तकारसे दल्लाको लेकर वीरमदे लखवेरे चला आया, वहां बहुत दिन रहनेके बाद जोइयोंसे फ़साद हुआ, जिसमें वीरमदे मारागया. वीरमदे के बड़े बेटे चूंडाने तो मंडोवरमें राज्य जमाया, और गोगादेव ननिहालमें था, वहांसे जवान उम्रमें अपने बाप वीरमदेका वैर लेनेको लखवेरे गया, और रातके वक्त दल्ला जोइयाको मारडाला, परन्तु प्रभात होते ही खूब लड़ाई हुई, जिसमें पुंगलका राणकदे और सादा भाटी बहुतसे जोइये राजपूतों समेत मारागया, और गोगादेवको भी जोइयोंने मार लिया (१).

जब राणकदे अपने बेटे सादा समेत मारागया, तब केहर केलणने पुंगलपर क़ब्ज़ा किया, और तीन पुश्ततक यही लोग इसके मालिक रहे. इसके बाद वीरमदेके बेटे राव चूंडा हुए, जिनके राव रड़माल, इनके राव जोधा इनके राव बीका थे, जिनकी तावेदारी पुंगलके भाटियोंने इख्तियार की थी; राव शेखा भाटी पुंगल का राव बीकाकी तावेदारीमे आया. इस शेखाके तीन बेटे थे- हरिसिंह जिसको पुंगल मिला, इससे छोटा खेमसी जिसे बीकमपुर जागीरमें मिला, और बरसलपुर भी इसीके क़ब्ज़ेमे रहा. यह दोनों ठिकाने अबतक खेमसीकी औलाद के क़ब्ज़ेमें हैं, तीसरा बेटा बाघा जिसके रायमल्ल वाली है; इन चारों ठिकानोंके पुंगलिया शेखावत भाटी कहलाते हैं, और इन चारों ठिकाने वालोंको राजा कर्णसिंहने राव बीकाके अह्दके मुवाफ़िक़ गांव बंटवादिये. २५२ गांव तो पुंगलके साथ और १८४ गांव रायमल्ल वालीके साथ, तथा ४१ गांव बरसलपुरके साथ, और ८४ गांव बीकमपुरके साथ तक्सीम करदिये; इसके बाद भाटियोंने फ़साद मचाना छोड़दिया.

(१) इस लड़ाईका हाल सविस्तर चारण पहाड़खानने "गोगादेवका रूपक" नामी ग्रन्थमें लिखा है, जो मारवाड़ी भाषाकी कवितामें है.

राजा कर्णसिंहके बड़े बेटे अनोपसिंह रुक्माङ्गद चन्द्रावतकी बेटी राणी कमलादे से पैदा हुए. दूसरे केसरीसिंह खंडेलाके राजा द्वारिकादासकी बेटी राणी करणादेसे, तीसरे पद्मसिंह हाड़ा वैरीशालकी बेटी राणी स्वरूपदेसे, और चौथे कुंवर मोहनसिंह श्रीनगरके राजाकी बेटी राणी अजबकुंवरसे पैदा हुए; इनके सिवाय एक बनमालीदास पासवान औरतसे था.

जब बादशाह शाहजहांकी बीमारीके सबब उसके चारों बेटे आपसमें लड़नेको तय्यार हुए, उस वक्त महाराजा कर्णसिंह औरंगाबादमें औरंगज़ेबके पास मौजूद थे, जब औरंगज़ेब आगरेकी तरफ़ रवाना हुआ, तब बहुतसे मन्सबदार उक्त शाहज़ादहको छोड़कर बादशाही हुक्मके मुवाफ़िक़ आगरे चलेगये, लेकिन् महाराजा कर्णसिंह न तो आगरे गये और न औरंगज़ेबके पास रहे. शाहज़ादहके पास अपने कुंवर केसरीसिंह व पद्मसिंहको छोड़कर आप बीकानेर चले आये. इसी सबबसे आलमगीर बादशाह की कर्णसिंहपर नाराज़गी रही, जिसके सबब बीकानेरपर फ़ौजका जाना मआसिरे आलमगीरी वग़ैरह किताबोंमें लिखा है, लेकिन् बीकानेरकी मुल्की तवारीख़में आलमगीरकी नाराज़गीका कारण यह लिखा है, कि–

"आलमगीरने सब हिन्दू राजाओंको मुसल्मान करना चाहा, तब सब राजा लोगोंने एक होकर, इन्कार किया, जिन्में कर्णसिंह सबसे अव्वल थे." यह बात भी आलमगीरके ढंगसे मिलती हुई है.

फिर कर्णसिंहकी पासवानके बेटे बनमालीदासने मुसल्मानी मज़्हबमें आना इस शर्तपर कुबूल किया कि, बीकानेरका राज्य उसे मिले, लेकिन् सब राजाओंकी एक सलाह देखकर औरंगज़ेबने महाराजा कर्णसिंहको तो औरंगाबाद भेजा, और बीकानेरका राज्य और मन्सब इनके बड़े बेटे अनोपसिंहको लिखदिया. महाराज कर्णसिंहने औरंगाबादमें अपने नामसे कर्णपुरा महल्ला बसाया, और उसमें श्री करणी माताजीका मन्दिर बनवाया. इन महाराजाका एक विवाह महाराणा जगत्-सिंहकी बहिनके साथ हुआ था– (पृष्ठ ३२१ देखो).

विक्रमी १७२६ आषाढ़ शुक्ल ४ [हि० १०८० ता० २ सफ़र = ई० १६६९ ता० २ जुलाई] को महाराजा कर्णसिंहका देहान्त हुआ. और उनके साथ ९ राणियां और ११ ख़वासें सती हुईं. इनके बड़े कुंवर अनोपसिंह, दूसरे केसरीसिंह थे, जिनमेंसे पिछलेका जन्म विक्रमी १६९८ [हि० १०५१ = ई० १६४१] को, तीसरे कुंवर पद्मसिंहका जन्म विक्रमी १७०२ वैशाख शुक्ल ८ [हि० १०५५ ता० ६ रबीउल्अव्वल = ई० १६४५ ता० ४ मई] को,

चौथे कुंवर मोहनसिंहका जन्म विक्रमी १७०६ चैत्र शुक्ल १४ [हि० १०५९ ता० १३ रबीउल्अव्वल = ई० १६४९ ता० २७ मार्च] को हुआ था.

---

१० महाराजा अनोपसिंह.

इनका जन्म विक्रमी १६९५ चैत्र शुक्ल ६ [हि० १०४७ ता० ४ ज़िल्क़ाद = ई० १६३८ ता० २१ मार्च] को हुआ था. यह महाराजा दक्षिणकी लड़ाइयोंमें बादशाही फ़ौजोंके साथ पहिलेसे मुक़र्रर कियेगये थे, इन्होंने आलमगीरके दक्षिणमें जाने बाद भी बीजापुर व गोलकुंडेकी लड़ाइयोंमें बड़ी दिलेरी दिखाई. विक्रमी १७३५ [हि० १०८९ = ई० १६७८] में महाराजा अनोपसिंहने अनोपगढ़का क़िला भाटी राजपूतोंको ज़ेर करनेके लिये बनवाया.

इनको अपने जागीरदारोंसे नाइत्तिफ़ाक़ी और बे एतिबारी होगई थी, जिससे इन्होंने ग़ैर इलाक़ेसे तनख्वाहदार आदमी नौकर रक्खे. बनमालीदास को बादशाह आलमगीरने बीकानेरका आधा राज और मन्सब देकर बादशाही फ़ौज समेत बीकानेरपर भेजदिया. महाराजा अनोपसिंहने बादशाहके डरसे बन मालीदासको धोखा देकर आधा राज बांटदेनेका इक़ार किया. बनमालीने चंगोई में क़िला तय्यार करके राजधानी बनाना चाहा, लेकिन् महाराजा अनोपसिंहने अपने श्वशुर सोनगरा लक्ष्मीदासको अपनेसे बर्ख़िलाफ़ जताकर धोखा देनेके लिये निकाल दिया. सोनगराने अपनी बेटीके बहानेसे किसी लौंडीको बनमालीसे ब्याहकर उसी रातको शराबमें ज़हर देदिया, जिससे वह मरगया. बादशाही अफ़्सरको, जो बनमालीदासके साथ था, एक लाख रुपया रिश्वत देकर अपने साथ मिला लिया.

महाराजा अनोपसिंहका पहिला विवाह विक्रमी १७०९ [हि० १०६२ = ई० १६५२] को कुंवर पदेकी हालतमें महाराणा राजसिंहकी बहिनके साथ हुआ था (देखो एष्ठ ४०१). इसके बाद विक्रमी १७५५ [हि० ११११० = ई० १६९८] में महाराजा अनोपसिंहका देहान्त हुआ, इनके साथ राणी व ख़वास वग़ैरह १८ औरतें सती हुईं. इनके चार बेटे स्वरूपसिंह, सुजानसिंह, रुद्रसिंह और आनन्दसिंह थे.

अनोपसिंहके छोटे भाई मोहनसिंहका एक हरिन बादशाही कोतवालने पकड़ लिया था, जिसपर बादशाही दर्बारमें तक्रार होकर मोहनसिंह मारागया, और कोत- वाल व उसके सालेको पद्मसिंहने उसी जगह क़त्ल किया. पद्मसिंह बड़ा नाम-

वर और उदार था, जिसके कई बनावटी क़िस्से और कहानियां मश्हूर हैं. यह विक्रमी १७३९ [हि० १०९३ = ई० १६८२] में ताप्ती नदीके कनारे जादूराय दक्षिणीसे लड़कर बड़ी बहादुरीके साथ मारागया, और दूसरा भाई केसरीसिंह भी विक्रमी १७२७ [हि० १०८१ = ई० १६७०] को किसी लड़ाईमें काम आया था.

११ महाराजा स्वरूपसिंह.

इनका जन्म विक्रमी १७४६ भाद्रपद कृष्ण १ [हि० ११०० ता० १५ शव्वाल = ई० १६८९ ता० २ ऑगस्ट] में देवलिया प्रतापगढ़के सीसोदिया रावत हरीसिंहकी बेटीसे हुआ. यह बचपनसे आलमगीर बादशाहके पास दक्षिणमें रहते थे, इनकी मा महाराणी सीसोदणी बीकानेरमें रियासती काम करती थी; उन्होंने नाज़िर ललित और सर्दारोंके बहकानेसे अपने चार मुसाहिबोंको गिरिफ़्तार कराकर मरवा डाला, इससे रियासती आदमियोंमें नाराज़गी फैली, और स्वरूपसिंहके छोटे भाई सुजानसिंहको कई सर्दार आलमगीरके पास लेजानेको तय्यार हुए, लेकिन् शीतलाके निकलनेसे स्वरूपसिंहका दक्षिणमें विक्रमी १७५७ [हि० ११११ = ई० १७००] को देहान्त होनेके सबब बीकानेरमें पीछे लेआये, और सुजानसिंह गद्दीपर बिठाये गये.

१२ महाराजा सुजानसिंह.

सुजानसिंहका जन्म विक्रमी १७४७ श्रावण शुक्ल ३ [हि० ११०१ ता० १ ज़िल्क़ाद = ई० १६९० ता० ९ ऑगस्ट] को हुआ था. इनके गद्दी बैठने बाद आलमगीर गुज़रचुका था, जिसपर महाराजा अजीतसिंहने जोधपुर लेनेके बाद बीकानेर भी लेनेका इरादह किया, लेकिन् पूरा न हुआ. फिर सुजानसिंह विक्रमी १७७६ आषाढ़ कृष्ण ८ [हि० ११३१ ता० २२ रजब = ई० १७१९ ता० १० जून] को डूंगरपुर के रावल रामसिंह शिवसिंहोतकी बेटीसे शादी करने गये, और लौटते वक़्त सलूंबर होतेहुए उदयपुर आये. महाराणा संग्रामसिंहने इनको एक महीनेतक बहुत अच्छी तरह मिहमान रक्खा, फिर नाथद्वारे होकर बीकानेर पहुंचे. विक्रमी १७९० भाद्रपद [हि० ११४६ रबीउस्सानी = ई० १७३३ सेप्टेम्बर] में जोधपुरके महाराजा अभयसिंहने अपने भाई बख़्तसिंहको फ़ौज देकर बीकानेरपर भेजदिया, जो वि० आश्विन शुक्ल ११ [हि० ता० ९ जमादियुलअव्वल = ई० ता० २० ऑक्टोबर] को बीकानेर

पहुंचे, और नाज़िरसर तालाबपर लड़ाई हुई, इसमें बख़्तसिंहकी फ़ौजने शिकस्त खाई, तब विक्रमी आश्विन [हि० जमादियुल्अव्वल = ई० ऑक्टोबर] में महाराजा अभयसिंह फ़ौज लेकर अपने भाईकी मददको पहुंचे, लेकिन् बीकानेरके महाराजा सुजानसिंहके कुंवर ज़ोरावरसिंह नोरसे फ़ौज समेत पहले ही आपहुंचे थे, क़िलेकी लड़ाई जोधपुरकी फ़ौजसे होनेलगी. महाराजा अभयसिंहके इशारेसे उदयपुरके महाराणा संग्रामसिंहने चूंडावत जगत्सिंह, मोहीके भाटी सुरतानसिंह और पंचोली कान्हको समझानेके लिये भेजा, क्यों कि महाराजा अभयसिंह पानी और रसदके न मिलनेसे घबरागये थे.

उदयपुरके मोतमदोंने बीच बिचाव करके बीकानेर वालोंको पीछा करनेसे मना किया; महाराजा अभयसिंह फ़ौज लेकर नागौर पहुंचे. इस बारेमें मारवाड़ी भाषाकी शाइरीका मिस्रा मश्हूर है कि–"होलिका कोस पैंतीस हाली"– यानी जोधपुरकी फ़ौजने जो होलीका डांड़ा बीकानेरमें गाड़ा था, वह नागौरमें पैंतीस कोसपर लेजाकर जलाया, फिर उदयपुरके मोतमद वापस चलेगये.

इसके बाद महाराजा सुजानसिंह और उनके बेटे ज़ोरावरसिंहमें नाइत्तिफ़ाक़ी हुई, परन्तु महाराजाने इस झगड़ेको दूर करके सब रियासती काम अपने बेटे ज़ोरावरसिंहके सुपुर्द करदिये. उन्हीं दिनोंमें जोधपुरके महाराजा अभयसिंहके भाई बख़्तसिंह, जो नागोरके मालिक थे, बीकानेर लेनेकी कोशिशमें लगे, और बीकानेरके क़िलेदार सांखला दौलतसिंह और जयमलसरके भाटी उदयसिंह वग़ैरह कई आदमियोंको लालच देकर अपनी तरफ़ मिलालिया, लेकिन् यह बात महाराजा सुजानसिंहके कानतक पहुंच गई, जिससे फ़ौरन् बन्दोबस्त हुआ. सांखला दौलतसिंह मारागया, और क़िलेदारी धायभाईको मिली. महाराज बख़्तसिंहके आदमी नागोरकी तरफ़ भागगये.

विक्रमी १७९२ पौष शुक्ल १३ [हि० ११४८ ता० ११ शअ्बान = ई० १७३५ ता० २८ डिसेम्बर] को रायसिंहपुरेमें महाराजा सुजानसिंहका देहान्त हुआ. पांच पातर (ख़वास) जो इनके साथ थीं सती हुईं, और बीकानेर ख़बर आनेपर पांच राणियां महाराजाकी पगड़ीके साथ सती हुईं. इनके दो कुंवर बड़े ज़ोरावरसिंह और छोटे अभयसिंह थे, जिनमेंसे पिछलेका जन्म विक्रमी १७७३ [हि० ११२८ = ई० १७१६] में हुआ.

१३ महाराजा ज़ोरावरसिंह.

महाराजा ज़ोरावरसिंहका जन्म विक्रमी १७६९ माघ कृष्ण १४ [हि० ११२४ ता० २८ ज़िल्हिज = ई० १७१३ ता० २६ जैन्युअरी] को हुआ था. इन्होंने गद्दीपर बैठते ही अपने इलाकेसे जोधपुरके थाने उठादिये, जो महाराजा अभयसिंहने बीकानेरके दक्षिणी हिस्सेमें बिठाये थे. विक्रमी १७९६ [हि० ११५२ = ई० १७३९] में महाराजा अभयसिंहने बीकानेरपर चढ़ाई की, लेकिन् नागौरके महाराज बख़्तसिंह और बीकानेरके महाराजा ज़ोरावरसिंहके एक होजानेसे महाराजा अभयसिंहने अपनी फ़ौजको लौटाकर उन दोनोंसे पीछा छुड़ाया. फिर महाराजा अभयसिंह इस बातकी शर्मिन्दगीसे बड़ी फ़ौज लेकर विक्रमी १७९६ वैशाख [हि० ११५२ मुहर्रम = ई० १७३९ एप्रिल] में बीकानेरकी तरफ़ रवाना हुए, और विक्रमी वैशाख कृष्ण ११ [हि० ता० २५ मुहर्रम = ई० ता० ४ मई] को देष्णोकमें आकर श्री करणी मातासे दुआ और मदद मांगी, लेकिन् वहांके चारणोंने इस चढ़ाईका होना देवीकी मर्ज़ीके बख़िलाफ़ बतलाया. तब अभयसिंहने कुछ पर्वा न करके अपनी ताक़तके भरोसेपर बीकानेरको घेरलिया; बीकानेरके उमराव, भादराके ठाकुर लालसिंह, चूरूके ठाकुर संग्रामसिंह और महाजनके ठाकुर भीमसिंह–तीनों महाराजा अभयसिंहकी फ़ौजमें जामिले, क़िलेपर लड़ाई होती रही. महाराजा ज़ोरावरसिंह व नागौरके महाराज बख़्तसिंहने लिखावटके ज़रीएसे मिलाप किया, और महता आनन्दरूपको भेजकर जयपुरके महाराजा सवाई जयसिंहसे मदद चाही. महाराजा जयसिंहने अपना काग़ज़ इस मज़्मूनसे भेजदिया, कि मज़बूत रहना चाहिये. नागौरके महाराज बख़्तसिंहने मेड़तापर क़ब्ज़ा करलिया, और जयपुरके महाराजा जयसिंहने अपने दीवान राजामल्ल खत्रीको मए बीस हज़ार फ़ौजके जोधपुरकी तरफ़ रवाना किया. उस वक़्त महाराजा जयसिंहने हँसीके तौरपर बीकानेरके महता आनन्दरूपसे कहा, कि इस वक़्त तुम्हारी मददगार करणी देवी कहां गई? उसने जवाब दिया, कि आपके दिलपर बैठी मदद कररही है; तब महाराजा ख़ुश हुए, और जोधपुरकी तरफ़ कूचकी तय्यारी की. उस वक़्त कूंभाणी राजावत मुहारके ठाकुरने कहा, कि महाराजा अजीतसिंहसे आपकी दोस्ती थी, और अभयसिंह आपके जमाई हैं, फिर बीकानेरके वास्ते जोधपुरसे बिगाड़ करना अच्छा नहीं. तब नाथावत मोहनसिंह और शेखावत शिवसिंहने कहा, कि रिश्तेदारी तो बीकानेर और जोधपुर दोनों जगहसे होती रही है, लेकिन् बीकानेर

लेकर महाराजा अभयसिंह आपको भी आराम न लेने देगा. इस बातको महाराजाने पसंद किया, और बड़ी जर्रार फ़ौजके साथ जोधपुरकी तरफ़ रवाना हुए. यह सुनकर महाराजा अभयसिंहने बीकानेरसे जोधपुरकी तरफ़ कूच किया, और बीकानेरके राजपूतोंने पीछा करके उनकी फ़ौजका माल अस्बाब लूट लिया, और महाराजा अभयसिंहने भागकर जोधपुरके क़िलेमें पनाह ली.

मेड़तेसे महाराज बख़्तसिंह, और राजामल्ल खत्री भी महाराजा जयसिंहके शामिल होगये, और बीकानेरसे महाराजा ज़ोरावरसिंह भी बड़ी फ़ौजके साथ रवाना हुए, जयसिंहने क़िले जोधपुरको घेरलिया–महाराजा जयसिंहके शामिल इस मुहिममें नीचे लिखे सर्दार अपनी २ जमइयत समेत थे :–

नागोरके महाराज बख़्तसिंह, करौलीके राजा गोपालपाल, बूंदीके राव राजा दलेलसिंह, शाहपुरेके राजा उम्मेदसिंह, कृष्णगढ़के महाराजा राजसिंहके दूसरे बेटे बहादुरसिंह, उदयपुरकी तरफ़से सलूंबरके रावत केसरीसिंह, शिवपुरके राजा इन्द्रसिंह गौड़, भरतपुरका राजा सूरजमल्ल जाट. इन सबसे एक दर्बारमें सलाह करके महाराजा जयसिंहने महाराजा अभयसिंहसे इक्कीस लाख रुपया फ़ौज ख़र्चका लेकर कूच किया, बनार ग्राममें महाराजा ज़ोरावरसिंह भी आमिले. और इस इह्सानको दिलसे माना. कुछ दिनों बाद जयपुरसे ज़ोरावरसिंह रुख़्सत लेकर बीकानेरकी तरफ़ लौटे. रास्तेमें सानूके मक़ाम पर चूरूके ठाकुर संग्रामसिंह, और उनके भाई भूपालसिंहको बुलाकर विक्रमी १७९८ आषाढ़ कृष्ण ४ [हि० ११५४ ता० १८ रबीउल्‌अव्वल = ई० १७४१ ता० ३ जून] को दग़ासे मरवा डाला.

महाराजा ज़ोरावरसिंह हिसारकी तरफ़ गये थे, वापस आते हुए विक्रमी १८०२ ज्येष्ठ शुक्ल ६ [हि० ११५८ ता० ४ जमादियुल्‌अव्वल = ई० १७४५ ता० ७ जून] को ग्राम अनूपपुरे पहुंचकर परलोक सिधारे, इनको कामदारोंने ज़हर दिया बतलाते हैं– इन महाराजाके साथ दो राणी और चौबीस ख़वास, पातर तथा दासियां सती हुईं.

इन महाराजाके लावलद मरनेपर भूकरकाके ठाकुर कुशलसिंहने रियासतका बन्दोबस्त किया, महाराजा अनूपसिंहके छोटे बेटे आनन्दसिंहके चार बेटे थे, अमरसिंह, गजसिंह, तारासिंह, गूदड़सिंह; इनमेंसे अमरसिंह गद्दीका हक़्दार था, लेकिन् कुशलसिंहने गजसिंहको गद्दीपर बिठादिया.

१४ महाराजा गजसिंह.

महाराजा गजसिंहका जन्म विक्रमी १७८० चैत्र शुक्ल ४ शुक्रवार [हि० ११३५ ता० २ रजब = ई० १७२३ ता० ९ एप्रिल] को हुआ था.

जब गजसिंह गादी बैठगये, तो उनके भाई अमरसिंह अजमेरके मक़ामपर जोधपुरके महाराजा अभयसिंहके पास पहुंचे, और महाजनका ठाकुर भीमसिंह, व भादराका ठाकुर लालसिंह उनका मददगार बना, महाराजा अभयसिंहको थोड़ासा मुल्क देना कुबूल करके मददके लिये फ़ौज लेने बाद बीकानेरकी तरफ़ चले; कुछ दिनोंतक जोधपुरकी फ़ौजने लड़ाइयां कीं. फिर महाराजा गजसिंह फ़ौज तय्यार करके बीकानेरसे आगे बढ़े, और सुजानदेसर नामी कुएके पास लड़ाई हुई– जोधपुरकी फ़ौजका मुसाहिब भंडारी रत्नचन्द मारागया, और तीन सौ आदमी बीकानेर के और पांच सौ जोधपुरके बड़ी बहादुरीके साथ काम आये. विक्रमी १८०४ [हि० ११६० = ई० १७४७] में नागौरके महाराज बख़्तसिंह अपने भाई महाराजा अभयसिंहसे नाराज़ होकर दिल्लीमें अहमदशाह बादशाहके पास गये, और वहांसे फ़ौजी मदद लेकर मारवाड़में आये– महाराज बख़्तसिंहकी मददपर महाराजा गजसिंह भी पहुंचे.

महाराजा अभयसिंहने मल्हार राव हुल्करको मददपर बुलाया, और आप भी जोधपुरसे तय्यार हुए. हुल्करने दोनों भाइयोंको समझाकर आपसमें मिलादिया; अभयसिंह जोधपुर, बख़्तसिंह नागौर, और गजसिंह बीकानेरको लौटआये.

विक्रमी १८०५ फाल्गुण शुक्ल १३ [हि० ११६२ ता० ११ रबीउल्अव्वल = ई० १७४९ ता० १ मार्च] को महाराजा गजसिंहके पिता आनन्दसिंहका इन्तिक़ाल हुआ.

जब विक्रमी १८०७ [हि० ११६३ = ई० १७५०] में दूदासर तालाबपर महाराज बख़्तसिंह और जोधपुरके महाराजा रामसिंहकी लड़ाई हुई, उस वक्त महाराजा गजसिंह भी बख़्तसिंहके मददगार थे, इस लड़ाईमें कुशलसिंह चांपावत आउवेका, और शेरसिंह मेड़तिया रियांका वग़ैरह बहुतसे राजपूत बहादुरीके साथ मारेगये, जिनका हाल तफ्सीलवार जोधपुरकी तवारीख़में लिखा जायगा.

महाराजा बख़्तसिंह और गजसिंह दोनों फ़तहयाब होकर मारवाड़में फिरते हुए सर्दारोंको अपना तरफ़्दार करते जाते थे. आख़िरमें दो तीन जगह रामसिंह से लड़ाइयां हुईं; और विक्रमी १८०८ आषाढ़ [हि० ११६४ शअ्बान = ई०

१७५१ जून] में महाराजा बख्तसिंहने जोधपुरका क़िला छीन लिया. रामसिंह जयपुर, और मरहटोंके पास मददकी उम्मेदपर फिरता रहा.

इस कार्रवाईके बाद महाराजा गजसिंह बीकानेरको लौट आये. इसी संवत्के माघ [हि० ११६५ रबीउल्अव्वल = ई० १७५२ जैन्युअरी] में महाराजा गजसिंहने जेसलमेर जाकर रावल अक्षयसिंहकी बेटीके साथ विवाह किया; इस बरातमें जोधपुर के महाराजा बख्तसिंहके कुंवर विजयसिंह भी शामिल थे.

विक्रमी १८०९ [हि० ११६५ = ई० १७५२] में मरहटोंकी मदद लेकर महाराजा रामसिंह मारवाड़पर चढ़ आये; तब महाराजा गजसिंह भी बख्तसिंहकी मददके लिये चला, दोनों शामिल होकर पुष्करराज और अजमेरतक पहुंचे; जब मरहटे लौटगये, तो गजसिंह भी रुख़्सत होकर बीकानेर आये.

इसी संवत्में महाराजा बख्तसिंहका इन्तिक़ाल होगया, और उनके बेटे विजयसिंह जोधपुरकी गद्दीपर बैठे.

विक्रमी १८१० [हि० ११६६ = ई० १७५३] में दिल्लीके बादशाह अहमदशाहने हिसारका परगना और सात हज़ारी मन्सब महाराजा गजसिंहके लिये लिख भेजा, क्यों कि महाराजाने ज़रूरतके वक्त एक बड़ी फ़ौज महता अभयराम और कई सर्दारोंके साथ शाही मददके लिये भेज दीथी. इसी संवत्में जोधपुरके माजूल राजा रामसिंहकी, जोधपुरके महाराजा विजयसिंहपर मरहटोंकी मदद लेकर, चढ़ आनेकी ख़बर मिली; तब महाराजा गजसिंह भी विजयसिंहकी मददके लिये मेड़तेके मक़ामपर जा शामिल हुए.

विक्रमी १८११ आश्विन [हि० ११६७ ज़िल्हिज = ई० १७५४ सेप्टेम्बर] में मरहटोंसे राठौड़ोंकी बड़ी भारी लड़ाई हुई. इस लड़ाईमें महाराजा विजयसिंह, महाराजा गजसिंह और कृष्णगढ़के महाराजा बहादुर-सिंह मेंसे शिकस्त खाकर पहिले दो तो नागौर पहुंचे, और तीसरे कृष्णगढ़को चलेगये, फिर महाराजा गजसिंहको भी नागौरसे बीकानेर आना पड़ा. दक्षि-णियोंने विजयसिंहको नागौरमें घेर लिया, लेकिन् मारवाड़के एक मोकल नामी खोखर राजपूतने एक दूसरे राजपूतको साथ लेकर मरहटोंके सर्दार जयाआपा सेंधियाको दग़ासे मारडाला, जिसमें सलूंबर रावत जैतसिंह, चहुवान राजसिंह, गोसाईं विजय भारती-तीनों मरहटी फ़ौजसे लड़कर बहादुरीके साथ मारेगये. ये लोग रामसिंह, और विजयसिंहके बीच बिचाव करानेको महाराणा राजसिंह दूसरेकी तरफ़ से गये थे, जिनपर मरहटोंने सेंधियाके मरवानेवाले ख़याल करके हल्ला करदिया; फिर

भी दक्षिणियोंका घेरा नहीं उठा. तब महाराजा विजयसिंह नागोरका क़िला अपने सर्दारोंके भरोसे छोड़कर आप बीकानेरको चलेगये, वहांसे दोनों महाराजा रवाना होकर जयपुर गये, कि वहांके महाराजा माधवसिंहको अपना मददगार बनावें; परन्तु महाराजा माधवसिंह तो महाराजा रामसिंहके मददगार थे. उन्होंने विजयसिंहको दग़ासे गिरिफ़्तार करना चाहा, लेकिन् वह दावमें न आये, और गजसिंह व विजयसिंह जयपुरसे चलकर रिणी ग्रामके मक़ामपर पहुंचे थे, वहां ख़बर आई, कि बीस लाख रुपया लेकर दक्षिणियोंने घेरा उठालिया. तब महाराजा विजयसिंह तो जोधपुरको गये, और महाराजा गजसिंहने जयपुरमें वापस आकर विक्रमी १८१२ [हि० ११६९ = ई० १७५६] को महाराजा सवाई जयसिंहकी बेटीसे, और विक्रमी १८१३ ज्येष्ठ [हि० ११६९ रमज़ान = ई० १७५६ मई] में झलायके ठाकुर रायसिंहकी बहिनके साथ विवाह किये, और बीकानेरको चलेगये.

महाराजा विजयसिंहने जोधपुरसे जोधा सर्दारसिंह और सिंगवी श्रीचन्दको भेजकर मदद करनेके लिये कहलाया, तब महाराजा गजसिंहने पचास हज़ार रुपये भेजदिये. फिर बीकानेरके मुल्क में कई बार सर्दारोंके बखेड़े पैदा हुए, परन्तु महाराजाने खुद जाकर उनको अपनी होश्यारी या फ़ौजी ताक़तसे मिटादिया; सरहदी मुसलमान जोइया अथवा दाऊद पोत्रोंने भी कईबार फ़साद किया, परन्तु उनको भी पीछे हटाया, और विक्रमी १८२४ [हि० ११८१ = ई० १७६७] में जब जयपुरके महाराजा माधवसिंहकी भरतपुरके जाट जवाहिरमल्लसे लड़ाई हुई, तब महाराजा गजसिंहने भी पेश्तर अपनी फ़ौज जयपुरकी मददके लिये भेजदी, और खुदने भी कूच किया, लेकिन् लड़ाईका ख़ातिमा सुनकर पीछे बीकानेरको लौटआये. विक्रमी १८२७ चैत्र कृष्ण ४ [हि० ११८४ ता० १८ ज़िल्क़ाद = ई० १७७१ ता० ६ मार्च] के लग्नपर जयपुरके महाराजा पृथ्वीसिंहके साथ महाराजा गजसिंहकी पोती और कुंवर राजसिंहकी बेटीका विवाह बड़ी धूमधामके साथ हुआ; दोनों तरफ़से सरबराह और त्याग में (१) लाखों रुपये ख़र्च हुए.

विक्रमी १८२८ माघ [हि० ११८५ ज़िल्क़ाद = ई० १७७२ फ़ेब्रुअरी] में मेवाड़का बखेड़ा मिटानेके लिये महाराणा अरिसिंहने गजसिंहको बुलाया, लेकिन् महाराजा विजयसिंहको भी ज़िले गोड़वाड़का लोभ था, इसलिये गजसिंहको कहलाया,

---

(१) जयपुरकी तवारीख़में तो त्याग जयपुरकी तरफ़से बांटाजाना लिखा है, और बीकानेरवाले अपनी तवारीख़में लिखते हैं, कि जयपुरवालोंने तीस हज़ार रुपये त्यागके दिये, परन्तु महाराजा गजसिंहने एक लाख अपनी तरफ़से बांटे.

कि दोनों साथ चलकर श्री नाथद्वारेके दर्शन और महाराणा अरिसिंहसे मिलकर बातचीत करेंगे. ये दोनों शामिल होकर नाथद्वारे आये, और चार महीनेतक वहीं रहे, फिर महाराणा अरिसिंह भी उदयपुरसे नाथद्वारे पहुंचे. कृष्णगढ़के महाराज बहादुरसिंह भी इस बातचीतमें शामिल हुए, लेकिन् महाराजा विजयसिंह दिलसे मेवाड़का बखेड़ा मिटना नहीं चाहते थे, क्यों कि ज़िला गोड़वाड़ चन्द शर्तोंसे हिक्मत अमलीके तौरपर महाराणा अरिसिंहने उनको दिया था, अगर बखेड़ा मिटजाता तो वह परगना भी मारवाड़के शामिल रहना मुश्किल होता.

महाराणा अरिसिंह तो उदयपुर चलेआये, और ये तीनों राजा अपनी अपनी राजधानियोंको चलेगये.

विक्रमी १८३२ [हि० ११८९ = ई० १७७५] में महाराजा गजसिंह और उनके कुंवर राजसिंहमें नाइत्तिफ़ाक़ी पैदा हुई, कुंवरको बीकानेरसे निकालकर कई आदमी शामिल होगये, फिर कुंवर देष्णोकमें जारहा, जो करणी माताका शरणाई स्थान है. विक्रमी १८३८ [हि० ११९५ = ई० १७८१] में वहांसे निकलकर जोधपुरके महाराजा विजयसिंहके पास पहुंचा, और उनकी ज़मानतसे विक्रमी १८४२ [हि० ११९९ = ई० १७८५] में पीछा बीकानेर अपने बापके पास आया. महाराजाने कुंवरको नज़र क़ैद किया. विक्रमी १८४४ चैत्र शुक्ल ६ [हि० १२०१ ता० ४ जमादियुस्सानी = ई० १७८७ ता० २५ मार्च] को महाराजा गजसिंह का इन्तिक़ाल होगया, और कुंवर राजसिंह गादी बैठे. महाराजा गजसिंहके कुंवर १ राजसिंह, २ सूरतसिंह, ३ छत्रसिंह, ४ श्यामसिंह, ५ अजबसिंह, ६ मुहकमसिंह, ७ रामसिंह, ८ गुमानसिंह, ९ सबलसिंह, १० भोपालसिंह, ११ जगत्‌सिंह, १२ खुमाणसिंह, १३ मूणसिंह, १४ उदयसिंह, १५ ज़ालिमसिंह, १६ सुल्तानसिंह, १७ देवीसिंह, १८ खुशहालसिंह; और ख़वासके १ दौलतराम, २ पृथ्वीराज, ३ धीरतसिंह, ४ जैतसिंह, ५ चन्द्रभाण, ६ सवाईसिंह, ७ तिलोकसिंह, और ८ उदयकरण थे.

१५ महाराजा राजसिंह.

महाराजा राजसिंहका जन्म विक्रमी १८०१ कार्तिक कृष्ण २ [हि० ११५७ ता० १६ रमज़ान = ई० १७४४ ता० २५ ऑक्टोबर] को हुआ, और विक्रमी १८४४ वैशाख कृष्ण २ [हि० १२०१ ता० १६ जमादियुस्सानी =

ई० १७८७ ता० ५ एप्रिल] को गादी बैठे, लेकिन् थोड़े दिनों बाद इसी संवत्के वैशाख शुक्ल ८ [हि० ता० ६ रजब = ई० ता० २६ एप्रिल] को क्षयी (सिल) की बीमारीसे इन्तिक़ाल होगया; तब इनके छोटे भाई सूरतसिंह गादी बैठे.

१६ महाराजा सूरतसिंह.

इन महाराजाका जन्म विक्रमी १८२२ पौष शुक्ल ६ [हि० ११७९ ता० ४ रजब = ई० १७६५ ता० १८ डिसेम्बर] को हुआ था, इन्होंने गादीपर बैठनेके बाद देशी जागीरदारोंका झगड़ा विक्रमी १८४७ [हि० १२०४ = ई० १७९०] में ख़ुद जाकर मिटाया.

विक्रमी १८५६ [हि० १२१४ = ई० १७९९] में सोढ़ल ग्रामकी जगह सूरतगढ़ बसाया. विक्रमी १८६३ और ६४ (१) [हि० १२२१ तथा २२ = ई० १८०६ तथा ७] में उदयपुरके महाराणा भीमसिंहकी बाई कृष्णकुंवरके संबन्धकी बाबत जयपुर और जोधपुरके राजाओंमें जो बखेड़ा उठा, तो उस वक्त महाराजा सूरतसिंह जयपुरके महाराजा जगत्सिंहके शामिल थे; लड़ाईके वक्त जोधपुरके सर्दार जयपुरवालोंसे मिलगये, तब महाराजा मानसिंहने भागकर जोधपुरके क़िलेमें पनाह ली, और महाराजा जगत्सिंह व सूरतसिंहने क़िलेको घेरलिया.

इसके बाद महाराजा सूरतसिंह तो मोतीजुराकी बीमारीके सबब बीकानेर चलेआये, और नव्वाब मीरख़ां कई हज़ार फ़ौजके साथ महाराजा मानसिंहकी मिलावटसे जयपुरकी तरफ़ रवाना हुआ. तब महाराजा जगत्सिंह भी भागकर जयपुर पहुंचे, और मीरख़ांकी कोशिशसे बेगुनाह कृष्णकुंवर बाई ज़हरसे क़त्ल कीगई. इसी अ़दावतसे महाराजा मानसिंहने बड़ी फ़ौज देकर विक्रमी १८६५ [हि० १२२३ = ई० १८०८] में सिंगवी इन्द्रराजको बीकानेरपर भेजा, और दूसरी तरफ़ दाऊद पोत्रा व जोइया वग़ैरह सिन्धके मुसल्मानोंने भी चढ़ाई की, तब महाराजा सूरतसिंहने फलौदीका परगना व तीन लाख रुपया देकर जोधपुरकी फ़ौजको लौटाया, और पहिले फ़त्ह किये हुए छः क़िले देकर सिन्धके मुसल्मानों (२) से पीछा छुड़ाया.

---

(१) यह मारिका संवत १८६३ में शुरू हुआ और १८६४ तक जारी रहा- इस लिये दोनों संवत् लिखे गये हैं.

(२) सिन्धके मुसल्मान, नव्वाब बहावलपुरकी फ़ौजसे मुराद है, क्यों कि वही दाऊद पोत्रे कहलाते हैं, और उन्होंनेही बीकानेर और जैसलमेरका इलाक़ा दबाकर अपनी रियासत क़ायम की है.

विक्रमी १८७० [हि० १२२८ = ई० १८१३] में महाराजा मानसिंहके गुरु आयस देवनाथने बीचमें पड़कर बीकानेर और जोधपुरके महाराजोंकी सफ़ाई करवादी, और महाराजा सूरतसिंहने जोधपुर जाकर मुलाक़ात की. महाराजा मानसिंहने बड़े स्नेहके साथ मान सन्मान किया, और महाराजा सूरतसिंह पीछे बीकानेर आये. विक्रमी १८७१ [हि० १२२९ = ई० १८१४] में चूरूका ठाकुर बदलगया, जिसपर फ़ौज समेत अमरचन्द कामदारको भेजकर चूरू ख़ालिसेमें किया, और महाराजाने अमरचन्दको रावका ख़िताब देकर बहुतसा इनआम दिया, परन्तु थोड़े दिनों बाद लोगोंके बहकानेसे उसे मरवाडाला. विक्रमी १८७२ [हि० १२३१ = ई० १८१६] में जागीरदारोंने बहुत फ़साद मचाया, और मीरख़ां व जस्शेदख़ां भी लूटनेके लिये गश्त करते रहे. विक्रमी १८७३ [हि० १२३१ = ई० १८१६] में चूरूके ठाकुरने अपना क़िला लेलिया, जिसमें महाराजाका थानेदार महता मेघराज मारा गया.

विक्रमी १८७४ [हि० १२३३ = ई० १८१८] में बहुतसे मुल्की फ़साद होनेके सबब ओझा काशीनाथको दिल्ली भेजकर सर्कार अंग्रेज़ीसे पहिला अह्दनामह किया. विक्रमी १८७५ [हि० १२३४ = ई० १८१९] में नीचे लिखेहुए गढ़, और इलाके अंग्रेज़ी फ़ौजकी मददके साथ सर्दारोंसे छुड़ाये:-

(१) चूरूका गढ़, पृथ्वीसिंह शिवसिंहोतसे.
(२) सिद्धमुख, पृथ्वीसिंह शृंगोतसे.
(३) सिरसलाकी गढ़ी, रणजीतसिंह बणीरोतसे.
(४) नीवांकी और सुलखनियांकी गढ़ी दोनों, शेरसिंह कृष्णसिंहोतसे.
(५) ददरेवेका गढ़, बीका सूरजमल्ल कुंभकर्णोतसे.
(६) देपालसरकी गढ़ी, बणीरोत रोड़सिंह अमरसिंहोतसे.
(७) ज़ाहरियाकी गढ़ी, बणीरोत मानसिंह हरीसिंहोतसे.
(८) गंधेलीकी गढ़ी, शृंगोत अनूपसिंह संग्रामसिंहोतसे.
(९) विरकालीकी गढ़ी, शृंगोत दलपतसिंह कृष्णसिंहोतसे.
(१०) भादराका गढ़, जो प्रतापसिंह पहाड़सिंहोतसे सिक्खोंने लिया था, वह अंग्रेज़ोंने सिक्खोंसे लेकर महाराजाको दिया.

विक्रमी १८७७ आषाढ़ कृष्ण ८ [हि० १२३५ ता० २२ रमज़ान = ई० १८२० ता० ४ जुलाई] के लग्नपर महाराजाके बड़े कुंवर रत्नसिंह उदयपुर आये, और महाराणा भीमसिंहकी राजकन्या अजबकुंवरके साथ विवाह किया, जो

महाराणी बाघेलीके गर्भसे पैदा हुई थी; और छोटे कुंवर मोतीसिंहका विवाह बागोर के महाराज शिवदानसिंहकी बेटीके साथ हुआ. इसी लग्नपर महाराणाकी कन्या रूपकुंवरका विवाह जैसलमेरके रावल गजसिंहसे, और महाराणाकी पोती कीका-बाईकी शादी कृष्णगढ़ महाराजाके कुंवर मुहकमसिंहके साथ हुई. इन विवाहोंका पूरा हाल महाराणा भीमसिंहके बयानमें लिखाजायगा.

शादीके बाद कुंवर रत्नसिंह बीकानेर आये. विक्रमी १८८५ चैत्र शुक्ल ९ [हि० १२४३ ता० ७ रमज़ान = ई० १८२८ ता० २४ मार्च] को महाराजा सूरतसिंहका इन्तिक़ाल हुआ. इनके तीन बेटे– रत्नसिंह, मोतीसिंह और लखमसिंह थे, जिनमेंसे मोतीसिंहका देहान्त तो विक्रमी १८८२ [हि० १२४१ = ई० १८२५] में बापके सामने ही होगया था, जिनके साथ बागोरके महाराज शिवदानसिंहकी बेटी दीपकुंवर सती हुई.

१७ महाराजा रत्नसिंह.

इनका जन्म विक्रमी १८४७ पौष कृष्ण ९ [हि० १२०५ ता० २३ रबीउस्सानी = ई० १७९० ता० ३० डिसेम्बर] को हुआ. इन महाराजाके गादी बैठते ही जैसलमेरके भाटियोंने सरहद्दपर फ़साद किया, जिसपर बीकानेरसे फ़ौज भेजीगई, लेकिन् उसने शिकस्त पाई, और भाटियोंने एक नक़ारा छीनलिया, इसलिये जॉर्ज क्लार्क साहिबने मौक़ेपर जाकर फ़ैसला करदिया. बीकानेरकी तरफ़से हिन्दूमल्ल और हुक्मीचन्द मोतमद थे.

इसी वर्षमें महाजन गांवको फ़ौज भेजकर ख़ालिसेमें दाख़िल किया, और ठाकुर वैरीशाल भागा, व इसका बेटा अमरसिंह क़ैदी बनकर बीकानेर आया. फिर वैरीशाल भी साठ हज़ार रुपया पेशकश देकर हाज़िर होगया, और देष्णोक श्री करणी देवीके मन्दिरमें महाराजाने इक़ार किया, कि हमारी तरफ़से कुछ दग़ाबाज़ी न होगी, वैरीशाल भी अपने नौकर अमरावतोंसे दग़ा न करे. लेकिन् वैरीशालने विक्रमी १८८६ [हि० १२४५ = ई० १८२९] में दग़ासे २४ अमरावतों को मारडाला, तब महाराजाने फ़ौज भेजकर महाजनको अपने क़ब्ज़ेमें लिया. इसपर ठाकुर वैरीशालने जैसलमेर और पुंगलके भाटियोंसे मदद लेकर फ़साद उठाया. सर्कार अंग्रेज़ीने नसीराबादसे फ़ौज भेजना चाहा, लेकिन् वह इस सबबसे रुकगई, कि महाराजाने आप जाकर हम्ला किया, जिससे वैरीशाल भागगया, पुंगलका ज़िला भाटी शार्दूलसिंहको देदिया. विक्रमी १८८८ [हि० १२४७

= ई० १८३१] में दिल्लीके बादशाहकी तरफ़से एक ख़िलअ़त, हाथी, घोड़े, नक़ारा और नरेन्द्र सवाईका ख़िताब फ़र्मानके साथ महाराजा रत्नसिंहके लिये आया, जिसको महाराजाने अदबके साथ लिया. फिर महाराजाने अपने वकील हिन्दूमल्लको महारावका ख़िताब दिया.

इसी संवत्में महाजन, बीदासर और चारवासके ठाकुर हाज़िर हुए, महाराजाने उनकी जागीरें बहाल कीं, लेकिन् महाजनवालोंने साठ हज़ार, बीदासरवालोंने पचास हज़ार, और चारवासवालोंने चालीस हज़ार रुपये पेशकशीके दिये. इन्हीं दिनोंमें महाराजा हरिद्वारका तीर्थ करने गये; लौटते वक्त हिसारके क़िलेसे भाद्राके ठाकुर प्रतापसिंह को छुड़ाया, जोकि डकैतीके क़ुसूरमें क़ैद हुआ था; परन्तु प्रतापसिंहने फिर फ़साद करके छाणी ग्राममें क़ब्ज़ा करलिया. इसपर महाराजाने छाणी छीनलिया, और प्रतापसिंह देश्णोकमें श्री करणी देवीके शरणे जा बैठा. विक्रमी १८९१ [हि० १२५० = ई० १८३४] में डकैती बन्द करनेके लिये महाराजाने रत्नगढ़में एजेन्ट गवर्नर जेनरल कर्नेल् आल्व्ज़से मुलाक़ात करके एक फ़ौज भरती करनेका इक़ार किया. उसमें सौ बीदावत राजपूत भी शामिल कियेगये; इस फ़ौज ख़र्चके लिये महाराजाने बाईस हज़ार रुपया देना मंज़ूर किया. फिर महाराजा विक्रमी १८९३ [हि० १२५२ = ई०१८३६] में गयाश्राद्ध करनेको छः हज़ार फ़ौज साथ लेकर गये, और लौटतेहुए अपने कुंवर सर्दारसिंहकी शादी रीवां कराकर बीकानेर आये.

विक्रमी १८९६ [हि० १२५५ = ई० १८३९] में पुष्कर तीर्थकी यात्राको गये, और वहांसे महाराणा सर्दारसिंहके बुलानेपर उदयपुर पहुंचे; और विक्रमी पौष शुक्ल १२ [हि० ता० १० ज़िल्क़ाद = ई० १८४० ता० १७ जैन्युअरी] को महाराजाके कुंवर सर्दारसिंहका विवाह महाराणाकी राजकन्या महताबकुंवरके साथ हुआ, इसके बाद बीकानेर चलेआये.

उदयपुरके महाराणा सर्दारसिंह, जो तीर्थ यात्राके लिये गये थे, लौटते वक्त बीकानेर आये, और महाराजाकी कन्याके साथ विक्रमी १८९७ आश्विन शुक्ल ९ [हि० १२५६ ता० ७ शअ़्बान = ई० १८४० ता० ७ ऑक्टोबर] को शादी की.

विक्रमी १८९९ [हि० १२५८ = ई० १८४२] में महाराजा गवर्नर जेनरलकी मुलाक़ातके लिये दिल्ली गये. विक्रमी १९०२ [हि० १२६१ = ई० १८४५] में बीकानेरके महाराजाको दो तोपें सर्कार अंग्रेज़ीने दीं; फिर विक्रमी १९०८

श्रावण शुक्ल ११ [हि० १२६७ ता० ९ शव्वाल = ई० १८५१ ता० ९ ऑगस्ट] को महाराजा रत्नसिंहका देहान्त हुआ, और कुंवर सर्दारसिंह गद्दीपर बैठे.

१८ महाराजा सर्दारसिंह.

इनका जन्म विक्रमी १८७५ भाद्रपद शुक्ल १४ [हि० १२३३ ता० १३ ज़िल्क़ाद = ई० १८१८ ता० १४ सेप्टेम्बर] को हुआ था, इनके राज्यमें बीस प्रधान बदले गये– गुमानसिंह वैद्य और लच्छीराम रखेचा एक वर्ष, फिर अकेला लच्छीराम एक वर्ष, गुमानसिंह एक वर्ष, दाजी अनन्त पंडित ग्वालियरी एक वर्ष, रामलाल द्वारिकानी सात वर्ष, फिर गुमानसिंह वैद्य एक वर्ष, रामलाल एक वर्ष, लच्छीरामका बेटा मानमल्ल रखेचा नौ महीने, शिवलाल नायटा तीन महीने, फ़तहचन्द सूराणा १५ दिन, पुरोहित गंगाराम खेतड़ीका साढ़े तीन महीने, शाहमल्ल कोचर आठ महीने, मानमल्ल आठ महीने, शिवलाल महता १५ दिन, लक्ष्मीचन्द नायटा आठ महीने, इसके बाद मुन्शी विलायत हुसैन एक सालके क़रीब, और पण्डित मन्फूल सी, एस, आई, कुछ मुद्दततक रहे; इन लोगोंकी अदलाबदली कर्नेल् पाउलेटने दण्डका एक दूसरेसे ज़ियादह रुपया देनेके सबब लिखी है.

इनमेंसे प्रधान रामलालकी तारीफ़ राज्यके लोग ज़ियादह करते हैं. विक्रमी १९२५ [हि० १२८५ = ई० १८६८] में एक अंग्रेज़ी अफ़्सर असिस्टेण्ट गवर्नर जेनरलके नामसे सर्कार अंग्रेज़ीकी तरफ़से डकैती रोकनेके लिये सुजानगढ़में रक्खागया, जिसको पोलिटिकल एजेण्ट बीकानेरका भी इख़्तियार हासिल था. इस उहदेपर पहिले आने वाले अफ़्सर कप्तान पाउलेट थे, जो कि अब कर्नेल् और मुल्क मारवाड़के रेज़िडेण्ट हैं.

महाराजा सर्दारसिंह विक्रमी १९२९ वैशाख शुक्ल ८ [हि० १२८९ ता० ६ रबीउल्अव्वल = ई० १८७२ ता० १६ मई] में इस दुन्याको छोड़गये; इनके कोई औलाद नहीं थी, इस लिये डूंगरसिंह गोद लिये जाकर गद्दीपर बिठायेगये, जो ठाकुर लालसिंहके कुंवर और महाराजा गजसिंहसे सातवीं पीढ़ीमें हैं.

१९ महाराजा डूंगरसिंह.

इनके गद्दी बैठनेकी बाबत रियासतके सर्दारों, राणियों और अहल्कारोंमें, जो कि अपने मत्लबके लिये रियासतके फ़ायदोंपर कुछ ख़याल नहीं करते, बहुत झगड़ा फैला.

कुछ लोग खड्सिंहके तरफ़दार और अक्सर डूंगरसिंहके मददगार थे, एक हफ़्तेतक कोई मुआमला ते न पाया. कप्तान ब्राडफ़ोर्ड असिस्टेंट एजेंट गवर्नर जेनरल सुजानगढ़से गर्म मौसममें बहुत तक्लीफ़ उठाकर बीकानेर पहुंचे, और राज्यके लोगोंके बेजा मन्शाओंको दूर करके पाट राणी वगैरहकी सलाहसे डूंगरसिंहके राजा होनेकी मनादी कराई.

विक्रमी १९२९ माघ कृष्ण ९ [हि॰ १२८९ ता॰ २३ ज़िल्काद = ई॰ १८७३ ता॰ २२ जेन्युअरी] को कर्नेल् पेली साहिब एजेंट गवर्नर जेनरल राजपूतानहने सर्कार अंग्रेज़ीकी तरफ़से महाराजा डूंगरसिंहको बीकानेर जाकर खिल्अत, रियासती मुहरें और मुल्की इख्तियार, जो थोड़े दिनोंसे पोलिटिकल असिस्टेंटके सुपुर्द था, दिया. इख्तियार मिलनेके एक वर्ष बाद ठाकुरों और रअय्यतकी अर्ज़ियां ख़राब इन्तिज़ामकी बाबत अंग्रेज़ी सर्कारमें पहुंचीं, जिसपर एजेंट गवर्नर जेनरलने ख़रीतेके ज़रीए्से महाराजाको रियासती कामपर तवज्जुह दिलाई, और पोलिटिकल असिस्टेंटको खानगी बातोंमें ज़ियादह दख़्ल देनेसे मना किया.

विक्रमी १९३१ आश्विन कृष्ण ८ [हि॰ १२९१ ता॰ २२ शअ्बान = ई॰ १८७४ ता॰ ५ ऑक्टोबर] को महाराजाने कर्नेल् सर लेविस पेली साहिब एजेंट गवर्नर जेनरलसे सांभर मक़ामपर मुलाक़ात की; इसके बाद मुल्की दौरेका इरादह था, लेकिन् इत्तिफ़ाक़से उन दिनोंमें महाराणा साहिब उदयपुरके गुज़रने से, जो महाराजाके भानजे होते थे, और महाराव राजा अलवरके इन्तिक़ालसे, जो रिश्तेमें मामूं थे, बीकानेरको लौटना पड़ा; तमाम रियासतके अन्दर शादी और त्योहारोंकी रस्में एक महीना तक बन्द और गोश्त व शराबके खाने पीनेकी एक वर्ष तक बिल्कुल मनाई रही.

विक्रमी १९३२ माघ कृष्ण १३ [हि॰ १२९२ ता॰ २७ ज़िल्हिज = ई॰ १८७६ ता॰ २५ जेन्युअरी] को महाराजा साहिब आगरा मक़ामपर इंग्लिस्तान व हिन्दुस्तानके वलीअहद शाहज़ादह साहिब वेल्ज़की पेश्वाई और मुलाक़ातमें दूसरे रईसोंकी तरह शरीक हुए. इसके बाद महाराव राजा बूंदी और महाराजा कृष्णगढ़से मुलाक़ात करके बीकानेरको वापस आये. इस सफ़रमें सर्कारी कारख़ाने देखनेसे महाराजाको बहुत खुशी हासिल हुई, और उनको अपने इलाक़ेके बर्ख़िलाफ़, जो ज़ियादह गैर आबाद और रेगिस्तान है, सर्कारी मुल्ककी सर्सब्ज़ी और रौनक़पर निहायत तअ़ज्जुब हुआ.

विक्रमी १९३३ फाल्गुण कृष्ण ३ [हि॰ १२९४ ता॰ १७ मुहर्रम = ई॰ १८७७ ता॰ २ फ़ेब्रुअरी] को महाराजाने मक़ाम भुज राजधानी कच्छमें

पहुंचकर वहांके राव साहिबकी बेटीसे शादी की. इस सफ़रमें महाराजा किश्तीके ज़रीएसे द्वारिकाको गये, जहां कि बहुत मुद्दत पहिले विक्रमी १६५० [हि० १००१ = ई० १५९३] में बादशाही मन्सब्दार और उनके बुज़ुर्ग राव राय-सिंहके सिवाय बीकानेरसे कोई नहीं गया था.

विक्रमी १९४१ [हि० १३०१ = ई० १८८४] में बीकानेरके सर्दारोंने महाराजाके लालच और उनके मुसाहिब अहल्कारोंकी कार्रवाईसे नाराज़ होकर बग़ावत की, जिससे रिआया और मुल्ककी तबाहीका अन्देशा था, रियासतमें फ़साद दूर करने और संभलनेकी बिल्कुल ताक़त न थी; इस लिये कर्नेल् सर एडवर्ड ब्राडफ़ोर्ड एजेएट गवर्नर जेनरल राजपूतानह, जिनको इस मुल्ककी ख़राबियोंका बहुत तजरिबा है, सर्कारी फ़ौज लेकर बीकानेर गये; उन्होंने कई फ़सादी ठाकुरोंको नज़र बन्द किया, और रियासतकी निगरानी और वहांके कामकी दुरुस्तीपर एक सर्कारी अफ़्सर पोलिटिकल एजेएट और सुपेरिन्टेन्डेंटको रखदिया.

तरजमा.

पहिला अह्दनामह नम्बर ८३.

अह्दनामह जो अंग्रेज़ी ईस्टइण्डिया कम्पनी और बीकानेरके महाराजा सूरत-सिंहके दर्मियान मिस्टर चार्ल्स थियोफ़िलस मेटकाफ़ साहिब (गवर्नर जेनरलके दिये हुए इख्तियारोंके मुवाफ़िक़) और ओझा काशिनाथकी मारिफ़त (राज राजेश्वर महाराजा सूरतसिंह बहादुरके दिये हुए इख्तियारके मुवाफ़िक़) हुआ.

(१) शर्त– दोस्ती और ऐकता और ख़ैरख़्वाही, इज़्ज़तदार कम्पनी और महाराजा सूरतसिंह व उनके वारिसों और जानशीनोंके आपसमें होगी, और एक सर्कारके दोस्त और दुश्मन दूसरी सर्कारके भी दोस्त और दुश्मन समझे जावेंगे.

(२) शर्त– गवर्मेएट अंग्रेज़ी ख़ास राजस्थान और इलाके बीकानेरकी हिफ़ाज़त करनेका वादा करती है.

(३) शर्त– महाराजा सूरतसिंह और उनके जानशीन सर्कार अंग्रेज़ीकी तावे-दारी करेंगे, और उसको बड़ा समझेंगे, और किसी रईस या दूसरे सर्दारसे वास्ता नहीं रक्खेंगे.

(४) शर्त– महाराजा और उनके वारिस और जानशीन किसी रईस या

सर्दारसे सुलहके पैग़ाम गवर्मेंएट अंग्रेज़ीकी इत्तिला और मंज़ूरीके वग़ैर नहीं करेंगे. परन्तु मामूली दोस्तानह तहरीर अपने दोस्तों और रिश्तेदारोंके साथ जारी रक्खेंगे.

(५) शर्त- महाराजा और उनके वारिस या जानशीन किसीपर ज़ियादती नहीं करेंगे, और शायद किसी से तक़ार होजायगी, तो उसका फ़ैसला गवर्मेंएट अंग्रेज़ीकी मारिफ़त कियाजायगा.

(६) शर्त- जो कि बीकानेरके बाज़े रहने वालोंने चोरी धाड़ा वग़ैरह करना इस्तियार किया है, और अक्सर लोगोंका माल लूटा है, इससे दोनों सर्कारकी ताबेदार रअय्यतका बहुत नुक्सान हुआ है, इस वास्ते महाराजा वादा करते हैं, कि आजतक अंग्रेज़ी रअय्यतका, जो अस्वाब लूटागया होगा, वह महाराजा वापस दिलावेंगे; और आगेको चोर धाड़ेतियोंको अपनी रियासतमें क़ैद और ग़ारत करदेंगे; और अगर इस कामका बन्दोबस्त महाराजासे न होसकेगा, तो उनके मांगनेपर सर्कार अंग्रेज़ी इस कामके वास्ते फ़ौजी मदद देगी; उस मददके फ़ौज ख़र्च देनेका इक़ार महाराजा करते हैं; और फ़ौज ख़र्च नहीं देसकेंगे, तो उसके एवज़ कुछ इलाक़ा अपना सर्कार अंग्रेज़ीके सुपुर्द करदेंगे, जो सर्कारी रुपया अदा होने बाद महाराजाको वापस मिलजायगा.

(७) शर्त- सर्कार अंग्रेज़ी महाराजाकी दरख्वास्तके मुवाफ़िक़ ठाकुरों और दूसरे बाशिन्दोंको, जो सर्कश हैं, महाराजाका ताबेदार करदेगी, लेकिन् इस सूरतमें भी महाराजा कुल फ़ौज ख़र्च देंगे, और अगर नहीं दे सकेंगे, तो कुछ इलाक़ा सर्कार अंग्रेज़ीके सुपुर्द करदेंगे, जो रुपया जमा होने पीछे वापस महाराजाको मिल जावेगा.

(८) शर्त- महाराजा बीकानेर सर्कार अंग्रेज़ीको मांगनेके वक्त अपने मक़दूरके मुवाफ़िक़ फ़ौज देंगे.

(९) शर्त- महाराजा और उनके वारिस और जानशीन अपने कुल मुल्कके मालिक और हाकिम हैं, इस रियासतमें अंग्रेज़ी हुकूमत नहीं होगी.

(१०) शर्त- सर्कार अंग्रेज़ीकी यह तज्वीज़ है कि बीकानेर और भटनेरके रास्तों में अम्न व आराम रहे, और वह काबुल व खुरासान जानेवाले सौदागरोंके लायक़ दुरुस्त हों; इस वास्ते महाराजा इक़ार करते हैं कि उन रास्तोंका ऐसा बन्दोबस्त करदेंगे कि मुसाफ़िर लोग आरामके साथ उनके इलाक़ेसे गुज़रें- और मामूली राहदारीके सिवाय किसी तरहकी रोक टोक नहीं कीजावेगी.

(११) शर्त- यह ग्यारह शर्तोंका अ़हदनामह तय्यार होकर उसपर मिस्टर चार्ल्स थियोफ़िलस मेटकाफ़ और ओझा काशीनाथकी मुहर और दस्तख़त हुए. इसकी नक़्लें गवर्नर जेनरल और राजराजेश्वर महाराजा सूरतसिंह बहादुरकी तस्दीक़ कीहुई बीस दिन पीछे नीचे लिखी तारीख़को आपसमें एक दूसरेको दी जावेंगी.

तारीख़ ९ मार्च सन् १८१८ ईसवी मक़ाम दिहली.

दस्तख़त सी० टी० मेटकाफ़, [मुहर]

दस्तख़त ओझा काशीनाथ, [मुहर]

[गवर्नर जेन्रलकी छोटी मुहर.] दस्तख़त हेस्टिंग्ज़,

इस अ़हदनामहको गवर्नर जेनरल बहादुरने कैम्पमें घाघरा नदीके किनारे पतरस घाटके पास २१ मार्च सन् १८१८ को तस्दीक़ किया.

दस्तख़त जे. ऐडम, सेक्रेटरी गवर्नर जेनरल.

नम्बर ८४.

उस सनदका तरजमा, जिसके मुवाफ़िक़ बाज़े गांव महाराजा सर्दारसिंह बहादुर राजा बीकानेरको मिले.

मुवर्रख़े ता० ११ एप्रिल सन् १८६१ ई०.

जो कि साहिब एजेंट गवर्नर जेनरल बहादुर राजस्थानकी रिपोर्टसे मालूम हुआ कि ग़द्रके दिनोंमें महाराजा सर्दारसिंह बहादुर राजा बीकानेरने सर्कार अंग्रेज़ीकी ख़ैरख़्वाही और ताबेदारीके ख़यालसे आप हाज़िर रहकर और बहुत रुपया ख़र्च करके बाज़े यूरोपियन लोगोंकी जान बचाई, और दूसरी ख़िद्मतें भी गवर्मेंट अंग्रेज़ीकी पसन्दके लायक़ कीं; इस लिये उन ख़िद्मतोंसे सर्कार अंग्रेज़ीने खुश होकर महाराजाको खुशीका ख़रीता और क़ीमती ख़िल्अ़त (सरोपाव) बख़्शा. सर्कारने खुशीके साथ एक अलहदा फ़िहरिस्तके मुवाफ़िक़ ज़िले सिरसामेंसे चौदह हज़ार दो सौ इक्कानवे रुपये की आमदनीके गांव महाराजा को हमेशहके लिये निकालदिये, इस लिये ये गांव इस सनदके ज़रीएसे उनके क़दीमी इलाक़ेके शामिल किये गये; और तारीख़ १ मई सन् १८६१ ईसवीसे उन्हीं शर्तोंपर, जिनपर कि उनको क़दीम इलाक़ह मिला है, इस सनदका भी अमल दरामद होगा.

उन गांवोंके नाम मए सालाना जमाबन्दीके, जो महाराजा बीकानेरको ख़ैरख़्वाहीके एवज़ सर्कार अंग्रेज़ीसे मिले, एचिसनके अह्दनामोंकी किताबकी तीसरी जिल्दके पृष्ठ २३२ से नीचे लिखेजाते हैं:-

नम्बर	नाम ग्राम.	सालाना जमा, सन् १८६१-६२ ई०	कैफ़ियत.
१	सांगरा	३०० रु०	
२	नानकपट्टी	१७७ रु०	इस गांवकी जमा तरक़्क़ी पर है. सन् १८६५-६६ में ५९० रुपयेतक पहुंचेगी.
३	खारकुआ	४९० रु०	
४	गोदयाखार	४०६ रु०	
५	कामपुरा	१३७ रु०	२३५ रु०
६	सोलावाली	२३४ रु०	
७	मलख्वारा	४५१ रु०	
८	वारमेहर	५०० रु०	
९	गलवाला	४१० रु०	
१०	महारन	३५० रु०	
११	कुलचन्द्र	२५० रु०	
१२	मुरावली	९४८ रु०	
१३	चदरवाली	२०० रु०	
१४	नीरकामरया	७४० रु०	
१५	पन्नीवाली उर्फ़ चगरानी	२०७ रु०	
१६	कनाली	४५१ रु०	
१७	गलरावती	५३४ रु०	
१८	ममानी	३४६ रु०	
१९	पट्टी नरजीका	८८९ रु०	
२०	रता खारा	१९९ रु०	

२१	रतीखारा	१६ रु०	२३५ रु०
२२	किशनपुरा	१२० रु०	सन् १८७०-७१ में ३०० रु०
२३	सलीमगढ़	१७ रु०	१३० रु०
२४	घारी	२१० रु०	सन् १८६५-६६ में ३४० रु०
२५	सलवाला खुर्द	११४ रु०	२६६ रु०
२६	बेरवाला कलां	२८० रु०	
२७	सलवाला कलां	२४१ रु०	३६६ रु०
२८	तलवाड़ा कलां	७५७ रु०	
२९	जलालाबाद	१७६ रु०	२७६ रु०
३०	मुहारवाला	४८२ रु०	५५४ रु०
३१	सीतावाली	२२३ रु०	२६१ रु०
३२	रामसर	२५८ रु०	३०८ रु०
३३	देहली खुर्द	३१४ रु०	४५४ रु०
३४	रामनगर	२०० रु०	
३५	देहली कलां	७३० रु०	७८० रु०
३६	मरजावाई	३६१ रु०	४२३ रु०
३७	जाववाली	३१० रु०	३६० रु०
३८	भोरांपुरा	१७४ रु०	२२५ रु०
३९	खैरावाली	१८१ रु०	२३१ रु०
४०	शरवांपुरा	४७३ रु०	
४१	कंदाहा	२८५ रु०	

१४२९१ रुपया.

अह्दनामह नम्बर ८५.

सर्कार अंग्रेज़ी और श्रीमान् सर्दारसिंह महाराजा बीकानेर व उनके वारिसों और जानशीनोंके बीचका अह्दनामह, जो एक तरफ़ लेफ़्टिनेंट कर्नेल् रिचर्ड हार्ट किटिंग सी० एस० आई० राजपूतानहके एजेएट गवर्नर जेनरलने श्रीमान् राइट आनरेबल सर जॉन लेयर्ड मेअर लॉरेन्स बैरोनेट वाइसराय और गवर्नर जेनरल हिन्दुस्तानसे पूरा इख़्तियार पाकर खुद महाराजा सर्दारसिंहके साथ किया.

पहिली शर्त- कोई आदमी अंग्रेज़ी या दूसरे राज्यका बाशिन्दह अगर अंग्रेज़ी इलाकेमें बड़ा जुर्म करे, और बीकानेरकी राज्यसीमामें पनाह लेना चाहे, तो बीकानेर की सर्कार उसको गिरिफ्तार करेगी, और दस्तूरके मुताबिक़ उसके मांगेजाने पर सर्कार अंग्रेज़ीको सुपुर्द करदेगी.

दूसरी शर्त- कोई आदमी बीकानेरके राज्यका बाशिन्दह वहांके राज्यकी सीमामें कोई बड़ा जुर्म करे. और अंग्रेज़ी मुल्कमें जाकर आश्रय लेवे, तो सर्कार अंग्रेज़ी वह मुज्रिम बीकानेरके राज्यको क़ाइदहके मुवाफ़िक़ सुपुर्द कर देवेगी.

तीसरी शर्त- कोई आदमी, जो बीकानेरके राज्यकी रअ़य्यत न हो, और बीकानेरके राज्यकी सीमामें कोई बड़ा जुर्म करके फिर अंग्रेज़ी सीमामें आश्रय लेवे, तो सर्कार अंग्रेज़ी उसको गिरिफ्तार करेगी. और उसके मुक़द्दमेकी रूबकारी सर्कार अंग्रेज़ीकी बतलाई हुई अदालतमें होगी. अक्सर क़ाइदह यह है कि ऐसे मुक़द्दमोंका फ़ैसला उस पोलिटिकल अफ़्सरके इजलासमें होता है, जिसके तह्तमें वारिदात होनेके वक्तपर बीकानेर की मुल्की निगहबानी रहे.

चौथी शर्त- किसी हालमें कोई सर्कार किसी आदमी को, जो बड़ा मुज्रिम ठहरा हो, देदेनेके लिये पाबन्द नहीं है. जबतक कि दस्तूरके मुताबिक़ खुद वह सर्कार या उसके हुक्मसे कोई अफ़्सर उस आदमीको न मांगे, जिसके इलाक़ेमें कि जुर्म हुआ हो, और जुर्मकी ऐसी गवाहीपर जैसा कि उस इलाक़ेके क़ानूनके मुताबिक़ सहीह समझी जावे. जिसमें कि मुज्रिम पाया जावे, उसका गिरिफ्तार करना दुरुस्त ठहरेगा. और वह मुज्रिम क़रार दिया जायगा, गोया कि जुर्म वहींपर हुआ है.

पांचवीं शर्त- नीचे लिखेहुए काम बड़े जुर्म समझे जावेंगे.

१ खून- २ खून करनेकी कोशिश- ३ वहशियाना क़त्ल- ४ ठगी- ५ ज़हरदेना- ६ सख्तगीरी (ज़बर्दस्ती व्यभिचार)- ७ ज़ियादह ज़ख़्मी करना- ८ लड़कावाला चुरा लेजाना- ९ औरतोंका बेचना- १० डकैती- ११ लूट- १२ सेंध (नक़्ब) लगाना- १३ चौपाये चुराना- १४ मकान जलादेना- १५ जालसाज़ी करना- १६ झूठा सिक्का चलाना- १७ धोखा देकर जुर्म करना- १८ माल अस्बाब चुरालेना- १९ ऊपर लिखे हुए जुर्मोंमें मदद देना या वर्ग़लाना (बहकाना).

छटी शर्त- ऊपर लिखी हुई शर्तोंके मुताबिक़ मुज्रिमको गिरिफ्तार करने, रोकरखने, या सुपुर्द करनेमें, जो खर्च लगे, वह उसी सर्कारको देनापड़ेगा, जिसके कहनेके मुताबिक़ ये बातें कीजावें.

सातवीं शर्त- ऊपर लिखा हुआ अह्दनामह उस वक्ततक बरक़रार रहेगा, जब

तक कि अह्दनामह करनेवाली दोनों सर्कारोंमेंसे कोई उसके तब्दील करनेकी ख़्वाहिश दूसरेको ज़ाहिर न करे.

आठवीं शर्त- इस अह्दनामहकी शर्तोंका असर किसी दूसरे अह्दनामहपर, जो कि दोनों सर्कारोंके बीच पहिलेसे है, कुछ न होगा, सिवाय ऐसे अह्दनामहके, जो कि इस अह्दनामहकी शर्तोंके बर्ख़िलाफ़ हो.

मक़ाम बीकानेर ता० ३ फ़ेब्रुअरी सन् १८६९ ईसवी.

दस्तख़त परसी, डब्ल्यू० पाउलेट,
नायब एजेंट गवर्नर जेनरल.

दस्तख़त और मुहर महाराजा
बीकानेर की.

दस्तख़त आर० एच० कीटिंग,
दस्तख़त मेओ.

इस अह्दनामहकी तस्दीक़ श्रीमान् वाइसराय गवर्नर जेनरल हिन्दने मक़ाम शिमलेपर ता० १५ जून सन् १८६९ ई० को की.

दस्तख़त डब्ल्यू० एस० सेटन्कार.
सर्कार हिन्दकी फ़ॉरेन् डिपार्ट-
मेन्टका सेक्रेटरी.

कृष्णगढ़की तवारीख़.

जुग्राफ़ियः

इस राज्यके वायव्य कोण और उत्तरमें जोधपुर; पूर्वमें जयपुर और अजमेर का अंग्रेज़ी ज़िला; दक्षिण, नैर्ऋत्य कोण व पश्चिममें अजमेर है. इस राज्यकी ख़ास हदें क़ायम करना मुश्किल है, क्यों कि यह ज़ियादहतर ज़िले अजमेर और जयपुरके गावोंसे खिचड़ीकी तरह मिलाहुआ है. इसकी लम्बाई दक्षिणसे उत्तर

को २६ अंश और १७ कलासे २६ अंश और ५९ कलातक, और चौड़ाई पूर्वसे पश्चिमको ७४ अंश और ४३ कलासे ७५ अंश और १३ कलातक है; इसका रक्बा ७२४ मील मुरब्बा, और आबादी ११२६३३ है; रियासतकी आमदनी किताब विक़ाया राजपूतानहमें २२५००० रुपया लिखी है, लेकिन् इस वक्त इससे ज़ियादह मालूम होती है. इस रियासतके दक्षिणसे वायव्य कोणको पहाड़ है, और इसमें ४ क़िले व क़स्बे मश्हूर हैं-

१ राजधानी कृष्णगढ़, जो अजमेर व आगरेकी रेलवे सड़कपर वाके़ है; क़िलेके उत्तरी तरफ़ गूंदोला नामी एक झील है, जिसका नाम बादशाहनामह वगै़रह फ़ार्सी तवारीखोंमें जोगी तालाब लिखा है; इसके बीच टापूमें महाराजा मुहकमसिंहने अपने नामपर 'मुहकमविलास' नामका एक महल तय्यार करवाया: जब तालाब भरजाता है तो किश्तीमें बैठकर उस महलमें जाना पड़ता है, और तालाबके दक्षिणी किनारेपर क़िलेसे मिलाहुआ महाराजा पृथ्वीसिंहने फूल महल नामी एक मकान अंग्रेज़ी और हिन्दुस्तानी तर्ज़पर बनवाया है. क़िलेके गिर्दकी खन्दक़ हमेशह पानीसे भरी रहती है, मज़्बूत दीवार के अन्दर महाराजाके महल और घोड़ोंकी पायगाह वगै़रह रियासती कारखाने हैं; इस क़िलेमें एक क़िलेदार, जो भीतर दर्वाज़ेपर रहता है उसका बड़ा इस्तियार है. महाराजा बहादुरसिंहका तज्वीज़ कियाहुआ बन्दोवस्त अबतक जारी है, जिससे क़िले खर्चके लिये जागीर मुक़र्रर है; उसमेंसे नाज, बारूद, सीसा वगै़रह सामान हमेशह दुरुस्त और मौजूद रहता है: जब कभी राज्यमें काम पड़े, तो क़िलेदार सूद लेकर रुपया देता है, और इक़ारपर उस ख़ज़ानहमें जमा करालेता है. क़िलेके अलावह शहरके गिर्द भी शहरपनाह बनीहुई है. इस शहरमें ८००० आदमियोंकी आबादी समझी जाती है.

२ दूसरा रूपनगरका क़िला, जो महाराजा रूपसिंहने बनवाया था, इसको दुबारा महाराजा बहादुरसिंहने मज़्बूत किया था, वह बहुत अच्छा लड़ाईके काम का है; और इस क़िलेमे भी क़िलेदारके तअल्लुक़ कृष्णगढ़के मुवाफ़िक़ इन्तिज़ाम कियागया है.

३ तीसरा क़िला सरवाड़. इस क़िलेका मैदानमें सिल्सिलेवार इहातेके अन्दर इहाता बनाहुआ है, इस तरहपर तेहरी दीवार और खन्दक़ोंसे आगरा क़िलेकी तरह मज़्बूत कियागया है; यहां भी क़िलेदारके मातहत कृष्णगढ़के मुवाफ़िक़ सब सामान दुरुस्त रहता है, और क़िलेदारकी इजाज़तके वगै़र भीतर कोई आदमी नहीं जासक्ता

है, और इजाज़त भी मुश्किलसे मिलती है; क़िलेके पास शहरपनाह भी मज़्बूत बनी हुई है, लेकिन् क़िलेके अन्दर कोई इमारत रहनेके लायक़ नहीं है, महाराजा पृथ्वीसिंहने एक छोटासा मकान बनवादिया है, जिसमें चन्द आदमी एक दो रोज़ गुज़रान करसक्ते हैं.

४ चौथा फ़त्हगढ़, जो महाराजा बहादुरसिंहने अपने छोटे बेटे बाघसिंहको जागीरमें दिया था, और वह अबतक उसकी औलादके क़ब्ज़ेमें है, इसका ज़िक्र आगे लिखाजावेगा.

तवारीख़.

इनका पहिला हाल जोधपुरकी तवारीख़के शामिल समझना चाहिये, क्यों कि ये उसी ख़ान्दानमें से निकले हैं; अलहदा रियासत क़ायम होनेका हाल इस तरहपर है कि जोधपुरके राव मालदेवके बेटे उदयसिंहको बादशाह अक्बरने राजाका ख़िताब और जोधपुर मए इलाक़हके जागीरमें दिया. विक्रमी १६४९ [हि० १००० = ई० १५९२] में राजा उदयसिंहकी बेटी मानमतीकी शादी शाहज़ादह सलीमके साथ हुई. उदयसिंहका इन्तिक़ाल होनेके बाद उनकी मर्ज़ीके मुवाफ़िक़ सूरसिंहको तो जोधपुरकी गद्दी मिली, और किशनसिंह (कृष्णसिंह) को शाहज़ादह सलीमके पास रक्खा; जब अक्बर बादशाहका इन्तिक़ाल होगया, और जहांगीर तख़्तपर बैठा, तो उसने १ कृष्णसिंहका मन्सब बढ़ाकर सेठोलाव, जो जोगी तालाबके क़रीब था, जागीर में दिया, जिसके खंडहर वग़ैरहके निशानात अबतक कृष्णगढ़के क़रीब पश्चिमकी तरफ़ बाक़ी हैं.

कृष्णसिंहने जागीरपाने बाद सेठोलावके एवज़ विक्रमी १६६६ (१) [हि० १०१८ = ई० १६०९] में अपने नामपर कृष्णगढ़ बसाया. आख़िरकार बादशाहने कृष्णसिंहको तीन हज़ारी ज़ात और डेढ़ हज़ार सवारका मन्सब इनायत किया था, जब विक्रमी १६७० या ७१ [हि० १०२३ = ई० १६१४] में बादशाह जहांगीर मेवाड़की मुहिमके लिये अजमेर आया, तब महाराजा कृष्णसिंह भी शाहज़ादह ख़ुर्रमके साथ मेवाड़की लड़ाइयोंमें शामिल थे; और उन्होंने बड़ी २ बहादुरियां दिखलाईं. कहते हैं कि कृष्णसिंहने मेवाड़ी राजपूतोंके हाथसे एक पैर में बर्छेकी चोट भी खाई थी, आख़िरकार मेवाड़की लड़ाई ख़त्म होने बाद ईश्वरकी कुद्रतसे इस राजाका इन्तिक़ाल आपसकी लड़ाईमें विक्रमी १६७२ ज्येष्ठ कृष्ण ८ [हि० १०२४ ता० २२ रबीउस्सानी = ई० १६१५

---

(१) महाराजा रूपसिंहकी वार्तामें वृन्द कविने विक्रमी १६६८ लिखा है, और मारवाड़की तवारीख़में विक्रमी १६६६ है.

ता० २१ मई] को हुआ. इस मारिकेका हाल जोधपुर और कृष्णगढ़की तवारीख़में जुदे २ तौरसे लिखा है. लेकिन् हम खास जहांगीर बादशाहकी तुज़क जहांगीरी किताबसे उसे नक़्ल करते हैं.

तुज़क जहांगीरीके एष्ठ १३७ में हिज्री १०२४ [विक्रमी १६७२ = ई० १६१५] में बादशाह लिखता है कि—

"१५ खुरदाद (१) जुमुएकी रातको एक अजीब मुआमला ज़ाहिर हुआ: मैं इस रातको इत्तिफ़ाक़से पुष्करमें था; मुख़्तसर बात यह है, कि किशनसिंह, राजा सूरजसिंह (२) का सगा भाई, राजाके वकील गोविन्ददाससे अपने एक भतीजे गोपालदास नामके मारे जानेके बाइस, जो कुछ मुद्दत पहिले जवानीमें गोविन्ददासके हाथसे क़त्ल हुआ था, सख़्त रंजीदा था. इस झगड़ेके तूल तवील सबब हैं. ग़रज़ कि कृष्णसिंहको यह उम्मेद थी, कि गोपालदास अस्लमें राजा (सूरसिंह) का भी भतीजा था, इस लिये वह उसके एवज़में गोविन्ददासको मारडालेगा. राजाने गोविन्ददासकी कारगुज़ारी और होश्यारीके सबब भतीजेके ख़ूनका एवज़ लेनेसे दरगुज़र करके ग़फ़्लत बरती. किशनसिंह ने जब इस क़िस्मकी बेपरवाई राजाकी तरफ़से देखी, तो अपने दिलमें इरादह किया, कि मैं भतीजेका एवज़ ज़रूर लूंगा, और इस कार्रवाईपर कभी कमी न करूंगा. वह यह बात मुद्दतसे अपने दिलमें ठाने हुए था, यहांतक कि ज़िक्र की हुई रातमें अपने भाइयों, मददगारों और नौकरोंको जमा करके यह बात जतलाने लगा, कि आजकी रात मैं गोविन्ददासके मारनेको चलता हूं, चाहे जो कुछ होजावे; उसकी तबीअतमें यह ख़याल नथा, कि राजाको कुछ नुक्सान पहुंचे राजा भी खुद इस मुआमलेसे बेख़बर था. किशनसिंह सुबह होनेके क़रीब अपने भतीजे कर्ण और दूसरे हमराहियों समेत रवाना हुआ. जब राजाकी हवेलीके दर्वाज़ेपर पहुंचा, तो अपने कई कारगुज़ार आदमियोंको पियादह करके गोविन्ददासके घरपर, जो राजाकी हवेलीसे मिला हुआ था, भेजा; और आप सवारीकी हालतमें दर्वाज़ेपर ठहर गया. पैदल लोगोंने गोविन्ददासके घरमें बढ़कर उसके कई आदमियोंको, जो हिफ़ाज़त और पहरेके तौरपर होश्यार थे, तलवारसे तमाम किया. इस मार पीटकी फ़र्यादमें गोविन्ददास जागगया, और घबराहटसे अपनी तलवार लेकर घरके एक कोनेसे होकर निकलने लगा, ता कि अपने बाहरवाले चौकीदारोंके पास पहुंचजावे.

---

(१) खुरदाद तुर्की महीनेका नाम है.

(२) सूरसिंह जोधपुरका राजा था.

किशनसिंहके पैदल चौकीदारोंको मारचुके थे, और गोविन्ददासकी फ़िक्रमें बढ़ते आते थे. इस मौक़ेपर गोविन्ददास उनके साम्हने पड़कर मारागया. इससे पहिले कि गोविन्ददासके मारेजाने की ख़बर किशनसिंहको तह्क़ीक़ हो, वह बेसब्रीके साथ घोड़ेसे उतरकर हवेलीमें जानेलगा, उसके आदमियोंने बहुतसा इन्कार और तक़ार की, कि पैदल होना मुनासिब नहीं है, लेकिन् उसने किसी बातपर ध्यान न दिया. अगर वह थोड़ी देर ठहरकर अपने ग़नीमके तबाह होनेकी ख़बर पालेता, तो यक़ीन था कि अपना मत्लब पूरा करनेपर सहीह व सलामत लौट आता; लेकिन् तक्दीरी हुक्म दूसरी तरहपर जारी होचुका था. किशनसिंहके पियादह होने और मकानमें क़दम रखनेके वक़् राजा, जो अपनी हवेलीमें बे ख़बर सोरहा था, आदमियोंके शोर व फ़साद मचानेसे जागगया; और अपने दर्वाज़ेपर नंगी तलवार हाथमें लेकर आखड़ा हुआ. उसके आदमी यह हाल देखकर दौड़ पड़े, और उन लोगोंपर, जो पैदल होकर गोविन्ददासके घरमें बड़गये थे, रुजूअ् हुए. पियादोंकी क्या हक़ीक़त थी ! राजाके आदमी बेशुमार थे, किशनसिंहके एक आदमीके वास्ते दस आदमी मुक़ाबलेपर पहुंच गये. आख़िरमें किशनसिंह और उसका भतीजा कर्ण जब राजाके मकानकी तरफ़ आये, तो राजाके आदमियोंने हम्ला करके दोनोंको मार डाला. किशनसिंहके ७ और कर्णके ९ ज़ख़्म लगे. इस लड़ाईमें राजाकी तरफ़से ३० और किशनसिंहकी तरफ़से ३६ याने कुल्ल ६६ आदमी क़त्ल हुए. जब सूरज निकलनेपर रौशनी फैली, तो सब हाल ज़ाहिर हुआ. राजाने भाई, भतीजे और ऐसे नौकरको, कि जो जानसे ज़ियादह अज़ीज़ था, मराहुआ पाया; बाक़ी आदमी अलहदा अलहदा बिखरगये. यह ख़बर पुष्करमें मुझको मिली, मैंने हुक्म दिया कि मरेहुओंको, जिस तरहपर उनका दस्तूर है, जलादिया जावे, और इस झगड़ेका सबब अच्छी तरह तह्क़ीक़ कियाजावे. आख़िरमें ज़ाहिर हुआ, कि हक़ीक़त वही थी, जो लिखीगई, और किसी एवज़के लायक़ नहीं है."

मआसिरुल् उमरामें इतना ज़ियादह लिखा है कि- "कृष्णसिंह और उसके भतीजेके मारेजाने बाद उनके आदमी निकल गये, जिनके पीछे सूरसिंहके आदमी लगे, बादशाही झरोखेके साम्हने इनका मुक़ाबला हुआ. इनकी तलवारें ऐसी चलीं कि जिसके सिरमें लगी कमरतक उतरगई, और जो कमरमें लगी, उसके दो टुकड़े करदिये. कहते हैं कि उस दिनसे सिरोहीकी तलवारकी इज़्ज़त बढ़गई, और लोग उसे चाहने लगे. बादशाहने कृष्णसिंहका मन्सब उसके बेटोंमें तक़्सीम करदिया".

मआसिरुल् उमरामें इस मारिकेमें तर्फ़ैनके ६८ आदमी मारे जाने लिखे हैं, और मारवाड़की तवारीख़में, जो लोग मारेगये, उनके नाम नीचे लिखे हैं:–

महाराजा सूरसिंहके आदमियोंकी तफ़्सील–

१ केशवदास.
२ हुल पत्ता भदावत.
३ चहुवान नरहर.
४ भाटी पृथ्वीराज.
५ भाटी रायसिंह.
६ भाटी भादा.
७ भाटी गोविन्द.
८ भाटी मनोहरदास गोविन्ददासोत.
९ भोपत कलावत.
१० सोनगरा केशवदास.
११ धायभाई सामा.
१२ चहुवान साजण.
१३ भाटी सूजा.
१४ भाटी कल्ला.
१५ भाटी कूंपा.
१६ पंवार केशवदास.

सिवाय ऊपर लिखेहुए आदमियोंके और भी कई लोग मारेगये.

महाराजा कृष्णसिंहकी तरफ़के, जो आदमी मारेगये, उनकी तफ़्सील यह है–

१ राव कर्णसिंह शक्तिसिंहोत.
२ राठौड़ खेतसी गोपालदासोत चांपावत.
३ राठोड़ वाघा खेतसिहोत.
४ भाटी जोधा.
५ चाकर कान्हा.
६ राव किशोरदास कल्याणदासोत.
७ राठोड़ सांवलदास सूरावत.
८ माला लखमणोत.
९ मेड़तिया माधव रामदासोत.
१० गोपालदास भगवतोत जेतावत.
११ भाटी धन्ना.
१२ मानसिंह कल्याणदासोत.
१३ सीसोदिया भारमल्ल.
१४ सूरा कर्मसोत नारायणोत.
१५ कर्मसोत रुद्र चन्द्रावत.
१६ भग्गा.
१७ राठौड़ प्रयागदास सुरताणोत.
१८ गहलोत राधा.
१९ हींगोला सेखा.
२० धीरा.
२१ गाम वेड़वासियाके ऊदावत ३.
२२ मकवाणा कृष्णा.
२३ कछवाहा भोपत ३.
२४ हुल ३ आदमी.
२५ दहिया नापा.
२६ महेश.
२७ कछवाहा दूदा.
२८ लाड खानी.

इन आदमियोंकी तादादमें इख़्तिलाफ़ है, लेकिन् मालूम होता है कि बादशाह जहांगीरका लिखना दुरुस्त होगा.

महाराजा कृष्णसिंहके चार बेटे थे- सहसमल्ल, जगमाल, भारमल्ल और हरीसिंह. महाराजा रूपसिंहकी "वचनिका" में इस तरह लिखा है, कि कृष्णसिंहके मारेजानेपर उसका बड़ा बेटा (१) सहसमल्ल गद्दीपर बैठा. वह जहांगीर बादशाह की ख़िद्मतमें रहा, और विक्रमी १६८५ ज्येष्ठ [हि० १०३७ शव्वाल = ई० १६२८ जून] में मरगया; तब इसका छोटा भाई (२) जगमाल गद्दीपर बैठा. यह जगमाल बड़ा बहादुर और अपने छोटे भाई भारमल्लके साथ बहुत मुहब्बतसे रहता था; पहिले जब शाहज़ादह ख़ुर्रम और पर्वेज़की टोस नदीपर लड़ाई हुई, उस वक्त ये दोनों भाई ख़ुर्रमकी फ़ौजमें थे, और जोताजोत हाथीपर इन दोनोंने हम्ला किया था, उस वक्त राजा भीम सीसोदिया तो मारागया, और ये दोनों ज़िन्दा बाक़ी रहगये थे.

जगमाल अपने भाईकी गद्दीपर बैठनेके बाद थोड़े ही अर्सेतक कृष्णगढ़का राजा कहलाया, याने विक्रमी १६८५ माघ शुक्ल १२ [हि० १०३८ ता० १० जमादियुस्सानी = ई० १६२९ ता० ६ फ़ेब्रुअरी] को महाबतखांके बेटे अमानुल्लाखां ने किसी एक राजपूतको मारडालना चाहा, तब जगमाल और भारमल्ल दोनों भाई उस राजपूतके मददगार बनकर बड़ी बहादुरीके साथ मारेगये. वृन्द कविने इस लड़ाईका होना जाफ़राबादमें लिखा है. इसके बाद शाहजहां बादशाहने कृष्णसिंहके चौथे बेटे (४) हरीसिंहको जगमालका मन्सब देकर कृष्णगढ़का राजा बनाया.

हरीसिंह शाहजहांकी ख़िद्मतमें रहता था, विक्रमी १७०० वैशाख शुक्ल ८ [हि० १०५३ ता० ६ सफ़र = ई० १६४३ ता० २६ एप्रिल] को उस का इन्तिक़ाल होगया, तब शाहजहां बादशाहने इसी वर्षके ज्येष्ठ शुक्ल ५ [हि० ता० ३ रबीउल्अव्वल = ई० ता० २३ मई] को भारमल्लके बेटे (५) रूपसिंहको हरीसिंहकी जगह कृष्णगढ़का राजा बनाया.

५ रूपसिंह.

रूपसिंहका जन्म विक्रमी १६८५ वैशाख शुक्ल ११ [हि० १०३७ ता० ९ रमज़ान = ई० १६२८ ता० १५ मई] को हुआ था, इस राजाका हाल वृन्द कविने "रूपसिंहकी वार्ता" नामी ग्रन्थमें कविताके ढंगपर बहुत बढ़ावेके साथ लिखा है, लेकिन् अस्ल मत्लब वही है, जो उस ज़मानेकी फ़ार्सी तवारीख़ोंमें दर्ज है, इस वास्ते हम मआसिरुल् उमराका तर्जमा लिखते हैं, जिसमें शाहजहांके ज़मानेकी किताबोंसे चुना हुआ हाल दर्ज है.

"रूपसिंह राठौड़, जोधपुरके राजा सूरजसिंहके छोटे भाई कृष्णसिंहका पोता.

हरीसिंह बे औलाद मरगया, तो बादशाहने उसके भतीजे रूपसिंहको ख़िल्अ़त और मन्सबकी तरक़्क़ी व चांदीके ज़ीन समेत घोड़ा देकर कृष्णगढ़ उसकी जागीरमें बहाल रक्खा. विक्रमी १७०१ मार्गशीर्ष शुक्ल ७ [हि० १०५४ ता० ५ शव्वाल = ई० १६४४ ता० ८ नोवेम्बर] को जब शाहजहांकी बेटी बेगम साहिबा नाम, जो चराग़की लपटसे जलगई थी, उसके अच्छे होनेपर बादशाहने खुशीका जलसा किया, तो उस मौक़ेपर बादशाहने रूपसिंहका अस्ल मन्सब इज़ाफ़े सहित एक हज़ारी ज़ात व सात सौ सवार किया. फिर विक्रमी १७०२ पौष कृ० ४ [हि० १०५५ ता० १८ शव्वाल = ई० १६४५ ता० ७ डिसेम्बर] को इन्हें एक हज़ारी ज़ात और एक हज़ार सवारका मन्सब मिला.

विक्रमी १७०२ [हि० १०५५ = ई० १६४५] में शाहज़ादह मुरादबख़्शके साथ बल्ख़, बदख़्शांकी मुहिमपर तईनात हुआ, जब बल्ख़ पहुंचे, तो वहां का मालिक नज़र मुहम्मद ख़ां शाहज़ादहसे बग़ैर मुक़ाबलेके भागगया. फिर बहादुरख़ां और असालतख़ां शाहज़ादहके हुक्मसे नज़र मुहम्मदख़ांके पीछे लगे, और यह राजा शाहज़ादहके बिना हुक्म अपनी मर्दानगीसे उनके साथ हो लिया, और ग़नीमसे बहुत लड़ा, जिसके एवज़ उसने विक्रमी १७०३ प्रथम श्रावण शुक्ल १० [हि० १०५६ ता० ८ जमादियुस्सानी = ई० १६४६ ता० २४ जुलाई] में डेढ़ हज़ारी ज़ात और एक हज़ार सवारका मन्सब पाया, जिसके बाद विक्रमी भाद्रपद शुक्ल ११ [हि० ता० ९ शअ़्बान = ई० ता० २२ सेप्टेम्बर] को बल्ख़की कारगुज़ारीसे दो हज़ारी ज़ात व एक हज़ार सवारका मन्सब मिला, और विक्रमी १७०४ वैशाख कृष्ण ७ [हि० १०५७ ता० २१ रबीउल्अव्वल = ई० १६४७ ता० २९ एप्रिल] को उसके वास्ते बल्ख़में घोड़ा भेजागया, उसके दूसरे वर्ष निशान हासिल हुआ; और विक्रमी १७०५ [हि० १०५८ = ई० १६४८] में अस्ल व इज़ाफ़ा मिलके ढ़ाई हज़ारी ज़ात और बारह सौ सवारका मन्सब पाकर शाहज़ादह औरंगज़ेबके साथ कन्धारकी मुहिमपर भेजागया, वहां रुस्तमख़ांके साथ ईरानियोंके मुक़ाबलेपर बहुत अच्छा काम दिया. विक्रमी १७०६ [हि० १०५९ = ई० १६४९] में तीन हज़ारी ज़ात डेढ़ हज़ार सवारका मन्सब मिला, और विक्रमी १७०८ [हि० १०६१ = ई० १६५१] में एक हज़ारी ज़ात व पांच सौ सवारका इज़ाफ़ा हुआ, और नक़ारा पाकर उसी शाहज़ादहके साथ दुबारा कन्धारपर भेजागया.

विक्रमी १७१० [हि० १०६३ = ई० १६५३] में तीसरी दफ़ा शाहज़ादहके साथ उसी मुहिमपर तईनात हुआ, और अस्ल व इज़ाफ़ा समेत चार हज़ारी ज़ात और ढाई हज़ार सवारका मन्सब पाया.

विक्रमी १७११ [हि० १०६४ = ई० १६५४] में सादुल्लाखां वज़ीरके साथ क़िले चित्तौड़के गिरानेको तईनात हुआ, और अस्ल व इज़ाफ़ा समेत चार हज़ारी ज़ात व तीन हज़ार सवारका मन्सब पाया; और मांडलगढ़का क़िला मेवाड़के इलाक़ेका महाराणासे अलहदा करके बादशाहने इसकी तन्ख़्वाहमें अस्सी लाख दाम (दो लाख रुपये) की जमापर देदिया.

विक्रमी १७१५ ज्येष्ठ [हि० १०६८ रमज़ान = ई० १६५८ जून] को रूपसिंह समूनगरकी लड़ाईमें शाहज़ादह दाराशिकोहकी तरफ़से हरावल फ़ौजमें तईनात हुआ, और वहांपर निहायत बहादुरीके साथ आलमगीरके तोपख़ानह और हरावल वग़ैरह फ़ौजसे बढ़गया, और ख़ास आलमगीरके हाथीके साम्हने हम्ला करने लगा; आख़िरकार आलमगीरकी ख़ास सवारीके हाथीके पास जाकर पियादह होना चाहता था, कि अम्मारीकी रस्सी काटडाले. यह जुरअत उसकी आलमगीर ने देखकर अपने आदमियोंको ताकीद की, कि यह मारा न जावे, ज़िन्दह पकड़ लियाजावे, लेकिन् उस हंगामहमें कौन सुनता था, फ़ौरन् मारडालागया."

रूपसिंहके मारेजानेका हाल, शाहज़ादोंकी लड़ाई, और आलमगीरकी कामयाबीकी तफ़्सीलके साथ आलमगीरनामह वग़ैरहसे लिखा है– (३४९ पृष्ठ से ३५७ तक देखो).

६ महाराजा मानसिंह.

जब महाराजा रूपसिंह विक्रमी १७१५ ज्येष्ठ शुक्ल ८ [हि० १०६८ ता० ६ रमज़ान = ई० १६५८ ता० ९ जून] को समूनगरकी लड़ाईमें दाराशिकोहकी तरफ़से बड़ी बहादुरीके साथ मारागया, तब यह ख़बर कृष्णगढ़ पहुंची. रूपसिंहका बेटा मानसिंह, जो बिल्कुल बालक रहगया था, इसी वर्षके आषाढ़ कृष्ण १० [हि० ता० २४ रमज़ान = ई० ता २६ जून] को कृष्णगढ़में गद्दीपर बिठायागया. इनका जन्म विक्रमी १७१२ भाद्रपद शुक्ल ३ [हि० १०६५ ता० १ ज़िल्क़ाद = ई० १६५५ ता० ४ सेप्टेम्बर] को हुआ था. मांडलगढ़का क़िला, जो मेवाड़से अलहदा करके शाहजहांने महाराजा रूपसिंहको दिया था, वह समूनगरकी लड़ाई झगड़ोंके मौक़ेपर महाराणा राजसिंहने मेवाड़में मिलालिया था, जिसका हाल पृष्ठ ४१४ में लिखागया है.

आलमगीरने तख़्त नशीन होकर महाराजा रूपसिंहकी वड़ी बेटी चारुमतीके साथ शादी करना चाहा, परन्तु उस राजकुमारीने मज़्हवी तत्र्प्रस्सुबके सबब मुसल्मान बादशाहकी स्त्री बनना न चाहा, और महाराणा राजसिंहके पास एक अर्ज़ी लिखभेजी; जिसपर महाराणा इस राजकुमारीको विवाहकर लेगये, जिसका मुफ़स्सल हाल पहिले लिखागया है- (देखो एष्ठ ४३७ -३९ तक).

जब बादशाह आलमगीरने नाराज़गी ज़ाहिर की, तब राजा मानसिंहने अपनी दूसरी बहिनकी शादी आलमगीरके शाहज़ादह मुअ़ज़्ज़मके साथ करदी. आलमगीरने मानसिंहका मन्सब तीन हज़ारी तक बढ़ादिया था. विक्रमी १७४८ ज्येष्ठ शुक्क ११ [हि० ११०२ ता० ९ रमज़ान = ई० १६९१ ता० ८ जून] को जब शाहज़ादह कामबख़्श जंजीका क़िला लेनेको गया, तो यह राजा भी उसके साथ था, और इसने दक्षिणकी ओर भी लड़ाइयोंमें अच्छे अच्छे काम दिये. आख़िरकार विक्रमी १७६३ कार्तिक कृष्ण १० [हि० १११८ ता० २२ रजव = ई० १७०६ ता० १ नोवेम्बर] को पाटणमें इनका इन्तिक़ाल होगया. उन दिनों आलमगीर बादशाह दक्षिणमें बहुत बीमार था, और मानसिंहके पुत्र राजसिंह, जो अपने बापके पास मौजूद थे, राजा हुए. उसी अर्सेमें आलमगीरका भी इन्तिक़ाल होगया. शाहज़ादोंकी लड़ाइयां ख़त्म होनेपर शाहआलम बहादुरशाहने तख़्त पाकर राजसिंहको तीन हज़ारी ज़ात व सवारका मन्सब देकर कृष्णगढ़का राजा बनाया.

७ राजसिंह.

राजसिंहका जन्म विक्रमी १७३१ कार्तिक शुक्क ११ [हि० १०८५ ता० ९ शअ़्बान = ई० १६७४ ता० १० नोवेम्बर] को हुआ था. राजसिंह सल्तनत हिन्दकी ख़राबीके दिनोंमें सय्यद अब्दुल्लाख़ां और हुसैनअ़लीकी हिमायतमें रहे थे, और मुहम्मदशाहके वक़्में भी कई बार हाज़िर हुए, लेकिन् फ़र्रुख़सियरके मारेजानेका इल्ज़ाम, जिसतरह दूसरे राजाओंपर था, इनपर भी लगायागया, क्यौं कि यह भी महाराजा अजीतसिंहके शरीक और सय्यदोंके तरफ़दार थे; इसलिये इनका दिल्ली जाना कम होगया. मुहम्मदशाहने जब अहमदशाह अब्दालीके मुक़ाबलेपर शाहज़ादह अहमदको पानीपतकी तरफ़ रवाना किया, उस वक़् राजा लोग भी बुलायेगये थे, तब जयपुरके महाराजा ईश्वरीसिंह तो शाहज़ादहके साथ भेजेगये, और नागोरके महाराज बख़्तसिंह और कृष्णगढ़के महाराजा राजसिंहके बेटे सामन्तसिंह मए अपने बेटे सर्दारसिंहके पीछेसे पहुंचे, तब मुहम्मद शाहने इनको दिल्लीमें ही अपने पास रखलिया. ईश्वरकी कुद्रतसे अहमदशाह अब्दालीकी शिकस्त हुई,

लेकिन् मुहम्मदशाह बादशाह इसी अर्सेमें मरगया, और अहमदशाह दिल्लीमें आगया; महाराजा राजसिंहका देहान्त रूपनगरमें विक्रमी १८०५ वैशाख कृष्ण [हि० ११६१ ता० २१ रबीउस्सानी = ई० १७४८ ता० २० एप्रिल] ७ को होगया. राजसिंहके पांच पुत्र थे- बड़े सुखसिंह, २ फ़तहसिंह, ३ सामन्तसिंह, ४ बहादुरसिंह, ५ वीरसिंह; जिनमेंसे सुखसिंह और फ़तहसिंह तो महाराजा राजसिंहके साम्हने ही फ़ौत होगये थे, महाराजाके इन्तिकालकी ख़बर सुनकर सामन्तसिंह दिल्लीमें गद्दीके वारिस मानेगये.

८ सामन्तसिंह.

अहमदशाहने इनकी बहुत तसल्ली की, लेकिन् उस वक्त बादशाहोंका खौफ़ घटगया था, बहादुरसिंहने कृष्णगढ़ और रूपनगरपर क़ब्ज़ा करलिया, सामन्तसिंह यह ख़बर सुनकर घबराये. बहादुरसिंह बड़े बहादुर और बुद्धिमान थे, जिन्होंने महाराजा अभयसिंहको चारण कविया करणीदानकी मारिफ़त अपना मददगार बनालिया था. इससे बहादुरसिंहकी ताक़त बढ़गई, लेकिन् अहमदशाहने सूबहदार अजमेरको सामन्तसिंहका मददगार बनाकर भेजदिया, और महाराजा बख़्तसिंह भी इनके तरफ़दार थे; लेकिन् अपने अपने मत्लबकी सबको फ़िक्र थी, क्यों कि महाराजा अभयसिंह गुज़रगये थे, और उनकी जगह रामसिंह, जो बहुत कम अक्क माने जाते थे, जोधपुरकी गद्दीपर बैठे, और बख़्तसिंहको तंग करने लगे. तब बख़्तसिंह ने भी सूबहदारको अपना मददगार बनाकर साम्हना किया. इधर सामन्तसिंह ने अपनी ताक़तसे रूपनगर और कृष्णगढ़के ज़िलेमें थाने बिठादिये. बहादुरसिंहके राजपूतोंसे बहुतसी लड़ाइयां हुईं, यहांतक कि सामन्तसिंहने रूपनगर जाघेरा, लेकिन् कुछ कामयाबी न हुई. महाराजा रामसिंहकी मददपर सामन्तसिंहने अपने कुंवर सर्दारसिंहको भेजदिया, जबकि वह बख़्तसिंहके बख़िलाफ़ लड़ रहा था. इस बातसे बख़्तसिंह भी सामन्तसिंहसे नाराज़ होगये, और रामसिंहको निकालकर बख़्तसिंह जोधपुरके राजा बनगये, तब लाचार सामन्तसिंह मए अपने बेटे सर्दारसिंहके कमाऊंकी तरफ़ चलेगये, और वहांसे मथुरा वृन्दावन आये, कुछ दिन वहां रहकर अपना नाम नागरीदास रक्खा, और उनके पुत्र सर्दारसिंह मल्हार राव हुल्करके पास पहुंचे. हुल्करने जया आपा सेंधियाको उसका मददगार बनाकर सर्दारसिंह के साथ भेजा; इन दिनोंमें महाराजा बख़्तसिंहका भी इन्तिक़ाल होगया, और महाराजा रामसिंहका मददगार बनकर जया आपा मारवाड़पर चला, और

महाराजा विजयसिंहकी फ़ौजसे मुक़ाबला हुआ. बहादुरसिंह भी विजयसिंहके मददगार होकर मरहटोंसे लड़े, और शिकस्त होनेपर भागकर कृष्णगढ़ चलेआये, विजयसिंह शिकस्त खाकर नागौरमें जा छिपे, जया आपाने भी उस क़िलेको घेरलिया, और कुंवर सर्दारसिंहसे यह इक़ार किया कि नागौर फ़त्ह करने बाद तुमको रूपनगर व कृष्णगढ़ दिलादिया जावेगा.

ईश्वरकी कुद्रतसे जया आपा मारवाड़ी राजपूतोंके हाथसे मारागया, और उसका बेटा जनकू महाराजा विजयसिंहसे कुछ फ़ौज खर्च लेकर अजमेर चला आया, तब कुंवर सर्दारसिंहने रूपनगर लेनेको कहा, तो जनकूने जवाब दिया कि मारवाड़की लड़ाइयोंमें हमारी फ़ौज टूट गई है, और इस मज़्बूत क़िलेके लेनेमें ज़ियादह ताक़त चाहिये, लेकिन् कुंवर सर्दारसिंहने उसको कहा कि आप हिम्मत न हारिये, थोड़ीसी फ़ौज भेज दीजिये, हम क़िला फ़त्ह करलेंगे; इस कहनेपर जनकूने कुछ फ़ौज भेजकर क़िले रूपनगरपर घेरा डाला, और महाराजा बहादुरसिंहके राजपूत भी ख़ूब लड़े, आख़िरकार बहादुरसिंह और सर्दारसिंहने सुलह करली. मरहटोंने कृष्णगढ़ भी घेरलिया था, सो यह लोग तो कुछ फ़ौज खर्च लेकर चले गये, रूपनगर सर्दारसिंहको दिया, और कृष्णगढ़ बहादुरसिंहने रक्खा; वीरसिंहको करकेड़ी मिली.

९ सर्दारसिंह.

सर्दारसिंहका जन्म विक्रमी १७८७ प्रथम भाद्रपद शुक्ल २ [हि० ११४३ ता० १ सफ़र = ई० १७३० ता० १५ ऑगस्ट] को हुआ था.

सामन्तसिंह विक्रमी १८२१ भाद्रपद शुक्ल ३ [हि० ११७८ ता० १ रबीउल्अव्वल = ई० १७६४ ता० ३० ऑगस्ट] को वृन्दावनमें गुज़र गया. रूपनगरमें राज तो सर्दारसिंह ही करते थे, परन्तु इतने दिन कुंवर कहलाते थे, अब राजा बने; यह राजापन बहुत दिनोंतक नहीं रहा. विक्रमी १८२३ वैशाख कृष्ण ३० [हि० ११७९ ता० २८ ज़िल्क़ाद = ई० १७६६ ता० १० एप्रिल] को रूपनगरमें इनका देहान्त होगया.

१० बहादुरसिंह.

सर्दारसिंहके कोई औलाद न थी, इसलिये बहादुरसिंहने पहिले तो अपने बड़े कुंवर बिड़दसिंहको इनके गोद रक्खा, फिर कुछ अर्से बाद कृष्णगढ़ और रूपनगरकी हुकूमतको शामिल करलिया- इस खयालसे कि दो टुकड़े होने

से रियासत कमज़ोर होजावेगी; राजसिंहके पांचवें पुत्र वीरसिंहको करकेड़ी जागीरमें मिली थी, जिनकी औलाद रलावता व अजमेरमें है, उनका बयान है कि सर्दारसिंहने वीरसिंहके बेटे अमरसिंहको गोद रखनेका इरादह किया था, जिसका हाल आगे लिखाजायगा. महाराजा राजसिंहसे लेकर सर्दारसिंह तकका हाल "सर्दार-सुजस" नाम ग्रन्थमें लाल कविने तफ़्सीलवार लिखा है, लेकिन् हमने फैलावके सबब उसका खुलासा दर्ज किया है.

महाराजा बहादुरसिंह, महाराजा विजयसिंहके बड़े दोस्त होगये थे, क्यों कि सर्दारसिंह महाराजा रामसिंहका मददगार बनकर मरहटोंकी फ़ौजके शामिल जोधपुर और नागौरसे लड़ा, और बहादुरसिंह विजयसिंहके शरीक थे; इस बातसे बहादुरसिंह जोधपुरके खैरख्वाह रहे. इधर उदयपुर और जयपुरके भी हर एक मुआमलेमें शरीक होजाते; इस सबबसे महाराजा बहादुरसिंहने बड़ा नाम पाया. खुद तो दूसरी रियासतोंके मुआमलों में मश्गूल रहते, और अपनी रियासतका इन्तिज़ाम बड़े कुंवर बिड़दसिंहके सपुर्द करदिया था, जो अपने इख़्ति-यारसे काम करते थे. महाराजाके छोटे कुंवर बाघसिंहको रियासतसे दसवां हिस्सह जायदाद देकर महाराजा बहादुरसिंहने फ़त्हगढ़का जागीरदार बनाया; यह हाल आगे लिखाजायगा.

विक्रमी १८३८ फाल्गुन शुक्ल ३ [हि० ११९६ ता० १ रबीउल्अव्वल = ई० १७८२ ता० १५ फ़ेब्रुअरी] को महाराजा बहादुरसिंहका इन्तिकाल हुआ. यह बड़े बुद्धिमान और बहादुर राजा थे, लेकिन् अपनी रियासत बढ़ानेके लिये इनको मौक़ा न मिला, क्यों कि जोधपुर और जयपुर दोनों बड़ी रियासतोंका पड़ोस इनके लिये एक दीवार होगया था. तो भी अपनी रियासतपर उन्होंने अपनी ज़िन्दगी में ज़वाल न आनेदिया, और रियासतमें कई तरीके ऐसे बनाये, जो अबतक जारी हैं. कृष्णगढ़, रूपनगर और सनवाड़में अच्छे मज़्बूत क़िले बनवाये, और इन क़िलोंमें सामानका तरीक़ा ऐसा उम्दह किया, कि अचानक लड़ाईका काम आपड़े, तो क़िले, सामान और लड़नेवाले आदमियोंसे खाली न मिलेंगे– और जागीरका तरीक़ा, और उन जागीरदारोंकी नौकरीका प्रबन्ध उम्दह तरहसे बांधदिया, जागीरदारोंके छोटे लड़के क़िलेमें उम्मेदवारोंके नामसे भरती कियेजाते हैं, और उनके गुज़ारेके लिये हमेशहका भत्ता (खुराक) और जन्म, मरण व शादीके लिये एक रक़म मुक़र्रर करदी है, जिससे उन लोगोंको किसी ज़रूरी कामकी फ़िक्र न रहे. रिया-सतके बर्ताव और अदब आदाबका तरीक़ा ऐसा उम्दह बांधा कि कोई दूसरी

रियासतका आदमी जाकर देखे, तो उसको बड़ा ही तअ़ज्जुब मालूम हो– कि ऐसी थोड़ी आमदनीसे इस तरहके शाहाना तरीक़े किस तरह चलसक्के हैं ! लेकिन् महाराजा बहादुरसिंहने किफ़ायतके साथ ऐसा तरीक़ा बांधा है कि छोटेसे बड़े आदमीतक हरएक शख़्स बहुत थोड़ी आमदनीमें अपना गुज़र करसक्ता है; और अपनी २ हैसियतके मुताबिक़ छोटे बड़े सब मालदार भी हैं, इस समय भी रियासती तरीक़ोंके देखनेसे महाराजा बहादुरसिंहकी अ़क्लमन्दी ज़ाहिर होती है.

११ महाराजा बिड़दसिंह.

महाराजा बिड़दसिंहका जन्म विक्रमी १७९६ फाल्गुण शुक्ल ८ [हि० ११५२ ता० ६ ज़िल्हिज = ई० १७४० ता० ६ मार्च] को हुआ. यह अपने बापके साम्हने भी कुल राजके मुख़्तार थे, इनको मज़्हबी ख़याल ज़ियादह था– यह ख़याल इन्हींको नहीं था, बल्कि इस रियासतमें महाराजा रूपसिंहसे लेकर वर्तमान महाराजा शार्दूलसिंहतक 'पुष्टिमार्ग' याने श्रीनाथजीकी उपासनाका बड़ा ख़याल चला आता है. महाराजा बिड़दसिंह बड़े फ़य्याज़, और विद्वानोंके क़द्रदान व बहादुर थे; इनको अपने बापके मरने बाद रियासतकी तरफ़से नफ़रत रही. आख़िरकार विक्रमी १८४५ कार्तिक कृष्ण १० [हि० १२०३ ता० २४ मुहर्रम = ई० १७८८ ता० २६ ऑक्टोबर] को वृन्दावनमें देहान्त हुआ, तब इनके पुत्र प्रतापसिंह गद्दी बैठे.

१२ महाराजा प्रतापसिंह.

इनका जन्म विक्रमी १८१९ भाद्रपद शुक्ल ११ [हि० ११७६ ता० ९ सफ़र = ई० १७६२ ता० २१ ऑगस्ट] को हुआ था. यह महाराजा भी बड़े फ़य्याज़, बहादुर व दिलेर थे, न जाने किस कारणसे इनके दिलमें जोधपुरके बर्ख़िलाफ़ कार्रवाई करनेकी बात जम गई थी. हमारे ख़यालसे इसका यह सबब मालूम होता है कि करकेड़ीका अमरसिंह महाराजा विजयसिंहके पास जारहा था, जिसकी तरक़्क़ी उनको नागवार थी, इसलिये प्रतापसिंहने नाराज़ होकर मरहटोंसे मिलावट करली. जब जयपुर और जोधपुरके दोनों महाराजा मरहटोंको राजपूतानहसे निकाल देना चाहते थे, महाराजा प्रतापसिंहने मरहटोंका मददगार बनकर चाहा कि मारवाड़पर हम्ला करें, लेकिन् अजमेरके इलाक़ेमें जोधपुरकी फ़ौजसे मरहटोंने शिकस्त खाई, और मरहटे सर्दार आंबाजी ईंगलियाने

ज़ख़्मी होकर सनवाड़के क़िलेमें पनाह ली. इस बातसे नाराज़ होकर जोधपुरके महाराजा विजयसिंहने फ़ौज भेजकर रूपनगर व कृष्णगढ़पर घेरा डाला, सात महीने तक लड़ाई रही, आख़िरकार रूपनगर तो अमरसिंहको दिलाया, और महाराजा प्रतापसिंहने ३००००० तीन लाख रुपया दण्डका देना क़बूल किया; जिसमेंसे डेढ़ लाख तो नक़्द, पचास हज़ारका भरणा (१) और एक लाख रुपया दो क़िस्त में देना क़रार पाया, और महाराजा प्रतापसिंहको लाचार होकर जोधपुर जाना पड़ा. वहांसे बहुत कुछ लाचारी करके (२) पीछे आये; यह मुआमला विक्रमी १८४५ [हि० १२०३ = ई० १७८८] में हुआ. फिर कुछ अर्से बाद प्रतापसिंहने अमरसिंहसे रूपनगर छीन लिया, उसने जोधपुरसे मदद चाही, लेकिन् उन दिनों महाराजा विजयसिंह भी अपने सर्दारों व मरहटोंसे तंग होरहे थे, इसलिये कुछ मदद न करसके.

विक्रमी १८५४ फाल्गुन कृष्ण ४ [हि० १२१२ ता० १८ शअ्बान = ई० १७९८ ता० ५ फ़ेब्रुअरी] को महाराजा प्रतापसिंहका इन्तिक़ाल होगया, और उनके बालक बेटे कल्याणसिंह गद्दीपर बिठायेगये.

१३ महाराजा कल्याणसिंह.

इनका जन्म विक्रमी १८५१ कार्तिक कृष्ण १२ [हि० १२०९ ता० २६ रबीउल्अव्वल = ई० १७९४ ता० २१ ऑक्टोबर] को हुआ था. इस समय महाराजा के कम उम्र होनेसे रियासत में नुक्सान पहुंचनेका अन्देशा था, परन्तु महाराजा बहादुरसिंहके बनाये हुए आदमी अच्छे २ मौजूद थे, जिससे ऐसे बग़ावतके वक़्में भी बालक राजा होनेपर रियासत में नुक्सान न आसका.

विक्रमी १८७० भाद्रपद शुक्ल ८ [हि० १२२८ ता० ६ रमज़ान = ई० १८१३ ता० ४ सेप्टेम्बर] को जोधपुरके महाराजा मानसिंहने रूपनगरमें ठहरकर जयपुरके गांव मरवामें महाराजा जगत्सिंहके यहां विवाह किया, और महाराजा जगत्सिंहने मरवासे रूपनगरमें आकर शादी की. इन दोनों राजाओंके बीचमें उदयपुरके संबन्धकी बाबत पहिले, जो नाइत्तिफ़ाक़ी हुई थी, वह मिटाईगई; इस मुआ-मलेमें महाराजा कल्याणसिंह भी शरीक थे, और जो बात चीत सलाहकी इन्होंने

---

(१) भरणा— याने हाथी घोड़ा वग़ैरह दूसरी चीज़ें मिलाकर पूरा करना.

(२) महाराजाने यह नविश्त भी लिखदी थी, कि हम मारवाड़ी सर्दारोंके सरिश्तेके मुवाफ़िक़ जोधपुरमें हवेली बनवाकर नौकरी करेंगे, यह नविश्त कृष्णगढ़के मूणोत महता हमीरसिंहने महाराजा विजयसिंहसे वापस ली. हमीरसिंह बड़ा मुतसद्दी और हिम्मतवाला आदमी था.

कही, वह दोनों राजाओंको पसन्द आई. इसी तारीफ़के नशेसे महाराजा कृष्ण-गढ़को जुनून होगया.

विक्रमी १८७४ [हि० १२३२ = ई० १८१७] में कृष्णगढ़का अह्दनामह गवर्मेंट अंग्रेज़ीसे हुआ; और ख़िराज वगैरह कुछ नहीं देना पड़ा; इस बातसे उनका जुनून ज़ियादह हो गया, कि यह सब मेरी बुद्धिमानीका नतीजा है. जुनूनको तरक़्क़ी देनेवाली तीसरी बात यह हुई, कि गोध्याणाके बारहठ रामदान की तन्दिही और कोशिशसे महाराणा भीमसिंहकी पोती और कुंवर अमरसिंहकी बेटी कीकाबाईका विवाह कृष्णगढ़के कुंवर मुह्कमसिंहके साथ विक्रमी १८७७ आषाढ़ कृष्ण ८ [हि० १२३५ ता० २२ रमज़ान = ई० १८२० ता० ५ जुलाई] को हुआ, जिससे महाराजाको यह ख़याल होगया- कि जयपुर, जोधपुर, उदयपुर, और कृष्णगढ़ चारों रियासतें हिन्दुस्तानमें अव्वल दरजेकी हैं; क्यों कि विक्रमी १७६५ [हि० ११२० = ई० १७०८] में जयपुर और जोधपुरके महाराजाओंने उदयपुरसे संबन्ध होनेके लिये कितनी कोशिशें की थीं, तब संबन्ध हुआ था; वही मौक़ा कृष्णगढ़को भी मिलगया. इस विवाहका बाक़ी हाल महाराणा भीमसिंहके बयानमें लिखा जायगा. महाराजा कल्याणसिंह अपनी रियासतके अ़लावा कुल हिन्दुस्तानका प्रबन्ध करनेमें ख़याली पुलाव पकाने लगे, पास रहने वाले खुशामदी लोगोंने उनके बेहूदा जुनूनको ज़ियादह तरक़्क़ी दी.

अब हम यहांसे एचिसन साहिबके अह्दनामहकी किताब चौथी जिल्दके उर्दू तर्जमेसे बाक़ी हाल लिखते हैं-

" महाराजा कल्याणसिंह, जो दीवानह मश्हूर था, पहिले सर्दारोंके फ़सादमें फ़ंसा, और अस्ल वजह झगड़ेकी यह थी, कि उसने ठाकुर फ़त्हगढ़को तबाह करना चाहा, क्यों कि फ़त्हगढ़ वालोंने कृष्णगढ़ वालोंकी ताबेदारीसे निकलनेका दावा पेश किया था. गवर्मेंट अंग्रेज़ीने वह दावा ख़ारिज करके उसको कृष्णगढ़के मातह्त रक्खा, दूसरी वजह यह थी, कि जमइयत सवार वगैरह, जो और मातह्त सर्दारोंकी तरह यह देते रहे, उसके एवज़ कुछ रुपया मुक़र्रर होजाय.

महाराजा कल्याणसिंह दिल्ली चलागया, और वहां बादशाहके हुज़ूरसे नज़्रानह और दूसरा ख़र्च जमा करानेपर यह हुक्म लिया, कि वह जुर्राब पहनकर बादशाहके हुज़ूरमें हाज़िर हुआकरे, इस अर्सेमें कृष्णगढ़में ज़ियादह फ़साद उठा, और फ़सा-दियोंने कोटेसे और महाराजाने बूंदीसे मदद चाही, इस तक़ारमें कई दफ़ा अंग्रेज़ी इलाक़ोंमें दोनों फ़रीक़ोंसे झगड़ा पैदा हुआ, इसलिये गवर्मेंट अंग्रेज़ीसे

यह लिखावट हुई, कि आपसकी तक्रार मौकूफ़ होकर मुक़द्दमह फ़ैसलेके लिये गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीके सुपुर्द कियाजाय, और महाराजाको लिखागया कि, जो वह बहुत जल्दी कृष्णगढ़में आकर राज्यके कामोंको न संभालेगा, तो उसके साथ जो अ़हद्नामह हुआ है, वह रद्द समझा जायगा, और कृष्णगढ़के ठाकुरों (सर्दारों) के साथ मुआमला कियाजावेगा. इस तंबीहसे महाराजा कृष्णगढ़में लौट आये, परन्तु उनसे मुल्कका इन्तिज़ाम न होसका. तब उन्होंने दर्ख्वास्त की, कि कृष्णगढ़की ठेकेदारी (यानी माली मुल्की इन्तिज़ाम) गवर्मेण्ट अंग्रेज़ी मंजूर करे, और वह दिहली चलाजायगा. गवर्मेण्टने ठेका मंजूर नहीं किया; लेकिन् यह बात मंजूर हुई कि महाराजा दिहली जाकर जबतक कृष्णगढ़में वापस न आवे, तबतक कृष्णगढ़में एजेन्टी रहेगी. महाराजा और ठाकुरोंके आपसमें सुलह भी होगई, परन्तु जो शर्तें पेश हुई थीं, वे मंजूर न हुईं. महाराजाने अजमेर रहना मंजूर किया, और सर्दारोंने उसके पास जाकर इक़ार किया कि उनका फ़ैसला जोधपुरके महाराजा करदें– इस शर्तपर कि उस फ़ैसलेको गवर्मेण्ट अंग्रेज़ी भी मंजूर करले. गवर्मेण्टने यह बात मंजूर नहीं की; तब सर्दारोंने कुंवर मुह्कमसिंहको राजा बनाकर कृष्णगढ़पर चढ़ाई की, कृष्णगढ़ फ़त्ह होनेवाला था, कि महाराजाने यह बात मंजूर करली, कि साहिब पोलिटिकल एजेन्ट, जो फ़ैसला करदेंगे, वह कुबूल और मंजूर होगा. सर्दारोंके साथ, जो यह सुलह हुई, क़ायम न रही; इसके बाद कल्याणसिंह अपने बेटे मुह्कमसिंहको राज्य देकर कृष्णगढ़से चलागया, और अपने ख़र्चके लिये छत्तीस हज़ार रुपया सालियाना कृष्णगढ़से लेनेका बन्दोबस्त करलिया."

विक्रमी १८८९ [हि० १२४८ = ई० १८३२] में महाराजा का वलीअ़ह्द मुह्कमसिंह कुल रियासतका मुख्तार होगया, और महाराजा दिल्लीसे लौटकर फिर न आये; विक्रमी १८९५ ज्येष्ठ शुक्ल १० [हि० १२५४ ता० ८ रबीउल्अव्वल = ई० १८३८ ता० ३ जून] को दिल्लीमें गुज़र गये. महाराजा मुह्कमसिंह कृष्णगढ़में गद्दीपर बैठे.

१४ महाराजा मुह्कमसिंह.

मुह्कमसिंहका जन्म विक्रमी १८७३ भाद्रपद शुक्ल ५ [हि० १२३१ ता० ३ शव्वाल = ई० १८१६ ता० २९ ऑगस्ट] को हुआ था. यह कुछ मुद्दत तक राज्य करके विक्रमी १८९७ ज्येष्ठ कृष्ण १२ [हि० १२५६ ता० २६ रबीउल्अव्वल

= ई० १८४० ता० ३० मई] को इन्तिकाल करगये. इनके जवान उम्रमें गुज़र जानेसे रियासतमें बड़ा भारी रंज फैला, लेकिन् रियासतका काम पोलिटिकल एजेन्ट व माजीकी सलाहसे होने लगा, और गद्दीपर बिठायेजानेकी बाबत खूब विचार हुआ, आख़िरकार यह सलाह ठहरी, कि फ़त्हगढ़के महाराज बाघसिंहके तीसरे बेटे भीमसिंह जागीरदार कचौलियाके छोटे बेटे पृथ्वीसिंहको लाकर गद्दीपर बिठाया जावे, और इसी तरह अमलमें आया.

१५ महाराजा पृथ्वीसिंह.

यह महाराजा विक्रमी १८९८ वैशाख कृष्ण १३ [हि० १२५७ ता० २७ सफ़र = ई० १८४१ ता० १९ एप्रिल] को गद्दी नशीन हुए. इनका जन्म विक्रमी १८९४ वैशाख कृष्ण ५ [हि० १२५३ ता० १९ मुहर्रम = ई० १८३७ ता० २५ एप्रिल] को हुआ था. रियासतका काम काज कुल माजी और मुसाहिबोंके इख्तियारमें रहा. मुसाहिबोंमें महाराजा प्रतापसिंहके ख़वासका बेटा अभयसिंह ज़ीइख्तियार था. दीवानीका काम पहिले तो ख़राब रहा, परन्तु विक्रमी १९०३ भाद्रपद [हि० १२६२ रमज़ान = ई० १८४६ ऑगस्ट] में महता कृष्णसिंहको दिया, लेकिन् रियासतके चन्द मुसाहिबोंने विक्रमी १९०६ पौष कृष्ण ६ [हि० १२६६ ता० २० मुहर्रम = ई० १८४९ ता० ६ डिसेम्बर] को इस ख़ैरख्वाह दीवानसे काम छीन लिया; लेकिन् विक्रमी १९०८ माघ शुक्ल ५ [हि० १२६८ ता० ३ रबीउस्सानी = ई० १८५२ ता० २७ जैन्युअरी] को दीवानीका काम फिर इसीको मिला; एक दूसरा मुसाहिब राठौड़ गोपालसिंह था, जो महाराजाको कस्रत वगै़रह करानेके लिये मुक़र्रर हुआ था, और महाराजा उसको उस्ताद कहते थे. इन दोनों आदमियोंके ज़रीएसे महाराजा पृथ्वीसिंहने बड़ा नाम हासिल किया. यह बात सच है कि रियासतके अंग (हाथ पैर वगै़रह) मुसाहिब होते हैं, जब मुसाहिब अच्छे हों, तो राजाकी नामवरी, और बुरे हों, तो बदनामी होती है; लेकिन् राजाकी बुद्धिमानी यही समझीजाती है कि अच्छे आदमियोंको ढूंढकर अपने ख़ास कामोंपर नियत करे, और मत्लबी लोगोंके चुग़ली करनेपर उनको नुक्सान न पहुंचावे.

राठौड़ गोपालसिंहने बड़े बड़े ३० तालाब इस छोटीसी रियासतमें नये बनवाये, और दीवानने मुल्की व माली इन्तिज़ाम बहुत उम्दह किया; इन दोनों आदमियोंने रियासती नफ़े नुक्सानको अपना घरू ख़याल करलिया था, और महाराजा भी बड़े बुद्धिमान, पढ़े लिखे, नेक तबीअत और दूर अन्देश थे. कृष्णसिंह

और गोपालसिंह दोनों मुसाहिब भी उनको अच्छे मिले, महाराजाने भी मुसाहिबोंको खैरख्वाहीका एवज़ अच्छी तरह दे दिया.

हम यहां महता कृष्णसिंहका तवारीख़ी हाल, जो उनके बेटे सौभाग्यसिंहने हमारे पास भेजा है, लिखते हैं-

महता कृष्णसिंहका तारीख़ी हाल.

कृष्णसिंहका बुज़ुर्ग जग्गा नामी बीकानेरसे आया था, उसकी औलादमें महता चन्द्रभान हुआ, जो महाराजा राजसिंहके कारगुज़ार नौकरोंमें था, और महाराजाके बेटोंकी ख़ानगी लड़ाइयोंमें महाराजा बहादुरसिंहकी नौकरीमें रहा; इसका बेटा सवाईसिंह, जिसका बेटा बख़्तसिंह, जिसके तीन बेटे- १ हिन्दूसिंह, २ दलेलसिंह, ३ नाहरसिंह थे. दलेलसिंहका बेटा भगवन्तसिंह जो उदयपुरमें महाराणा स्वरूपसिंहके पास चलाआया था, उसको महाराणाने एक गांव जागीरमें देकर ख़ातिरीसे रक्खा, जिसका बेटा बलवन्तसिंह और उसका बेटा मनोहरसिंह, जो अब उदयपुरमें मौजूद है. बख़्तसिंहके तीसरे बेटे नाहरसिंहके दो बेटे हुए, बड़ा कृष्णसिंह और छोटा केसरीसिंह; कृष्णसिंहने महाराजा पृथ्वीसिंहके वक़्में जो जो काम किये, उनकी तफ़्सील नीचे लिखी जाती है- कृष्णसिंह महाराजा मुहकमसिंहके वक़्में सनवाड़का हाकिम रहा, जब महाराजा पृथ्वीसिंह गद्दी बैठे, तो माजी राणावतजीने कृष्णसिंहको सनवाड़से बुलाकर अपना ख़ानगी कामदार बनाया, और विक्रमी १९०३ [हि० १२६२ = ई० १८४६] में रियासतका दीवान किया, और राखी बांधकर अपना भाई बनाया.

विक्रमी १९०६ [हि० १२६६ = ई० १८४९] में यह दीवानीके कामसे अलह्दा हुआ, लेकिन् महाराजा पृथ्वीसिंहने विक्रमी १९०८ [हि० १२६८ = ई० १८५२] में दुबारा उसे दीवानीका काम दिया; तब इस खैरख्वाह दीवानने तन्ख्वाहदारोंकी चढ़ीहुई दो वर्षकी तन्ख्वाह व राजका कर्ज़ चुकादिया; और महाराजाकी शादी शाहपुरेमें बड़ी धूमधामसे हुई, लेकिन् वह ख़र्च उसने अपनी होश्यारीसे वसूल करलिया, और रियासतको ज़ेरबारीसे बचाया.

विक्रमी १९११ [हि० १२७० = ई० १८५४] में जोधपुरके महाराजा तख़्तसिंह मए ज़नानेके तीर्थ यात्राको गये थे, लौटतेहुए कृष्णगढ़ आये, और आठ दिन यहां रहे; इनकी मिहमानी भी अच्छी तरह हुई.

विक्रमी १९१४ [हि० १२७३ = ई० १८५७] में गवर्मैण्टके बर्ख़िलाफ़ ग़द्र हुआ, तो महाराजा पृथ्वीसिंह और उनके मुसाहिबोंने बड़ी तन्दिहीके साथ

गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीकी ख़ैरख़्वाही व रियासतका इन्तिज़ाम अच्छा किया. विक्रमी १९१६ [हि० १२७६ = ई० १८५९] में महाराजा प्रतापसिंहकी पासवानके बेटे ज़ोरावरसिंहके बेटे मोतीसिंहने चन्द सर्दारोंसे मिलकर बग़ावत की. महाराजा और इस ख़ैरख़्वाह दीवानने बड़ी अक़्लमन्दीके साथ उमराव सर्दारोंकी जागीरें ज़ब्त करके उनको निकाल दिया, और ठाकुर नराणा वग़ैरहके क़िले गिरवादिये, और कुछ अर्से बाद फिर उनकी जागीरें बहाल करके मोतीसिंहको रियासतसे निकाल दिया. यह कार्रवाई ऐसी उम्दह हुई, कि महाराजा कल्याणसिंहके ज़मानेसे, जो सर्दार उमरावोंपर रोब बिल्कुल न रहा था, अब ख़ूब जमगया.

विक्रमी १९१९ श्रावण कृष्ण ११ [हि० १२७९ ता० २५ मुहर्रम = ई० १८६२ ता० २३ जुलाई] को दीवान कृष्णसिंहका इन्तिक़ाल होगया, लेकिन महाराजाने अपनी क़द्रदानी और दीवानकी ख़ैरख़्वाहीसे उसके बेटे सौभाग्यसिंहको अपना दीवान बनाया, और जिस तरह अपनी औलादको होश्यार करनेका तरीक़ा है, उसी तरह सौभाग्यसिंहसे दीवानीका काम लिया. यह दीवान भी अपने बापकी तरह होश्यार, ख़ैरख़्वाह व नेक दिल है; इसने अपने बापके तरीक़ेपर चलकर महाराजाको खुश रक्खा.

विक्रमी १९२० [हि० १२८० = ई० १८६३] में महाराजा नाथद्वारे दर्शनको मए ज़नानेके तश्रीफ़ लाये, और इसी सालमें जयपुरके महाराजा रामसिंह, जोधपुर शादी करके लौटतेहुए कृष्णगढ़में एक दिन ठहरे, जिनकी मिहमानीका इन्तिज़ाम महाराजाने अपने दीवानके ज़रीएसे अच्छा किया.

विक्रमी १९२१ [हि० १२८१ = ई० १८६४] में जोधपुरके महाराजा तख़्तसिंह रीवां विवाह करके लौटे, तब कृष्णगढ़में आठ दिन रहे. विक्रमी १९२३ [हि० १८६६ = ई० १२८३] में लॉर्ड लॉरेन्सने आगरेमें दर्बार किया, तब महाराजा पृथ्वीसिंह वहां गये, और विक्रमी १९२५-२६ [हि० १२८५ या ८६ = ई० १८६८ या ६९] के क़हत में महाराजाने अपने दीवान सौभाग्यसिंहकी कारगुज़ारीके ज़रीएसे बहुत अच्छा इन्तिज़ाम किया, और रियासतमें किसी तरहका ख़लल न आने दिया.

विक्रमी १९२७ [हि० १२८७ = ई० १८७०] को अजमेरमें लॉर्ड मेओने एक बड़ा दर्बार किया, जिसमें राजपूतानहके अक्सर मश्हूर रईस एकट्ठे हुए, तब यह महाराजा भी वहां मौजूद थे. विक्रमी १९३० [हि० १२९० = ई० १८७३] में लॉर्ड नार्थब्रुकने आगरेमें दर्बार किया, तब भी यह महाराजा वहां गये थे;

फिर प्रयाग वगैरह तीर्थ यात्रा करके वापस कृष्णगढ़ आये, और इसी वर्षमें महाराजाकी बुद्धिमानी व दीवानकी कारगुज़ारीसे बहुत बड़ा काम यह हुआ, कि फ़त्हगढ़का जागीरदार, जो महाराजा प्रतापसिंहके ज़मानेसे अपनेको खुद मुख़्तार ख़याल करता था, और जिसने महाराजा कल्याणसिंहकी सख्तियोंसे भी सिर न झुकाया, महाराजा पृथ्वीसिंहने उसको तावेदार बनालिया. फ़त्हगढ़का जागीरदार महाराजाको नज़ करने बाद गद्दीके नीचे बिठायागया- इसी हतकके सबबसे रणजीतसिंह बीमार होकर चन्द महीने बाद मरगया, क्योंकि महाराजा बाघसिंह, चांदसिंह और भोपालसिंह कृष्णगढ़की गद्दीके नीचे नहीं बैठे थे, जहांपर इसे बैठना पड़ा. फिर विक्रमी १९३२ [हि० १२९२ = ई० १८७६] में शाहज़ादह प्रिन्स ऑव वेलसकी मुलाक़ातको आगरे गये. विक्रमी १९३३ [हि० १२९३ = ई० १८७६] में महाराजाने बड़ी राजकुमारीका विवाह उदयपुरके महाराणा सज्जनसिंहसे बड़ी धूम धामके साथ किया; फिर लॉर्ड लिटनने दिल्लीमें जब क़ैसरी दर्बार किया, तब यह महाराजा भी वहां गये. उन पन्द्रह तोपोंके सिवाय, जो रियासतकी अस्ली सलामी है, महाराजाकी दो तोपें सलामी हीन हयात बढ़ाई गईं, और एक निशान भी मिला.

इसी साल में महाराजाने अपनी दूसरी राजकुमारीका विवाह अलवरके महाराव राजा मंगलसिंहके साथ किया. विक्रमी १९३६ मृगशिर शुक्ल १२ [हि० १२९७ ता० १० मुहर्रम = ई० १८७९ ता० २६ डिसेम्बर] को इन महाराजाका इन्तिक़ाल होगया. उदयपुरसे महाराणा सज्जनसिंह भी कृष्णगढ़ जानेके लिये नसीराबाद पहुंचे, वहांसे महाराजाकी तबीअ़त ज़ियादह अ़लील सुनकर सिहत पुर्सीके लिये रेलपर सवार होकर कृष्णगढ़ गये, लेकिन् थोड़ी देर पहिले महाराजाका इन्तिक़ाल होगया था. महाराणा उनकी दग्ध क्रियामें शामिल हुए, उस समय यह तवारीख़ लिखनेवाला (कविराज श्यामलदास) भी मौजूद था.

महाराजा पृथ्वीसिंह बड़े मिलनसार, नेक तबीअ़त, खुशमिज़ाज और मिहनती थे. वह गेहुवां रंग, मंझोला क़द, बड़ी आंख होनेके सिवाय ख़ूबसूरत भी थे; लेकिन् अफ्सोस है कि ऐसे नेक राजाके मरजानेका रंज रियासती आदमियोंके चिहरेपर नहीं दीखा, सिवाय उनके फ़र्ज़न्द और एक दो ख़ैरख़्वाह नौकरोंके और सब बड़ी लंबी चौड़ी बातें बनारहे थे. महाराणा साहिबको भी इस बातके कारण उन लोगों से बड़ी नफ़रत हुई. इन महाराजाके तीन पुत्रोंमें से बड़े शार्दूलसिंहका जन्म विक्रमी १९१४ पौष कृष्ण ९ [हि० १२७४ ता० २३ रबीउ़स्सानी = ई० १८५७ ता० १० डिसेम्बर] को हुआ. दूसरे जवानसिंहका जन्म विक्रमी १९१५ चैत्र शुक्ल ४ [हि० १२७४ ता० २ शअ़्बान = ई० १८५८

ता० १९ मार्च] का है, और तीसरे रघुनाथसिंह, जिनका जन्म विक्रमी १९२९ पौष कृष्ण पक्ष [हि० १२८९ शव्वाल = ई० १८७२ डिसेम्बर] में हुआ है.

१६ महाराजा शार्दूलसिंह.

इनका राज्याभिषेक विक्रमी १९३६ पौष कृष्ण ९ [हि० १२९७ ता० २३ मुहर्रम = ई० १८८० ता० ६ जैन्युअरी] को हुआ. विक्रमी १९३७ आषाढ़ कृष्ण ९ [हि० १२९७ ता० २३ रजब = ई० १८८० ता० २ जुलाई को महाराजा शार्दूलसिंहकी तीसरी बहिनका विवाह जयपुरके महाराज दूसरे सवाई माधवसिंहसे हुआ. यह शादी बड़ी धूमधामसे कीगई; मिहमानी वगैरहका बन्दोवस्त महाराजाके हुक्मसे महता सौभाग्यसिंहने अच्छी तरह किया. (१)

विक्रमी १९३८ [हि० १२९८ = ई० १८८१] में महाराजा अपने पिताका गयाश्राद्ध करने और तीर्थ यात्राके लिये काशी, प्रयाग, वगैरह होतेहुए जगन्नाथजीकी तरफ़ गये. विक्रमी १९३९ [हि० १३०० = ई० १८८३] में महाराजा शार्दूलसिंह जोधपुरके महाराजा जशवन्तसिंहकी बहिनकी शादीमें जोधपुर गये. विक्रमी १९४१ चैत्र शुक्ल पक्ष [हि० १३०१ जमादियुस्सानी = ई० १८८४ मार्च] में कृष्णगढ़से नीवाहेड़ेतक रेलमें और वहांसे डाकके ज़रीए उदयपुर गये, जब कि महाराजा जोधपुर भी वहां मौजूद थे. महाराणाके साथ इन दोनों राजाओंकी बे तकल्लुफ़ीसे मुलाक़ातें हुईं, और विक्रमी चैत्र शुक्ल १४ [हि० ता० १३ जमादियुस्सानी = ई० ता० ११ एप्रिल] को इस लिखने वाले (कविराज श्यामलदास) ने अपने बाग़ीचे में तीनों राजाओंकी मिहमानी की; शामके वक़ महाराणा सज्जनसिंह व महाराजा जशवन्तसिंह मए अपने भाई महाराज प्रतापसिंह और महाराजा शार्दूलसिंहके बग्गी सवार होकर श्यामलबाग़में तश्रीफ़ लाये, और राग रंग, व खाना वगैरह, जो प्रीतिके साथ अर्पण किया गया, तीनों राजाओंको उनकी क़द्रदानी और मिहर्बानीसे अंगीकार हुआ.

वैशाख शुक्ल ७ [हि० ता० ५ रजब = ई० ता० ४ मई] को दीवान महता सौभाग्यसिंहको महाराणा साहिबने पैरमें सोनेके तोड़े, बैठक और जीकारा इनायत किया. फिर महाराजा नाथद्वारे और कांकड़ोली होतेहुए कृष्णगढ़ पहुंचे. विक्रमी १९४१ कार्तिक शुक्ल १४ [हि० १३०२ ता० १३

---

(१) महाराजाकी चौथी बहिन झालरापाटनके महाराज राणा ज़ालिमसिंहको विक्रमी १९४३ [हि० १३०४ = ई० १८८७] में ब्याही गई.

मुहर्रम = ई० १८८४ ता० ४ नोवेम्बर] को महाराजाके पुत्रका जन्म हुआ, जिस का बहुत अच्छा जल्सा कियागया.

अब महाराजा पृथ्वीसिंहके दूसरे मुसाहिब राठौड़ गोपालसिंहकी तवारीख़ी हालत लिखीजाती है, जो उनके पुत्र भारथसिंहने हमारे पास भेजी है-

जोधपुरके महाराजा उदयसिंहके छोटे पुत्र शक्तिसिंहके, जिनको सोजत वगैरह जागीर मिली, छः पुत्र थे- १ कर्णसिंह, २ प्रतापसिंह, ३ गिरिधरदास, ४ हरीसिंह, ५ कान्हसिंह और ६ मानसिंह. कर्णसिंह विक्रमी १६७१ [हि० १०२३ = ई० १६१४] में महाराजा कृष्णसिंहके साथ गोइन्ददास भाटीकी लड़ाई में अजमेर मक़ामपर मारागया, और उसकी औलादमें खरवाके जागीरदार हैं. छठे मानसिंहको पीपाड़ जागीरमें मिला; जिसके चार बेटे हुए- १ रेवतसिंह, २ बहादुरसिंह, ३ सामन्तसिंह, और ४ रणछोड़दास. रणछोड़दास महाराजा रूपसिंहके साथ औरंगज़ेब की फ़ौजसे लड़कर समूनगरमें मारागया, इसके दो बेटे- १ ज़ोरावरसिंह और २ सबलसिंह थे. ज़ोरावरसिंहके चार बेटे हुए- १ अनोपसिंह, २ उदयनाथ, ३ बीजनाथ और ४ कृष्णसिंह.

कृष्णसिंहको जोधपुरसे भैरोंदा जागीरमें मिला था, लेकिन् छिनगया. इसका बेटा प्रतापसिंह, जिसको महाराजा बहादुरसिंहने एक घोड़ेकी जागीर (एक घोड़ेकी तन्ख़्वाहके लायक़) दी. प्रतापसिंहके तीन बेटे थे- १ सूरसिंह, २ भैरोंसिंह. और ३ फ़ौजसिंह. सूरसिंहके दो बेटे- बड़ा मंगलसिंह, दूसरा गोपालसिंह. गोपालसिंहको महाराजा मुहक्मसिंहने आधे घोड़ेकी जागीर दी, और आधेकी पहिलेसे उसे हासिल थी, जुम्ला एक घोड़ेकी जागीर हुई. इसके बाद महाराजा पृथ्वीसिंहने उसको एक घोड़ेकी जागीर और देकर दो घोड़ोंकी जागीरमें विक्रमी १९०९ [हि० १२६८ = ई० १८५२] को परगने रूपनगरका गांव रघुनाथपुरा लिखदिया, और अपना मुसाहिब बनाया; जिन ख़िद्मतोंमें ऊपर महता कृष्णसिंहका ज़िक्र लिखागया है, उनमें गोपालसिंह को भी शरीक जानना चाहिये; और सौभाग्यसिंहकी दीवानीके ज़मानेमें महाराजा पृथ्वीसिंहने गोपालसिंहके बेटे भारथसिंहको मुसाहिब बनाया. इन दोनों ख़ैरख़्वाह मुसाहिबोंके बेटे उसी तरह काममें शरीक रहे, और अबतक ख़ैरख़्वाहीसे नौकरी देते हैं. भारथसिंहकी जागीरमें ३५००, रुपया सालानाकी रेख सात घोड़ेकी जागीर रघुनाथपुरा मौजूद है, और महाराजाने अपने आठ अव्वल दरजेके सर्दारोंके बराबर भारथसिंहका भी दरजा बढ़ाया, बल्कि उदयपुर, जयपुर, जोधपुर वगैरहसे भी महाराजाने ताज़ीम दिलाकर भारथसिंहकी इज़्ज़त बढ़ादी. अब महाराजाके भाई

बेटोंका कुछ हाल लिखाजाता है- महाराजा राजसिंहके पांच बेटे थे, जिनमेंसे चारका बयान तो ऊपर होचुका, और पांचवें वीरसिंहकी औलाद रलावता व अजमेरमें है, उन्होंने अपनी तवारीख़ हमारे पास भेजी, जिसका मुख्तसर हाल नीचे लिखाजाता है:-

महाराजा राजसिंहके पांचवां पुत्र, वीरसिंह था, जिसको करकेड़ी जागीरमें मिली, उसके दो बेटे बड़ा अमरसिंह और छोटा सूरजसिंह था. अमरसिंहके दलपतसिंह, सूरजसिंहके तीन बेटे- १ जशवन्तसिंह, २ अर्जुनसिंह, ३ शेरसिंह, हुए. जशवन्तसिंह का दुर्जनशाल, दुर्जनशालके सर्दारसिंह और समर्थसिंह हुए जिनमेंसे पहिला तो अपने बापके साम्हने ही गुज़रगया, और दूसरा रलावतेका जागीरदार मौजूद है, जिसके दो बेटे नवनीतसिंह और दूसरा बालक है.

सूरजसिंहका दूसरा बेटा अर्जुनसिंह, इसका जैतसिंह व बलवन्तसिंह; जैतसिंह का ज़ोरावरसिंह, जिसका शिवसिंह; और बलवन्तसिंहका विजयसिंह. सूरजसिंहका तीसरा बेटा शेरसिंह उसका शार्दूलसिंह, उसका शिवनाथसिंह जिसके बेटे सामन्तसिंह व गुलाबसिंह; शार्दूलसिंहके दूसरे बेटे बख़्तावरसिंह, जिनके जयसिंह, फ़तहसिंह, और तीसरा बालक है. शार्दूलसिंहके तीसरे बेटे गुमानसिंह, जिनके रघुनाथसिंह; शार्दूलसिंह के चौथे बेटे अमानसिंह उनके रघुनाथसिंह; शार्दूलसिंहके तीन बेटियां थीं, जिनमेंसे एक तो बावलास के महाराज गोपालसिंहको ब्याही, और दोकी शादी बागौरके महाराज शक्तिसिंह से हुई, जिनमें से एकके गर्भसे महाराणा सज्जनसिंह पैदा हुए.

इनका हाल अजमेर वाले इस तरह बयान करते हैं, कि वीरसिंहके बाद अमरसिंह करकेड़ीका जागीरदार जोधपुरके महाराजा विजयसिंहके पास रहता था; जब विक्रमी १८२३ [हि० ११७९ = ई० १७६६] में महाराजा सर्दारसिंहका रूपनगरमें देहान्त होगया, और महाराजा बहादुरसिंहने अपने बेटे बिड़दसिंहको उनकी जगह बिठाकर रूपनगर और कृष्णगढ़को एक करलिया, इन लोगोंका बयान है कि सर्दारसिंहने अमरसिंहको गोद लेनेके लिये कहलाया, लेकिन् बहादुरसिंहने दग़ा और मक्रसे उनके क़ौलको पूरा न किया; इस बातसे नाराज़ होकर अमरसिंह जोधपुरके महाराजा विजयसिंहके पास जारहा; लेकिन् महाराजा बहादुरसिंहकी ज़िन्दगीतक तो कुछ न हुआ, और बिड़दसिंहने भी थोड़ीसी हुकूमत की, लेकिन् जोधपुरसे मिलावट रखता था; इसके बाद महाराजा प्रतापसिंह कृष्णगढ़की गद्दीपर बैठे, तब यह महाराजा जवानीके नशेमें अमरसिंहके जोधपुर रहनेसे नाराज़ होकर मरहटोंके मददगार बनगये, और मारवाड़को बर्बाद करना चाहा.

विक्रमी १८४५ [हि० १२०२ = ई० १७८८] में मारवाड़की फ़ौजसे अजमेरके इलाक़हमें लड़ाई हुई, जिसमें मरहटा और कृष्णगढ़की फ़ौजने शिकस्त खाई, और महाराजा विजयसिंहने फ़ौज भेजकर कृष्णगढ़को घेरलिया, रूपनगर छीनकर अमरसिंहको दिलादिया; महाराजा प्रतापसिंह तीन लाख रुपये फ़ौज ख़र्चके देकर बचे, लेकिन् थोड़े ही अर्सेके बाद अमरसिंहसे रूपनगर छीनलिया. उस वक़ महाराजा विजयसिंहने चश्मपोशी करली, क्योंकि मारवाड़में सर्दारोंकी बग़ावत होरही थी; तब अमरसिंह मरहटोंके पास गये, उन्होंने अजमेरके ज़िलेमें गगवाणा, ऊंटड़ा, मगरा, मगरी, अरड़का, सिराणा वग़ैरह गांव गुज़ारेके लिये जागीर में निकालदिये, लेकिन् ख़र्चके लायक़ आमदनी न हुई, तब अमरसिंह जयपुरके महाराजा जगत्सिंहके पास चलेगये, और उन्होंने चोड़का, मलारणा वग़ैरह जागीर देकर बहुत ख़ातिर की, जब महाराजा जगत्सिंहने जोधपुरके महाराजा मानसिंहपर चढ़ाई की, उस वक़ पोहकरणके ठाकुर सवाईसिंहसे अमरसिंहकी नाइत्तिफ़ाक़ी होगई. उसने महाराजाके दिलमें शक डालदिया, कि अमरसिंह जोधपुरसे मिला हुआ है. यह शुब्हा बढ़ाकर अमरसिंहको मरवाडाला; और इसी अर्सेमें अमरसिंहके बेटे दलपतसिंहको भी ज़हर देकर मारडालना बयान करते हैं. सूरजसिंहके बेटोंने बहुतसी लूट खसोट की, परन्तु कुछ पेश न गई, और जो गांव क़ब्ज़ेमें थे, वे ही बहाल रहे; यानी कृष्णगढ़के इलाक़हमें रलावता व गूंदली, और अजमेरके इलाक़हमें गगवाणा, ऊंटड़ा व मगरा बाक़ी रहे. इसी अर्सेमें अंग्रेज़ी अमल्दारी होगई, जिससे जो जायदाद थी, उसीपर क़ाबिज़ रहना पड़ा.

फ़त्हगढ़का हाल.

महाराजा बहादुरसिंहके दो बेटोंमेंसे बड़े बिड़दसिंह तो कृष्णगढ़ और रूपनगरके राजा रहे, और छोटे बाघसिंह थे, जिनको जागीरमें फ़त्हगढ़ मिला. फ़त्हगढ़ वालोंने अपनी तवारीख़ हमारे पास भेजी, जिसका खुलासा नीचे लिखा जाता है-

महाराजा बहादुरसिंहने अपने बड़े बेटे बिड़दसिंहको रूपनगरमें सर्दारसिंहकी गोद रखदिया, लेकिन् पीछे रियासत कम ताक़त होनेके सबब दोनों ठिकाने एक करलिये; इसमें बाघसिंहका हक़ मारागया, क्योंकि बिड़दसिंह रूपनगर गोद चलेगये, तो कृष्णगढ़के राजपर बहादुरसिंहके बाद बाघसिंहका हक़ था. महाराजा बहादुरसिंह ने अपनी औलादका फ़साद मिटानेको दसवां हिस्सा रियासतकी जायदादसे निकालकर बारह गांव समेत फ़त्हगढ़ बाघसिंहको दिया. यह फ़त्हगढ़ पहिले गौड़

राजपूतोंके क़ब्ज़ेमें था, जो महाराजा राजसिंहके बेटे फ़त्हसिंहने उनसे छीना था; इस बारेमें मारवाड़ी भाषाका एक दोहा मश्हूर है-

दोहा.

गौड़ां सूं धरती गई गया धरा सूं गौड़ ॥
फ़तो फ़तेगढ़ आवियो राजकुंवर राठौड़ ॥ १ ॥

इस फ़त्हगढ़में क़िला बनाकर महाराजा बहादुरसिंहने विक्रमी १८३० [हि० ११८७ = ई० १७७३] में अपने छोटे बेटे बाघसिंहको वहां रखदिया. बाघसिंहका जन्म विक्रमी १८१८ माघ कृष्ण ११ [हि० ११७५ ता० २५ जमादियुस्सानी = ई० १७६२ ता० २२ जैन्युअरी] को हुआ था. फ़त्हगढ़ वालोंका बयान है कि कृष्णगढ़ और फ़त्हगढ़ दोनोंका महाराजा बहादुरसिंहने इज़्ज़त वग़ैरहमें बराबर क़ाइदह रक्खा था, और सर्दार, अहल्कार व जायदाद वग़ैरहमें से रियासतका दसवां हिस्सा उनको दिया. जब महाराज फ़त्हगढ़ कृष्णगढ़ जाते, तो गद्दीपर बैठना वग़ैरह सब तरह से बराबरीका बर्ताव होता. और कृष्णगढ़ वालोंका बयान है कि, महाराज बाघसिंह का बर्ताव हक़ीक़तमें बराबर बरता गया था, लेकिन् वह रिश्तेदारीकी बुज़ुर्गीसे कियागया, दावेदारीसे नहीं था.

महाराजा बिड़दसिंह और प्रतापसिंहके अह्दमें तो बाघसिंहसे अच्छी तरह इत्तिफ़ाक़ रहा, परन्तु महाराजा कल्याणसिंहसे कुछ नाइत्तिफ़ाक़ी होगई थी. विक्रमी १८६९ [हि० १२२७ = ई० १८१२] में बाघसिंहका इन्तिक़ाल होगया. इनके चार बेटे थे- पहिला चांदसिंह जिसका जन्म विक्रमी १८३६ [हि० ११९३ = ई० १७८९] का है; दूसरा बलदेवसिंह, जिसको ग्रास में गांव ढोस व सदापुरकी भोम मिली; तीसरा किशोरसिंह, जिसको गांव ज़ोरावरपुरा व चांदोलाईकी भोम दीगई. और चौथा भीमसिंह, जिसको गांव कचौलिया जागीरमें मिला.

महाराज बाघसिंहके बाद चांदसिंह गद्दीपर बैठा; इसने ठिकाने[illegible] क़र्ज़ा चुकाया, और क़िलेमें मेगज़िन व कुछ ख़ज़ानह भी एकठा किया, [illegible] शुरू अह्दमें महाराजा कल्याणसिंहने पहिले मरहटा बंकटराव और [illegible] दफ़ा अमीरख़ांका हम्ला फ़त्हगढ़पर करवाया; लेकिन् चांदसिंह [illegible] आदमियोंकी अक़्मन्दीसे कल्याणसिंहकी ख़्वाहिश पूरी न होस[illegible] अमल्दारी होनेके बाद भी कल्याणसिंहने फ़त्हग[illegible] मातहत [illegible]
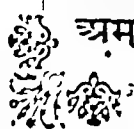
न छोड़ा. ज़ोरावरपुरेका किशोरसिंह, जो बाघसिंहका तीसरा बेटा था, बे औलाद मरगया, इसलिये चांदसिंहने उसकी जागीरका मालिक अपने बेटे गोपालसिंहको बनादिया, तब बलदेवसिंह और भीमसिंहने बहुत फ़साद किया, लेकिन् कोटाके दीवान झाला ज़ालिमसिंह ने इन दोनों भाइयोंको कुछ जागीर कोटासे देकर समझादिया; मगर बलदेवसिंहकी बद चलनी और भीमसिंहकी सुस्तीसे वह जागीर कुछ अर्से बाद जाती रही. महाराजा कल्याणसिंहने फ़त्हगढ़को मातहत करनेके लिये ज़ोर डाला, और कुछ परदेसी सिपाहियोंको नौकर रखकर हम्ला किया, परन्तु कृष्णगढ़के कुल जागीरदार एक होकर बाग़ी होगये, जिससे महाराजाकी ख़्वाहिश पूरी न हुई; आख़िरकार गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीको फ़ैसला करना पड़ा. फ़त्हगढ़का आज़ाद होना, जो अह्दनामहके बर्ख़िलाफ़ था, अंग्रेज़ी अफ़्सरोंने मंज़ूर नहीं किया, लेकिन् क़तई फ़ैसला होकर तामील नहीं करवाई गई.

विक्रमी १८९७ [हि० १२५६ = ई० १८४०] में महाराज चांदसिंहका इन्तिक़ाल होगया. उसका बड़ा बेटा भोपालसिंह था, जिसका जन्म विक्रमी १८५६ [हि० १२१४ = ई० १७९९] का था; दूसरा गोपालसिंह, और तीसरा इन्द्र-सिंह. महाराज भोपालसिंह फ़त्हगढ़का रईस हुआ, इसके समयमें भी कृष्णगढ़की अदावत बनीरही. विक्रमी १९०४ [हि० १२६३ = ई० १८४७] में इसका इन्तिक़ाल होगया, और उसका पुत्र महाराज रणजीतसिंह गद्दीपर बैठा, जो बहुत लायक़ और बुद्धिमान था. इसने ठिकानेको ज़मीनकी आबादी, तालाब, इमारत वग़ैरहसे ख़ूब दुरुस्त किया, कृष्णगढ़का ख़रख़शा तै नहीं हुआ, आख़िरकार गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीने फ़ैसला तै करके महाराज रणजीतसिंहको कृष्णगढ़में तलब करनेके बाद अपने अफ़्सरोंके साम्हने महाराजा पृथ्वीसिंहकी गद्दीके नीचे बिठाकर नज़्र करवादी, और वलीअह्द रियासतकी इज़्ज़तके मुवाफ़िक़ इनके साथ बर्ताव रहना क़रार पाया. लेकिन् इस शर्मिन्दगीके सबबसे चार महीने बाद, याने विक्रमी १९३० [हि० १२९० = ई० १८७३] में महाराज रणजीतसिंहका इन्तिक़ाल होगया, जिसके बाद उसका पुत्र गोवर्धनसिंह फ़त्हगढ़का मुस्तार बना, जिसका जन्म विक्रमी १९१४ [हि० १२७३ = ई० १८५७] में हुआ था, शुरू अह्दसे इसकी ख़्वाहिश शराब पीनेपर बढ़तीजाती थी; कृष्णगढ़की तरफ़से इसे बहुतसी सख़्तियां झेलनी पड़ीं, आख़िरकार विक्रमी १९३८ श्रावण कृष्ण ३० [हि० १२९८ ता० २९ शअ्बान = ई० १८८१ ता० २६ जुलाई] को इसका इन्तिक़ाल होगया; तब

इन्द्रसिंहके पोते और रायसिंहके बेटे मानसिंहको उदयपुरसे बुलाकर गद्दीपर बिठाया, क्यों कि गोवर्धनसिंहके कोई औलाद न थी.

अब यहांपर बाघसिंहकी औलादका कुर्सी नामह लिखाजाता है- पाटवी चांदसिंह, जिसके तीन बेटे- बड़ा भोपालसिंह, दूसरा गोपालसिंह, और तीसरा इन्द्रसिंह. भोपालसिंहका रणजीतसिंह, उसका गोवर्धनसिंह, और उसके मानसिंह, जो फ़त्हगढ़के वर्तमान जागीरदार हैं. चांदसिंहका दूसरा बेटा गोपालसिंह, जिसको बाघसिंहके तीसरे बेटे किशोरसिंहके गोद रक्खा, और चांदसिंहका तीसरा बेटा इन्द्रसिंह, जिसका रायसिंह (१), जिसके मानसिंह जो फ़त्हगढ़वाले गोवर्धनसिंहके गोद गये.

बाघसिंहका दूसरा बेटा बलदेवसिंह ढोसका जागीरदार जिसका बेटा भौमसिंह, भौमसिंहके तीन बेटे- बड़ा हिम्मतसिंह, दूसरा ज़ालिमसिंह, और तीसरा धनपतसिंह. विक्रमी १९३० [हि० १२९० = ई० १८७३] में हिम्मतसिंहके हाथसे ज़ालिमसिंह मारागया, और ढोसकी जागीर धनपतसिंहको मिली; उसका बेटा तेजसिंह, जो अब मौजूद है. बाघसिंहका तीसरा बेटा किशोरसिंह, ज़ोरावरपुराका जागीरदार, जिसका गोपालसिंह, इसका बैरीशाल, जिसके तीन बेटे- बड़ा केसरीसिंह, दूसरा रामसिंह, और तीसरा श्यामसिंह.

बाघसिंहका चौथा पुत्र भीमसिंह कचौलियाका जागीरदार जिसके छः पुत्र हुए- १ छत्रसिंह, २ मंगलसिंह, ३ विजयसिंह, ४ फ़ौजसिंह, ५ पृथ्वीसिंह, जो कृष्णगढ़के महाराजा हुए, और ६ फ़त्हसिंह. बड़े छत्रसिंहका बेटा हरनाथसिंह.

नम्बर ३३

कृष्णगढ़का अह्दनामह.

अह्दनामह ऑनरेबल अंग्रेज़ी ईस्ट इन्डिया कम्पनी और कृष्णगढ़के महाराजा कल्याणसिंह बहादुरके दर्मियान, जो मारिफ़त मिस्टर चार्ल्स थियोफ़िलस मेटकाफ़की

(१) इनका मुफ़स्सल हाल उदयपुरके सर्दारोंके साथ लिखाजावेगा.

मक़ाम दिहली, ता० २६ मार्च, सन् १८१८ ई०

दस्तख़त सी. टी. मेटकाफ़. मुहर

मुहर कल्याणसिंह बहादुर.

मुहर फ़त्ह मुहम्मद ख़ां.

मुहर गवर्नरजेनरल दस्तख़त हेस्टिंग्ज़.

इस अह्दनामहको हिज़ एक्सेलेन्सी गवर्नर जेनरल बहादुरने कैम्प बांसबरेली में ता० ७ एप्रिल सन् १८१८ ई० को तस्दीक़ किया.

दस्तख़त जे. ऐडम, सेक्रेटरी, गवर्नर जेनरल.

नम्बर ३४.

सर्कार अंग्रेज़ी और श्रीमान पृथ्वीसिंह महाराजा कृष्णगढ़ व उनके वारिसों और जानशीनोंके बीचका अह्दनामह, जो एक तरफ़ लेफ़्टिनेएट कर्नेल् रिचर्ड हार्ट कीटिंग, एजेएट गवर्नर जेनरल राजपूतानहने हुक्मके मुताबिक़ किया, जिनको पूरा इख्तियार हिज़ एक्सेलेन्सी सर जॉन लेयर्ड मेअर लॉरेन्स, वाइसराय, गवर्नर जेनरल हिन्दुस्तानसे मिला था, और दूसरी तरफ़ खुद महाराजा पृथ्वीसिंह थे-

पहिली शर्त- कोई आदमी अंग्रेज़ी या दूसरे राज्यका बाशिन्दह अगर अंग्रेज़ी राज्यमें कोई बड़ा जुर्म करे, और कृष्णगढ़की राज्य सीमामें पनाह लेना चाहे, तो कृष्णगढ़की सर्कार उसको गिरिफ्तार करेगी, और दस्तूरके मुताबिक़ उसके मांगेजानेपर सर्कार अंग्रेज़ीको सुपुर्द करदेगी.

दूसरी शर्त- कोई आदमी कृष्णगढ़के राज्यका बाशिन्दह वहांके राज्यकी सीमा मे कोई बड़ा जुर्म करे, और अंग्रेज़ी इलाक़हमें जाकर आश्रय लेवे, तो सर्कार अंग्रेज़ी वह मुजिम कृष्णगढ़के राज्यको क़ाइदहके मुवाफ़िक़ सुपुर्द करदेवेगी.

तीसरी शर्त- कोई आदमी, जो कृष्णगढ़के राज्यकी रअय्यत न हो, और कृष्णगढ़के राज्यकी सीमामें कोई बड़ा जुर्म करके फिर अंग्रेज़ी सीमामें पनाह लेवे, तो सर्कार अंग्रेज़ी उसको गिरिफ्तार करेगी, और उसके मुक़द्दमेकी रूबकारी सर्कार अंग्रेज़ीकी बतलाई हुई अदालतमें होगी. अक्सर क़ाइदह यह है कि ऐसे मुक़द्दमोंका फ़ैसला उस पोलिटिकल अफ्सरके इजलासमें होता है, जिसके तह्तमें वारदात होनेके वक़्पर कृष्णगढ़की मुल्की निगहबानी रहे.

चौथी शर्त- किसी हालतमें कोई सर्कार किसी आदमीको, जो बड़ा मुज्रिम ठहरा हो, देदेनेके लिये पाबन्द नहीं है, जबतक कि दस्तूरके मुताबिक़ ख़ुद वह सर्कार या उसके हुक्मसे कोई अफ़्सर उस आदमीको न मांगे, जिसके इलाक़हमें कि जुर्म हुआ हो, और जुर्मकी ऐसी गवाहीपर, जैसा कि उस इलाक़हके क़ानूनके मुताबिक़ सहीह समझी जावे, जिसमें कि मुज्रिम पायाजावे, उसका गिरिफ़्तार करना दुरुस्त ठहरेगा, और वह मुज्रिम क़रार दियाजावेगा, गोया जुर्म वहींपर हुआ है.

पांचवीं शर्त- नीचे लिखे हुए काम बड़े जुर्म समझे जावेंगे- १ ख़ून- २ ख़ून करनेकी कोशिश- ३ वहशियाना क़त्ल- ४ ठगी- ५ ज़हर देना- ६ सख़्तगीरी- ७ ज़ियादह ज़ख़्मी करना- ८ लड़का वाला चुरालेजाना- ९ औरतोंका बेचना- १० डकैती- ११ लूट- १२ सेंध (नक़ब) लगाना- १३ चौपाये चुराना- १४ मकान जलादेना- १५ जालसाज़ी करना- १६ झूठा सिक्का चलाना- १७ धोखा देकर जुर्म करना- १८ माल अस्बाब चुरालेना- १९ ऊपर लिखेहुए जुर्मोंमें मदद देना या वरग़लाना (बहकाना).

छठी शर्त- ऊपर लिखी हुई शर्तोंके मुताबिक़ मुज्रिमको गिरिफ़्तार करने, रोकरखने, या सुपुर्द करने में, जो ख़र्च लगे, वह उसी सर्कारको देना पड़ेगा, जिसके कहनेके मुताबिक़ यह बातें कीजावें.

सातवीं शर्त- ऊपर लिखा हुआ अह्दनामह उस वक्ततक बरक़रार रहेगा. जबतक कि अह्दनामह करनेवाली दोनों सर्कारोंमेंसे कोई उसके तब्दील करने की ख़्वाहिश एक दूसरेको ज़ाहिर न करे.

आठवीं शर्त- इस अह्दनामहकी शर्तोंका असर किसी दूसरे अह्दनामहपर, जो कि दोनों सर्कारोंके बीच पहिलेसे है, कुछ न होगा; सिवाय ऐसे अह्दनामहके, जो कि इस अह्दनामहकी शर्तोंके बर्ख़िलाफ़ हो.

मक़ाम अजमेर, ता० २७ नोवेम्बर सन् १८६८ ईसवी.

दस्तख़त महाराजा कृष्णगढ़ (हिन्दी हर्फ़ोंमें).

दस्तख़त आर. एच. कीटिंग, एजेण्ट गवर्नर जेनरल.

दस्तख़त जॉन लॉरेन्स, वाइसरॉय, गवर्नर जेनरल हिन्द.

इस अह्दनामहको मक़ाम फ़ोर्ट विलिअममें गवर्नर जेनरलने ता० १२ डिसेम्बर सन् १८६८ ई० को तस्दीक़ किया.

दस्तख़त डब्ल्यू. एस. सेटन कार, सेक्रेटरी, गवर्मेंट इन्डिया, फ़ॉरेन डिपार्टमेन्ट.

नम्बर ३५.

कृष्णगढ़ महाराजाकी तरफ़से एजेण्ट गवर्नर जेनरल बहादुर राजपूतानहके नाम, जो ख़रीता ता० ८ जुलाई सन १८६७ ई० को लिखागया, उसका खुलासा-

गुज़रेहुए महीनेकी २६ ता० को आपके ख़रीतेके आनेसे मेरी इज़्ज़त हुई, जिसमें यह मत्लब है कि गवर्मेंट इन्डिया मुझे बीस हज़ार रुपया सालाना उस नुक्सान के बदलेमें देनेको राज़ी है, जोकि मेरी रियासतकी आमदनीमें मेरे इलाक़हमें रेल्वेके गुज़रनेसे होगा, और बतलब जवाब जल्द.

इसका मत्लब मैंने अच्छी तरह समझ लिया, और मैं ख़्वाहिश रखता हूं कि श्री मान वाइसरॉय गवर्नर जेनरल को मेरा इहसानमन्दीके साथ शुक्रिया मेरे और मेरी रियासत की तरफ़ इस मिहर्बानी के लिहाज़के वास्ते अदा कियाजावे.

मैं शुक्रगुज़ारीके साथ इस नुक्सानके बदले को, जो सर्कार देनेको राज़ी है, याने बीस हज़ार रुपया सालाना मंजूर करता हूं, और आपसे अ़र्ज़ करता हूं कि गवर्मेण्टको इसकी इत्तिला देवें; उसीके साथ यह भी अ़र्ज़ है कि श्री मान वाइसराय को मेरा शुक्रिया और यह उम्मेद ज़ाहिर करें कि वह मेरी रियासतपर मिहर्बानी की निगाह रखते रहें.

मुझे उम्मेद है कि जबतक मैं आपसे रूबरू मिलनेकी खुशी हासिल न करूं, तबतक कभी कभी आपकी चिट्ठियों से इज़्ज़त पाता रहूंगा.

रीवां (बांधूगढ़) की तवारीख़.

महाराणा राजसिंहके वृत्तान्तमें लिखागया है, कि महाराणाकी कन्या अजब-कुंवर बाईका विवाह बांधूगढ़के राजा अनूपसिंह बाघेलाके साथ हुआ था, इस तअ़ल्लुक़के सबब बांधूगढ़ अर्थात् रीवांका तारीख़ी हाल यहां लिखते हैं.

बयान है, कि त्रेता युगमें जब परशुरामने क्षत्रियोंका नाश किया, तब बे ख़ौफ़ होकर म्लेच्छ (जंगली लोग) ब्राह्मणोंके आचार विचार और यज्ञादिकमें नुक्सान पहुंचाने लगे, इसपर मुनियोंने आबू पहाड़ (अर्बुदाचल) पर चार जातिके क्षत्री

अग्नि कुण्डसे निकाले- प्रमार, परिहार, और चहुवानके सिवाय एक पानी सींचनेके लिये चौथा चुलुक्य, जिसको चालुक्य अथवा सोलंखी भी कहते हैं, पैदा किया; और पांचवां शख़्स केलेके डोडे (फूल) से पैदा किया, जिससे डोडिया क्षत्री हुए.

हमारे विचारसे ब्राह्मणोंने इन पांचों क्षत्रियोंको प्रायश्चित्त करवाकर शुद्ध किया होगा, तबसे सूर्य चन्द्र वंशियोंके सिवाय अग्निवंशी क्षत्री जुदे कहलाये. यदि चालुक्यसे लेकर वर्तमान समयतक वंशावलीको सिल्सिलेवार मिलाया जावे, तो पुरानी वंशावलीके गलत होनेमें कुछ शक नहीं, क्योंकि बड़वा और भाटोंने अपनी पुस्तकोंका सिल्सिला मिलानेके लिये अक्सर बनावटी नाम रख लिये हैं. हमने एशियाटिक सोसाइटी बंगाल, तथा बम्बई ब्रैंच रॉयल एशियाटिक सोसाइटी और इंडियन ऐन्टीक्वेरी व फ़ॉर्ब्स साहिबकी रासमाला गुजरात हिस्टरी के द्वारा शिला लेख, ताम्रपत्र, सिक्के, बड़वा भाटोंकी पुस्तकों, रत्नमाला, कुमारपाल चरित्र, द्वाश्रय वग़ैरहके आशयको देखा, और ख़ान बहादुर मौलवी हकीम रह्मानअलीकी तहरीरसे, जो रीवांका इज़्ज़तदार अहल्कार है, और रीवांका इतिहास लिखता है, और जिसकी किताबका पहिला भाग राजवंश वर्णन क़लमी लिखा हुआ एक मित्र द्वारा हमारे पास आया है; उसमें जो साल संवत् लिखे हैं, वे हमारी नज़र में तो शुद्ध हैं ही नहीं, बल्कि उक्त मौलवीको भी उनके सहीह होनेमें शक है. इस लिये हम पुराने संवत् वही लिखेंगे, जो कि ताम्र पत्र वा पाषाण लेखोंसे शुद्ध होचुके हैं, और बीचके संवत्, जो अशुद्ध मालूम होते हैं, उन्हें छोड़कर पिछले वहांसे शुरू करेंगे, जहांसे कि कम फ़र्क़ मालूम पड़ता है.

वंशावलीके नामोंमें चालुक्यसे कल्याणीके राजा भुवनदेव तकका हमें विश्वास नहीं है, अगर्चि ऐन्टीक्वेरी और सोसाइटियोंके जर्नलोंमें दक्षिणी, पूर्वी व पश्चिमी चालुक्य राजाओंके नाम प्रशस्तियों और ताम्रपत्रोंसे लिखे गये हैं, लेकिन् यह तह्क़ीक़ नहीं होता कि यह भुवनदेवसे पहिले, चालुक्य वंशी राजा थे, इस लिये भुवनदेवसे वंशावली शुरू की जाती हैः-

चालुक्य भुवनादित्यके तीन पुत्र हुए- १ राज, २ बीज, ३ दंडक; अनहिल-वाड़ा पट्टनके राजा सामन्तदेव चावड़ाकी बहिन लीलादेवीका विवाह १ राजके साथ हुआ था, जिसके गर्भसे मूलराज पैदा हुआ. राजा सामन्तदेव चावड़ाने अपनी वहिनके पुत्र मूलराजको गोद लिया, और वह सामन्तदेव चावड़ाके मरने बाद विक्रमी ९९८ [हि० ३३० = ई० ९४२] में अनहिलवाड़ा पट्टनकी गद्दीपर बैठा. यह राजा गुजरात (सौराष्ट्र) में सोलंखियोंका बड़ा राज क़ायम करनेवाला हुआ.

इसने चहुवान, प्रमार, जाड़ेचा, चूड़ाष्मा इत्यादि वंशके अनेक राजाओंपर फ़त्ह पाई, और विक्रमी १०५३ [हि० ३८७ = ई० ९९७] तक ५५ वर्ष राज्य किया.

इसके बाद २ चामुंडराज गद्दीपर बैठा, और १३ वर्षतक, यानी विक्रमी १०६७ [हि० ४०० = ई० १०१०] तक राज्य करके परलोकको सिधारा.

इसके तीन बेटे हुए- वल्लभराज, दुर्लभराज और नागराज; इनमें से बड़ा पुत्र वल्लभराज तो चामुंडराजके सामने ही मरगया, जिसपर चामुंडराजने अपने दूसरे पुत्र ३ दुर्लभराजको राज देकर आप तपस्या करनेकी मर्ज़ीसे नर्मदा किनारे निवास किया.

दुर्लभराजके छोटे भाई नागराजके पुत्र ४ भीमको विक्रमी १०७९ [हि० ४१३ = ई० १०२२] में दोनों भाई राज्य देकर तपस्या करनेको काशी चलेगये, और वहीं मरे. इसी भीमदेवको विक्रमी १०८१ [हि० ४१५ = ई० १०२४] में महमूद ग़ज़्नवीने शिकस्त देकर सोमनाथ महादेवके लिङ्ग और मन्दिरको तोड़ा था. फिर महमूद तो ग़ज़्नीको चलागया, और भीमदेवने अपनी ताक़तसे गुजरातका राज्य अपने क़ब्ज़ेमें करके सिंन्धु और चंदेरीके राजासे भी दंड लिया. इसीके वक़्में उज्जैन और धारमें मालवा देशका प्रसिद्ध राजा भोज हुआ, जिससे भीमदेवकी बड़ी मुवाफ़क़त थी. भीमदेवके क्षेमराज, मूलराज और कर्ण तीन पुत्र थे.

भीमदेवने ५ क्षेमराजको अनहिलवाड़ेका राज्य देकर तपस्या करनेका विचार किया, लेकिन् क्षेमराजने हुकूमतसे अपने पिताकी सेवा ही ठीक जानकर छोटे भाई ६ कर्णको विक्रमी ११२९ [हि० ४६४ = ई० १०७२] में राज्य देने बाद तीर्थ वास किया, और वह इसी हालतमें गुज़रगया.

कर्ण राजाका देहान्त विक्रमी ११५१ [हि० ४८७ = ई० १०९४] में हुआ. इसकी गद्दीपर सिद्धराज जयसिंहदेव कम उम्रीमें गादी बैठा था; इस हालतमें राज्यका काम सिद्धराजकी मा मैनालदेवी चलाती थी. सिद्धराज गुजरातके सोलंखी राजाओंमें बड़ा नामी हुआ, लेकिन् इसके पीछेके साल संवत् और पीढ़ियोंमें बहुत ग़लती है.

ऊपर लिखे हुए संवत् और राजाओंके नाम तहक़ीक़ करके लिखे हैं, परन्तु सिद्धराजके बेटोंसे बाघेलोंके वंशका जुदा होना बड़वा भाटोंकी पोथियों और रीवां के मेजिस्ट्रेट हकीम रहमानअलीख़ांकी तहक़ीक़ातसे अथवा एक तवारीख़की हिन्दी किताबसे, जो महाराणा भीमसिंहके कुंवर जवानसिंहकी पहिली शादी राजा जयसिंहदेवकी बेटी और बाबू विश्वनाथसिंहकी बहिन सुभद्रकुमारीके साथ होनेके सबब रीवांके राज्यकी तरफ़से विक्रमी १८८० [हि० १२३९ = ई० १८२३]

में उदयपुरके दर्बारमें आई थी, शक होता है. उक्त हकीम तो अपनी तहक़ीक़ातमें चालुक्यसे लेकर हालतक कुल ११२१ पीढ़ियां लिखते हैं; और सोलंखियोंका बड़वा देवीदान चालुक्यसे मूलराजके पिता राज तक ९०० पीढ़ी होना बयान करता है; इसमें तअ़ज्जुब यह है, कि मूलराजसे सिद्धराजतककी पीढ़ियोंके नामोंमें भी बहुत फ़र्क़ है, लेकिन् ऊपरकी पीढ़ियां और साल संवत् हम तहक़ीक़ करके लिख चुके हैं. तवारीख़में यह अंधेर भाटोंका किया हुआ ही मालूम होता है.

पृथ्वीराजरासाके लेखसे दूसरे भीमदेवका मेवाड़में बनास नदीपर राजा पृथ्वीराज चहुवान और रावल समर्सीसे लड़कर माराजाना प्रसिद्ध है. भीमदेवका ताम्रपत्र विक्रमी १२५६ [हि० ५९५ = ई० ११९९] का मिला है, और राजा पृथ्वीराज चहुवान विक्रमी १२४९ [हि० ५८९ = ई० ११९३] में शिहाबुद्दीनसे लड़कर मारागया था; चित्तौड़के रावल समर्सीके समयके जो पाषाण लेख मिले हैं, उनसे समर्सीका संवत् विक्रमी १३३१ [हि० ६७२ = ई० १२७४] से विक्रमी १३४४ [हि० ६८६ = ई० १२८७] तक चित्तौड़में राज्य करना ज़ाहिर है. अब ऐसी ग़लतियोंमेंसे अस्ली हाल निकालना कठिन है.

फ़ॉर्ब्स साहिबकी 'रासमाला' और ऊपर लिखी हुई सोसाइटियों व किताबोंके लेखसे तो सिद्धराजका दूसरा बेटा अर्णोराज था, जिसको उसके बड़े भाई कर्णराजने बाघेला ग्राम जागीरमें दिया था, जो अनहिलवाड़ा पट्टनके पास अबतक मश्हूर है, और उसमें पुरानी इमारतें भी अबतक मिलती हैं. इसी बाघेला ग्रामके नामसे अर्णोराजकी सन्तान बाघेला कहलाई.

अर्णोराजका पुत्र कर्णराज, इसका वीसलदेव, जिसके बेटे अर्जुनदेवके वक्त तक गुजरात देशमें बाघेलोंका राज्य करना फ़ॉर्ब्स साहिबकी रासमालासे पतेवार मिलता है, लेकिन् कुर्सीनामहको आगे बढ़ानेके लिये कोई सुबूत नहीं नज़र आता. इस कारण रीवांके मैजिस्ट्रेट हकीम रहमानअलीख़ांके तहक़ीक़ाती कुर्सीनामह और तवारीख़से यहां लिखाजाता है, जो नहीं मालूम किस जगहसे कहांतक ग़लत, और कबसे सहीह है– यही ख़याल उक्त हकीमको भी है.

७ वें राजा सिद्धराज (जयसिंहदेव) के पुत्र ८ सिंहराज, इनके ९ नागराज, इनके १० कर्णदेव, इनके ११ वीरध्वज (शायद शुद्धनाम वीसलदेव होगा), इनके १२ व्याघदेव, इनसे बाघेला सोलंखी कहलाये; इन्होंने पूर्वमें जाकर बघेलखंडका राज्य जमाया. इनके पांच पुत्र हुए, जिनमेंसे १३ कर्णदेव अपने बापकी जगह बघेलखंडके ज़िले मंडफ़ामें गादी बैठे; दूसरा कन्धरदेव, इसका लक़ब 'राव' हुआ,

और कसोटा जागीरमें पाया. तीसरा कीर्तिदेव (१) जिसकी औलाद पेथापुरमें राज करती है. चौथा सूरतदेव, जो गुजरातमें चलागया, और जिसकी औलाद पालनपुर एजेन्सीकी हुकूमतके तावे ठाकरां इलाक़ह नहराव, मोरवाड़ा और देवदा ग्रामोंमें है.

पांचवां श्यामदेव पूर्व देशको चलागया, जिसकी औलादमें शायद बनारस, भदोई, और फ़र्रुख़ाबाद ज़िले के बघेले हैं.

१३ कर्णदेवका विवाह हयहय वंशी क्षत्री राजा सोमदत्तकी बेटीसे हुआ, और दहेज़में बांधूगढ़ मिला जो आजतक रीवांके तअ़ल्लुक़में है, इन्होंने बांधूगढ़में कर्णबनेवा दर्वाज़ा बनवाया, जो अबतक मौजूद है.

---

(१) गुजरात राजस्थानके पृष्ठ १२३ में पेथापुरकी तवारीख़ इस तरह पर लिखी है–

विक्रमी १३०१ [हि० ६४२ = ई० १२४४] से विक्रमी १३६१ [हि० ७०४ = ई० १३०४] तक अनहिलवाड़ा पट्टनकी गद्दीपर वाघेला राजपूतोंने राज्य किया; पिछले राजा कर्ण वाघेलाके वक़्में दिल्लीके बादशाह सुल्तान अ़लाउद्दीन ख़िल्जीने इस राज्यको बर्बाद किया. कर्ण वाघेलाके वारिस जैता और वरसिंह दो भाई थे, जिन्होंने गुजरात देशसे बाहर निकलकर लूट मार शुरू की. थोड़े दिनोंके बाद फिर बादशाहने खुश होकर इन्हें ५०० ग्राम दिये.

जागीर के दो हिस्से होकर जैताको कलोल ग्रामके साथ २५० गांव, और वरसिंहकी पांतीमें साणंदके साथ २५० गांव आये. जैताके वंशमें कलोलका राजा आनन्ददेव हुआ, इसके कुंवर राणकदेवकी जागीरमें रूपाल गांव था; इसके देहान्तके बाद दूसरी या तीसरी पीढ़ीमें सामन्तसिंह हुए, जिनके कुंवरोंने रूपालके हिस्से करलिये.

इनमें पाटवी विजयकर्ण था, इसलिये ख़ास रूपाल इसीके क़ब्ज़ेमें रही; और छोटे कुंवर सोमेश्वरको कोलवाड़ा वग़ैरह १४ गांव मिले. सोमेश्वरके पुत्र चांदा और हिमाला हुए, इस वक़् पेथू गोहिलके क़ब्ज़ेमें साबरमती नदीके पास सोखड़ा ग्राम था, यह हिमालाके मामा थे. हिमाला किसी क़द्र राजपूतोंको लेकर सोखड़ा गया, और अपने मामाको मारकर राज्य छीन लिया, पेथूकी राणी सती हुई; इस राणीके हुक्मके मुवाफ़िक़ 'पेथापुर' बसाया गया, जहांका राज्य आजतक उन्हींके वंशमें है.

पेथापुरका तअ़ल्लुक़ा मिलाने वाला जैतासे दसवीं पीढ़ीमें हिमाला लिखा है. हालके ठाकुर गंभीरसिंह वाघेला राजपूत महीकांठाके इलाक़हमें चौथे दरजेके सर्दार हैं. इनको फ़ौज्दारीमें एक वर्ष क़ैद, और ५०० रुपये तक जुर्माना, और दीवानीमें २५०० रु० तकका दावा सुननेका इख़्तियार है.

पेथापुर– महीकांठाके इलाक़ह और साबर कांठाके ज़िलेमें साबरमती नदीके किनारेपर आबाद है, जिसका रक़्बा ४ मीलमुरब्बा है; इसमें तीन गांव, और ७००० आदमियोंकी आबादी है. इसकी सालाना आमदनी १५००० रुपयेके क़रीब है.

कर्णदेवके पुत्र १४ सुहागदेव, इनके १५ सारंगदेव, जिनका वसायाहुआ सारंगपुर प्रयाग (इलाहाबाद) के पास अबतक आबाद है. इनके १६ विलासदेव थे, जिन्होंने विलासपुर आबाद किया. इनके १७ भमलदेव, इनके १८ आनकदेव, इनके १९ दलगीरदेव, इनके २० मलगीरदेव, इनके २१ त्रियारदेव, इनके २२ बुलारदेव, इनके २३ सिंहदेव, जो अपने बेटे २४ भैरवदेवको राज्य सौंपकर गंगा किनारे चलेगये, और वहीं समाधि ली (ज़िन्दा दफ़्न हुए).

भैरवदेवके पुत्र २५ नरहरदेव, इनके २६ भेददेव, इनके २७ शालिवाहन, जिनके बारेमें कहाजाता है कि यह चित्तौड़के महाराणा लाखाकी बेटीसे पैदा हुए थे; इनके २८ त्रिसिंहदेव, इनके २९ वीरभानुदेव, और दूसरे जयमनभानु हुए. बड़े बेटे वीरभानुदेव गद्दीपर बैठे, और छोटेको मेहड़ और सुहागपुर जागीरमें मिला.

हकीम रहमानअलीख़ां लिखते हैं कि वीरभानुदेवसे संवत् सहीह मिलते हैं, लेकिन् हमारा ख़याल है कि शायद इनमें भी ग़लती हो. वह लिखते हैं कि–

वीरभानुदेवका जन्म विक्रमी १५३९ [हि० ८८७ = ई० १४८२] को, राज्याभिषेक विक्रमी १५५८ [हि० ९०७ = ई० १५०१] को और देहान्त विक्रमी १६२१ [हि० ९७२ = ई० १५६४] में हुआ.

यह भी लिखते हैं, कि दिल्लीका हुमायूं बादशाह जब शेरख़ां अफ़्ग़ानसे शिकस्त खाकर भागा, और शेरशाह दिल्लीके तख़्तपर बैठगया, तो हुमायूं तक्लीफ़की हालतमें भागता फिरता था; उसी वक्तमें हुमायूंकी हमीदा बानू बेगमको वीरभानुदेव ने कुछ अर्सेतक बांधूगढ़में रखकर हिफ़ाज़तके साथ हुमायूंके पास मारवाड़में पहुंचाया था; और इसी बेगमके गर्भसे अमरकोटमें अक्बरका जन्म हुआ, इसी सबब अक्बर बादशाह बांधूगढ़के बघेलोंपर ज़ियादह मिहर्बान था. (लेकिन् अक्बर नामह में इसका कुछ पता नहीं, बल्कि उसकी फ़ौजने बांधूगढ़ छीन लिया लिखा है).

वीरभानुदेवका पुत्र ३० रामदेव विक्रमी १५८५ [हि० ९३४ = ई० १५२८] में जन्मा, जिसका राज्याभिषेक विक्रमी १६२१ [हि० ९७२ = ई० १५६४] में, और देहान्त विक्रमी १६७५ [हि० १०२७ = ई० १६१८] में हुआ. रीवांवाले लिखते हैं कि इन्हीं महाराजा रामदेवको अक्बर बादशाहने "भैया" का पद दिया था; और अपनी मा हमीदाबानूकी चाकरीके बदले बादशाह इनसे बहुत खुश रहा; यह भी मश्हूर है कि बांधूगढ़के राजाओंने कभी दिल्लीके बादशाहों

को बेटी नहीं दी. इनके ३१ वीरभद्र हुआ, जिसका जन्म विक्रमी १६०४ [हि० ९५४ = ई० १५४७] में, राज्याभिषेक विक्रमी १६५४ [हि० १००६ = ई० १५९७] में, और देहान्त परोधा गांवमें विक्रमी १६७५ [हि० १०२७ = ई० १६१८] में हुआ; इनकी छत्री वहां मौजूद है. इनके विषयमें एक भूतकी (१) कहानी मश्हूर है. इनके पुत्र ३२ विक्रमादित्य हुए, इनका जन्म विक्रमी १६२१ [हि० ९७२ = ई० १५६४] में, राज्याभिषेक विक्रमी १६७५ [हि० १०२७ = ई० १६१८] में और देहान्त विक्रमी १६८७ [हि० १०४० = ई० १६३०] में हुआ था. इस राजाने विछिया और वेहड़ नदीके संगमपर रीवां शहर बसाकर उसे अपनी राजधानी ठहराया, जहांपर उसकी औलाद अबतक हुकूमत करती है.

विक्रमादित्यके तीन पुत्र हुए, ३३ बड़ा अमरसिंह, दूसरा इन्द्रसिंह, जिसकी औलाद पथरहट, कठौयाटोला और परदाटा वगैरह में मौजूद है; और तीसरा स्वरूपसिंह, जिसकी सन्तान पनालमीमें है. महाराजा अमरसिंहका जन्म विक्रमी १६४१ [हि० ९९२ = ई० १५८४] में, राज्याभिषेक विक्रमी १६८७ [हि० १०४० = ई० १६३०] में और परलोकवास विक्रमी १७०० [हि० १०५३ = ई० १६४३] में हुआ. इनके दो पुत्र हुए- ३४ अनूपसिंह और दूसरा फ़त्हसिंह, जिसकी औलादके कब्जेमें सुहावलका ठिकाना है. अनूपसिंहका जन्म विक्रमी १६६० [हि० १०१२ = ई० १६०३] में, राज्यगद्दी विक्रमी १७०० [हि० १०५३ = ई० १६४३] में, और मृत्यु विक्रमी १७१७ [हि० १०७० = ई० १६६०] में हुआ. इनके ३५ भावसिंह, दूसरा यशुमतसिंह, जिसके वंशमें गुढ़ाके जागीरदार हैं; तीसरा जुझारसिंह, इसकी औलादमें रामनगरके हिस्सेदार हैं.

भावसिंहका जन्म विक्रमी १६८१ [हि० १०३३ = ई० १६२४] में, और राज्याभिषेक विक्रमी १७१७ [हि० १०७० = ई० १६६०] में, और मृत्यु विक्रमी १७६१ [हि० १११६ = ई० १७०४] में हुआ. इनको महाराणा राजसिंहकी बेटी अजबकुंवर बाई ब्याही गई थी, जो उनके मरनेपर सती हुई.

---

(१) वीरभद्रदेवने एक ब्राह्मण (रघुपत दुबे) की एक लकड़ी उससे विना मांगे मंगवाकर किसी मकानमें लगवादी थी, इस बातपर ब्राह्मणने खुद कुशी करली; और मरनेके बाद ब्रह्मराक्षस (भूत) होकर अपने एक मित्र दुलई नाम ब्राह्मणकी मददसे, जो ओरछेके राजापर खुद कुशी करके ब्रह्मराक्षस (भूत) होचुका था, राजाको बहुत तंग किया; राजाने उसके दुःखसे बांधूगढ़ छोड़कर परोधा में रहना तज्वीज़ किया, परन्तु वहां भी उन भूतोंने पीछा न छोड़ा, यहां तक कि राजाको उसी ग्राममें जानसे मारडाला.

भावसिंहके कोई पुत्र नहीं था, इस लिये गिरासियोंमेंसे गढ़ीके जागीरदार वसुमतसिंह के छोटे बेटे ३६ अनिरुद्धसिंहको गोद लिया; जिसका जन्म विक्रमी १७१८ [हि० १०७२ = ई० १६६१] में, राज्याभिषेक विक्रमी १७६१ [हि० १११६ = ई० १७०४] में; और देहान्त विक्रमी १७६६ [हि० ११२१ = ई० १७०९] में (१) हुआ. इसी संवत्में इनके एक पुत्र ३७ अवधूतसिंह पैदा हुआ, जो छः महीनेकी उम्रमें गादीपर बिठायागया. इसके लड़कपनके सबब पन्नालाके राजा हरदेईशाह बुंदेलाने मौक़ा पाकर रीवांपर चढ़ाई की, बघेलोंने उसका अच्छा मुक़ाबला किया, लेकिन् आख़िरमें वे हार गये, और उनके सर्दार काम आये; जिससे अवधूतसिंहको लेकर उनकी मा अपने पीहर प्रतापगढ़ चली आई; वहांसे वकील भेजकर बादशाह मुहम्मद मुअ़ज़्ज़म बहादुर शाहसे हक़ीक़त अ़र्ज़ कराई. बादशाहने अ़र्ज़के मुवाफ़िक़ फ़ौज रवाना की, जिसके डरसे बुंदेले लोग रीवां छोड़कर चलेगये, और महाराणी व अवधूतसिंहका दुवारा क़ब्ज़ा होगया. इनका देहान्त विक्रमी १८१५ [हि० ११७२ = ई० १७५८] में हुआ.

इनके पुत्र ३८ अजीतसिंह विक्रमी १७८८ [हि० ११४४ = ई० १७३१] में जन्मे; विक्रमी १८१५ [हि० ११७२ = ई० १७५८] में राज्यगद्दी पाई; और विक्रमी १८६५ [हि० १२२३ = ई० १८०८] में देहान्त हुआ. इनके वक़्में शाहज़ादह आली गौहर (शाहआलम सानी) बनारससे रीवां आया; महाराजाने मगवान मक़ामतक पेश्वाई की, फिर शाहआ़लम अपनी गर्भवती बेगम लालबाईको छोड़कर आप बक्सरको चलागया, और महाराजा अजीतसिंहने बेगमको बड़े मान सन्मानके साथ मुकुन्दपुरके क़िलेमें रक्खा, जहांपर विक्रमी १८१७ वैशाख शुक्ल ९ [हि० ११७३ ता० ७ रमज़ान = ई० १७६० ता० २६ एप्रिल] को शाहज़ादह मुहम्मद अक्बर सानी पैदा हुआ. जब शाहआ़लम बक्सरसे लौटकर प्रयागराज (इलाहाबाद) पहुंचा, तब वहां महाराजा अजीतसिंह बेगम व शाहज़ादहको लेकर हाज़िर हुए, जिसपर शाहआ़लमने खुश होकर महाराजाको इलाक़ह चौखंडी बारह पर्गनों समेत जागीरमें लिख दिया; परन्तु उनमें महाराजाका क़ब्ज़ा न होने पाया. जब प्रयागतक अंग्रेज़ोंका राज्य जमगया, तब इन्होंने चौखंडीका दावा पेश किया, जो मंज़ूर नहीं हुआ.

---

(१) यह रघुनाथसिंह सेंगर ज़मींदारकी बन्दूक़से मरे थे, उसके बाद यह आप राणीके पास चले आये, राणीने सब क़ुसूर मुआफ़ करके मगवानकी ज़मींदारीके दो हिस्से ज़ब्त करलिये, और एक हिस्सा उनके क़ब्ज़ेमें रहने दिया.

विक्रमी १८५२ मार्गशीर्ष कृष्ण ९ [हि० १२१० ता० २३ जमादियुल्-अव्वल = ई० १७९५ ता० ६ डिसेम्बर] को बाजीराव पेशवाकी मुसल्मानी ख़वासके बेटे शम्शेर बहादुरके बेटे अलीबहादुरकी फ़ौजसे बड़ी भारी लड़ाई हुई, जिसमें सैकड़ों बघेले सर्दार व अली बहादुरकी फ़ौजका फ़ौजी अफ़्सर नानक मारागया, और आख़िरमें बघेले जीतगये. तीसरी बार विक्रमी १८५९ [हि० १२१७ = ई० १८०२] में मांडाके राजासे लड़ाई करनी पड़ी. इन लड़ाइयोंमें बघेले और कर्चलोंने बड़ी दिलेरी दिखाई थी. महाराजा अजीतसिंह बड़े अय्याश थे, जिससे मुल्क बिल्कुल अब्तर हालतको पहुंचा.

इनके पुत्र ३९ जयसिंहदेव हुए, जिनका जन्म विक्रमी १८२१ [हि० ११७८ = ई० १७६४] में, राज्याभिषेक विक्रमी १८६५ [हि० १२२३ = ई० १८०८] में, और देहान्त विक्रमी १८९१ [हि० १२५० = ई० १८३४] में हुआ.

इनके राज्यमें विक्रमी १८६९ [हि० १२२७ = ई० १८१२] में पहिला अह्दनामह ११ शर्तोंका अंग्रेज़ी सर्कारसे मारिफ़त मिस्टर जॉन रिचर्डसन् साहिबके क़रार पाया, और दूसरा मिस्टर जॉन वाचोप साहिबके ज़रीएसे विक्रमी १८७० [हि० १२२८ = ई० १८१३] में दस शर्तोंका हुआ. तीसरा विक्रमी १८७१ [हि० १२२९ = ई० १८१४] में इसी साहिबकी मारिफ़त लिखागया.

विक्रमी १८६९ [हि० १२२७ = ई० १८१२] में विश्वनाथसिंहको राज्यका कुल इख़्तियार मिला. इन्होंने भौंदूलालको अपना दीवान बनाया, इस ईमान्दार दीवानने रियासतको सरसब्ज़ किया.

विक्रमी १८७३ [हि० १२३१ = ई० १८१६] में रामनगरपर क़ब्ज़ा करके दलगंजनसिंहको गुज़रके लिये कई गावों समेत अटेवा देदिया.

विक्रमी १८७४ [हि० १२३२ = ई० १८१७] में जयसिंहदेवके दूसरे कुंवर बलभद्रसिंहको अमरपाटनका इलाक़ह गढ़ी समेत मिला.

विक्रमी १८७८ [हि० १२३६ = ई० १८२१] में ख़रीता गवर्मेण्ट ईस्ट इण्डिया कम्पनीकी तरफ़से इस शर्तका मिला, कि रीवांके इलाक़हके सर्दारोंकी नालिश अपने तौरपर न सुनी जावेगी.

विक्रमी १८८० कार्तिक कृष्ण ४ [हि० १२३९ ता० १८ सफ़र = ई० १८२३ ता० २३ सेप्टेम्बर] वृहस्पतिवारके दिन कुंवर विश्वनाथसिंहके पुत्र रघुराजसिंहका जन्म हुआ. इस ख़ुशीमें महाराज जयसिंहदेवने बहुतसा सामान और धन इनआम इक्राममें लुटाया. इसी वक्तमें विश्वनाथसिंहकी छोटी बहिन

सुभद्रकुमारीका विवाह महाराणा भीमसिंहके कुंवर जवानसिंहके साथ हुआ.

विक्रमी १८८४ [हि० १२४३ = ई० १८२७] में एक धर्मसभा क़ायम हुई, जिसका नाम "मिताक्षरा कचहरी" रक्खागया; इस कचहरीका पहिला हाकिम पांडे रामनाथ हुआ, थोड़े दिन बाद जगन्नाथ शास्त्री मुक़र्रर कियागया, जिसने बहुत अच्छा प्रबन्ध किया, यहांतक कि किसीके नालिश करनेपर खुद बाबू विश्वनाथसिंहको मुद्दआअलैहकी तरह सभामें बुलाकर इज़्हार लिया था.

इसी वर्षमें भौंदूलालका देहान्त हुआ, और उसके बाद उसका बेटा अजोध्याप्रसाद प्रधान बनाया गया, परन्तु दो वर्षके बाद यह भी मरगया; तब दीवानीका काम भौंदूलालके छोटे भाई शिवलालको सौंपागया.

पहिले महाराजा अजीतसिंहने अपनी ख़वासके बेटे भवानीसिंहको १५० ग्राम जागीरमें देदिये थे. बाबू विश्वनाथसिंहने ७५ गांव ज़ब्त करके ७५ उनके तहतमें रखने बाद चौथ लेना शुरू किया. विक्रमी १८८८ [हि० १२४७ = ई० १८३१] में ऊमरीके इलाक़ह के १० ग्राम छोड़कर सालाना मालगुज़ारी के बदलेमें सब ज़ब्त करलिये. विक्रमी १८८९ [हि० १२४८ = ई० १८३२] में ईस्ट इन्डिया कम्पनीकी तरफ़से बर्दह फ़रोशी (दास विक्रय) की मनाईका ख़रीता आया; और विक्रमी १८९० [हि० १२४९ = ई० १८३३] में विश्वनाथ-सिंहके छोटे भाई लक्ष्मणसिंहकी बेटी ऐश्वर्यकुंवरका विवाह उदयपुरके महाराणा जवानसिंहके साथ हुआ, जो महाराणाके साथ सती हुई.

इसी वर्षमें प्रधान शिवलालके मरनेपर उसका बेटा पांडे रामनाथ दीवान कियागया. इन्हीं दिनोंमें अंगदराय नामी एक आदमी महाराजा जयसिंहदेवका कर्तबी फ़र्ज़न्द बनकर बांधूगढ़में क़ब्ज़ा करबैठा. तब महाराजा और बाबू विश्वनाथसिंहने उसे गिरिफ़्तार करके देशसे निकाल दिया, और दूसरे क़िलेदारोंको भी सज़ा दी. विक्रमी १८९१ आश्विन शुक्ल १४ [हि० १२५० ता० १३ जमादियुस्सानी = ई० १८३४ ता० १८ ऑक्टोबर] को प्रयागराजमें (१) महाराजा जयसिंहदेवका देहान्त हुआ. इनका पहिला विवाह मांडाके राजा उद्योत्‌सिंह गहरवारकी बेटी शंभूकुंवरीके साथ हुआ था, जिसके पेटसे विश्वनाथसिंह, लक्ष्मणसिंह, बलभद्रसिंह, तीन पुत्र और सुभद्रकुंवरी बेटी (जिसका हाल ऊपर लिखआये हैं) पैदा हुई.

---

(१) धर्मके क़ाइदहसे महाराजा जयसिंहको हुक्मके मुवाफ़िक़ मरनेके वक़् प्रयागराज लेगये थे.

४० विश्वनाथसिंहका जन्म विक्रमी १८४६ [हि० १२०३ = ई० १७८९] में, राज्याभिषेक विक्रमी १८९१ फाल्गुन् शुक्ल २ [हि० १२५० ता० १ ज़िल्क़ाद = ई० १८३५ ता० १ मार्च] को, और देहान्त विक्रमी १९११ [हि० १२७० = ई० १८५४] में हुआ. विक्रमी १८९२ [हि० १२५१ = ई० १८३५] में प्रधान रामनाथ मरगया, और उसके छोटे भाई वंशीधर पांडेको दीवान किया. लॉर्ड बेन्टिंकने महाराजा साहिबकी दर्ख्वास्तके मूजिब पंडित नवकृष्ण भट्टाचार्य को युवराज बाबू रघुराजसिंहके पढ़ानेके लिये भेजा, जिससे बाबू साहिब अंग्रेज़ी पढ़े. इन्हीं दिनोंमें वंशीधर प्रधानसे बाबू रघुराजसिंहको मत्लबी लोगोंने नाराज़ करवाया, और महाराजा साहिबसे भी युवराजको लड़ाकर बखेड़ा उठाना चाहा, जिसका हाल इस तरहपर है–

भगवन्तराय कर्चले रायपुर वालेका एक रुक़ा ७०००० का रियासती भंडारमें था; जिसके लेनेकी भगवन्तरायने बहुतसी तद्बीरें कीं, परन्तु महाराजाने नहीं दिया; तब कर्चले सर्दारने बाबू रघुराजसिंहको बहकाकर महाराजासे सिफ़ारिश करवाई. महाराजा इस बातको टालकर विन्ध्याचल पहाड़की तरफ़ चलेगये, पीछेसे बाबू साहिबको बहकाकर दीवान वंशीधरसे नाराज़गीके साथ वह रुक़ा भगवन्तरायको दिलवादिया. तब दीवानने भगवन्तरायसे कहा कि अपनी जागीरको चला जा; परन्तु वह तो बाबू रघुराजसिंहको अपने क़ाबूमें लाकर कुछ और ही घात सोचता था, इस लिये न गया. यह सब हाल वंशीधरने महाराजाको लिखा; महाराजाने भगवन्तरायको वंशीधरके मन्शाके मुवाफ़िक़ अपनी जागीरमें चले जानेको लिखा, तब उसने बाबू साहिबको ज़ियादह बहकाया. उधर महाराजाने विन्ध्याचल से आकर गोंडामें मक़ाम किया, वहांपर बाबू साहिब मिलने गये, जिनको साथ लेकर जगन्नाथकी यात्राको रवाना हुए. दरखोड़ीके मक़ामसे बाबू साहिब शिकारका बहाना करके रीवां चले आये, और ख़ज़ानह दबाकर वंशीधरको क़ैद करनेका इरादह किया. मत्लबी लोगोंकी बहकावटसे हिमायत करनेकी हालतमें महाराजासे भी मुक़ाबला करना चाहा, परन्तु प्रधान होश्यार था, उसने अपने घर व ख़ज़ानहका बन्दोबस्त करके महाराजाको ख़बर दी. इसके सुन्ते ही महाराजा रीवां चले आये, और महन्त गोविन्ददासको ख़बर देकर बाबू साहिबको मन्दिरमें बुलवाया, और आप भी वहां चले गये; फिर रघुराजसिंहको अपने पास हाथीपर बिठाकर महलोंमें ले आये, और ख़ुदमत्लबी लोगों के गिरोहको बखेर दिया.

४१ महाराजा रघुराजसिंहका विवाह विक्रमी १९०८ वैशाख कृष्ण १२ [हि० १२६७ ता० २६ जमादियुस्सानी = ई० १८५१ ता० २८ एप्रिल] को महाराणा सर्दार-सिंहकी कन्या सौभाग्यकुंवर बाईके साथ हुआ था. इनका जन्म विक्रमी १८८० कार्तिक कृष्ण ४ [हि० १२३९ ता० १८ सफ़र = ई० १८२३ ता० २४ सेप्टेम्बर] को, राज्याभिषेक विक्रमी १९११ [हि० १२७० = ई० १८५४] में और देहान्त विक्रमी १९३६ माघ कृष्ण ९ [हि० १२९७ ता० २३ सफ़र = ई० १८८० ता० ५ फ़ेब्रुअरी] को होनेपर इनके पुत्र ४२ वंकटरमन प्रसादसिंह गद्दीपर बिठाये गये, जो अब विद्यमान हैं, जिनका जन्म विक्रमी १९३३ श्रावण कृष्ण ३ [हि० १२९३ ता० १७ जमादि-युस्सानी = ई० १८७६ ता० ११ जुलाई] को हुआ.

हालमें कई मेम्बरोंकी एक कौन्सिल पोलिटिकल एजेएटकी सलाहसे सब काम अंजाम देती है. जवान होनेपर इनको रियासतके पूरे इख्तियार मिलेंगे.

इस राज्यका क्षेत्रफल १३००० मीलमुरब्बा, आबादी २०३५००० मनुष्य, और आमदनी २५००००० रु० सालाना है. फ़ौजमें कुल ९०० सवार, १२६०० पैदल, ५६ तोप और १०० गोलन्दाज़ हैं. अंग्रेज़ी इलाक़हमें इस रियासतके राजा को १७ तोपकी सलामी मिलती है.

अह्दनामह राज्य रीवां.

नम्बर १२३.

अह्दनामह जो सर्कार अंग्रेज़ी और रीवां व मुकुन्दपुरके राजा जयसिंहदेवके दर्मियान हुआ.

पहिली शर्त- गवर्नर जेनरल कौन्सिलमें राजा जयसिंहदेवको क़ाबिज़ हक्दार हाल मुल्क रीवांका, जो उनके पास है और उनके बुज़ुर्गोंके क़ब्ज़ेमें मुद्दतसे और पुश्तहा पुश्तसे चलाआता है, मंजूर करते हैं, और हस्ब दर्ख्वास्त राजाके और राजाकी तसल्लीके लिये भी इन्साफ़के तरीक़े और सर्कार अंग्रेज़ीकी नेकनियतीसे इत्मीनान करते हैं, कि जबतक राजा और उनके वारिस व जानशीन ख़िदमत व वफ़ादारीके तरीक़ेको हस्ब मन्शा अह्दनामहके अदा करेंगे, सर्कार अंग्रेज़ी हर्गिज़ कोई काम बर्ख़िलाफ़ी या दुश्मनीका राजाके मुक़ाबलेपर नहीं करेगी, और न उनके किसी मुल्की हिस्सहपर क़ब्ज़ा या किसी तौरसे दस्तअन्दाज़ी करेगी;

बल्कि बरअ़क्स उसके सर्कार अंग्रेज़ी वादा करती है कि वह हिफ़ाज़त उनके मुल्ककी, जो अब उनके क़ब्ज़ेमें है, व मुक़ाबले ज़बर्दस्ती व ज़ियादती किसी रईस ग़ैरके, उसी तरह करेगी, जिस तरह इलाक़ह ऑनरेबल् कम्पनीकी हिफ़ाज़त होती है.

दूसरी शर्त- सर्कार अंग्रेज़ीने जो ऊपर लिखी शर्तके मुवाफ़िक़ वादा किया है, कि वह हिफ़ाज़त मुल्ककी, जो अब राजा रीवांके क़ब्ज़ेमें है, व मुक़ाबले ज़ियादती किसी रईस ग़ैरके करेगी, इसवास्ते यह इक़ार अलग अलग दोनों तरफ़से होता है- कि जब कभी राजा रीवांको अन्देशह हम्लाआवरीका किसी ग़ैर रईसकी निस्बत होगा, तो वह कैफ़ियत उसकी सर्कार अंग्रेज़ीमें रवाना करेंगे, और सर्कार हुज्जत और कोशिश उसके दूर करनेमें करेगी; अगर यह कोशिश उनकी कारआमद न होगी, तो सर्कार अंग्रेज़ी हस्ब दरख़्वास्त राजाके अपनी फ़ौज भेजनेको वास्ते हिफ़ाज़त मुल्क रीवांके मुस्तइद होगी, इस हालतमें फ़ौजका ख़र्च उस रोज़से जिस रोज़ कि वह मुल्क रीवांमें दाख़िल होगी, और जिस रोज़तक वह वापस मुल्क मज़्कूरसे बाहर जायगी, राजाको अदा करना होगा, और अगर यह अन्देशह किसी दावे या झगड़े के सबबसे दोनों तरफ़ राजा और किसी ग़ैर रईसको होगा, तो राजा उसकी कैफ़ियत मुफ़स्सल सर्कार अंग्रेज़ीको ज़ाहिर करेंगे, और सर्कार अंग्रेज़ी दर्मियानमें आकर फ़ैसला उसका करदेगी, और राजा सर्कार अंग्रेज़ीके इन्साफ़ करने और सच्चा होनेके एतिबारसे इक़ार करते हैं कि ऐसे मौक़ेपर जो फ़ैसला सर्कार अंग्रेज़ी करदेगी, उसको वे मंज़ूर करेंगे, अगर फ़ैसलेको बावजूद राजाके मंज़ूर करनेके फ़रीक़ सानी दुश्मनीकी कार्रवाईसे बाज़ न रहेगा, तो सर्कार अंग्रेज़ी मदद देनेको ऊपर लिखे मुवाफ़िक़ तय्यार होगी, और अगर किसी मौक़ेपर राजाकी फ़ौजकी ज़रूरत मुल्क अंग्रेज़ीमें होगी, तो राजा इक़ार करते हैं, कि वह फ़ौजसे मदद देंगे. और इस हालतमें फ़ौजका ख़र्च बीस रुपये फ़ी सवार और छः रुपये फ़ी पियादह सिपाहीके हिसाबसे, जो राजा देते हैं, सर्कार अंग्रेज़ी उस तारीख़से देगी, जिस तारीख़से फ़ौज मज़्कूर इलाक़ह अंग्रेज़ीमें दाख़िल होगी, और उस तारीख़तक देगी, जबतक वह वापस होकर इलाक़ह अंग्रेज़ीसे बाहर न जायगी, और जब फ़ौज राजाकी और फ़ौज अंग्रेज़ी इत्तिफ़ाक़के साथ किसी काममें मस्रूफ़ होगी तो राजाकी फ़ौजका हाकिम मुवाफ़िक़ सलाह और हिदायत फ़ौजी अफ़्सर अंग्रेज़ीके कार्रवाई करेगा.

तीसरी शर्त- जोकि राजा रीवांकी हुकूमत कुल उनके इलाक़हमें मन्ज़ूर होचुकी है, इसलिये सर्कार अंग्रेज़ी अपने तई नालिशें सुन्नेका मुख़्तार, जो उसके

रूबरू कोई रिश्तेदार, रिआया या मुलाज़िम राजाका पेश करे, ख़याल नहीं करेगी, और राजा सर्कारसे अपनी हुकूमत क़ाइम करनेको अपने इलाक़हके अन्दर फ़ौजी मदद पानेके हक़्दार नहीं होंगे.

चौथी शर्त- अगर राजा रीवांका कोई दावा या नालिशकी वजह निस्बत किसी राजा या रईस, दोस्त या मातहत सर्कार अंग्रेज़ीके होगी, तो राजा इक़ार करते हैं, कि वह दावे मज़्कूरको सरपंची व फ़ैसलेके लिये सर्कारके सुपुर्द करेंगे, और जो फ़ैसला सर्कार करदेगी, उसको मन्ज़ूर करेंगे, और किसी तरहकी वह खुद ज़ियादती निस्बत फ़रीक़ मुक़ाबिलके न करेंगे, और न बज़रीए अपनी फ़ौजके बदला दावेका या एवज़ नालिशका, जो उनको दाइर करनी है, लेंगे; और सर्कार अंग्रेज़ी अपनी तरफ़से वादह करती है कि वह अपने दोस्त और मातहतको मना करेगी, कि वह राजा रीवांपर ज़ियादती न करे, और मुज्रिमको सज़ादेगी, और राजा रीवांपर किसीका कुछ दावा वाजबी होगा तो उसका फ़ैसला इन्साफ़की रू से सरपंच बनकर करेगी, और राजा वादह करते हैं कि वह उस फ़ैसलेको मन्ज़ूर करेंगे, जो सर्कार ऐसे मौक़ेपर करदेगी.

पांचवीं शर्त- राजा रीवां इक़ार करते हैं, कि वे अपने मुल्कमें सर्कार अंग्रेज़ीके किसी दुश्मनको या फ़साद उठाने वालेको पनाह न देंगे, बल्कि उसके बख़िलाफ़ उन लोगोंको गिरिफ़्तार करनेके लिये पूरी कोशिश करेंगे, और अगर वे गिरिफ़्तार होजावेंगे, तो उनको सर्कार अंग्रेज़ीके अफ़्सरोंको सौंप देंगे; और राजा यह भी वादह करते हैं कि वे ऐसे लोगोंके बाल बच्चोंको भी अपने मुल्कमें न रहने देंगे, और अगर राजाका कोई दुश्मन, या राजाकी हुकूमतका सर्कश, अंग्रेज़ी इलाक़हमें पनाह लेगा, तो राजासे इत्तिला पानेपर सर्कार अंग्रेज़ी पूरी २ तह्क़ीक़ात करनेके बाद उसकी निस्बत वे तरीक़े जारी रक्खेगी, जो इन्साफ़ और बेतरफ़दारीके मुताबिक़ होंगे, और यह भी तद्बीर अमलमें लावेगी कि वे आगेको कोई बुरा काम मुल्क और राजाकी हुकूमतकी निस्बत न करें.

छठी शर्त- जो कि लुटेरे लोग अक्सर राजा रीवांके मुल्कसे जाकर अंग्रेज़ी इलाक़ोंमें चोरी वग़ैरह करते हैं, इसलिये राजा इक़ार करते हैं कि अगर गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीका कोई अफ़्सर उनके पास इत्तिलाई तह्रीर भेजेगा, तो वे ऐसे मुज्रिमोंके गिरिफ़्तार करनेमें कोशिश करेंगे, और जब गिरिफ़्तार होंगे, तो उनको उक्त सर्कारी अफ़्सरके सुपुर्द करदेंगे.

सातवीं शर्त- अगर रीवांके राजाका कोई भाई या नौकर गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीके साम्हने राजाकी बुराई करेगा, या उनपर तुहमत या इल्ज़ाम लगावेगा, तो

गवर्मेण्ट बग़ैर तह्क़ीक़ात और सुबूतके ऐसे शख्सके बयानका एतिबार न करेगी.

आठवीं शर्त- राजा रीवांकी इज़्ज़त और रुत्बे और शानका सर्कार अंग्रेज़ी वैसा ही लिहाज़ रक्खेगी, जैसा कि हिन्दुस्तानके बादशाह रखते थे.

नवीं शर्त- जब कभी सर्कार अंग्रेज़ी राजा रीवांके मुल्कमें फ़ौजके भेजनेकी ज़रूरत या उक्त राजाके इलाक़हके किसी मक़ाममें मुल्ककी हिफ़ाज़तके लिये अपनी फ़ौजकी छावनी, किसी दुश्मनके हम्ला करनेसे या किसी दुश्मनके रास्ता रोकनेकी नज़रसे या पिंडारोंकी या दूसरी लुटेरी क़ौमोंकी वापसीके वक्त, डालना मुनासिब समझे, तो वह ऐसी फ़ौजके भेजनेका इख्तियार रखती है, और रीवांके राजा इस बारेमें रज़ामन्दी ज़ाहिर करेंगे, और ऐसे मौक़ेपर गवर्मेण्ट अंग्रेज़ीके अफ्सरोंकी सलाहके मुवाफ़िक़ मक़ाम चन्दिया घाटा, कोरिया और दूसरे घाटोंके लिये, जो अंग्रेज़ी कमान्डिंग अफ्सर बतायेंगे, मुक़र्रर करेंगे, जो अंग्रेज़ी कमान्डिंग अफ्सर इस तरह राजाके मुल्कमें रहेगा, वह राजाकी हुकूमतके बन्दोवस्तमें किसी तरह दख्ल न देगा. जो कुछ अस्बाब या रसद वग़ैरह अंग्रेज़ी छावनी या अंग्रेज़ी फ़ौजके वास्ते, जबतक कि वह राजाके मुल्कमें रहे दर्कार होगी, फ़ौरन् राजाके अहलकार और रअय्यत मौजूद करदेंगे, और उनकी क़ीमत बाज़ारके भावके मुवाफ़िक़ अदा होगी; अगर कोई चीज़ बहुत ज़रूरी हो, और बाज़ारमें ख़रीदनेपर नहीं मिलती हो, तो ज़रूर होगा कि वह राजाके इलाक़हमें जहां मिले वहांसे लीजायगी, और उसकी क़ीमत मुवाफ़िक़ तज्वीज़ पंचोंके जो सर्कार अंग्रेज़ी और उक्त राजाकी तरफ़से मुक़र्रर होंगे, दीजायगी.

दसवीं शर्त- रीवांके राजा, अब सर्कार अंग्रेज़ीके दोस्तोंमें गिनेगये हैं, इस लिये इक़ार करते हैं, कि जो सलाह और काम मुल्कके फ़ायदों और बिहतरीके मुतअल्लिक़ सर्कार अंग्रेज़ी कहेगी, उसकी तामील करेंगे, और जहांतक होसकेगा, सर्कार अंग्रेज़ीकी दोस्ती और एकताके तरीक़ोंके पूरा करनेमें कोशिश करेंगे.

ग्यारहवीं शर्त- यह अह्दनामह, जिसमें ग्यारह शर्तें दर्ज हैं, आजकी तारीख़ सर्कार अंग्रेज़ी और रीवांके राजा जयसिंहदेवके दर्मियान एक तरफ़ मिस्टर जॉन रिचर्डसन् साहिबकी मारिफ़त राइट ऑनरेबल् लार्ड मिन्टो गवर्नर जेनरलके दियेहुए इख्तियारोंसे, और दूसरी तरफ़ उक्त राजाके वकील बख़्शी भगवानदत्तकी मारिफ़त क़रार पाया; और मिस्टर रिचर्डसन् साहिबने एक नक़्ल इस अह्दनामहकी अंग्रेज़ी, फ़ार्सी, और हिन्दीमें अपनी मुहर और दस्तख़त करके वकील मज़्कूरको दी, और उक्त वकीलने मिस्टर रिचर्डसन् साहिबको

एक नक्ल राजाकी तस्दीक़ कीहुई दी. मिस्टर रिचर्डसन् साहिबने वादा किया, कि ३० तीस रोज़के अर्सेमें एक नक्ल कम्पनीकी मुहर और गवर्नर जेनरल इन कौन्सिलके दस्तख़त कीहुई मंगादेंगे, उस वक्त यह नक्ल, जो रिचर्डसन् साहिबने अपनी दस्तख़ती दी है, वापस होगी, और अह्दनामह उस वक्तसे जाइज़ (दुरुस्त) और पूरा समझा जावेगा.

यह अह्दनामह दस्तख़त और मुहर होकर मक़ाम बांदामें तारीख़ ५ माह ऑक्टोबर सन् १८१२ ई० को आपसमें तक्सीम हुआ.

नम्बर १२४.

अह्दनामह, जो दर्मियान सर्कार अंग्रेज़ी और
राजा जयसिंहदेवके क़रार पाया.

जोकि तारीख़ ५ माह ऑक्टोबर सन् १८१२ ई० मुताबिक़ आश्विन कृष्ण ऽऽ संवत् १८६९ को एक अह्दनामह आपसकी दोस्ती और एकताका दर्मियान सर्कार अंग्रेज़ी और राजा रीवांके क़रार पाया था, और चूंकि राजा रीवांने उन शर्तोंके पूरा करनेमें, जो अह्दनामह मज़्कूरके रूसे उनके ऊपर फ़र्ज़ थीं, कमी की, इसलिये सर्कार अंग्रेज़ीको लाज़िम आया कि अपने हक़ और इज़्ज़तका बदला ले; इसवास्ते रीवांमें फ़ौज भेजीगई, कि उन शर्तोंकी तामील उनसे करावे; और आगेके वास्ते तामील करनेका इत्मीनान करे. और चूंकि अब राजा होशमें आया, तो समझा कि उसको सर्कार अंग्रेज़ीके निस्बत क्या करना था, गुज़श्तहकी मुआफ़ी मांगी, उसने नीचे लिखीहुई शर्तोंको अपनी तरफ़से और अपने वारिसों और जानशीनकी तरफ़से मन्जूर किया:-

पहिली शर्त- तमाम शर्तें उस अह्दनामहकी जो ५ माह ऑक्टोबर सन् १८१२ ई० मुताबिक़ आश्विन कृष्ण ऽऽ संवत् १८६९ को क़रार पाया था, इस तहरीर के ज़रीएसे जाइज़ (दुरुस्त) और तामीलके लायक़ समझी जावेंगी, जिस क़द्र इस अह्दनामहकी शर्तोंके रूसे तब्दील न हुई होंगी, या घटी बढ़ी न होंगी.

दूसरी शर्त- राजा रीवां अह्द करते हैं, कि वह मुल्की मुआमलातमें किसी गैर राजा या रईससे गवर्मेण्ट अंग्रेज़ी या उनके साहिब एजेण्टकी इत्तिला और रज़ा-मन्दीके बगैर, जो बुंदेलखण्डमें मुक़ीम हो, ख़त किताबत नहीं करेंगे.

तीसरी शर्त- राजा वादा करते हैं, कि अपने रहनेके मकाममें एक अख़्बार-नवीस या एजेएटको गवर्मेएट अंग्रेज़ी या बुंदेलखण्डके साहिब एजेएटकी तरफ़से रहनेदेंगे, और एक अपना वकील या मुख़्तार साहिब एजेएट या अंग्रेज़ी फ़ौजके कमान्डिंग अफ़्सरके साथ, जो उनके मुल्कमें रहेगा, दोस्तीकी रस्में क़ायम रखने, रसद पहुंचाने और कमान्डिंग अफ़्सर मज़्कूरके वाजबी हुक्मोंकी तामील करनेके वास्ते रक्खेंगे.

चौथी शर्त- राजा रीवां इक़ार करते हैं कि वह अपने मुल्कमें सर्कारी डाक, जहां गवर्मेएट अंग्रेज़ीके अफ़्सर ज़रूरी और मुनासिब समझेंगे, क़ायम करवादेंगे, और अपने मातह्त रईसोंको भी ऐसा ही करने की इजाज़त देंगे; अगर कोई ऐसा न करेगा, तो उसको सज़ा देंगे, और मातह्त रईसोंके ऐसे इन्कारकी बाबत राजा मंज़ूर करते हैं कि गवर्मेएट अंग्रेज़ी उनको राजाका क़ाबू न होनेकी सूरतमें हक़ सज़ा देनेका रक्खेगी.

पांचवीं शर्त- चौरहटके जागीरदार लालज़बर्दस्तसिंहने बहुत बुरी तरह और गुस्ताख़ीसे इन्कार किया, कि ऑनरेबल् कम्पनीकी डाक उसकी जागीरमें क़ायम न हो, इस सबबसे उसकी निस्बत सख़्त सज़ा ज़रूर हुई; इसलिये गवर्मेएट अंग्रेज़ीका इरादह है कि उसको सख़्त सज़ा दे. और राजा रीवांने उसका सिर्फ़ सज़ा देनेका हक़ ही मन्ज़ूर नहीं किया, बल्कि इक़ार किया, कि वह जागीरदार मज़्कूरके सज़ा देनेमें उस (सर्कार अंग्रेज़ी) को मदद देंगे, और शामिल रहेंगे.

राजा यह भी वादा करते हैं, कि अगर गवर्मेएट अंग्रेज़ीकी सलाह होगी, तो वह ख़ुद लालज़बर्दस्तसिंहके सज़ादेनेकी तज्वीज़में कोशिश करेंगे.

छठी शर्त- अक्सर वार्दात चोरी और दूसरे जुर्मोंकी अंग्रेज़ी इलाक़ोंमें हुई हैं, और मुज्रिमोंने मुल्क रीवांसे निकलकर यह जुर्म किये हैं, और उन्होंने मुल्क रीवांमें पनाह ली है, जिसके सबब वे सिर्फ़ सज़ासे ही नहीं बचे रहते, बल्कि हमेशह ऑनरेबल् कम्पनीके पासवाले मुल्कमें लूट मार करते हैं, और सज़ासे बचेरहते हैं, और बाशिन्दोंको हमेशह डराये रखते हैं; इसका बन्दोबस्त होनेकी नज़रसे राजा वादा करते हैं कि वह सर्कार अंग्रेज़ीकी फ़ौज और उसकी पुलिसके अफ़्सरोंको इजाज़त देंगे कि वे मुल्क रीवांमें होकर तलाश करके उनको गिरिफ़्तार करें, और ख़ुद भी इस काममें मदद देंगे, और अपने अहल्कारों और जागीरदारोंको हुक्म देंगे, कि मदद करके ऐसे मुज्रिमोंका, जिनकी तलाशमें वे आये हों, पता लगाकर उनको गिरिफ़्तार करादें.

सातवीं शर्त- राजा रीवां वादा करते हैं, कि वे उन जागीरदारों वगैरहको, और दूसरे लोगोंको जो उनके मुल्कमें रहते हैं, और जो ऐसे मौक़ेपर सर्कार अंग्रेज़ीके खैरख्वाह रहे हैं, अपना दोस्त समझेंगे, और उनसे इस खैरख्वाहीकी बाबत बाज़पुर्स न करेंगे; और सर्कार अंग्रेज़ीके दोस्त, उनके भी दोस्त, और सर्कारके दुश्मन, उनके भी दुश्मन समझे जावेंगे.

आठवीं शर्त- तारीख़ २ माह मई सन् १८१३ ई० मुताबिक़ वैशाख शुक्क २ संवत् १८७० को एक अहृदनामह राजा रीवांकी तरफ़से लाला प्रतापसिंह और फ़ौज अंग्रेज़ीके कमान्डिंग कर्नेल् मार्टिन्डल् साहिबके दर्मियान इस मज़्मूनका क़रार पाया था, कि आइन्दहको कोई हरकत मुख़ालफ़तकी दोनों तरफ़से न होगी; परन्तु सिपाहियोंके एक गिरोहपर, जो लड़ाईके सामानके छकड़ेके साथ, सिंगरौनाके रास्ते होकर जानेवाली फ़ौजके मुतअ़ल्लिक़ था, तारीख़ ७ मई सन् १८१३ ई० मुताबिक़ वैशाख शुक्क ७ संवत् १८७० को अहृदनामहके ख़िलाफ़ और फ़रेबके साथ सवारों और पैदलोंके एक बड़े गिरोहने गांव सतनीके पास हम्ला किया, और अक्सर सिपाहियोंको क़त्ल और ज़ख्मी करके सामान लूट लिया. राजा रीवां इस बातसे बहुत इन्कार करते हैं, और क़सम खाकर अपनी ना वाक़िफ़ियत ज़ाहिर करते हैं. और अपनी शामिलात और वाक़िफ़ीसे पूरा इन्कार करके वादा करते और मन्ज़ूर करते हैं, कि सर्कार अंग्रेज़ीको इख्तियार है, कि इस जुर्मके करनेवालोंको, जिस तरह चाहे, और जब मन्ज़ूर हो, सख्त सज़ा देवे; और राजा यह भी वादा करते हैं, कि वह इस कामकी सज़ा देनेमें, जिस तरह और जिस तौरपर, सर्कार अंग्रेज़ीको मन्ज़ूर होगा, हर तरहकी मदद देंगे, और शरीक रहेंगे.

नवीं शर्त- यह अम्र मुनासिब और दुरुस्त मालूम होता है, कि राजा रीवां सर्कार अंग्रेज़ीको उस फ़ौजके खर्चकी बाबत, जो रीवांमें राजाके अहृदनामह के ख़िलाफ़ कार्रवाई करनेके सबब तय्यार होकर आई थी, बदला और एवज़ देवें, और कमसे कम तख़मीनहसे इस खर्चका ३३८०८ रुपया माहवारी होता है, और सामान इस मुहिमका पहिली एप्रिल सन् १८१३ ई० मुताबिक़ चैत्र कृष्ण ऽऽ संवत् १८७० से शुरू हुआ था, सो उस तारीख़से हिसाब होना चाहिये. इसलिये राजा रीवां अपनेको इस माहवारी खर्चके अदा करनेका ज़िम्मेहवार, जो पहिली एप्रिल सन् १८१३ ई० मुताबिक़ चैत्र कृष्ण ऽऽ संवत् १८७० से मुहिमके ख़त्म होने तक हुआ, मन्ज़ूर करते हैं. इस नज़रसे कि राजाने बदला

देनेके हुक्मोंकी तावेदारी करके ख़ुद कर्नेल् मार्टिन्डल् साहिबके मक़ाममें आकर सर्कारी फ़र्मांबर्दारी क़ुबूल की, और इस लिहाज़से कि राजाको मुक़र्रर वक्तपर कोई उज्र रुपया मज़्कूर अदा करनेमें न हो, सर्कार अंग्रेज़ी रज़ामन्दी ज़ाहिर करती है, कि जिस रोज़से उक्त राजा कर्नेल् साहिबके मक़ाममें आये, याने तारीख़ १० माह मई सन् १८१३ ई० मुताबिक़ वैशाख शुक्ल १० संवत् १८७० तक, हिसाब ख़त्म हुआ; इस हिसाबसे राजाको ४५१७३ रुपये देने चाहियें. और राजा मन्ज़ूर करके वादा करते हैं कि ये रुपये नीचे लिखी हुई क़िस्तोंके मुवाफ़िक़ जमा करावेंगे, और अगर इसमें फ़र्क़ होगा, तो उनपर वादा पूरा न करनेका इल्ज़ाम लगेगा-

तारीख़ ८ जून सन् १८१३ ई० मुताबिक़ ज्येष्ठ शुक्ल १० वि० १८७० को .... ५००० रुपया.

तारीख़ १० ऑगस्ट सन् १८१३ ई० मुताबिक़ श्रावण कृष्ण ऽऽ वि० १८७० को .... १३४०० रुपया.

तारीख़ ६ डिसेम्बर सन् १८१३ ई० मुताबिक़ मार्गशीर्ष कृष्ण ऽऽ वि० १८७० को .... १३४०० रुपया.

तारीख़ २३ जून सन् १८१४ ई० मुताबिक़ ज्येष्ठ कृष्ण ३ वि० १८७१ को .... १३३७३ रुपया.

मीज़ान- ४५१७३ रुपया.

दसवीं शर्त- यह अह्दनामह, जिसमें दस शर्तें दर्ज हैं, आजकी तारीख़को सर्कार अंग्रेज़ी और रीवांके राजा जयसिंहदेवके दर्मियान, एक तरफ़ मारिफ़त मिस्टर जॉन वाचोप साहिबके, राइट ऑनरेबल् लॉर्ड मिन्टो, गवर्नर जेनरल इन् कौन्सिलके दियेहुए इख्तियारोंसे, और दूसरी तरफ़ ख़ुद राजाके क़रार पाकर मिस्टर वाचोप साहिबने राजाको एक नक्ल इस अह्दनामहकी अंग्रेज़ी, फ़ार्सी और हिन्दीमें अपने मुहर और दस्तख़त करके दी, और राजाने मिस्टर वाचोप साहिब को एक नक्ल अपने मुहर और दस्तख़त कीहुई दी; और वाचोप साहिबने वादा किया, कि वह राजाके मोतबर वकीलको तीस दिनके अर्सेमें एक नक्ल गवर्नर जेनरल बहादुरके मुहर और दस्तख़त कीहुई मंगादेंगे, और जब वह नक्ल उनको दीजायगी, तो अह्दनामहकी वह नक्ल, जो साहिबने उनको अपने मुहर और दस्तख़तकी दी है, वापस कीजायगी, और उस वक़्तसे अह्दनामह दुरुस्त और तामीलके क़ाबिल समझा जावेगा.

दस्तख़त और मुहर होकर उसकी नक्लें टोंस नदीके किनारेपर मक़ाम बदीरामें २ जून सन् १८१३ ई० मुताबिक़ ज्येष्ठ शुक्ल ४ संवत् १८७० को आपसमें तक्सीम हुई.

उस अ़हदनामहकी शर्तोंका ततिम्मह (बाक़ी हिस्सह) जो दूसरी जून १८१३ ई० मुताबिक़ ज्येष्ठ शुक्ल ४ संवत् १८७० को दर्मियान ऑनरेबल् ईस्ट इन्डिया कम्पनी और रीवांके राजा जयसिंहदेवके हुआ था.

जो कि तारीख़ २ जून सन् १८१३ ई० मुताबिक़ ज्येष्ठ शुक्ल ४ संवत् १८७० को ऑनरेबल् कम्पनी और राजा रीवांके दर्मियान क़रार पायेहुए अ़हदनामहकी तीसरी शर्तके रूसे राजा रीवांने वादा किया है, कि वह एक अख़्बार नवीसको सर्कार अंग्रेज़ीकी तरफ़से या बुन्देलखण्डके एजेन्टकी तरफ़से अपने दर्बारमें रहनेकी इजाज़त देंगे, और जो कि राजाने उक्त अ़हदनामहकी चौथी शर्तके मुताबिक़ यह वादा किया है, कि वह अपने इलाक़हमें सर्कारी डाक, जिस तरफ़ और जहां, अंग्रेज़ी अफ्सरोंकी मर्ज़ी होगी, क़ायम करेंगे; इस वास्ते राजा उक्त शर्तोंके मन्शाके मुताबिक़ वादा करते हैं, कि वह सर्कार अंग्रेज़ी या बुन्देलखण्डके साहिब एजेन्टके अख़्बारनवीस या वकीलकी हर तरहसे इज़्ज़त और ताज़ीम अपनी शानके मुवाफ़िक़ करेंगे; और अपने इलाक़हमें हर्कारों और क़ासिदों वग़ैरहको, जिस वक्त और जिस मौकेपर, अंग्रेज़ी अफ्सर उनको रवाना करना मुनासिब और ज़रूरी समझेंगे, बग़ैर रोक टोकके इलाक़हमेंसे गुज़रने देंगे; और अपने मातहत रईसोंको भी इसी तरहकी कार्रवाई का हुक्म देंगे, और उनको हिदायत करदेंगे कि अगर कोई ऐसा न करेगा, तो वह उस सज़ाके लायक़ होगा, जो कि डाकके हुक्मोंकी हुक्म उदूलीके बाबत मुक़र्रर कीगई है. और राजा यह भी वादा करते हैं कि वह हर वक्त ऐसे काम करते रहेंगे, जो दोस्तीके लायक़ होंगे, और जो हमेशह दोनों रियासतोंमें दोस्तीके चाहनेवाले रहें, और वह काम भी, जो उक्त अ़हदनामहकी शर्तोंके पूरा करनेके लिये ज़रूरी हों, अमलमें आयेंगे.

दस्तख़त मिन्टो.
दस्तख़त- एन. बी. एडमन्स्टन्.
दस्तख़त- ए. सेटन्.

मक़ाम फ़ोर्ट विलिअम् वाक़ै बंगालामें तारीख़ २५ जून सन् १८१३ ई० को लिखागया.

दस्तख़त जे. मौंक्टन्,
फ़ार्सी सेक्रेटरी गवर्मेण्ट.

नम्बर १२५.

चौरहटके जागीरदार लालज़बर्दस्तसिंहका
इक़ारनामह.

जो कि मैंने ऑनरेबल् कम्पनीकी डाक अपनी जागीरके इलाक़हमें मुक़र्रर किये जानेकी वावत बर्ख़िलाफ़ी की थी, इस सववसे तारीख़ २ जून सन् १८१३ ई० को सर्कार अंग्रेज़ी और सर्कार रीवांके दर्मियान क़रार पाये हुए दूसरे अहदनामहकी पांचवीं शर्तके मुवाफ़िक़ यह शर्त हुई कि सर्कार अंग्रेज़ीको इख़्तियार है, कि मुझे पूरी पूरी सज़ा देवे; और जो कि अंग्रेज़ी मक़ाममें, सर्कार अंग्रेज़ीकी फ़र्मांवर्दारी करनेकी नियतसे, मेरे हाज़िर होनेके सबब, और साहिब पोलिटिकल सुपरिण्टेन्डेन्ट वहादुरकी ख़िद्मतमें एक इक़ारनामह दाख़िल करनेके सबब, कि जब कभी सर्कार अंग्रेज़ीको मन्ज़ूर हो, मेरा इलाक़ह और क़िला हाज़िर है, सर्कार अंग्रेज़ीने रहम करके मेरे क़ुसूरोंको मुआफ़ फ़र्माया, और मुझको अपने इलाक़हमें दुबारा इस हुक्मसे क़ाइम किया, कि जो दोस्तीके तरीक़े सर्कार अंग्रेज़ी और सर्कार रीवांके दर्मियान क़रार पाये हैं, उनके पूरा करनेमें जहांतक होसके कोशिश करूंगा, इस वास्ते मैं इस तहरीरके ज़रीएसे इक़ार करता हूं, कि मैं पिंडारों और दूसरी लुटेरी क़ौमोंको, जो मेरे इलाक़हमेंसे होकर गुज़रेंगी, रोकूंगा, और सब हुक्मोंकी तामील बग़ैर तअम्मुलके किया करूंगा, जो अंग्रेज़ी अफ़्सर लुटेरोंके गिरोहका, या डाकका बन्दोबस्त करनेकी बाबत, या छावनी तय्यार करानेका सामान एकट्ठा करने, या अंग्रेज़ी फ़ौजकी रसद वग़ैरहके, या हर क़िस्मके हर्कारों, क़ासिदों और ख़बर पहुंचानेवालोंकी निस्बत, या मुज्रिमोंके गिरिफ़्तार और सुपुर्द करनेके बारेमें हुक्म जारी करेंगे; चाहे वे हुक्म मेरे नाम या राजा रीवांकी मारिफ़त जारी हों.

दस्तख़त जे. वाचोप,
पोलिटिकल सुपरिन्टेन्डेन्ट.
मुतअल्लिक़ बुंदेलखण्ड.

नम्बर १२६.

तीसरा अ़हृदनामह, जो सर्कार अंग्रेज़ी और
सर्कार रीवांके दर्मियान क़रार पाया.
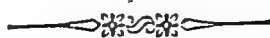
जो कि सर्कार अंग्रेज़ी और सर्कार रीवांके दर्मियान २ जून सन् १८१३ ई० मुताबिक़ ज्येष्ठ शुक्ल ४ संवत् १८७० को क़रार पाये हुए दूसरे अ़हृदनामह की पांचवीं और आठवीं शर्तोंके रूसे सर्कार अंग्रेज़ीको चौरहटके जागीरदार लाल-ज़बर्दस्तसिंह और ज़िले सिंगरौनाके दूसरे ज़मींदारोंको उन बाज़े जुर्मोंकी बाबत, जो उनसे सर्कार अंग्रेज़ीके ख़िलाफ़ हुए हैं, सज़ा देनेका हक़ हासिल हुआ; और ज़रूरी नतीजा इस हक़का यह हुआ, कि सर्कार अंग्रेज़ीको उन लोगोंको उनके इलाक़ोंसे ख़ारिज करने और उनकी ज़मींदारीके हक़ दूसरे शख़्सको देनेका इख़्तियार हासिल हुआ (उन इलाक़ोंकी पूरी मिल्कियतके हक़ पहिलेके मुवाफ़िक़ वग़ैर मुज़ाहमत सर्कार रीवांके रहेंगे); यानी सर्कार अंग्रेज़ीको, उन लोगोंके हक़, जिनके हक़ उक्त अ़हृदना-महकी पांचवीं और आठवीं शर्तोंके रूसे ज़ब्त होने क़ाबिल हैं, छीनकर उन लोगोंको, जिनको वह पसन्द करे, इस शर्तपर देनेका हासिल हुआ है, कि हालके क़ब्ज़ा रखनेवाले सर्कार रीवांकी निस्बत दोस्तीके वे तरीक़े जारी रक्खें, जो अव्वलके ख़ारिज किये हुए ज़मींदार रखते थे; और जो कि सर्कार रीवांको अपना पूरा हक़ उन ज़ब्त किये हुए इलाक़ोंका, ऊपर लिखे हुए शख़्सोंपर हासिल है रक्खें, और यह ख़्वाहिश सर्कार अंग्रेज़ीकी वग़ैर ख़ुदग़रज़ीके है, कि उन लोगोंके फ़ाइदहकी तरक़्क़ी रहे, जिन्होंने अंग्रेज़ी फ़ौजके साथ, जब कि वह रीवांकी मुहिममें मस्रूफ़ थी, दोस्ती और एकता ज़ाहिर की है; इसलिये नीचे लिखी हुई तज्वीज़ दोनों तरफ़की रज़ामन्दीसे सर्कारोंके आरामके वास्ते मन्ज़ूर हुई-

पहिली शर्त- अ़हृदनामों और इक़ारनामोंकी तमाम शर्तें, जो अबतक सर्कार अंग्रेज़ी और सर्कार रीवांके दर्मियान क़रार पाई हैं, इस तहरीरके रूसे क़ाइम और बहाल रहेंगी, जहां तक कि उनमें कोई तब्दीली इस अ़हृदनामहकी शर्तोंके रूसे न हुई होगी.

दूसरी शर्त- सर्कार अंग्रेज़ी इस तहरीरके रूसे आजकी तारीख़से ज़िले सिंगरौनाके तमाम मालिकाना हक़, जो उनको तारीख़ २ जून सन् १८१३ ई० मुताबिक़ ज्येष्ठ शुक्ल ४ संवत् १८७० के क़रार पायेहुए दूसरे अ़हृदनामहकी आठवीं

शर्तकी कार्रवाईके रूसे हासिल हुए हैं, इस अम्रके सिवाय बख़्शती है, कि महाराजा रीवां रघुपालसिंहको सतनीके इलाक़हमें, जो उसके पास पहिले था, दुबारा क़ाइम न करेंगे, और यह भी कि सर्कार रीवां उन लोगोंकी नेक चलनीकी ज़िम्मह्दार रहेगी, जो अब ज़ब्त कियेहुए इलाक़ोंमें क़ाइम होंगे.

तीसरी शर्त- ता० २ जून सन् १८१३ ई० मुताबिक़ संवत् १८७० ज्येष्ठ शुक्ल ४ के अह्दनामहकी नवीं शर्तके मुताबिक़ जो जुर्मानह सर्कार रीवांने समेरियाके जागीरदार लालजगमोहनसिंहपर किया था उसका कोई हिस्सह वसूल करनेका बिल्कुल हक़ इस तहरीरके ज़रीएसे सर्कार रीवां छोड़देती है.

चौथी शर्त- सर्कार अंग्रेज़ी यह चाहती है कि समेरिया वाला लालजगमोहनसिंह अपनी हालकी जागीरपर बहाल रहे; इस वास्ते सर्कार रीवां इस तहरीरके ज़रीएसे वादा करती है, कि लालजगमोहनसिंह अपने इलाक़हमें, जो अब उसके पास है, बग़ैर मुज़ाहमतके बहाल और बरक़रार रहेगा, परन्तु जो बर्ताव उसकी निस्बत सर्कार रीवांके हैं वे बदस्तूर रहेंगे.

पांचवीं शर्त- दूसरे अह्दनामहकी सातवीं शर्तके रूसे सर्कार रीवांने वादा किया है कि वह किसी जागीरदार या किसी और से, जो रीवांका रहनेवाला होगा, और जिसने सर्कार अंग्रेज़ीकी ख़ैरख़्वाही की होगी, मुज़ाहिम न होंगे. वे लोग, जिन्होंने आदमियतके तरीक़ेसे उन अंग्रेज़ी सिपाहियोंकी रिआयत की है, जो संवत् १८७० के वैशाख महीने में सतनी मक़ामपर ज़ख़्मी हुए थे, और वे लोग जिन्होंने उन लोगोंकी इत्तिला दी थी, जो इस फ़सादमें शामिल थे, या जो दूसरे रोज़ उस सिपाहीके क़त्ल करनेमें शरीक हुए थे, जो शहर रायपुरकी हिफ़ाज़तके वास्ते मुक़र्रर था, उन लोगोंके नज़्दीक मुज्रिम समझेगये थे, जो किसी तरह इस फ़सादमें शामिल थे; इस वास्ते सर्कार रीवां इस तहरीरके ज़रीएसे पक्का वादा करती है कि वह उन लोगोंकी हिफ़ाज़त करेंगे, व उनकी निस्बत किसी तरहकी तक्लीफ़ या मुज़ाहमत ज़िक्र कीहुई मददकी बाबत, जो सर्कार अंग्रेज़ीके काममें उन्होंने ज़ाहिर की है, न होने देंगे.

छठी शर्त- चौरहटका जागीरदार लालज़बर्दस्तसिंह, जो ख़ुशीसे हाज़िर हुआ, और उसने बग़ैर शर्तके सर्कार अंग्रेज़ीकी तावेदारी मन्ज़ूर की, इस लिये गवर्मेंट अंग्रेज़ीने ख़ुश होकर उसके अगले क़ुसूर मुआफ़ फ़र्माये, और उसको दुबारा उसके इलाक़हपर, जो अगली बद चलनीके सबब ज़ब्त होगया था, इस शर्तपर

क़ाइम किया कि, वह इक़ारनामह दाख़िल करे कि दुबारा क़ुसूर किसी नाजाइज़ कामका सर्कार अंग्रेज़ीके निस्बत न होगा; और इस इक़ारनामहकी तस्दीक़ की हुई नक़्ल सर्कार रीवांको दीगई. जो कि इस इक़ारनामहमें कोई बात हक़ोंके ख़िलाफ़ दर्ज नहीं है, जो सर्कार अंग्रेज़ीको रीवांके अ़ह्दनामोंके मुताबिक़ हासिल हुई है; इसलिये सर्कार रीवां सर्कार अंग्रेज़ीसे उसी तरह ज़िम्मह्दार होती है कि इस इक़ारनामहकी शर्तें पूरी कीजावेंगी, जिस तरह कि वह क़रार पाये हुए अ़ह्दनामों और अपने मातह्तों और दोस्तोंकी निस्बत हुए हैं.

सातवीं शर्त– यह अ़ह्दनामह, जिसमें सात शर्तें दर्ज हैं, आजके रोज़ सर्कार अंग्रेज़ी और सर्कार रीवांके दर्मियान, एक तरफ़ मिस्टर जॉन वाचोप साहिबकी मारिफ़त राइट ऑनरेबल् अर्ल ऑव मिन्टो, गवर्नर जेनरलके दियेहुए इख़्तियारोंसे, और दूसरी तरफ़ रीवां व मुकुन्दपुरके राजा जयसिंहदेव और उनके बड़े बेटे बाबू विश्वनाथसिंहके जो मुल्क रीवांके इन्तिज़ाममें उनके शरीक हैं, क़रार पाया; और मिस्टर वाचोप साहिबने इस अ़ह्दनामहकी एक नक़्ल अंग्रेज़ी, फ़ार्सी और हिन्दीमें अपनी मुहर और दस्तख़त करके उक्त राजा और बाबूको दी; और राजा व बाबूने एक नक़्ल अपनी मुहर व दस्तख़तसे मिस्टर वाचोप साहिबको दी; और साहिब मौसूफ़ने वादा किया, कि एक नक़्ल तस्दीक़ कीहुई, कम्पनीकी मुहर और गवर्नर जेनरल इन् कौन्सिलके दस्तख़तोंसे, सर्कार रीवांके मुख़्तार मोतबरको तीस दिनके अर्सेमें मंगादेंगे, उस नक़्लके आने बाद मिस्टर वाचोप साहिबकी दीहुई नक़्ल वापस होगी, और उस रोज़से अ़ह्दनामह दुरुस्त और तामीलके लायक़ समझा जावेगा.

इस अ़ह्दनामहकी नक़्लें दस्तख़त और मुहर होकर तारीख़ ११ मार्च सन् १८१४ ई० मुताबिक़ ५ माह चैत्र सन् १२२१ फ़स्लीको मक़ाम करवाईपर आपसमें तक़्सीम हुईं.

नम्बर १२७.

रीवांके महाराजा रघुराजसिंहके नाम
गोद लेनेकी सनद.

जनाब मलिका मुअ़ज़्ज़महकी यह ख्वाहिश है कि हिन्दुस्तानके अक्सर राजाओं और रईसोंकी हुकूमत, जो अब अपने अपने मुल्कमें राज्य करते हैं, हमेशह रहे, और उनके खान्दानकी शान व शौकत क़ायम रहे; इसलिये मैं इस तहरीरके ज़रीएसे उस शहन्शाही ख्वाहिशको ज़ाहिर करता हूं, और तुमको दुबारा इत्मीनान देता हूं, जो मैंने एक मर्तबह मक़ाम कानपुरके दर्बारमें माह नोवेम्बर सन् १८५९ ई० को दिया था, कि अगर तुम्हारा कोई वारिस अस्ली न होगा, तो जिसको तुम या तुम्हारे बाद तुम्हारे मुल्कके हाकिम खान्दानी रिवाजके मुवाफ़िक़ गोद रक्खेंगे, वह सर्कारको मन्ज़ूर और क़बूल होगा.

इत्मीनान रक्खो, कि इस वादहमें, जो तुमसे कियाजाता है, कोई फ़र्क़ न आवेगा, उस वक़्ततक जबतक कि तुम्हारा खान्दान बादशाही ताजका नमक हलाल रहेगा, और जबतक अह्दनामों, बख़्शिशनामों, और इक़ारनामोंकी तामील, जिनकी रिआयत सर्कार अंग्रेज़ी अपने ऊपर फ़र्ज़ समझती है, होगी.

दस्तख़त केनिंग.

ता० ११ मार्च सन् १८६२ ई०

नम्बर १२८.

उस ख़रीतेका तर्जमा, जो महाराजा रीवांने दूसरे पोलिटिकल
असिस्टेण्ट बुंदेलखंडके नाम संवत् १९२० द्वितीय
श्रावण शु० १ को लिखा.

(ता० ३१ जुलाई सन् १८६३ ई० के ख़रीतेकी रसीद लिखकर).

आपके लिखनेके मुताबिक़ ज़रूरी शर्तें इक़ारनामहमें दर्ज कीजाती हैं:–

पहिली शर्त– जो कुछ ज़मीन कि सर्कारको रेलके कारख़ानहके वास्ते दर्कार हो, वह मए पूरे इख्तियारातके हमेशहके वास्ते दीजाती है.

रेलवेकी हदमें, जो लोग रहते हैं, ख्वाह देशी रईसों या सर्कार अंग्रेज़की रिआया होवे रेलवेके अफ्सरों और सर्कारी हाकिमोंके मातहत समझे जायेंगे.

दूसरी शर्त- रेलवेके अफ्सरों व मुहाफ़िज़ों और रेलवेकी हदके बाहरकी देशी रियासतोंकी रअय्यतके दर्मियानके झगड़ोंका फ़ैसला पोलिटिकल अफ्सर करेंगे.

इस रियासतके मुज्रिमोंके मुक़द्दमे जो रेलवेकी हदके भीतर चलेजावें, उन क़ाइदोंके मुताबिक़ फ़ैसल कियेजावेंगे, जो कि एजेन्टीके हाकिमोंकी तरफ़से मुद्दतसे जारी हैं.

नम्बर १२९.

महाराजा रीवांने अपने मुख्य प्रधान लालरणदमनसिंहके साथ ता० ३० जैन्युअरी सन् १८७५ ई० को गवर्नर जेनरलके एजेण्ट व पोलिटिकल एजेन्टसे रीवांमें मुलाक़ातके वक्त यह बातें कहीं:-

---

मेरे ठिकानेका बन्दोबस्त मुझे बहुत दिनोंसे मुश्किल मालूम होता है. सर्कार हिन्दने मेरी अर्ज़के मुताबिक़ मेरी मददके लिये एक पोलिटिकल एजेण्ट मुक़र्रर किया, और दस लाख १०००००० रुपया क़र्ज़ दिया. मैंने ख़याल किया था कि पोलिटिकल एजेण्टकी सलाहसे मैं अच्छा प्रबन्ध जारी करूं व आमदनी पहिलेके मुताबिक़ करलेनेके लायक़ हूंगा, जो बहुत दिनोंसे घट रही है, लेकिन् मेरी उम्मेदके मुताबिक़ नतीजा न हुआ.

वह ख़िराज जो कि रिआयासे लियाजाता है, मेरे ख़ज़ानहमें नहीं पहुंचता, इस लिये मुलाज़िमोंकी तन्ख्वाह चुकाने व दस लाखका क़र्ज़ अदा करनेके बारेमें सर्कारकी शर्तें पूरी करनेके लिये रुपया नहीं है.

पहिली शर्त- श्रीमान् वाइसरॉयकी मन्जूरीसे क़र्ज़ अदा होने व अच्छा प्रबन्ध जारी करदियेजाने तकके लिये अपनी रियासत पोलिटिकल एजेण्टकी सुपुर्दगीमें रखनेकी ख्वाहिश करता हूं.

दूसरी शर्त- पोलिटिकल एजेण्ट साहिब मेरे ख़ास प्रधान रणदमनसिंहके चाल चलनसे वाक़िफ़ और उसके ज़रीएसे मुझे सब तौर मदद पहुंचानेको राज़ी हैं.

तीसरी शर्त- जबसे पोलिटिकल एजेण्ट प्रबन्ध अपने हाथमें लेवेंगे, तबसे मैं हर तौर दख्ल देनेसे बाज़ रहूंगा.

चौथी शर्त- रियासती मुआमलातमें कोई हुक्म जारी नहीं करूंगा.

पांचवीं शर्त– पोलिटिकल एजेएटको रियासती अहलकार मुक़र्रर और बर्खास्त करनेका इख्तियार रहेगा, और मैं उनके इख्तियारको मदद पहुंचानेमें हत्तल-मक़दूर कोशिश करूंगा.

छठी शर्त– मुझे आराम और अपने रुत्बेके मुताबिक़ गुज़र करलेनेके लायक़ मुक़र्रर वक्तपर ख़र्च मिलजाया करेगा.

सातवीं शर्त– मैं गोविन्दगढ़, रीवां और सत्तनामें रहूंगा जैसे, कि रहताआया हूं.

दस्तख़त–महाराजा बहादुर रघुराजसिंह,
रीवां वाले (जी. सी. एस. आई.).

मक़ाम महल गोविन्दगढ़ तारीख़ १ फ़ेब्रुअरी सन् १८७५ ई०

शेषसंग्रह नम्बर १.

(रंगीली ग्रामका ताम्र पत्र.)

श्री रामोजयति

श्री गणेस प्रसादातु श्री एकलिंग प्रसादातु

महाराजा धिराज महाराणा श्री राजसिंहजी आदेशातु गंधृव मोहण कस्य, ग्राम १ रगीली भरख तीरली उदक आघाट करे श्री रामाअर्पण कीधी, खड़ लाकड़ गाम टको मया केर छोड़्यो, दुऐ श्री मुख प्रत दुऐ पवासण सुंदर. लीषतं पंचोली राघोदास गोरावत स्वदतां परदतां वाजेहरंति वसुंधरा षष्ट वर्ष सहस्त्राणि विष्ठायां जायते कृमी संवत १७१३ वरषे जेठ वदी १० सोमे.

शेष संग्रह नम्बर २.

सन्तूके मगरेमें राणा देवली मक़ामपर यह प्रशस्ति
सांभरके शिकारकी यादगारमें है.

सिध श्री महाराजाधराज महाराणा श्री राजसिंहजी आदेसातु, संवत १७१६ वर्षे वेसाष सुदी १० भोमे सीकार पदार्‌या था, सो सामरी अठाथी हात ५० उपर बेठी थी, सो अठा थी सर लागो हातरो, सो इणी जायगा थंभ रोप्यो; दीन घड़ी १ चढ़्या पाला उबा थका.

शेष संग्रह नम्बर ३.

एकलिङ्गजीकी सड़कके पूर्वी किनारेपर भवाणा ग्रामसे
दक्षिण दिशा वाली बावड़ीपरकी प्रशस्ति.

स्वस्ति श्री मन्महाराजाधिराज महाराणाजी श्री राजसिंहजी गाम पारडारी सुंदरबावड़ी करावी त्यारे भुवाणा मांह धरती बीगा ७५ पचोतर नागर विसलनगरा व्यास गोविन्दराम व्यास वलभद्र गोपाल सुतजी संवत् १७१७ श्री रामार्पण कीधी, वांरे मां बावड़ी करावी श्री लालीरी सराय पण करावी राजा श्री जगत्‌सिंहात्मज राजसिंहजी.

शेष संग्रह नम्बर ४.

राजसमुद्र तालावकी प्रशस्ति नौ चौकियां ऊपरकी.

॥ ॐनमः ॥ श्रीगणेशायनमः ॥ यशोहेतुंसेतुंसुकृतिकृतिसेतुंजल – – सुबद्धं यश्चक्रे धरणिधरचक्रेण रुचिरं ॥ रुचा कामः कामं जनकतनया वामनयना सुविश्रामः कामं कलयतु सरामः कृतजयः ॥ १ ॥ स्मित ज्योत्स्ना लेपोज्वल ललित कण्ठः कच चय शिखिस्फुर्जत्पक्षेक्षणगलितनागो विभसितः ॥ मुदेचेलादोलांशुगत इति भूषाप्रतिकृते धृते गौर्याः शम्भुः स्फटिक रुचि देहेऽतिरुचिरः ॥ २ ॥ पुराणेन्द्रस्त्वच्चरणशरणः सेतुविलसत् प्रबन्धं कृत्वाऽविघ्नवमिहतडागं रचितवान् ॥ प्रतिष्ठा मस्याद्या तव विवर राज्ये भगवति प्रभावो निर्विघ्नं सगिरि

वर मात जय जय ॥ ३ ॥ वरा भीत्यो दीत्रीं पृथुतम कुचां कामवशगां महा कालोरःस्थां ससुख मजचक्रीन्द्रविनुतां ॥ प्रसन्नाक्षीं श्यामां स्मितमयमुखीं दक्षिणतमां स्तुवन्कालीं विद्यां क्षितिसुतधनानीह लभते ॥ ४ ॥ चतुर्भिः कैलास स्फुरितकरिभि हैंम ससुधे घंटैः शुण्डोत्क्षिप्तैः स्मरति सुखसिक्तां कनक भाम् ॥ वराम्भोजद्वन्द्वाभययुतकरां त्वां ऽबुजगतां रमे श्रीमत्ते यो मुखमपि समत्तेभधनवान् ॥ ५ ॥ रुचैन्दव्याभासत्स्फटिक हिम कुन्दाब्ज जयकृ दधाना वासो वा मुकुररुचिपद्मासनगता ॥ नवीनावीणाभृद्विधिहरिहरेन्द्रादिकनुता सरस्वत्या स्तान्नः सुमतिकृतये जाड्यहतये ॥ ६ ॥ मृदुं वाणीं लज्जां श्रियमपि दधानां मणिलस त्किरीटेन्दुद्योतां मणिघटलसत्सव्यचरणाम् ॥ त्रिनेत्रां स्मेरास्यां समणिचषकाब्जोद्यतकरां जपा रक्तां भक्ता भजत भुवनेशीं पृथुकुचाम् ॥ ७ ॥ रुचैंगालः खड्गो ललित कमलोह्रीमयमुखः क एष द्रागीदृक् लघुकलितशक्ति हंसकरः ॥ हलांसो हल्लेखी धृतसकलमायोऽनलवधू स्तुतिर्मैत्रं जप्त्वा जयति धरणीशो मनु रिव ॥ ८ ॥ कपोलप्रोल्लोलत्कनकविलसत्कुण्डल युगां मुखेंदुं विभ्राणां कनकविकसच्चंपकरुचिं ॥ गदादीर्णारातिं करगरिपु जिव्हां च बगलामुखीं ध्याये यस्तद्विमुखमुखसंस्तम्भनविधिम् ॥ ९ ॥ शतायुः सिद्धिं वा सदसि बहुबुद्धिं विदधतीं प्रसिद्धिं लोके वा सततमृणवृद्धिं च विगतां ॥ गुणानामृद्धिं वा सुभगसुतवृद्धिं धनगिरां समृद्धिं भक्तानां सपदि हरसिद्धिं भज मनः ॥ १० ॥ शिवे राजन्यानां जयसि समरादौ जयकरी शतायुष्यं राणं कलय जयसिंहं सतनयम् ॥ स्थिरं राणाराज्यं जगति रचया चन्द्रतपनं प्रशस्तेः स्थैर्यं त्वं मम सुतगिरायुर्धनसुखम् ॥ ११ ॥ चतुर्वारं तेन्तर्जनकलकलालंकृततनुं गिरिं श्रुत्वा लोके तव विवरराज्यं त्वनुमितम् ॥ ध्रुवं निःसन्देहं रचय नृपदेहं मम वपुः स्थिरं गेहं स्नेहं तनयमपि तेह न्निजजनः ॥ १२ ॥ इदं स्तोत्रं स्तुत्य स्पठति मनुजो मंगलकरं सुकार्यादौ यस्तद्भवति सफलं विघ्नरहितं ॥ प्रपूर्णं वातूर्णं जननि रणछोड़ेन रचितं पठिता श्रुत्वादौ जगदखिलमास्तां सुखमयम् ॥ १३ ॥ इति भवानीस्तोत्रम् ॥ सरोलंबेस्तंबेरममुखसदंबेक्षितमुखे सुहेरंबेत्वंवेदवति गुणलंबे त्वयिविभो ॥ समालंबे कंबे रितवति भृशं वेदित विपत्कदंबेऽ नालंबे सुकविनिकुरंबे कुरुकृपां ॥ १४ ॥ नद्यः क्षुद्राः समुद्राः सलवणसलिलं कूपवाप्योथ भद्रा दारिद्र्यं वीक्ष्यवारां किल- सुरसरितो वारिग्रहणाति लग्नं ॥ शैवालंकेशपंक्तिं शिरसिचशकुलं चंद्रकं रत्नसेतोः सिंदूरं बालुकौघं दधदिति गुणिभिः पातुगीतो गणेशः ॥ १५ ॥

कर्णौ शूर्पद्वयंवा प्यलिवलयमिषा च्चालनींदंतदर्वी चद्रंरौप्यं कटाहं विधुकर निकरं पिष्टकं स्निग्धकुंभौ ॥ दानंमिष्टं जलं यत्पवतिदधदलं धूमकेतुंच सर्वैर्लड कालिं तदुक्तो ह्यसुरसुरनरालंबलंबोदरोव्यात् ॥ १६ ॥ शुंडादंडं प्रचंडं मदल सदसितं रंध्रवद्वन्हिशस्त्रं विभ्राणो धूमकेतुं मधुकरगुटिकादंतमुद्दंडदंडं ॥ तन्नूनं वन्हिशस्त्रीदितिजहतिकृते स्थापितं शंभुनासौ भ्रांत्या लोकैर्गजास्यः कथित इति मुदे श्रीगणेशः सुवेषः ॥ १७ ॥ पूज्यो भूद्वक्रतुंडः सुरदितिजनरैः सर्वकार्येषु कस्मात्तन्मन्येक्रीडनेयं जलनिधि मधिकं शुंडया पीतवान्वै ॥ लंकास्थं द्वारकास्थाऽ सुरसुरमनुजाहींद्रलक्ष्मीस्वयंभूविश्नुस्तोत्रैस्तु मुंचन्सकल मिदमतः सर्ववंद्यो मुदेसः ॥ १८ ॥ प्रातर्भानुं रसालोत्तमफलततितो निर्मलो द्यत्सिता- भिर्भ्राजल्लड्डूकबुद्ध्या निशि मधुरविधुं चंडया शुंडयायत् ॥ धृत्वास्वास्ये दधेतद्ग्रहण मिति जनैः स्नायिभिः श्रांतमस्मात् पार्वत्या मोचितौतौ सहसित मवताक्लेशहर्ता गणेशः ॥ १९ ॥ भ्रातः किंवाहनस्य प्रगटयसि नवा लालनं स्कंदवाक्या देवंप्रोद्दंडशुंडामुखकलितमहामूषकस्पर्शलेशः ॥ भोक्तुं भोगी किमित्थं द्रवति कृतमतौ मूषके स्मादकस्मा त्स्कंधात्तस्य स्खलन्तस्खलितमति वचश्चारुदद्याद्गणेशः ॥ २० ॥ सत्कुंभौ दुंदुभीद्वौ भुजगसुखकरं वाद्यमुद्दंड शुंडा तालौवा कर्णतालौ त्रिपुरहरमहातांडवाडंबरेयत् ॥ चंडाद्या वादयंति द्विपवदनविभो रेषतुष्टो विशिष्ट स्वाविष्टंसाष्टनृत्यं प्रविदधदधिकं पातुमामिष्टशिष्टं ॥ २१ ॥ श्रीवक्रतुंडस्तवएषतुंडास्थितः सतां मंडितसूक्तिकुंडः ॥ उद्दंडवेतंड घटाप्रचंडं विद्यामणीकुंडलदः सदास्यात् ॥ २२ ॥ इति गणेशस्तोत्रं ॥

स्वनामस्त्रजंगायतः स्रस्तरोगानजस्रं जनान्दस्रवद्दे वितन्वन् ॥ जय- न्नस्त्रपान्भूपयन् घस्रमुच्चैः सहस्रद्युतिस्तं मुदेस्ता दुदुस्तः ॥ २३ ॥ सत्पीतं चामरं किंकलयति तपनो धार्यमाणं दिगीशैः सूताभावाह भाभिः कृत पट घट नायापि सूचीसहस्रं ॥ वेद्रुंतद्व्रातदंतावलसवलवलं स्वर्णबाणव्रजंवा तर्क्यंते तर्क्यलोकै रितिरविकिरणा येत्रते पुत्रदाःस्युः ॥ २४ ॥ जातेयस्योदये सावुदयगिरिवरः सूर्यवाहारुणाभा रूपैः शुद्धैर्हिरण्यैर्मरकतमणिभिः पद्मरागैः कृतंद्राक् ॥ शृंगस्तोमेसमस्ते रचयति निचयं भूषणानांयथेच्छं यादृग्यत्रोपयुक्तं सभवतु भगवान् भूतये भानुमाली ॥ २५ ॥ प्राच्यां मूर्द्धनाधृतोसौ मरकतकनको द्भासितोत्तंसउच्चैर्वृत्तोद्यत्स्वर्णपत्रं हरिदरुणपटं छत्रकं मूर्ध्निमेरोः ॥ वर्षाशं स्यद्वृतंवा हरिधनुरधुना कुंडलीभूत मित्थं सूतस्वाश्वप्रभाभृत्सुमुनिभिरुदितं मंडलं पातुपूर्णः ॥ २६ ॥ मुक्तागुच्छं विवस्वद्वपुररुणमणिं विद्रुमं सूतरूपं

च्छत्रं सत्पुष्परागं हरिहरितमणीन्दीर्घवैदूर्यदंडान् ॥ विभ्रद्वज्रस्य चक्रं लसितमणिधुरं धन्यगो मंदमंचं श्रीभानोस्यंदनस्ते मनसि खलुधृतो हंतुसर्व ग्रहार्त्तिं ॥ २७ ॥ विश्रामच्छद्मनाये लघु गमनकरा मूर्द्धनिमेरो दर्युनद्याः कल्लोलोल्लासितेस्मि न्मयुवरयुवतीसंचये चंचलाक्षाः ॥ हेषासंकेतशब्दैर्विदधाति भृशमासक्ति मन्हां गुरुत्वं ग्रीष्मे कुर्वंतियुक्तं हरिहरय इतस्ते श्रियंतेदिशंतु ॥ २८ ॥ चक्राग्रं शक्रसम्यक्धुरियमसमतामक्षमाधेहि रक्षस्त्वंवीतीन्वीतिहोत्रा रुणमिह वरुण स्थापयत्वं रथेशं ॥ वायोवा ऽऽ योजयत्वं रथमथ धनदाराधनत्वं हरीणां शंभोत्वं भोप्रियंमे वदति तदरुणो दिक्पती न्शास्ति सोव्यात् ॥ २९ ॥ आश्लेषे पश्चिमाशा कुचयुग विलसत्कुंकुमा लेपसक्तः ॥ किंवावालैः प्रवालैर्जलनिधि जठरे स्पर्शनेर्घर्पणेश्च ॥ प्रेम्णा चच्छादितः किं हरिहरिदवला पाणिना सत्कु-सुंभा रक्ते नेवां वरेणा - - - - - - - - - - - - ॥ ३० ॥

॥ श्रीगणेशायनमः ॥ मुनिन्रपमनुजेभ्यो दर्शनं संप्रदातुं परमकरुणयैवा गत्य कैलासशैलात् ॥ तटभुवि कुटिलाया एकलिङ्गस्त्रिकूटे स्थितइह विवरेद्वो राजसिंहेशमव्यात् ॥ १ ॥ तुहिन किरणहीरक्षीरकर्पूरगोरं वपुरपि जलदाभं कालिकापांगवल्याः ॥ प्रतिकृति घटनाभि र्विभ्रदभ्रांतभक्तःकलयतु तव राजन् मंगला न्येकलिङ्गः ॥ २ ॥ चतुर्मितपुमर्थ सद्वितरणाय सद्भ्यः सदा चतुर्भुजधरो मुदा किल चतुर्युगोघयशाः ॥ चतुर्भुज हरिश्चिरं निज चतुर्भुजाभिः शुभं चतुः श्रुति समीरितं दिशतु राजसिंह प्रभो ॥ ३ ॥ जगदखिलजनानां पालना दम्तिया वा निगमवचसि या वालांविकांवाकिलोक्ता ॥ सुखयतु सहितंत्वां पुत्र पोत्रप्रपौत्रै रवतु तवतुगोत्रं सांविका राजसिंह ॥ ४ ॥ ऐंदिरं विभवं दद्यात् शोक्तींतांत्रे दधत्पदं ॥ वुधेप्रसन्नासोः स्फूर्जद्वालाभूपप्रवालभाः ॥ ५ ॥ दधदतुलकरेद्राङ्मोदकं यस्यभक्तः कलयति सफलार्थं मोदकं राजसिंह ॥ नृपवर सतुविघ्नं विघ्नराजो विनिघ्नन् रचयतु तनयस्ते मंगलं मंगलायाः ॥ ६ ॥ प्रथमनृपमनो यः सिद्धिदाता विवस्वानपरमनुमिवत्वां वीक्ष्य सिद्धिं प्रदातुं ॥ दशशतकरयुक्तो युक्तमेवेत्यहोवा मवतु सतु नितांतं भूपते राजसिंह ॥ ७ ॥ धीरः कविः स्फुट पुराण वरो नुशास्ता धाता स्फुरद्गुणगणस्य तमः सपत्नः ॥ आदित्य वर्ण इहमां मधुसूदनो व्यात् कार्येति दुस्तरतरे प्रविशंतमद्धा ॥ ८ ॥ इति मंगलाष्टकं ॥ यस्या सीन्मधुसूदनस्तु जनको जातः कठोडीकुले तैलंगः कविपंडितः सुजननी वेणी च गोस्वामिजा ॥ कुर्वे राजसमुद्रनामकजलाधारप्रशस्तिं

त्वहं सोदर्यं रणछोड़ एष भरथार्यलक्ष्मणं शिक्षयत् ॥ ९ ॥ पूर्णे सप्तदशे शते समतनो स्त्वष्टादशाख्ये ब्दके माघे श्यामलपक्षके नरपतिः सत्सप्तमी वासरे ॥ घोघुंदावसति जलाशयमहारंभं च तस्याज्ञया प्रारंभं रणछोड़ एष कृतवां स्तस्य प्रशस्ते स्तथा ॥ १० ॥ वर्ण्यं लवर्ण्य मपि वे त्तिनवालकोवा दृष्टार्थसंकथक एव गलद्वयश्च ॥ सोहं तथैव गुणवृद्धसभोपविष्टः किंचिद्व-दामि ममधार्ष्ट्यमिदं क्षमध्वं ॥ ११ ॥ जिव्हासु सत्फणिपति र्लिखनेषु कार्त्त वीर्यार्जुनो वचसि वाक्पति रेव वाहं ॥ ज्ञातुंगुणां स्तव तदा निपुणो भवामि कांश्चित्ततो नृप वदाम्यतिसाहसेन ॥ १२ ॥ पुण्या जनार्दनहरेस्तु कथास्ति पुण्यश्लोकस्य वा नलनृपस्य युधिष्ठिरस्य ॥ तादृक्कथा जयति बाप्पनृपस्य वक्ष्ये श्रीराजसिंहनृपते रपि सत्कथा तत् ॥ १३ ॥ रामायणे भारते ऽस्ति प्रोक्तानां भूभुजां यशः ॥ यथा राज्ञामिहोक्तानां स्या त्तथाऽऽ चन्द्रतारकम् ॥ १४ ॥ खण्डप्रशस्ति र्भुवने रामचन्द्रस्य शोभते ॥ श्री अखण्डप्रशस्ति स्ते राजसिंह विराजते ॥ १५ ॥ मर्त्यायुष्यै स्तुल्यमायु स्तु भाषाग्रन्थानां स्याद्देववाक्भारतादेः ॥ देवायुष्यै स्तुल्यमायु स्ततो ऽहं ग्रन्थं कुर्वे राणगीर्वाण वाण्या ॥ १६ ॥ व्यासवाल्मीकिवद्वन्धो वाणश्रीहर्षवन्नृपैः ॥ सत्संस्कृतं कवीराज्ञां यशोंगस्थापक श्चिरम् ॥ १७ ॥ श्री राणाराजसिंहस्य वर्णनं कर्तुमुद्यतः ॥ भूपान्बाप्पा दिकान् वक्तुं वक्ष्ये ऽहं मुनिसम्मतिम् ॥ १८ ॥ वक्ष्येवायुपुराणस्य मेदपाटीयखण्डके ॥ षष्ठेध्यायेत्वेकलिंगमहात्म्ये वाक्यमीरितं ॥ १९ ॥ अथ शैलात्मजा ब्रह्मन् शोकव्याकुललोचना ॥ नंदिनं प्रथमं बाप्पंसृजंतीतमुवाचह ॥ २० ॥ यस्माद्बाप्पंसृजाम्यद्य वियो गाच्छंकरस्य च ॥ पूर्वदत्ताच्चमच्छापा द्बाप्पोराजा भविष्यसि ॥ २१ ॥ आराध्य तं जगन्नाथं तीर्थे नागहृदे शुभे ॥ राज्यं शक्रइव प्राप्य पुनः स्वर्ग मवाप्स्यसि ॥ २२ ॥ पुनश्चंडगणं प्राह पार्वती व्याकुलेक्षणा ॥ मर्यादां हतवानद्य द्वाररक्षे ऽप्यरक्षणात् ॥ २३ ॥ हारीत इति नाम्नात्वं मेदपाटे मुनिर्भव ॥ तत्रा राध्य शिवंदेवं ततः स्वर्ग मवाप्स्यसि ॥ २४ ॥ इतिवायु पुराणस्य समतिस्तत्रविस्तरः ॥ द्रष्टव्या बाप्पवंशे स्मिन् कार्यः शिष्टैस्तदा दरः ॥ २५ ॥ नमेविज्ञानतरणी राजसिंहगुणांबुधेः ॥ पाराप्त्यै वक्रमुडुप मस्याज्ञा करमाश्रये ॥ २६ ॥ सालंकारमणिः सूक्तिमौक्तिकः सद्रसामृतः ॥ राजप्रशस्तिग्रंथोस्ति समुद्रोन्यसुवर्णभूः ॥ २७ ॥ सेतिहासो भारत वत्प्रोक्तः सूर्यान्वयः समः ॥ रामायणेन पठनाद्ग्रंथ स्तादृक् फलाय नः ॥ २८ ॥ श्रीराणा राजसिंहस्य महावीरस्य वर्णने ॥ बाप्पः सूर्यान्वयी सर्गे सूर्यवंशं

वदे ग्रिमे ॥ २९ ॥ आसी द्भास्करतस्तु माधवबुधो स्माद्रामचंद्र स्ततः सत्सर्वेश्वरकः कठोडिकुलजो लक्ष्म्यादिनाथ स्सुतः ॥ तैलंगोस्यतु रामचंद्र इतिवा कृष्णोस्य सन्माधवः पुत्रोभून्मधुसूदन स्त्रय इमे ब्रह्मेशविश्नूपमाः ॥ ३० ॥ यस्यासी न्मधुसूदनस्तु जनको वेणीच गोस्वामिजा मातावा रणछोड़ एप कृतवान् राजप्रशस्त्या व्हयं ॥ काव्यं सान्वय राजसिंह नृपति श्रीवर्णनाढ्यं महद्वीराकं प्रथमोत्र पूर्ति मगम त्सर्गोथ वर्गोत्तमः ॥ ३१ ॥ इति श्रीमधुसूदनभट्टपुत्ररणछोड़कृते श्री राजप्रशस्तिमहाकाव्ये प्रथमः सर्गः ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ गुंजापुंजाभरणनिचयं चंद्रकालीकिरीटं गोत्रं वेत्रं करकमलयोः पूजितं चित्रवस्त्रं ॥ मध्ये पीतं वसन मपरं किंकिणीं वक्रवेणीं नासामुक्तां दधदतिमुदे तेस्तु गोवर्द्धनेंद्रः ॥ १ ॥ आदौ जलमयं विश्वंतत्र नारायणस्थितः ॥ हिरण्यहारीतन्नाभौ पद्मकोप इहाभवत् ॥ २ ॥ ब्रह्मा चतुर्मुखस्तस्य मरीचिः कश्यपोस्यतु ॥ सुतोविवस्वां स्तस्यासी न्मनुरिक्ष्वाकु रस्यसः ॥ ३ ॥ विकुक्षिः सशशादा न्यनामा तस्य पुरंजयः ॥ ककुत्स्था परनामाय मस्यानेनास्ततः पृथुः ॥ ४ ॥ ततोभूद्विश्वरंधिस्तु ततश्चंद्र स्ततोभवत् ॥ युवनाश्वोस्य शावस्तो वृहदश्वोस्य चात्मजः ॥ ५ ॥ ततः कुवलयाश्वोभूद्धुंधुमारा पराभिधः ॥ दृढाश्वो स्यास्य हर्यश्वो निकुंभ स्तस्यवाततः ॥ ६ ॥ वर्हणाश्वः कृशाश्वोस्य सेनाजित्तस्यवाततः ॥ युवनाश्वोस्य मांधाता तस्यदस्युपराभिधः ॥ ७ ॥ चक्रवर्त्यस्यतनयः पुरुकुत्सोस्यवासुतः ॥ त्रसदस्युर्द्वितीयो स्मादनरण्यस्ततोभवत् ॥ ८ ॥ हर्य्यश्वो स्यारुणस्तस्य त्रिवंधन नृपस्ततः ॥ सत्यव्रत स्त्रिशंकुस्तु तस्यनामांतरं ततः ॥ ९ ॥ हरिश्चन्द्रो रोहितोस्य तस्य वा हरितस्ततः ॥ चंपस्तस्य सुदेवोस्मा द्विजयो भरुकोस्यवा ॥ १० ॥ तस्माद्वृको वाहुकोस्य तत्पुत्रः सगरः सच ॥ चक्रवर्ती सुमत्यांतु पत्न्यांतस्या भवन्सुताः ॥ ११ ॥ श्रेष्ठाःषष्टि सहस्त्रोद्य त्संख्याः सागरकारकाः ॥ सगरस्यान्य पत्न्यांतु केशिन्या मसमंजसाः ॥ १२ ॥ ततोंशुमान्दिलीपोस्मा त्तस्माज्जातो भगीरथः ॥ ततः श्रुतस्ततोनाभः सिंधुद्वीपोस्य तत्सुतः ॥ १३ ॥ अयुतायु स्तस्य जात ऋतुपर्णस्तु तत्सुतः ॥ सर्वकाम सुदासोद्य तस्मान्मित्रसहन्मातिः ॥ १४ ॥ पादपंत्या सकल्माष पादान्याख्यो स्य चाश्मकः ॥ मूलकोस्मा द्दशरथ स्ततऐडविडस्ततः ॥ १५ ॥ जातोविश्वसह स्तस्मा त्खट्वांगश्चक्रवर्त्यतः ॥ दीर्घवाहु दिलीपोस्य रघुरस्याज इत्यतः ॥ १६ ॥ जातो दशरथस्तस्य कौशल्यायां सुतो भवत् ॥ श्रीरामचन्द्रः कैकेय्यां भरतो रामभक्तिमान् ॥ १७ ॥ सुमित्रायां लक्ष्मणश्च शत्रुघ्नश्चेति नामतः ॥ श्रीसीतायां कुशो जातो

लवश्चेति कुशादभूत् ॥ १८ ॥ कुमुद्वत्यामतिथिको निषधोस्य ततो नलः ॥ नभोथ पुण्डरीकोस्य क्षेमधन्वा ततो भवत् ॥ १९ ॥ देवानीक स्ततो हीनः पारियात्रोस्य तत्सुतः ॥ बल स्तस्य स्थल स्तस्मा द्वज्रनाभ स्ततो भवत् ॥ २० ॥ सगण स्तस्य विधृतिः पुत्र स्तस्य सुतो भवत् ॥ हिरण्यनाभः पुष्यो स्माद् ध्रुवसिद्धि स्ततो भवत् ॥ २१ ॥ सुदर्शनो स्याग्निवर्ण स्तस्य शीघ्र स्ततो मरुत् ॥ ततः प्रसुश्रुत स्तस्मात् संधि स्तस्यतु मर्षणः ॥ २२ ॥ ततो महस्वां तस्या भू द्विश्वसाह्वः प्रसेनजित् ॥ तत स्तत स्तक्षकोस्माद् वृह द्वल इति लयम् ॥ २३ ॥ महाभारतसंग्रामे निहतस्त्वभिमन्युना ॥ एतेलतीता व्यासेनसंप्रोक्ता भारते नृपाः ॥ २४ ॥ अनागतान्जगादेवं व्यासस्तत्र वदामि तान् ॥ वृहद्वला द्वहद्रण स्तस्यो रुक्रिय इत्यतः ॥ २५ ॥ वत्सवृद्धः प्रति व्योम स्तस्या स्माद्भानुरस्यवा ॥ दिव्यकस्तस्य पदवी वाहिनी पतिरित्यभूत् ॥ २६ ॥ तस्यासीत् सहदेवोस्य वृहदश्व स्ततोभवत् ॥ भानुमान् वा प्रतीकाश्वोस्य तस्मात्सु प्रतीकक ः॥ २७ ॥ ततोभून्मरुदेवोस्मात्सु नक्षत्रोस्य पुष्करः ॥ ततों तरिक्षः सुतपास्तस्मान्मित्रजिदस्यतु ॥ २८ ॥ वृहद्राजस्ततो वर्हिस्तस्मात्तस्य कृतंजयः ॥ तस्माद्रणंजयस्तस्य संजयः शाक्यइत्यतः ॥ २९ ॥ शुद्धोदोस्माल्लांगलोस्य प्रसेनजिदथतलतः ॥ क्षुद्रकस्तस्य रुणकस्तस्या सीत् सुरथस्ततः ॥ ३० ॥ सुमित्रस्तु सुमित्रांत इक्ष्वाको रन्वयो भवत् ॥ उक्ता भागवते स्कंधे नवमे ते मयोदिताः ॥ ३१ ॥ द्वाविंशत्यग्रशतक मेषां संख्या कृतावदे ॥ प्रसिद्धा त्सूर्यवंशस्था द्वज्रनाभो भवत्ततः ॥ ३२ ॥ महारथीति राजेंद्र स्तस्मादतिरथीन्नृपः ॥ तस्मादचलसेनस्तु सेनास्यलचलारणे ॥ ३३ ॥ तस्मात्कनकसेनोस्य नहसीनोंगरत्यतः ॥ तस्माद्विजयसेनोस्या जयसेन स्ततोभवत् ॥ ३४ अभंगसेनस्तस्मात्तु मद्रसेनस्ततोऽभवत् ॥ भूपः सिंहरथस्त्वेते अयोध्या वासिनो नृपाः ॥ ३५ ॥ तस्माद्विजय भूपोयं मुक्त्वाऽयोध्यांरणागतान् ॥ जित्वान्नृपान्दक्षिणस्था नर्वसद्दक्षिणक्षितौ ॥ ३६ ॥ तत्रास्याकाशवाण्यासी न्मुक्त्वाराजाभिधामथ ॥ आदित्याख्यातुधर्त्तव्या भवताभवदन्वये ॥ ३७ ॥ जाताविजयभूपांता राजानोमनुपूर्वकाः ॥ वीराः संख्येरितातेषां पंचत्रिंशद्युतंशतं ॥ ३८ ॥ आसीदित्यादि ॥ द्वितीयः सर्गः संवत् १७१८ वर्षे माघ मासे कृष्णपक्षे सप्तम्यां तिथौ राजसमुद्र मुहूर्त राणे राजसिंहजी किधो ॥ संवत् १७३२ वर्षे माघ मासे शुक्लपक्षे १५ तिथौ राजसमुद्र प्रतिष्ठा कीधी गजधर मुकुंद, गजधर कल्याण ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ उल्लोलीभवदुन्नताच्छसुरभी पुच्छच्छटा चामरः ॥

सद्गोवर्द्धन धन्यगोत्र विलसच्छत्रोजितेंद्रोवली ॥ गोपालैः कलितश्चगोपतनया सक्तोनिजप्रेमवा न्पायाद्गोधन भक्त रक्षणपरः सच्चक्रवर्ती हरिः ॥ १ ॥ ततोविजयभूपस्य पद्मादित्यो भवत् सुतः ॥ शिवादित्योस्यपुत्रोभूद्धरदत्तोस्यवा सुतः ॥ २ ॥ सुजसादित्यनामा स्मात् सुमुखादित्यकस्ततः ॥ सोमदत्तस्तस्य पुत्रः शिलादित्योस्य चात्मजः ॥ ३ ॥ केशवादित्य एतस्मा न्नागादित्यो स्य चात्मजः ॥ भोगादित्यो स्य पुत्रोभू द्देवादित्य स्ततो भवत् ॥ ४ ॥ आशादित्यः कालभोजा दित्यो स्मात्तनयो स्य तु ॥ ग्रहादित्य इहादित्या श्चतुर्दश मिता स्ततः ॥ ५ ॥ ग्रहा दित्यसुताः सर्वे गहिलोताभिधायुताः ॥ जाता युक्तं तेपु पुत्रो ज्येष्ठो वाप्पाभिधो भवत् ॥ ६ ॥ यं दृष्ट्वा नंदिनं गौरी दृशो र्वाप्पं पुरा ऽ सृजत् ॥ नंदीगणो सौ वाप्पोरि प्रियादृक् वाप्पदो ऽ भवत् ॥ ७ ॥ हारीतराशिः सुमुनि श्चंडः शंभो र्गणो भवत् ॥ तस्यशिष्यो भवद्वाप्प स्तस्याज्ञातः प्रसादतः ॥ ८ ॥ नागहृदे पुरे तिष्ठ न्नेकलिंगशिव प्रभोः ॥ चक्रे वाप्पो ऽ र्चनं चा स्मै वरान्त्रुद्रो ददौ ततः ॥ ९ ॥ चित्रकूटपति स्त्वं स्या स्त्व द्वंश्यचरणा ध्रुवं ॥ मागच्छताच्चित्रकूटः संततिः स्यादखंडिता ॥ १० ॥ प्राप्येत्यादि वरान्वाप्प एकस्मिन् शतके गते ॥ एकाग्रनवतिस्वब्दे माघे पक्षे वलक्षके ॥ ११ ॥ सप्तमीदिवसे वाप्पः सपंचदशवत्सरः ॥ एकलिंगेशहारीतप्रसादा द्भाग्यवा नभूत् ॥ १२ ॥ नागहृदाख्ये नगरे विराजी नरेश्वरः खड्गधरेपु धन्यः ॥ वलेन देहेन च भोजनेन भीमो रणे भीमतमो रिपूणां ॥ १३ ॥ पंचाधिकत्रिंशदमंदहस्त प्रमाणयुक्पट्टपटं दधानः ॥ वभौ निचोलं किलशोडपोद्यत्करप्रमाणं विमलं वसानः ॥ १४ ॥ श्रीएकलिंगेन मुदा प्रदत्तंहारीतनाम्ने मुनये थ तेन ॥ दत्तं दधानः कटकं च हैमं पंचाशदुद्यत्पलमान मास्ते ॥ १५ ॥ द्वात्रिंश दुद्यत्तम दब्बुकाद्यैः प्रस्था भिधैः शेर वरैः कृतस्य ॥ मणस्य चैकस्य भरं हि चत्वारिंशन्मिते विभ्रदसिं दधानः ॥ १६ ॥ एकप्रहारा न्महिषौ महासे- दुर्गार्चनायां जवतो विनिघ्नन् ॥ भुंज न्महाच्छागचतुष्टयं स अगस्त्य शस्त्यः प्रवभूव वाप्पः ॥ १७ ॥ ततः स निर्जित्य नृपं तु मोरीजातीयभूपं मनुराजसंज्ञं ॥ गृहीतवां श्चित्रितचित्रकूटं चक्रे त्रराज्यं नृपचक्रवर्त्ती ॥ १८ ॥ राज्यातिपूर्णत्व वरत्वलक्ष्मीमयत्वशब्दादिमवर्णयुक्तां ॥ तां रावलाख्यां पदवीं दधानो वाप्पाभिधानः स रराज राजा ॥ १९ ॥ ततः खुमानाभिधरावलो स्मा द्गोविंदनामा थ महेन्द्र नामा ॥ आलूनृपो स्मा दथसिंहवर्मा तस्यात्मजः शक्तिकुमारनामा ॥ २० ॥ जातस्ततो रावल शालिवाहन स्तस्यात्मजो भून्नरवाहन स्ततः ॥ अंवाप्रसादो स्य च कीर्तिवर्मक स्तत्पुत्र आसी न्नरवर्मनामकः ॥ २१ ॥ ततो नृपालो नरपत्यभिख्य स्त्वथोत्तमो स्मान्नृपभैरवो स्मात् ॥ श्रीपुंजराजो भवदस्यकर्णादित्यः सुतो स्यापि च भावसिंहः

॥ २२ ॥ श्री गोत्रसिंहो थ स हंस राजसुतो स्य सूनु : शुभ योगराज :॥ सवैरडास्यो थ सवैरिसिंह स्ततो स्य वा रावल तेजसिंह : ॥ २३ ॥ ततः समरसिंहाख्यः पृथ्वी राजस्य भूपते :॥ पृथाख्याया भगिन्या स्तु पति रित्यतिहार्दत : ॥ २४ ॥ गोरी साहिवदीनेन गज्जनीशेन संगरं ॥ कुर्वतो ऽ खर्वगर्वस्य महासामन्तशोभिनः ॥ २५ ॥ दिल्लीश्वरस्य चोहाननाथस्या स्य सहायकृत् ॥ स द्वादश सहस्त्रैः स्ववीराणां सहितो रणे ॥ २६ ॥ बध्वा गोरीपतिं दैवात्स्वर्यात : सूर्य विंबभित् ॥ भाषारासापुस्तके स्य युद्धस्योक्तो स्ति विस्तर: ॥ २७ ॥ तस्यात्मजोभू न्नृप-कर्णरावल: प्रोक्तास्तुषड्विंशति रावला इमे ॥ कर्णात्मजो माहपरावलो भव त्सडूगराद्ये तु पुरे नृपो बभौ ॥ २८ ॥ कर्णस्य जात स्तनयो द्वितीय : श्री राहप : कर्णनृपाज्ञयोग्र : ॥ वाक्येन वा शाकुनिकस्य गत्वा मंडोवरे मोकलसीं स जित्वा ॥ २९ ॥ तातांतिके त्वा नयति स्म बद्धं कर्णोस्य राणाविरुदं गृहीत्वा ॥ मुमो च तं चारु ददौ तदीयं रानाभिधानं प्रियराहपाय ॥ ३० ॥ भव्याशिषा ब्राह्मण पल्लिवालज्ञातीय विद्वच्छर शल्यनाम्न: ॥ श्री चित्रकूटे वलभद्वराज्यं चक्रे ततो राहप एष वीर: ॥ ३१ ॥ ततो बभौ चित्रकूटे राहपावाहपोपक: ॥ पूर्वं सीसोदनगरे वासा त्सीसोदिया स्मृत : ॥ ३२ ॥ रानाविरुदलाभेन राने त्युक्तो खिलै र्बभौ ॥ वंशस्याग्रे भविष्यंति रानाविरुदिनो नृपा : ॥ ३३ ॥ राजेंद्र राजीपूज्योयं नारायणपरायण :॥ विशेषणादिव्रर्णाढ्यां वीरो रानाभिधां दधौ ॥ ३४ ॥ आसी द्भास्करत स्तु माधवबुधो ऽ स्माद्रामचंद्र स्तत : सत्सर्वेश्वरक: कठोड़ि कुलजो लक्ष्म्यादिनाथ स्तत : ॥ तैलिंगो स्य तु रामचंद्र इति वा कृष्णोस्य वा माधव: पुत्रो भून्मधुसूदन स्त्रय इमे ब्रह्मेशविश्नूपमा : ॥ ३५ ॥ यस्यासी न्मधुसूदन स्तु जनको वेणी च गोस्वामिजा ऽ भून्माता रणछोड़ एष कृतवान् राज प्रशस्त्याव्हयं ॥ काव्यं सान्वयराजासिंहसुगुणश्रीवर्णनाढ्यं महद्वीराकं समभू त्तृतीय इह सत्सर्ग : सुसर्ग : स्फुटं ॥ ३६ ॥ इतिश्री तैलंगज्ञातीय कठोड़िकवि पण्डितोपनाममधुसूदनभट्ट पुत्ररणछोड़कृते राजप्रशस्त्याव्हये महाकाव्ये तृतीय : सर्ग : सम्वत् १७३२ वर्षे माघी १५ राजसमुद्र प्रतिष्ठा.

श्रीगणेशायनम : ॥ कलितहलिनिचोलो नीललोलोतिकेसौ तरुरिति धृत-वस्त्रा वेगतो यत्र गोप्य: ॥ विदधति जलकेली यंच सिंचंति सोस्मा न्सुखयतु यमुनाया स्तीरवर्ती तमाल: ॥ १ ॥ तस्य पुत्रो नरपती रानास्य जसकर्णक: ॥ तत्सुतो नागपालोस्य पुण्यपाल: सुतोस्यतु ॥ २ ॥ पृथ्वीमल्ल: सुतस्तस्य पुत्रो भुवनसिंहक: ॥ तस्य पुत्रो भीमसिंहो जयसिंहो स्य तत्सुत: ॥ ३ ॥ लक्ष्मसिंह स्त्वेष गढमंडलीकाभिधो स्य तु ॥ कनिष्ठो रत्नसी भ्राता पद्मिनी तत्प्रिया भवत्

॥ ४ ॥ तत्कृते ह्लावदीनेन रुद्धे श्रीचित्रकूटके ॥ लक्ष्मसिंहो द्वादशस्वभ्रातृभिः सप्तभिः सुतैः ॥ ५ ॥ सहितः शस्त्रपूतोसौ दिवं यातो ऽस्यचात्मजः ॥ एक-उर्वरितो जेसी राज्यं चक्रे ततोरसी ॥ ६ ॥ जेष्टः सुतः पितुः संगे योहतो तत्सुतोदधे ॥ राज्यंहमीरोदानींद्रो मुर्द्धगंगाप्रदर्शकः ॥ ७ ॥ विग्रहे लिंद्रसरसि श्रीमूर्तिं स्फाटिकीं धृतां ॥ नप्राप्तां सुस्थसमये एकलिंगस्य तद्यधात् ॥ ८ ॥ मूर्तिं चतुर्मुखीमेतां श्यामां श्यामायुतां ततः ॥ क्षेत्रसिंहस्ततोलाखा लक्षदो मोकल स्ततः ॥ ९ ॥ भ्रातृरावतवाघस्या ऽनपत्यस्य फलाप्तये ॥ वाघेलाख्यं तड़ागं तन्नाम्ना नागहूदे करोत् ॥ १० ॥ त्रिद्वारं स्फटिकाभाश्म जुष्टं कैलासवन्नृपः ॥ प्राकारमुत्तसाकार मेकलिंगप्रभोर्व्यधात् ॥ ११ ॥ कृत्वायं द्वारिकायात्रां शंखोद्धारं गतस्ततः ॥ सिद्ध एकोस्य पत्न्यास्तु गर्भे राज्याप्तये विशत् ॥ १२ ॥ सकुंभकर्णो भूत्पुत्रो मोकलस्या स्य मस्तकात् ॥ स्रवतिस्म जलं गांगं प्रसिद्धमिति निश्चयभूत् ॥ १३ ॥ कुंभकर्णोथभूपोभूद् दुर्गकुंभलमेरकृत् ॥ स शोडपशतस्त्रीयुक् रायमल्लोथ राज्यकृत् ॥ १४ ॥ संग्रामसिंहस्तत्पुत्रः सद्विलक्षमितैर्भटैः ॥ युक्तो वावरदिल्लीशदेशे फत्तेपुरावधिः ॥ १५ ॥ गलात्रपीलियाखाल परिधिं पर्यकल्पयत् ॥ स्वदेशसीमानमयं रत्नसिंहो थ राज्यकृत् ॥ १६ ॥ तद्भ्राता विक्रमादित्यो भूपो भूत्तस्य सोदरः ॥ राना उदयसिंहोथ स दिव्योदयसागरं ॥ १७ ॥ तथोदयपुरं चक्रे तडागोत्सर्गकर्मणि ॥ छीत्रभट्टाय सोदर्यलक्ष्मीनाथयुताय च ॥ १८ ॥ भूरवाडाग्राममदाद्यधाद्दानं तुलादिकं ॥ चित्रकूटे थयोद्धास्य राठोड़ो जैमलो रणं ॥ १९ ॥ पत्तासीसोदिया चक्रे दिल्लीशेन महा-यशाः ॥ अकव्वरेण भटयुग्वीर ईश्वरदासकः ॥ २० ॥ कुलकं ॥ प्रतापसिंहो थ नृपः कच्छवाहेन मानिना ॥ मानसिंहेन तस्यासी द्वैमनस्यं भुजे विधौ ॥ २१ ॥ अकव्वरप्रभोः पार्श्वे मानसिंहस्ततोगतः ॥ गृहीत्वा तद्वलं ग्रामे खंभनोरे समागमः ॥ २२ ॥ तयोर्युद्ध मभूद्घोरं लोहकोटगतस्य सः ॥ मानसिंहस्य कुंभींद्रकुंभेशुंभपराक्रमः ॥ २३ ॥ ज्येष्टः प्रतापसिंहस्य अमरेशाभिधः सुतः ॥ कुंतं शकुंतवेगोयं मुमोचा रुणलोचनः ॥ २४ ॥ राणाप्रतापसिंहो थ मानसिंहस्य हस्तिनः ॥ कुंभे कुंतं मुमोचा शु पश्चाद्दंती पलायितः ॥ २५ ॥ समये त्र प्रतापेशं शक्तसिंहो स्य सोदरः ॥ मानसिंहस्य संगस्थो दृष्ट्वैवं स्नेहतो वदत् ॥ २६ ॥ नीलाश्वस्याश्ववारत्वं पश्चा त्पश्य प्रभो ततः ॥ प्रतापसिंहो ददृशे श्वमे-कमथनिर्ययौ ॥ २७ ॥ ततो द्वौमुगलौ वीरौ मानसिंहेन वेगतः ॥ प्रेषितौ शक्तिसिंहो पि गृहीताज्ञां महावलः ॥ २८ ॥ मानसिंहस्यमुगलौ प्रतापेंद्रेणसंगरं ॥ चक्रतुः श्रीप्रता-पेन शक्तिसिंहेन तौ ततः ॥ २९ ॥ निहतौ हितकारीति शक्तिसिंहः सहोदरः ॥ राणेनोक्तं शक्तिसिंह वंश्यास्तद्भ्राणवल्लभाः ॥ ३७ ॥ अकव्वर इहायात स्तत श्चक्रे स संगरं

प्रतापसिंहं वलिनं मत्वा शेरब्बुनामकम् ॥ ३१ ॥ संस्थाप्यात्र सुतं ज्येष्ठ मागरां प्रति निर्ययौ ॥ अमरेशः खानखाना दाराणां हरणं व्यधात् ॥ ३२ ॥ सुवासिनीव त्सं तोष्य प्रेषयामास ताः पुनः ॥ खानखानस्या द्भुतं तज्जातं शेखूमनस्यपि ॥ ३३ ॥ ततः शेखूजहांगीर नामा दिल्लीश्वरो भवत् ॥ पुनरत्रागतो युद्धं कृत्वा खुर्रमनामकं ॥ ३४ ॥ संस्थाप्यात्र सुतं स्वीयं रुद्धं कृत्वा प्रतापिनं ॥ प्रतापसिंहं चतुराशीतिसैन्यै र्वृतंगतः ॥ ३५ ॥ दिल्लीं प्रति प्रतापेशो घट्टे देवेरनामके ॥ सुलतानं सेरिमाख्यं च कुंताख्यं गजास्थितं ॥ ३६ ॥ दिल्ली शस्य पितृव्यं तं वीक्ष्याभू त्संमुख स्ततः ॥ सोलंकिभृत्य श्चिच्छेद गजांघ्रिं पडिहारकः ॥ ३७ ॥ प्रतापसिंहो राणेंद्रो रणेरवणविक्रमः ॥ शकुंतवेगः कुंतेन कुंभिकुंभं वभंज सः ॥ ३८ ॥ पपात कुंभी तुरग मारुरोहाथ सेरिमा ॥ अमरेशः स्वकुंतेन न्यहनत्सेरिमाभिधं ॥ ३९ ॥ स कुंतः सशिरस्त्राणवर्माश्वं त मखंडयत् ॥ अमरेश कराकृष्टः स कुंतो न विनिःसृतः ॥ ४० ॥ तदा प्रतापेंद्राज्ञातो दत्वा लत्तां पदेन सः ॥ कुंतं चकर्षा मर्षेण कुंताप्त्या हर्षमादधे ॥ ४१ ॥ दर्शनीयः स येनाहं निहतः सेरिमा वदत् ॥ प्रतापसिंह स्तच्छ्रुत्वा ऽ प्रेषय त्कंचिदुद्भटं ॥ ४२ ॥ भटं तं वीक्ष्य तेनोक्तं नायं प्रेष्यः सएव तु ॥ राणेंद्रः प्रेशयामास अमरेशं रणोत्कटं ॥ ४३ ॥ तं दृष्ट्वा सेरिमोवाच सोयमास्ति मयेक्षितः ॥ युद्धकाले नभोभूमि व्यापिशीर्ष शरीरवान् ॥ ४४ ॥ दैवेन नहतोहं हि यास्ये स्थानं शुभं ततः ॥ कोसीथलाद्येषुचतुरशीति प्रमितागताः ॥ ४५ ॥ स्थानपालाः प्रतापेंद्रो महोदयपुरे वसत् ॥ दानं ददौ कोपि भाटः प्राप्यो ष्णीषादिकं धनं ॥ ४६ ॥ प्रतापसिंहा द्दिल्लीशं द्रष्टुं यात स्तदंतिके ॥ यदाप्राप्त स्तदावद्धं तदुष्णीषं करेदधत् ॥ ४७ ॥ गत्वा सलामं कृतवान् दिल्लीशेन तदेरितः ॥ किमिदं सो वदद्राणा प्रतापोष्णीषमित्यतः ॥ ४८ ॥ नधृतं मूर्द्धनि दिल्लीश स्तुतोष ज्ञापिताशयः ॥ तदा समस्ते जगति सर्वै र्हिंदू तुरुष्ककैः ॥ ४९ ॥ अनघः श्री प्रतापेंद्रो वीर इत्थं ददाविति ॥ इतिराणाप्रतापस्य प्रतापः कथितो मया ॥ ५० ॥ इति श्री राजप्रशस्त्या ह्वये महाकाव्ये वीरांके चतुर्थः सर्गः

श्री गणेशायनमः ॥ राना अमरसिंहाख्यो ऽकरोद्राज्यं ततः परं ॥ मानसिंहस्य संग्रामे खानखानावधू हृते ॥ १ ॥ सेरिमा सुलतानस्य वधे प्रोक्तो स्य विक्रमः ॥ जहांगीरस्थापितेन खुर्रमेणाथयुद्धकृत् ॥ २ ॥ अवदुल्लहखानेन वक्र श्चक्रे रणं ततः ॥ चतुर्विंशति संख्यै स्तै रुद्धः स्थानेश्वरै रलं ॥ ३ ॥ दिल्लीपते र्भृत्यवरं जघ्ने कायमखानकं ॥ ऊंटालायां मालपुरभंगं चक्रे त्र दंडकृत् ॥ ४ ॥ पुत्रोस्य कर्णसिंहाख्यः सिरोजं मालवाभुवं ॥ घंघेराख्यं बभंजा त्रदंडं चक्रे तिलुंटनं ॥ ५ ॥ ततोजहांगीरा

ज्ञात: खुर्रमोमिलनंव्यधात् ॥ गोघूंदायांसमायात: अमरेशोनिजस्थलात् ॥ ६ ॥ महोदयपुरात्तत्र खुर्रमोपि समागत: ॥ श्लाघ्यरीत्यासादरंतौ सस्नेहौमिलितौतत: ॥ ७ ॥ राना अमरसिंहेंद्रो महोदयपुरे ऽवसत् ॥ महादानानि विदधे चक्रे राज्यं सुखान्वितं ॥ ८ ॥ लक्ष्मीनाथाख्य भट्टाय गुरवेमंत्रदायिने ॥ राना अमरसिंहेंद्रो होलीग्रामं ददौमुदा ॥ ९ ॥ अथरानाकर्णसिंह श्चक्रे राज्यंपुराकरोत् ॥ सत्कौमार पदेगंगातीरेरूप्य तुलांददौ ॥ १० ॥ शूकरक्षेत्रविप्रेभ्यो ग्रामंपूर्वंतुविद्वरे ॥ धंधेरा मालवा देश सिरोजपुर भंगकृत् ॥ ११ ॥ अखेराजं सिरोहीशं चक्रे शत्रुजितं बलात् ॥ पद्मलक्ष्मांघ्रिकमल: कर्णदानपराक्रम: ॥ १२ ॥ दिल्लीश्वराज्जहांगीरा त्तस्य खुर्रमनामकं ॥ पुत्रं विमुखतांप्राप्तं स्थापयित्वा निजक्षितौ ॥ १३ ॥ जहांगीरेदिवंयाते संगेभ्रातरमर्जुनं ॥ दत्वादिल्लीश्वरंचक्रे सोभूत्साहिजहांभिध: ॥ १४ ॥ युग्मं ॥ शतेषोड़शकेतीते चतु: षष्ट्यभिधेब्दके ॥ भाद्रशुक्लद्वितीयायां कर्णसिंहनृपादभूत् ॥ १५ ॥ जगत्सिंहोमहेचाख्या राठोडजसवंतजा ॥ श्री मज्जांबुवतीतस्या: कुक्षेर्जातोबलीमहान् ॥ १६ ॥ शतेषोडशकेतीते पंचाशीत्यभिधेब्दके ॥ राधशुक्लतृतीयायां राज्यंप्राप जगत्पति: ॥ १७ ॥ जगत्सिंहाज्ञयामंत्री अखेराजोबलान्वित: ॥ सडूंगरपुरंप्राप्त: पुंजानामाथरावल: ॥ १८ ॥ पलायित: पातितंत च्चंदनस्यगवाक्षकं ॥ लुंटनंडूंगरपुरे कृतंलोकैरलंतत: ॥ १९ ॥ जगत्सिंहाज्ञयायातो राठोडोरामसिंहक: ॥ प्रतिदेवलियां सेनायुक्तोरावतमुद्भटं ॥ २० ॥ जसवंतं मानसिंह पुत्रयुक्तंजघानस: ॥ पुर्यादेवलियायांच लुंटनंरचितंजनै: ॥ २१ ॥ शतेषोडशकेतीते षडशीत्यभिधेब्दके ॥ ऊर्जे कृष्णद्वितीयायां जगत्सिंहमहीपते: ॥ २२ ॥ पुत्र:श्री राजसिंहोभू द्वर्षांतेअरसीतथा ॥ मेडताधिपराठोड राजसिंहमहीभृत: ॥ २३ ॥ पुत्रीजनादेनाम्नीत त्कुक्षिजाताविमौसुतौ ॥ अभून्मोहनदासाख्यो ऽ पारिणीता प्रियाभव: ॥ २४ ॥ अखेराजंसिरोहीशं वश्यंचक्रे ऽ ग्रहीद्धुवं ॥ तोगाख्यबालीसा भूपा दखेराजेनखंडितात् ॥ २५ ॥ प्रासादंस्वग्रहेचक्रे मेरुमंदिरनामकं ॥ पीछोलाख्य तटाकस्य तटे मोहनमंदिरं ॥ २६ ॥ जगत्सिंहनृपाज्ञातो बांसवालापुरेगत: ॥ प्रधानोभागचंदाख्यो रावल: सावलोगिरो ॥ २७ ॥ गत: समरसीनामा ततोलक्षद्वयंददौ ॥ दंडंरजतमुद्राणां भृत्यभावंसदादधे ॥ २८ ॥ बुंदीश शत्रुशल्यस्य भावसिंहाख्यसूनवे ॥ स्वकन्यांविधिनाभूपो दत्वात्रैवददौपुन: ॥ २९ ॥ सप्तविंशतिसंख्यास्तु राजन्येभ्योन्यकन्यका: ॥ एकलिंगालयेचक्रे हेम कुंभध्वजादिकान् ॥ ३० ॥ वत्सरेष्टनवत्याख्ये शतेषोडशकेगते ॥ दीपावल्युत्सवेबाई राजजांबुवतीव्यधात् ॥ ३१ ॥ द्वारिकातीर्थयात्रां श्री रणछोडस्यसेवनं ॥ तथारूप्यतुलांचक्रे दानान्यन्यानिसादरं ॥ ३२ ॥ गोस्वामिधन्ययदुनाथ सुता

सुवेएयै भूमिंहलद्वयमितांपुरआहडाख्ये ॥ तद्वर्तेधीरमधुसूदनभट्टनाम्ना पत्रं विधायचददौ जगतीशमाता ॥ ३३ ॥ राज्यप्राप्तेःसमारभ्य तुलांरूप्यमयीं व्यधात् ॥ प्रतिवर्षंजगत्सिंहो दानान्यन्यानिचातनोत् ॥ ३४ ॥ शतेसप्तदशे पूर्णे चतुराख्येब्दकेशुचौ ॥ सर्वग्रहेजगत्सिंहः संपूज्यामरकंटके ॥ ३५ ॥ ज्योतिर्लिंगंतुमांधातृ सेव्यमोंकारमीश्वरं ॥ सुवर्णस्यतुलांचक्रे अथप्रत्यब्दमात नोत् ॥ ३६ ॥ स्वजन्मदिवसेमोदा न्महादानंपुराव्यधात् ॥ कल्पवृक्षंस्वर्ण पृथ्वींसप्तसागरनामकं ॥ ३७ ॥ विश्वचक्रं क्रमादस्मिन्वर्षेमाता जगत्पतेः ॥ श्रीमज्जांबुवतीबाई प्रतस्थेतीर्थदृष्टये ॥ ३८ ॥ कार्तिकेमथुरायात्रां चक्रेगोकुल दर्शनं ॥ श्रीगोवर्द्धननाथस्य दीपावल्यन्नकूटयोः ॥ ३९ ॥ अपश्यदुत्सवंतूर्जे पौर्णमास्यांतुशौकरे ॥ क्षेत्रेगंगातटेचक्रे तुलांरूप्यस्यचातनोत् ॥ ४० ॥ वीकानेरेश कर्णस्य सुतारामपुराप्रभोः ॥ हठीसिंहस्यसत्पत्नी उदारानंदकुंवरिः ॥ ४१ ॥ मातामह्याजांबुवत्याः संगेरूप्यांतुलांव्यधात् ॥ पूर्ववर्षेजांबुवत्या आज्ञयानंद कुंवरिः ॥ ४२ ॥ श्रीजांबुवत्याअग्रेमां स्थापयित्वासुदाददौ ॥ रणछोडायमह्यंसा दानंसोमामहेश्वरं ॥ ४३ ॥ प्रयागेराजततुलां काश्योध्यादिदर्शनं ॥ कृत्वाग्रहेसमा याता चक्रेरूप्यतुलागणं ॥ ४४ ॥ वेणिमाकार्यगोस्वामि तनयांमधुसूदनं ॥ तत्पतिंश्रीजगत्सिंह स्त्रियासोमामहेश्वरं ॥ ४५ ॥ अदापयत्कृतंदानं श्रीमज्जांबुवती यथा ॥ राणाअमरसिंहस्य राज्ञीभिर्दत्तमादितः ॥ ४६ ॥ इदंदानंयथैवाभ्या मद्या वधिमितिंवदे ॥ विंशत्संमितदानानि आभ्यांलब्धानितत्स्फुटं ॥ ४७ ॥ अस्मिन्वर्षे पूर्णिमायां वैशाखेश्रीजगत्पतिः ॥ श्रीजगन्नाथरायंस त्प्रासादेस्थापयन्बभौ ४८ गोसहस्रमहादानं दानंकल्पलताभिधं ॥ हिरण्याश्वमहादानं ग्रामपंचक मप्यदात् ॥ ४९ ॥ मधुसूदनभट्टाय महागोदानमप्यदात् ॥ कृष्णभट्टायसुग्राम भैंसडारत्नधेनुदं ॥ ५० ॥ श्रीराणोदयसिंहसुनुरभत् श्रीमत्प्रतापः सुत स्तस्य श्रीअमरेश्वरोस्यतनयः श्रीकर्णसिंहोस्यवा ॥ पुत्रोराणजगत्पतिश्चतनयो स्माराज- सिंहोस्यवा पुत्रःश्रीजयसिंह एषकृतवान्सत्प्रस्तराऽऽ लेखितं ॥ ५१ ॥ वीराकंरणछोड भट्टरचितं द्वात्रिंशदाख्येब्दके पूर्णेसप्तदशेशतेतपसिवा सत्पूर्णिमायांतिथौ ॥ काव्यंराजसमुद्रमिष्टजलधेः श्रीराजसिंहेनवा सृष्टोत्सर्गविधेः सुवर्णनमयं राज प्रशस्त्याह्वयं ॥ ५२ ॥ इति पंचमःसर्गः

श्रीगणेशायनमः ॥ शतेसप्तदशेपूर्णे नवाख्येब्देकरोत्तुलां ॥ रूप्यस्यसांगं चक्रेऽथा फाल्गुनेकृष्णपक्षके ॥ १ ॥ द्वितीयादिवसेराज्यं राजसिंहोनरेश्वरः ॥ राज्ञोभूरटियाकर्ण नाम्नोज्येष्ठायसूनवे ॥ २ ॥ अनूपसिंहायददौ स्वसारंविधिना

नृप: ॥ क्षत्रेभ्यो ऽदाद्बंधुकन्या एकसप्ततिसंमिता: ॥ ३ ॥ कुलकं ॥ शतेसप्त दशेपूर्णे दशाख्येब्देतुपौषके ॥ कृष्णैकादशिकायांतु राजसिंहनरेश्वरात् ॥ ४ ॥ पवारइन्द्रभानाख्य रावस्यतनयातुया ॥ सदाकुंवरिनाम्नीतत् कुक्षेर्जातोजगत् प्रिय: ॥ ५ ॥ जयसिंहाभिध: पुत्र: पवित्रश्चित्रकेलिकृत् ॥ संजातो जगदाल्हाद चन्द्रमा: कीर्तिचन्द्रवान् ॥ ६ ॥ भीमसिंह: पुत्रआस्ते गजसिंह: सुतस्तथा ॥ सूर्यसिंहाभिध: पुत्र इन्द्रसिंह: सुतस्तथा ॥ ७ ॥ सबहादुर-सिंह: श्री राजसिंहात्मजास्तथा ॥ सनरायणदासोवा ऽपरिणीताप्रियाभव ॥ ॥ ८ ॥ आरभ्य कौमारपदात्सर्वर्तु सुखलब्धये ॥ श्रीसर्वर्तुविलासाख्यं स्वारामंकृत-वान्नृप: ॥ ९ ॥ वाप्यांक्षीरनिधौधन्यो लक्ष्मीयुक्तोविराजते ॥ नारायण गुणोराणा नौकाशेपफणाश्रय: ॥ १० ॥ शतेसप्तदशेपूर्णे वर्षेएकादशेत्विषे ॥ अजमेरौसाहिजहां दिल्लीशंतंससागतं ॥ ११ ॥ श्रुत्वाथराजसिंहेन्द्रं श्चित्र-कूटेसमागतं ॥ नसादुल्लहखानाख्यं दिल्लीश वरमन्त्रिणं ॥ १२ ॥ प्रेषया मासतत्पार्श्वे भट्टंतुमधुसूदनं ॥ व्यंठोडीवंशतैलंगं सगत: खानसन्निधौ ॥ १३ ॥ खान: पंडितसंबुद्ध्या भट्टंप्रत्युक्तवान्कथं ॥ गरीबदासोराणेन कथमाकारितोतथा ॥ १४ ॥ झालाख्यरायसिंहश्च भट्टेनोक्तंसदादित: ॥ जातमेवं प्रतापाख्य रानाभ्रातारणोत्कट: ॥ १५ ॥ शक्तसिंहोमेघनामा रावतोमेदपाटत: ॥ आयात: स्थापितौदिल्ली नाथेनकिलतौपुन: ॥ १६ ॥ मेदपाटेसमायातौ चकार परमेश्वर: ॥ इतिस्वामिप्रमुक्तानां राजन्यानांस्थलद्वयं ॥ १७ ॥ खानेनोक्तंसत्य मेतत् पुन: खानस्ततोवदत् ॥ रानेशस्याश्ववाराणां संख्यांकथयपंडित ॥ १८ ॥ षड्विंशतिसहस्राणि भट्टेनोक्तंसउक्तवान् ॥ दिल्लीशस्याश्ववाराणां लक्षसंख्यास्ति तत्कथं ॥ १९ ॥ कार्यं — — नभट्टेन प्रोक्तंखानश्रृणुस्फुटं ॥ दिल्लीशस्याश्व वाराणां लक्षंराणामहीपते: ॥ २० ॥ सद्विंशतिसहस्राणि साम्यंस्टष्टिकृताकृतं ॥ खानोत: कोपवान्खानो जयसिंहस्तदोचतु: ॥ २१ ॥ खानसंगेसाहिजहां दर्शनंचेत्करोत्यहो ॥ राणाकुमारस्तुतदा चतुर्दशमितामया ॥ २२ ॥ देशादिल्ली श्वराद्दाप्या विद्वरेमधुसूदन: ॥ राणसेवांव्यधादेवं स्वामिधर्मामहोक्तिकृत् ॥ २३ ॥ दिल्लीश्वरकुमारस्य संगे ऽस्मत्पूर्वजन्मनां ॥ कुमारामिलनंचक्रू राजसिंहो विचार्यतत् ॥ २४ ॥ सुल्तानसिंहनामकमहाकुमारंतुठक्कुरै: सहितं ॥ साहिजहां सुतदारा: सकोहसंगेथसंप्रेष्य ॥ २५ ॥ एवंसाहिजहांनेन मिलनंकृतवान्नृप: ॥ राजसिंहोभाग्यदान विक्रमैर्विक्रमार्कवत् ॥ २६ ॥ जनार्दनामजननीं चक्रेरूप्य तुलांस्थितां ॥ तथाकारितवान्मंत्र गजदानस्यनिष्क्रयं ॥ २७ ॥ द्रव्यंसंकल्पितंरूप्य

मुद्रापंचशतैर्मितं ॥ मधुसूदनभट्टाय रानेंद्रस्तद्ददौधनं ॥ २८ ॥ युग्मं ॥ राठोडरूप सिंहाख्यं स्वमंडलगढाव्हलं ॥ वैश्यंराघवदासाख्यं प्रेषयन्विद्रुतंव्यधात् ॥ २९ ॥ शतेसप्तदशेपूर्णे त्रयोदशमितेब्दके ॥ हेम्नः स्तीर्द्वेद्विशतकं पलैर्ब्रह्मांडकंकृतं ॥ ३० ॥ कार्तिक्यां पूर्णिमायांश्री एकलिंगशिवांतिके ॥ दत्वावेदोक्तविधिना राज सिंहोविराजते ॥ ३१ ॥ पंचमहाभूतमयं ब्रह्मांडंमृजलीढयलघुमूल्यं ॥ मत्वासुवर्णपूर्णं कृत्वाब्रह्मांडकंत्वयादत्तं ॥ ३२ ॥ हेमब्रह्मांडदानेन ब्रह्मांडस्थाः क्षितीश्वराः ॥ ब्राह्मणास्तोषितादानं त्वयाब्रह्मार्पणीकृतं ॥ ३३ ॥ हेमब्रह्मांडदानेन ब्रह्मांडस्थां-श्रियंभवान् ॥ स्थापयन्ब्राह्मणगृहे दारिद्र्यंहतवांस्ततः ॥ ३४ ॥ ब्रह्मांडेराजसिंह प्रभुवरभवता दत्तएवंद्विजेभ्य स्तद्देवास्तद्गृहेवा परनिजतनुभि र्भुंजतेभावुकंयत् ॥ शंभुर्भूतैर्वि ऽहीनो विधिरपिबहुधा स्टष्टिकार्यानधीनो भानुर्वाशीतभानु र्धरणिध-रमणे श्रांतिदुः खाद्विमुक्तः ॥ ३५ ॥ ब्रह्मांडेराजसिंहः प्रभुवरभवता दत्तएवद्विजेभ्यः क्रीडार्थंतत्सुतानां भवतइनाविधू कंदुकौलोलगोलौ ॥ आरोहार्थंचनंदी द्रुहिण-सितमहा हंसकोपंचवक्त्र श्चित्रायानेकनेत्रोभ — — सुरपति स्तर्जनार्थंगजस्य ॥ ३६ ॥ श्रीराजसिंहनृपतिः कलिकालमध्ये कर्तुंनयोग्यमतुलं हयमेधकर्म ॥ प्राप्तुंसम-स्तमधुना हयमेधधर्मं पूर्णेतुसप्तदशके शतकेसुवर्षे ॥ ३७ ॥ एकोनविंशतिसुना म्निचपौषमासे एकादशीशुभदिने किलशुक्लपक्षे ॥ मन्वादिदिव्यदिवसे मधुसूद-नाय तैलंगसद्गुरु कुलस्थकठोडिकाय ॥ ३८ ॥ श्वेताश्वमुच्चतममुच्च गुणातिगेय मुच्चैश्रवः सममहो विधिनैवदत्वा ॥ पल्याणहेमगणमेरु समंचभाति प्रायोहरि र्गुरुगुरो र्गुरुरर्चनेन ॥ ३९ ॥ संस्थाप्यतत्रनवला दितुरंगधन्य स्कंधेसदुक्तिमधुरं मधुसूदनाख्यं ॥ सत्सप्तविंशतिपदानिहयस्यगच्छ न्नग्रस्थएवधृतवा न्हयमेधधर्मं ॥ ४० ॥ सिंहासनेस्फुरित चामरवीज्यमाता छत्रोपिशोभितइवा रचिताश्वमेधं ॥ श्रीरामचंद्रइवभाति सुलक्ष्मणाढ्यः श्रीराजसिंहनृपति र्नृपसिंहएषः ॥ ४१ ॥ नवलाख्यतुरंगाय हेमपल्याणमेरुगं ॥ कृतवानुचितंभूपो विबुधंमधुसूदनं ॥ ४२ ॥ राणाश्रीराजसिंहादि सुखापाठकमुख्यकैः ॥ अग्रेसरैर्जनैर्युक्तो विभातिमधुसूदनः ॥ ४३ ॥ श्वेताश्वेदत्तमत्ते त्वतिहयमवस त्पुण्यतोभास्वरोदा क्लोकश्रीमेदपाटो भवदतिललिता तेसभासौसुधर्मा ॥ जिष्णुस्त्वंसत्सहस्त्रेक्षणइहविबुधव्रातकारु-ण्यदृष्टौ तुष्टोजेतासुराणां गुरुगुणगुरुता स्थापकोयुक्तमेतत् ॥ ४४ ॥ दानस्य-चास्यनव दित्यसहस्त्रसंख्या दत्वागुणज्ञगुरुरेष सुरूप्यमुद्राः ॥ काशीनिवास-मथका रितवान्नरेंद्रः स्वस्यापिपुण्यकृतये मधुसूदनस्य ॥ ४५ ॥ विश्वेशदर्शन-विधौ मणिकर्णिकाया स्ता — — तार्थ कृतिपत्तनदेवतानां ॥ पूजासदाशि — महो नृपराजसिंहः वीरो — — — — — — मधुसूदनाख्यं ॥ ४६ ॥ इतिषष्ठमसर्गः ॥

॥ श्रीगणेशायनमः ॥ शतेसप्तदशेपूर्णे चतुर्दशमितेब्दके ॥ राधशुक्लदशम्यांतु जैत्रयात्रांनृपोव्यधात् ॥ १ ॥ मध्योद्यद्भानुबिंबा द्विजपतिविनुता मंगलाद्यावुधाति स्तुत्याजीवातितंद्या: कविकृतनुतयो ऽ मंदरूपप्रकाशा: ॥ विस्फूर्जत्सैंहिकेया विदधतिचलनं केतव: किंग्रहास्ते अग्रेसोग्रप्रतापा स्तवविजयकृते राजसिंहेतिजाने ॥ २ ॥ पार्श्वस्थगोलकच्छद्म मुंडमालाअनस्थिता: ॥ भांतिस्वच्छा: शत्रुभक्षा: कालिका: किलनालिका ॥ ३ ॥ किंमृत्युदंष्ट्रा: किंशत्रुप्राणसंस्थानकंदरा: ॥ किंवारिलोकभुग्नक्र चक्रास्यानीहनालिका: ॥ ४ ॥ किंवावीररसाब्धिरेवविलसत् कल्लोलमालोन्नत: किंवादिक्तरुणी कटाक्षपटले नालंवित: सीव्कृत: ॥ किंवारे: स्फुटमेकलिंगमतितो नीलाब्जपत्रांचितो रानेंद्र: कवचंदधत्सुरुचिरं लोकैरिति प्रोच्यते ॥ ५ ॥ ततोदुंदुभीनां निनादप्रताने महाकाहलानां च कोलाहलैश्च ॥ तथानैंधवेश्चापि वादित्रशब्दे हयानांचचीत्कारवीरैरपारै: ॥ ६ ॥ त्रिलोकीमहा मंडलंयत्यखंडं जना: खंडखंडं वभूवेत्यथोचु: ॥ धरित्रीविचित्रीभवत्कंपनार्त्ता स्फुरद्दिग्गजा: कंदुकी भावमापु: ॥ ७ ॥ सभूलोकमुख्याखिला ऊर्द्धलोका स्तलाद्या स्तथा सप्तलोकाअध: स्था: ॥ सकंपा: समुद्रात्तभंपा: सशंपा स्तदा ऽ भ्रेवभूवु स्तथाभ्राअशुभ्रा: ॥ ८ ॥ जवेनोच्छलंतिस्म सर्वेसमुद्रा स्तथा ऽ क्षुद्ररूपाश्च भद्रास्तटिन्य: ॥ महीध्रास्तथा उच्छिलींध्रानुकारा: पतंतिस्मवृक्षा: सदक्षा: क्षतांगे: ॥ ९ ॥ अलंम्लेच्छसीमस्थिता: सर्ववीरा स्तथामानुषा मंक्षुदिक्षुस्थिताश्च ॥ विदीर्णाकृतोद्धक्षसो ऽ नच्छकर्णा वमंतिस्मरक्तं सुरक्तंमुखेभ्य: ॥ १० ॥ हयालीखुरोद्भूतधूलीमधूलीं गजेभ्योमदार्द्रांच कर्णाशुगोत्थं ॥ पिवंतिस्फुटं शत्रुपक्षावलानां गुडारूपलोलालकालिंद्विरेफा: ॥ ११ ॥ महोदयपुरादग्रे भांतिनाखर्वपर्वता: ॥ तन्मन्ये त्वत्तुरंगाली खुरैश्चूर्णीकृताश्चिरं ॥ १२ ॥ रिंगत्तुरंगखुरराजिरज: समूहे नद्यो जलाशयगणा: स्थलभावमापु: ॥ दृष्ट्वाजगद्गतजलं सभयोमहेंद्रो ज्येष्ठेपिवर्षणमहो सहसाचकार ॥ १३ ॥ युष्मज्जैत्र प्रयाणश्रवण विगलित प्राणानि: प्राणकानां म्लेच्छानांच्छादनार्थं भवतिहयखुरो त्खातधूलीसमूह: ॥ माद्यन्मातंगगल्लस्थलगलदतुलोद्दामदानांवुवृंदैर्हिंदूकानां निवापांजलिसलिलकृते म्लेच्छपक्षास्थितानां ॥ १४ ॥ रिंगद्दंतावलानां पद भरविगल द्भूमिसंभूतगर्ता: प्रोल्लोलत्कर्णवातै: प्रचलितविलस त्पर्वतानामखर्वा: ॥ ग्रावाण: प्राणहीन प्रतिभटकुटिल म्लेच्छकानांतनूनां प्रक्षेपाच्छादनार्थं स्वत इहनृपते जैत्रयात्रासुजाता ॥ १५ ॥ अंगोजातप्रभंगो भवतिभयभृतोत्संगरंग: कलिंगो वंग: पूर्णार्तिसंग: कलकलकलितोप्युत्कलोनि: कलश्च ॥ शैथिल्यं

मैथिलेपि स्फुरतिभयमय क्रोडकोगौडलोको देशः पूर्वोविगर्वस्तव विजयकृते प्रासपाणेः प्रयाणे ॥ १६ ॥ लंकातंकाकुलाभूत्करगलदवला कंकणाकुंकणाशा कर्णाटः सत्कपाटश्चलइहमलयो द्राविडोद्रावितेशः॥ देशश्चोलश्चलोलश्चपलइह भयात्केतुवत्सेतुबन्धः श्रीराना राजसिंह प्रभुवरभवतो जैत्रयात्रोत्सवेषु ॥ १७ ॥ सौराष्ट्रो हीनराष्ट्रः प्रभवति सकलो वाच्छदेशोप्यनच्छं ठट्टाहट्टाविहीना विगलतिवलको रोमधर्त्ता − − − ॥ खंधारः साधकारो धनददिगधुनानिर्धना धावतेद्वा श्रीराणा राजसिंह क्षितिधवभवतो जैत्रयात्रोत्सवेस्मिन् ॥ १८ ॥ दरीबाजनास्ते दरीबासभाजो जनामांडिलस्था स्तथास्थंडिलस्थाः ॥ जनाः फूलियायां शिरोधूलिग्रासा स्त्वदीयप्रयाणे खुमानेशरत्न: ॥ १९ ॥ राहेलायाश्ची वहेलाश्चीनचेलासुयोषितः ॥ सर्ववेलासुचीवेला भर्तृहल्लाकृनोभवत् ॥ २० ॥ एषासाहिपुराप्रवाहितसुखा साकेकरीकिंकरीभावं वा विदधातिभैक्षुसमया ऽ कुक्षिंभरिः सांभरिः ॥ भ्राजज्जाजपुराधिभाजनमहो दुःखावरः सावरः श्रीराणामणि राजसिंह भवतिबजैत्रयात्रोत्सवे ॥ २१ ॥ गौडजातियभूपानां देशः क्लेश विशेषवान् ॥ अनच्छः कच्छवाहानांजैत्रयात्रासुतेभवत् ॥ २२ ॥ रणस्तंभ संस्थारणस्थंभयुक्ताः प्रमत्तेतरास्तेपिफत्तेपुरस्थाः ॥ वयानाजनादूरसंसृष्टयाना जयार्थप्रयाणेखुमानेशतेस्युः॥ २३ ॥ मेरौलक्ष्म्याजमेरौ विषयउरुभयं जायते स्फीतफेरौक्रोडाद्याभंतितोडाद्यवनिषुगलितत्राणमानावयाना ॥ धत्तेफत्तेपुरंनक्षणमपिनसुखं दक्षयुद्धेतवाद्वा श्रीराणाराजसिंह क्षितिपजयकृते ऽ मानमानेप्रयाणे ॥ २४ ॥ पूर्वमेवाखर्वगर्वलुंटितं भवतोभटैः ॥ दरीबानगरंशून्यं दरीभावंसमादधे ॥ २५ ॥ मंडपास्तेमांडिलस्य श्रितायोधैस्तुतद्भटाः ॥ द्विविंशतिसहस्राणि रूप्य मुद्रावले ददुः ॥ २६ ॥ बनहेडास्थितावीरा रानेंद्रभवते ददुः ॥ षड्विंशति सहस्त्रोद्य द्रूप्यमुद्रा करंपरं ॥ २७ ॥ धीरा शाहपुरावीरा रानेंद्रभवते ददुः ॥ द्वाविंशति सहस्त्रोद्य द्रूप्यमुद्राकरेवरं ॥ २८ ॥ तोडायां प्रेषयित्वा भटपटलभृतो रायसिंहस्य राज्ञः फत्तेचंदं सहस्र त्रयमितसुभट भ्राजमानं प्रधानं ॥ षष्टिस्फूर्जत्सहस्रप्रमितरजतसन् मुद्रिका संख्यदंडं तन्मात्रा संप्रणीतं प्रहरदशकत स्त्वं गृहीत्वा विभासि ॥ २९ ॥ अहो वीरमदेवस्य पुरं महिरवं परं ॥ राजन्वन्हौ जुहोति स्मकोपिकोपोद्भटोभटः॥ ३० ॥ भवान् मालपुरे रान लक्ष्मीमालाति लुंटनं ॥ शौर्या लोके रचितवा ल्लोकै र्नवदिना वधि ॥ ३१ ॥ युष्मद्रिंगत्तुरंगप्रचुरखुरपुटैश्चूर्णितानां पुरेस्मिन् पूर्णानां शर्कराणां पटुकरटिघटा कर्णतालप्रवातैः ॥ उड्डीतानां समूहै र्जलनिधयइमे पूरिता क्षारभावं मुक्तामिष्टत्वभाजः कृतइति भवता भूप विश्वोपकारः ॥ ३२ ॥ जातेमालपुरस्य लुंटनविधौ सच्छर्कराणांपुरः

कर्पूरप्रकरस्य वाहयखुरप्रोद्धूतशुद्धरजः ॥ उड्डीनं गगनेविभातिभवतो भूयोमया तर्कितं श्री रानामणिराजसिंहनृपतेः कीर्तेः प्रकाशः परः ॥ ३३ ॥ गुच्छवद्गुच्छ हःरास्ते कनकं कनकोपमम्॥ प्रवालवत् प्रवाला श्च प्राचुर्याल्लुंटने भवत् ॥ ३४ ॥ सुकर्बुराः सुद्रुवर्णाः सद्धरिष्टाः प्रवालकाः ॥ हट्टेभ्य श्च गृहेभ्य श्च संप्राप्ता लुंटने जनैः ॥ ३५ ॥ सुजातरूपकं तीक्ष्ण श्वेतशोभं जनै र्मुहुः ॥ नानाम्लेच्छमुखं दृष्टं पतितं पथिलुंटने ॥ ३६ ॥ लुंटने लुंटनकरै र्लुंटितं येन यत्त्वया ॥ तस्मै प्रदत्तं तद्दृष्टा तचो दारं चरित्रता ॥ ३७ ॥ प्राप्ता भूपालतां रंका निः शंका धनलाभतः ॥ लुंटने पुरभूपा स्तु निर्धना रंकतां गताः ॥ ३८ ॥ लक्ष्मीसन्मणिकल्पवृक्षसुरभी हालाधनुर्वाजिनः शंख श्चंद्रसुधागजेन्द्रसुमनः स्त्रीवैद्यविद्याधराः ॥ लोकै र्माल पुरोल्लसज्जलनिधे र्मथेपु रत्नान्यलं लब्धानीतिविचित्र मत्र न विषं केनापि लब्धं क्वचित् ॥ ३९ ॥ सुवर्णमूल्यस्यतु रूप्यमुद्रिकासहस्तुनो मूल्य मभूद्विलुंटने ॥ सद्रूप्य मुद्रा मितवस्तुनः पुनः कर्पोपि कर्पस्य वराटकं तथा ॥ ४० ॥ स्वीय ब्राह्मण मंडली कृतमहा होमाग्नि होत्रोष्टभिर्यज्ञैर्भूरि घृतादि वस्तु रचिता जीर्णस्य शांत्येसुखे ॥ वन्हेर्माल पुरस्थ भौप धमयं होमीकृतं सृष्टवा न्मन्ये खांडवमेष पांडव इव श्रीराजसिंहोनृपः ॥ ४१ ॥ टोंकंच सांभरि ग्रामाल्लालसोटिंच चाटसूं ॥ रानेंद्र सुभटा जित्वा दंडयित्वा बभुर्भृशं ॥ ४२ ॥ राना श्रमरसिंहोत्र बलीया मद्वयं स्थितः ॥ राजसिंहः स्थितस्तत्र चित्रं नवदिना वधि ॥ ४३ ॥ घनांबु-युक् छाइनि निम्नगाऽगता नदीभवत्से वहिनीच गामिनी ॥ विघ्नकृतो नीच तया तया ततः श्रीराजसिंहः स्वपुरे समागतः ॥ ४४ ॥ मनोज्ञ तरुणी गणाश्रितग वाक्षपक्षद्वये विचित्र पटघट्ट – – – – – – – – – – – – – ॥ समुद्भट भटै र्युते करटि सद्घटा टोपकं महोदयपुरे नृपः प्रविशतिस्म वीरोन्नतः ॥ ४५ ॥ इति राज प्रशस्ति महाकाव्ये सप्तमः सर्गः

॥ श्रीगणेशायनमः ॥ सते सप्तदशे तीते चतुर्दश मितेब्दके ॥ शिविरेच्छा इनि नदी तीरस्थे ज्येष्ठमासके ॥ १ ॥ औरंगजेबं दिल्लीशं जातं श्रुत्वा थ तन्मुदे॥ अरिसिंहं प्रेषितवान् भ्रातरं नृपति स्ततः ॥ २ ॥ अरिसिंहं सिंहनद प्रयांतं गतवान् ददौ ॥ अरिसिंहाय दिल्लीशः सडूंगर पुरादिकान् ॥ ३ ॥ देशान् गजादि तत्सर्वं अरिसिंहः समर्पयत् ॥ श्रीराजसिंह चरणे सोस्मै योग्यं ददौ मुदा ॥ ४ ॥ गते शते सप्तदशे तु वर्षे चतुर्दशाख्ये चहुवाण वर्य्यै ॥ सूजाख्य सोदर्य वरेण युद्धं औरंगजेबस्य वितन्वतोस्य ॥ ५ ॥ मुदे कुमारं सिरदारसिंहं संप्रेषयामास नृपः पुरेवः ॥ औरंगजेबस्य पुरः स्थितोसौ रणे कुमारो जयवान्स जातः ॥ ६ ॥

औरंगजेब: सिरदारसिंह वीराय देशाश्व गजाद्य दात्स: ॥ राणांघ्रि पद्मेर्पयदेव सर्वं योग्यं स चास्मै प्रददे नृपेन्द्र: ॥ ७ ॥ पूर्णे सप्तदशे शते नरपति: सत्षोडशाख्ये ऽब्दके आकार्योत्त मठकुरैर्गिरिधरं तं डूंगराद्ये पुरे ॥ सद्राज्यं किल रावलं विदधता कृत्वात्मन: सेवकं प्रेम्णा स्मै प्रददौ सु योग्य मखिलं सेवां व्यधाद्रावल: ॥ ८ ॥ शते सप्तदशे पूर्णे वर्षे शोडष नामके ॥ श्रावणे तु वसाडाख्य देशं दष्टुं नृपो ययौ ॥ ९ ॥ भटै रुद्धटै रावलाद्यै र्वलाढ्यै: प्रचंडश्च वेतंडवर्यै रुपेता ॥ गृहीत्वा महावाहिनी राजसिंह: प्रतस्थे वसाड प्रदेशे क्षणाय ॥ १० ॥ ततो दुंदुभि: प्रोच्चशब्दै र्जिताब्दारवै: पार्श्वदेशस्थितानां जनानां ॥ विदीर्णानि वक्षांसि वक्षो विभिन्नं महारावतस्यापि नश्यद्बलस्य ॥ ११ ॥ श्वालोचत्सुलतानाख्यचौहाणं तं महाबलं ॥ रावं सबलसिंहाख्यं रघुनाथाख्यरावतं ॥ १२ ॥ चोंडावत्मुहकम्सिंह शक्तावत्तोत्तमंतथा ॥ एता न्पुरोगमा न्कृत्वा एतेषां बाहु माश्रयन् ॥ १३ ॥ सरावतो हरीसिंहो ययौ देवलियापुरात् ॥ आगत्य राजसिंहस्य राजेंद्रस्य पदेपतत् ॥ १४ ॥ रूप्यमुद्रा सुपंचा शत्सहस्राणि न्यवेदयत् ॥ मनरावत नामानं करिणं करेणी मपि ॥ १५ ॥ शते सप्तदशे पूर्णे वर्षे पंचदशाभिधे ॥ वैशाखे कृष्णनवमी दिवसे भौमवासरे ॥ १६ ॥ महाराजसिंहाज्ञया वाँसवाले क्षणार्थं फतेचन्द मंत्री प्रतस्थे ॥ चमू पंचशजत्सहस्राश्ववारै र्महाठकुरै र्गुंठितां तां गृहीत्वा ॥ १७ ॥ तत: समरसिंह स्य रावलस्या बलस्य वै लक्षसंख्यारूप्यमुद्रा देश दानं च हस्तिनीं ॥ १८ ॥ गजं दडं दशग्रामान् कृत्वाऽपातयदंघ्रिषु ॥ राणेंद्रस्य फतेचंदो भृत्यंकृत्वैवरावलं ॥ १९ ॥ दशग्रामान् देशदानं रूप्यमुद्रावले र्नृप: ॥ सद्विंशतिसहस्राणि रावलाय ददौमुदा ॥ २० ॥ श्रीराजसिंह वचनात् फतेचंद: सठकुर: ॥ चक्रे देवलियासंगं हरिसिंह: पलायित: ॥ २१ ॥ हरिसिंहस्य मातातु गृहीत्वा पौत्रमागता ॥ प्रतापसिंहं विदधे प्रसन्नं राणमंत्रिणं ॥ २२ ॥ रूप्यमुद्रासहस्राणि विंशत्याख्यानि हस्तिनी ॥ दंडंप्रकल्प्यस्वल्पंस फतेचंदोदयामय: ॥ २३ ॥ राणेंद्र चरणाभ्यर्णे आनयामास तंबलात् ॥ प्रतापसिंहं जातस्तत् फतेचंद: प्रभो: प्रिय: ॥ २४ ॥ अखेराजं सिरोहीशं रावं भक्ततमं स्फुटं ॥ प्रेम्णैव वश्यं कृतवान् राजसिंहो महीपति: ॥ २५ ॥ शते सप्तदशे पूर्णे षोडशेब्दे थ फाल्गुने ॥ दहवारी महाघट्टे शैलश्लिष्टे नृपो व्यधात् ॥ २६ ॥ द्विधाक्त करपत्राभ लोहपत्रोच्च कीलयुक् ॥ वैरिधी पाटनप्रोच्च कपाट युगलं दधत् ॥ २७ ॥ अनर्गल द्विषच्चिंता र्गलरूपा र्गलायुत्ता ॥ सिंह प्रकोष्ठ: सत्कोष्ठं द्वारं द्विड्वार वारणं ॥ २८ ॥ कुलकं ॥ शते सप्तदशे पूर्णे वर्षे सप्तदशे तत: ॥ गत्वा कृष्णगढ़े दिव्य महत्या सेनया युत: ॥ २९ ॥

दिल्ली शार्थं रक्षिता या राजसिंह नरेश्वरः ॥ राठोड रूपसिंह स्य पुत्र्याः पाणिग्रहं व्यधात् ॥ ३० ॥ एकोनविंशति स्वब्दे शते सप्तदशे गते ॥ मेवलं देशमतनोत् स्वकीयं तं वलं नृपः ॥ ३१ ॥ मीनान्निर्जल मीना भान् रुध्वा वध्वातिदः करान् ॥ खंडयामासु रधिकं मीना सैन्यं महाभटाः ॥ ३२ ॥ श्रीराणा राजसिंहेन्द्रो मेचलं त्वखिलं ददौ ॥ स्वीय राजन्य धन्येभ्यो वासोह पधनानिच ॥ ३३ ॥ शते सप्त दशे तीते विंशत्या क्वय वत्सरे ॥ श्रीराजसिंह स्याज्ञातः सिरोही नगरेगतः ॥ ३४ ॥ रानावतोरामसिंहः ससैन्यो रावमाकुलं ॥ पुत्रेणोदयभानेन रुद्वंकलानयद्वलात् ॥ ३५ ॥ अखेराजं तस्यराज्ये स्थापयामास तत्स्फुटं ॥ राणामित्रारि राज्यानां स्थापकोत्थापकाइति ॥ ३६ ॥ शतेसप्तदशे पूर्णे एकविंशतिनामके ॥ वर्षेमार्गे ऽसिताष्टम्यां राजसिंहो महीपतिः ॥ ३७ ॥ अनूपसिंह भूपस्य वाघेला वांधवप्रभोः ॥ भावसिंहकुमाराय कन्यामजवकूंवरीं ॥ ३८ ॥ संकल्प्य विधिना दत्वा महाराज न्यपंक्तये ॥ गोत्रजाद्यन्यकन्याना मष्टाग्रां नवतिं ददौ ॥ ३९ ॥ अथायं पाकशालायां राजसिंहो नरेश्वरः ॥ भावसिंहकुमाराद्यै र्वांधवीयैस्तुवाहुजैः ॥ ४० ॥ अस्पर्शभोजिभिः साक मुपविष्टो विशिष्टभाः ॥ कुर्वाणोभोजनं भाति वांधवाये स्तदेरितः ॥ ४१ ॥ श्रीराणा राजसिंहस्य यदन्नमतिपावनं ॥ तज्जगन्नाथ रायस्य प्रसादान्नंनसंशयः ॥ ४२ ॥ तदन्नभोजिनोह्यद्य वयंप्राप्ताः पवित्रतां ॥ ह्यान्गजान्भूषणानि वरेभ्यो दान् महीपतिः ॥ ४३ ॥ पूर्णेशतेसप्तदशेसुवर्षे तथैकविंशत्य भिधेतुमाघे ॥ सुरूप्यमुद्रा द्विसहस्र हेम कृतांशुभो पस्करपूरितांच ॥ ४४ ॥ सूर्योपरागेतु हिरण्य कामधेनुं महादान मदात्सरूप्यां ॥ व्यधात्तुलां वा गजमौक्तिकाख्यां गजंददौ वीरवरो नरेंद्रः ॥ ४५ ॥ शतेसप्तदशे पूर्णे पंचविंशति नामके ॥ वर्षेमाघे राजसिंहो दशम्यां शुक्लपक्षके ॥ ४६ ॥ बडी ग्रामे तडागस्योत्सर्गं रूप्यतुलां व्यधात् ॥ नामाकरोत्तडागस्य जना सागर इत्ययं ॥ ४७ ॥ ददौ गरीबदासाख्य पुरोहितवरायसः ॥ ग्रामंतु गुणहंडाख्यं तथादेवपुराभिधं ॥ ४८ ॥ पट्लक्षाणि सहस्राणि अष्टाशीति मितान्यहो ॥ लग्नानिरूप्य मुद्राणां तडागेभद्रदायके ॥ ४९ ॥ जनादेनामयुक्तायाः स्वमातुः स्वर्ग संस्थिते ॥ अर्पयामास सुकृतं राजसिंह इदंनृपः ॥ ५० ॥ तथो दयपुरेत्वस्मि न्दिनेराण नृपोक्तितः ॥ महाराज कुमारश्री जयसिंहो महाश्रिया ॥ ५१ ॥ उत्सर्गं रंगसरस स्तडागस्या करोन्मुदा ॥ महादानानि कृतवा न्वीरो वाल्येति पुण्यकृत् ॥ ५२ ॥ श्रीराणोदयसिंह सूनु रभवत् श्रीमत्प्रतापः सुतस्तस्य श्रीअमरेश्वरो स्यतनयः श्रीकर्णसिंहोपिवा ॥ पुत्रोराण जगत्पतिश्च तनयो स्मादाजसिंहोस्यवा

पुत्रः श्री जयसिंह एवकृतवान्वीरः शिला लेखितं ॥ ५३ ॥ पूर्णे सप्तदशे शते तपसिवा सत्पूर्णिमास्ये दिने द्वात्रिंशन्मितवत्सरे नरपतेः श्रीराजसिंह प्रभोः॥ काव्यं राजसमुद्र मिष्ट जलधे रुत्सर्ग सद्वर्णना संपूर्णं रणछोड भट्ट रचितं राजप्रशस्त्या ह्वयं ॥ ५४ ॥ इतिश्री अष्टमः सर्गः॥ संवत् १७१८ अपरे संवत् सतरेसे अठारे होतरा वरषे माघमासे कृष्णपक्षे सप्तमी दीवसे बुधवासरे श्री राजसमुद्ररो आरंभरो महोरत कीधो संवत् १७३२ अपरे संवत् सतरेसे बतीसा वरषे माघमासे सुकलपक्षे पूर्णमासी दिवसे वृहसपतिवारे श्री राजसमुद्ररी प्रतिष्टा कीधी श्रीजीराजसमुद्र डोरो दिन ६ माहे फेर्‌यो ने पाछा पधारने तुला सोनारी वेसेने समस्त ब्राह्मण भाट चारणाने दान दीधोजी भट रणछोड़जी पुत्र सुत लषमीनाथ गजधर कल्याण गजधर मोहणजी उरजण केसोजी सुंदरलाल जात सोमपुरा वास उदयपुर ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः॥ वृत्तास्योडुपशोभितः प्रविलसल्लावण्यकल्लोलवान् प्रोल्लोल न्मकराच्छकुंडलधरो राजीव राजीक्षणः॥ माणिक्योज्वलहीरकोत्तमसहा भूषः प्रत्रा- लै र्लसन् शृंगारामृतसागर स्तव मुदे गोवर्द्धनोद्धारकः ॥ १ ॥ महाराजाधिराजश्री जगत्सिंहे विराजति ॥ वत्सरेष्टनवत्याख्ये शते षोडशके गते ॥ २ ॥ श्रीकुमारपदे पूर्वे राजसिंहो ययौ प्रति ॥ दुर्गं जैसलमेराख्यं पाणिग्रहकृते तदा ॥ ३ ॥ द्वाद- शाब्दवया एव प्रवया इव बुद्धिमान् ॥ द्वादशात्मस्फुरत्तेजा इदृशीं मति मादधे ॥ ४ ॥ धोयंदासनवाडश्च सिवाली च भिगावदा ॥ मोर्चना चपसुंदश्च खेडी छापर खेडिका ॥ ५ ॥ तासोल मंडावरको भानोग्रासो लुहानकः ॥ वांसोल गुढलीएषां काकरोली मढाइति ॥ ६ ॥ ग्रामाणां सीम्निदृष्ट्वाक्ष्मां तडाग करणोचितां ॥ स्वमनः स्थापयामास वहुमत्रजलाशयं ॥ ७ ॥ धर्मकार्ये सतेर्धर्त्ता शत्रोर्हर्त्ता सदारणे ॥ यदाराज्यस्य कर्त्तायं भुवोभर्त्ता भवत्तदा ॥ ८ ॥ शतेसप्तदशेपूर्णे अष्टादशमितेब्दके ॥ मासेमार्गे ययौ द्रष्टुं रूपनारायणं हरिं ॥ ९ ॥ तदैनां वीक्ष्यवसुधां तडागंवहु मुद्यतः ॥ पुरोधसा करोन्मंत्रं कार्यस्यादितिसो वदत् ॥ १० ॥ श्रद्धा पूर्णा ऽ विरोधित्वदिल्लीशेन व्ययोवहुः ॥ द्रव्यस्येति भवेच्चेत्स्या द्राज्ञोर्कस्यात्त्रयं ततः ॥ ११ ॥ पुरोहित करश्रीमत् पुरोहितपुरः सरः ॥ पुरोहित जयीराजा कार्यंकर्त्तु मथोद्यतः ॥ १२ ॥ अरवर्वयोः पर्वतयो रंतरेगो मतीनदीं ॥ रोद्धुंवद्धुं महासेतुं रानेन्द्रो यत्नमादधे ॥ १३ ॥ पूर्णेसप्त दशाभिधे तु शतके स्वष्टादशाख्येब्दके माघेकृष्ण सुपक्षके किलवुधे सत्सप्तमीवासरे ॥ इदक्संख्य इहे दशाङ्कयुते कालेतुकार्येकृते सख्यातःखलुनामतो पिचसमो

मे वांछितोर्थो भवेत् ॥ १४ ॥ पूर्णोत्रेतिच सप्तसागर दशा साष्टादश द्वीपक श्रेण्यास्वीययशः प्रकाश कृतये माऽघोमम स्यात्कचित् ॥ कृष्णः पक्षकरो बुधाः स्तुति कराः सत्सप्तमी दिग्ध्रुव ध्रौव्यार्थं तु जलाशयस्य कृतवान्भूपो मुहूर्तग्रहं ॥ १५ ॥ सेतुं बद्धुं बद्धपणै धृतचित्रखनित्रकैः ॥ जनैः खनन मारब्धं लुब्धै श्च धनलब्धये ॥ १६ ॥ तदोद्भटैः षष्टिसहस्रसंमितैः समुद्रसर्गे सगरात्मजै र्यथा ॥ अकारि भूमेः खननं तथांबुधिं कर्तुं द्वितीयं रचितं नृकोटिभिः ॥ १७ ॥ असंख्ये खनने तत्र जायमाने जनैः कृते ॥ पृथिव्यां पृथवोजाता मृत्तिकौघेन पर्वताः ॥ १८ ॥ महत्कार्ये महाराणा सता साधारणै र्जनैः ॥ नभवेत्तत्स्वयंस्थिला कारयन् भातियुक्तता ॥ १९ ॥ मत्वा रानो महत्कार्यं सेतुबंधं नृबंधहृत् ॥ स्वस्याग्रे कारयामास तथैव कृतवान्प्रभुः ॥ २० ॥ कार्यस्य महतोह्यस्य कृत्वाभागा ननेकशः ॥ राजंन्यादिक धन्येभ्यो दत्तवांस्ता न्धरापतिः ॥ २१ ॥ सेतोर्दार्ढ्यं कृतेपृथ्व्याः पृष्ठेस्थापयितुं शिलाः ॥ जलनिःसारणं कर्तुं प्रयत्नं कृतवान्नृपः ॥ २२ ॥ शक्रं पराक्रमैः कालमायुषा धनदंधनैः ॥ जित्वां बुकर्षणे राणा वरुणं जेतु मुद्यतः ॥ २३ ॥ तदा चक्रभृता तत्र घटीयंत्रेण यत्कृतं ॥ वृषयुक्तेन कार्यस्य सहाय्यमुचितं हितत् ॥ २४ ॥ क्रियमाणे घटीयंत्रै र्जलनिःसारणे जनैः ॥ तेषां तत्कार्यकरणे सार्थकः सघटीगणः ॥ २५ ॥ स्वतंत्रैश्च घटीयंत्रै रस्वतंत्रैः स्फुरद्वृषैः ॥ घटीमात्रेण घटितै र्भूरि निःसारितं जलं ॥ २६ ॥ जलयंत्रै र्बहुविधै रुपर्युपरिकल्पितैः ॥ लोके भूपृष्ठगं नीरं सर्वं दूरीकृतं द्रुतं ॥ २७ ॥ अस्मिन् भरतखंडेतु यावंतः संतिसांप्रतं ॥ जलनिःसारणो पाया स्तावंतः कल्पिता इह ॥ २८ ॥ गुणिभिः सूत्रधारैश्च पामरैरपियैः पुनः ॥ जलनिःसारणो पायाः प्रोक्तास्ते निर्मिता इह ॥ २९ ॥ इतो निःसारितं नीरं सारणी प्रसरैः परैः ॥ ग्रामेग्रामे जनैर्नीतं ग्रामा नगरतां गताः ॥ ३० ॥ यथा ज्योतिष सारण्यावासर श्रेष्ठ साधनं ॥ कृतंतथांबुसारण्या वत्सरः श्रेष्ठसाधनं ॥ ३१ ॥ एवं नाना प्रकारेण जलंनिःसार्य सर्वतः ॥ सेतुबंध कृतेलोके भूपृष्ठं प्रकटीकृतं ॥ ३२ ॥ प्रत्यरुनीरवर्षो जितइंद्रो गिरिधरेण कृष्णेन ॥ वरुणः परोक्ष पूरितजलो जितोराण तत्त्वयाचित्रं ॥ ३३ ॥ पूर्णे सप्तदशे शतेब्द उदिते दिव्यैक विंशत्यभि व्याप्ताख्ये दिवसे त्रयो दशिकया शस्याख्य याक्ते- शुभे ॥ वैशाखे सितपक्षके खलुविधो र्वारेकिलै तादृशे कालेभावि सुकार्य सूचक समानार्थ व्रजाख्या युते ॥ ३४ ॥ जंबुद्वीप वदन्य सप्त दशसु द्वीपेषु कीर्त्याप्तये निंद्योद्य न्निरयैक विंशतिमहा दुःखस्थला दृष्टये ॥ घस्त्रेशद्युति लब्धये कुलमहा शाखा विवृद्ध्यै सदा लाभार्थं सितपक्ष कस्यचविधु स्वाल्हादकलाप्तये ॥ ३५ ॥ श्रीराणा राजसिंहोयं सेतोः सत्पद पूरणं ॥ कर्तुं मुहूर्तं कृतवां

न्नवग्रह बलान्वितः ॥ ३६ ॥ कुलकं ॥ गरीबदासस्य पुरोहितस्य ज्येष्टः कुमारो रणछोडरायः ॥ महाशिलां पंच सुरत्नपूर्णा मादौ दधे तत्र पदस्य पूर्त्यै ॥ ३७ ॥ दृढोपलप्रदानेन सुधापानेन यत्ततः ॥ सेतोःपदस्याजरत्व ममरत्वं कृतंजनैः ॥ ३८ ॥ महासेतोः प्रबंधेस्मि न्महाकार्ये महागजैः ॥ सुधा चूर्णं समानीतं परिपूर्णं नचाद्भुतं ॥ ३९ ॥ सर्वतो मुख रूपस्य जलस्य मुख मुद्रणं ॥ धीरादृर कृतायुक्तं राजसिंह त्वयाकृतं ॥ ४० ॥ छिद्रान्वेषी जलगण इहक्ष्माप सर्वसहोद्य न्मूर्द्धनिस्वीयं दध दति पदं दृष्ट मात्रं त्वयातु ॥ यत्रै वात्रो चित मिति शिलाश्रेणिभिः क्षारचूर्णा ऽऽ पूर्णाभि र्द्राक्त दतुल मुखो न्मुद्रणं स्टष्टमेव ॥ ४१ ॥ नूनं कामो सिराणेंद्र यत्र तत्रो दितच्छलात् ॥ शंबरं मुद्रितं तन्वन् युक्तंसेतु प्रबंधकृत् ॥ ४२ ॥ कबंध विक्रमजयी वानर व्रज पोशकः ॥ रामक्रमाभिरामोसि सेतुंबध्नासि युक्तता ॥ ४३ ॥ गोत्रैणैकेनचक्रे हरिरमित जलं दूरतःशुक्रमुक्तं सप्ताहं श्रीमतातद्वरुण समुदितं वारिदूरीकृतंहि ॥ आसप्ताब्दं सुगोत्रा तुलितभरभृता तांत्रिलोकप्रपूर्ति स्त्वत्कीर्तिः कृष्णकीर्ते रपिभवति परा कृष्णभक्तस्यवीर ॥ ४४ ॥ श्रीराजसिंहः प्रथमं शरीबंधमकारयत् ॥ महा सेतोस्ततः पश्चात्सेंभरो बंधनंदृढं ॥ ४५ ॥ मत्स्याः पांडररक्तपीत रुचयः सेतो स्तभागेपुरे पातालात्किल निर्गताःशुभतरं गर्भोदकं निसृतं ॥ तेनोक्तंत्विहसूत्रधार निपुणे रंभोत्यगाधंभवे द्भूपालाय निवेदितं नरपतिः श्रुत्वास्मितास्यो भवत् ॥ ४६ ॥ रामोनांभोपसार्यक्षितिशिरसिनवा कारयामाससेतुं गोत्रैर्द्राग्वानरैर्वा ऽ दृढइतिधनुषा वानरामुंबभंज॥ दूरीकृत्यांबुपृष्टे भुवनइहनरैः सृष्टवान्सूपलैस्त्वं सच्चूर्णैरामवंश्याधिक दृढइतिते तत्कपातोस्तिसेतुः ॥ ४७ ॥ स्थलेजलाशयःसृष्टो जलेसेतोस्थलं त्वया ॥ कांतारे नगरं सृष्टं वीरते दैवपूर्णता ॥ ४८ ॥ इतिभट्टरणछोडकृते श्री राजप्रशस्ति काव्ये ॥ इति नवमः सर्गः ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ सुवर्ण सत्पूरित भासमानः श्री द्वारिकायां घन भासमानः ॥ चतुर्भुजो राजसमुद्र तीरे श्री द्वारिकानाथ हरिः सु तीरे ॥ १ ॥ आनीत मंभः किल राज मन्दिरो द्भव वृषौघै र्महिषै र्जनव्रजैः ॥ सत्कार्य वर्ये बहु शस्तदानीं व्याघ्रेण वा नीतमिदं तदद्भुतं ॥ २ ॥ सुवर्ण शैले किल जिष्णु रूपः श्री राजसिंह कृतवान् मनस्वी ॥ जेतुं जगत्या मसुरान् सु दुर्गं स्वमंदिरं सुन्दरम द्वितीयं ॥ ३ ॥ पूर्णे शते सप्तदशे तु मार्गे वर्षेत्र षड्विंशति नाम्नि भूपः ॥ पांडोर्दशम्यां क्षिति मन्दिरेंद्रः प्रासाद मध्ये कृतवान् प्रवेशं ॥ ४ ॥ शते सप्तदशे तीते षड्विंशति मिते ब्दके ॥ ऊर्ज कृष्ण द्वितीयायां राजसिंहो महीपतिः ॥ ५ ॥ हेम्नः पल शतैः सृष्टं पंच कल्प द्रुमै र्युतं ॥ हेम्नः पल शतैः सृष्टं महाभूत घटाभिधं ॥ ६ ॥ हिरण्याश्व

रथं रूप्य मुद्रा दशशतैः कृतं ॥ दत्वा महादान युग मेतद्विप्रा न तोषयत् ॥ ७॥ विप्रेभ्यो राजसिंहः प्रभुमुकुट घटः श्री महाभूत पूर्वो दत्वा देव द्रुमाक्तः सकल सुरमयो मेरु रेवल यायं ॥ तद्देवाः स्थान हीनाः कृतमतय इतो ब्राह्मणेषु प्रविष्टा स्तेजाता भूमिदेवा दधति गृहगणे मेरुभोगं तदीये ॥ ८ ॥ एकादश सहस्राणि षट्शतानिच सप्ततिः ॥ लग्नानि लग्न रूप्यस्य मुद्राणां दान योरिह ॥ ९ ॥ पूर्णे शते सप्त दशे थ वर्षे चकार षड्विंशति नाम्नि राधे ॥ सित त्रयोदश्य भिधेन्हि सेतोर्नृपो मुहूर्तं पुरि कांकरोल्यां ॥ १० ॥ ततोत्र खातो रचितः पृथिव्यां जनैर्विचित्रैः पृथुभिः खनित्रैः ॥ महाशिला भिः ससुधा भराभिः सेतोः पदं पूरित मेव तुंगं ॥ ११ ॥ पूर्णे शते सप्तदशे थ वर्षे आषाढ मासादिक एव जाता ॥ ज्येष्ठेत्र षड्विंशति नाम्नि नव्या जलस्थिति दृष्टि भवातडागे ॥ १२ ॥ पूर्वत्राषाढ बहुल पक्षे स्मर तिथौ रवौ ॥ द्विषष्टिके नवा पंच मासैः षड्भि र्दिनैः कृतं ॥ १३ ॥ मुखसेतोस्तु भू पृष्टंसुधा पूर्ण शिलागणैः ॥ पूरितं भित्ति रूपोच्चं सूत्रधारैर्ध्रुवंकृतं ॥ १४ ॥ इदृकाल कृतस्या स्य दृष्ट्वा सिद्ध्य ष्टकं नृणां ॥ पंचेन्द्रियाणां पापांतः षडूर्मि हरणं भवत् ॥ १५ ॥ अस्मिन्महावत्सर एवनव्यं संस्थापितं यत्तुजलं तडागे ॥ दूरीकृतं तत्तु समस्तमेवं जनैश्चतुष्की करणे प्रवीणैः ॥ १६ ॥ आशा चतुष्का गतमानवैर्नवै र्नानाचतुष्क्यः खनिता जलाशये ॥ दृष्ट्वा चतुष्की युत एवसोद्धृतं नृणां पुमर्थो ह्यचतुष्कदो भवत् ॥ १७ ॥ ततश्चतुष्की गणनिः सृतानां मृदां समूहा मनुजे र्वृषाद्यैः ॥ सहस्रसंख्यैः सुखतः प्रणीता मध्यस्य सेतोः परिपूरणाय ॥ १८ ॥ मृदांगणैः कल्पित पर्वतौघाः सेतौनिलीनाः क्वचनैव दृश्याः ॥ यथा पुरा राघव सेतुबंधे याता विलीनत्व महोगिरींद्राः ॥ १९ ॥ शतेसप्तदशे पूर्णे सप्तविंशतिनामके ॥ वर्षे स्वजन्मदिवसे हेम हस्ति रथं शुभं ॥ २० ॥ हेम्नो विंशत्यग्रदशशततोलकनिर्मितं ॥ महादानविधानेन राजसिंह नृपोददौ ॥ २१ ॥ पूर्णेशते सप्तदशेसुवर्षे सत्सप्तविंशत्यभिधे मुहूर्तः ॥ आषाढ मासे ऽ सितसच्चतुर्थ्यां नृपेणनौः स्थापन कस्यसृष्टः ॥ २२ ॥ जनैस्तृतीया दिवसेतुनौका योग्यं जलं नेति कृते विचारे ॥ आगामिवर्षेतु वृहस्पतिः स्यात् सिंहस्थितस्तत्सुमुहूर्त एषः ॥ २३ ॥ नान्योत्र वर्षेस्ति तडागकार्ये मुख्य स्तुराणावत रामसिंहः ॥ तदोक्तवानस्तिहि चोकडीन मध्ये जलं क्षेप्य मिहान्य दंभः ॥ २४ ॥ नौका मुहूर्तोस्तु महापुरोधा गरीबदासा भिध उक्तवान्यः ॥ अग्रेप्रभोरेष जनाविचारं कुर्वंति राजन्नितिवामहान्तः ॥ २५ ॥ आश्चर्य मेपा मम भाति चित्ते स्यात्कार्य मासीत्सुखवा न्नृपस्ततः ॥ श्रुत्वा द्विजान्वा रुणसूक्त मंत्रं

जप्त्वास विद्वान दिश्शपुरोधाः ॥ २६ ॥ शृंगार पूर्णां प्रविधाय नौकां मुहूर्तमागामिसु वासरेतु ॥ नौकाधि रोहस्य मुदा विधातुं कृतप्रतिज्ञं नृपराजसिंहं ॥ २७ ॥ समीक्ष्य शक्रोपि सचिंतएवा भवत्तदास्मि न्समये मयाचेत् ॥ क्रियेतवृष्टि र्नतदाममैव दोषंवदिष्यंति जनाः समस्ताः ॥ २८ ॥ इंद्रात्प्रभुत्वं क्षितिपद्यपाठ चित्तेवधार्यै तिममांशएषः ॥ पूर्णास्यकार्ये तिमया प्रतिज्ञा रक्ष्याद्विजाना मपिसु प्रतिष्ठा ॥ २९ ॥ ततस्तृतीया द्विवसे द्वितीये यामे ववर्षुर्जलदा मुहूर्तं ॥ नौकाधिरोहस्य चकारभूपो मंदाकिनी नौः स्थित शक्र तुल्यः ॥ ३० ॥ उक्तं जनैः कर्त्तुमयं यदेव समुद्य तस्त त्परमेश्वरोत्र ॥ करोति चाग्रे सफलं सुकार्यं भविष्यती त्यस्य तथो भवत्तत् ॥ ३१ ॥ पूर्णेंशते सप्तदशे सुवर्षे ऽ ष्टाविंशतिश्चा जितनामधेये ॥ राकातिथौ नालविमुद्रणंद्राक् ज्येष्ठे कृतं सूत्र धरै र्नृपोक्त्या ॥ ३२ ॥ शते सप्तदशे पूर्णे एकोनत्रिंशदाह्वये ॥ वर्षे विधुग्रहे माघे दानं कल्पलतात्मकं ॥ ३३ ॥ हेम्नः सार्द्धशतद्वंद्व पलैः स्टष्टं ददौ तथा ॥ हेम्नः स्त्व शीत्य ग्रशत्त तोलकैःपरिकल्पितैः ॥ ३४ ॥ हलैस्तु पंचभि र्युक्तं पंचलां गलनामकं ॥ भावलीग्रामसंयुक्त महादानं ददौ नृपः ॥ ३५ ॥ अष्टाविंशत्यग्र दश शततोलक संमितिः ॥ हेम्नः समभव द्दिव्य दानयो रनयोरिह ॥ ३६ ॥ पूर्णे शते सप्तदशे सदेकोनत्रिंश दाख्याब्दसु फाल्गुनेत्र ॥ कृष्णात्तमेका दशिकादिनेवा शुभे भवानीगिरि पार्श्वदेशे ॥ ३७ ॥ सत्संगि कार्यस्यतु मुख्यसेतौ नृपो मुहूर्त्तं कृतवा न्कृतींद्रः ॥ श्लक्ष्णीकृतैः पांडरवर्णसाधु सुधाधिसिक्तै र्दृढसंधिबंधैः ॥ ३८ ॥ महो पलैः पेशल सूत्र धारै र्वितन्यमानं किल संगिकार्यै ॥ धृते दृढे संगिनि कार्य वर्ये नृपस्य चित्तं सुख संगि जातं ॥ ३९ ॥ शते सप्तदशे तीते एकोन त्रिंशदाह्वये ॥ ज्येष्ठस्य शुक्ल सप्तम्यां राजसिंहो महीपतिः ॥ ४० ॥ एकलिंगालये छिद्र सरआख्ये जलाशये ॥ ससोपाने जीर्णसेतौ प्रतोलीनां चतुष्टयं ॥ ४१ ॥ व्यधात्सुव प्रंसत्कार्यं सुशिला गणराजितं ॥ अष्टादश सहस्राणि रूप्यमुद्रा वले रिह ॥ ४२ ॥ लग्नानि राणवीरोक्त्या प्रशस्तिर्निर्मिता मया ॥ श्रुत्वा तां स ददा वाज्ञां शिलायां लिखनायमे ॥ ४३ ॥ इति श्री राजप्रशस्ति नाम महाकाव्ये रणछोड भट्ट रचिते दशमः सर्गः ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ सेतो र्मितिः पंच शतानिदैर्घ्ये मुख्यस्य वैपंच दशोत्तराणि ॥ तलेगजानां च शतानि पंच सैका न्यशीति प्रमितानि मूर्द्धनि ॥ १ ॥ विस्तरे पंच पंचाशन्मिता निम्नक्षितौगजाः ॥ दशोपर्युदये संति द्वाविंशतिमिताः क्षितौ ॥ २ ॥ निम्नायां पंचयुक्त्रिंश दूर्द्ध्वं तत्र क्रमं वदे ॥ भूम्यूर्द्ध्व माष्टगजकं पीठमेकोर्द्धयुग्गजः ॥ ३ ॥ मेखलात्रयमानं तासार्द्धद्वादशसद्गजं ॥ तिलकत्रय मग्रे

थ त्रयोदश गजावधि ॥ ४ ॥ चत्वारः संगिकार्यस्य स्थरा एकस्थरं प्रति ॥ सोपान नवकं त्वेवं पट्त्रिंश त्प्रमितिः स्फुटा ॥ ५ ॥ सोपानाना मित्युदये पंचत्रिंश-द्गजैर्मितिः ॥ सप्त पंचाशदित्येवं गजाः सर्वोदयस्थितौ ॥ ६ ॥ त्रयं बुरिज कोष्टानां कोष्टे प्रासाद दिक्स्थिते ॥ दैर्घ्ये गजा स्तु पंचाश न्निर्गमे पंचविंशतिः ॥ ७ ॥ सन्पंच सप्तति र्वृत्ते त्रिंशदेवो दयेगजाः ॥ गर्भ कोष्टं लंबतायां पंच सप्तति कागजाः ॥ ८ ॥ सार्द्ध सप्ताग्र कत्रिंश न्निर्गमे वृत्त रूपके ॥ शतं सार्द्ध द्वादशकं गजानां च तथोदये ॥ ९ ॥ पंचत्रिंशद्गजाः कोष्टं तृतीयं पूर्व कोष्टवत् ॥ पंच चत्वारिंशदग्र शतमानं गजा मृदः ॥ १० ॥ भृतौ सेतौ स्तु पाश्चात्य भागे प्रोक्ता स्ति लंबता ॥ गज सप्तशती माना विस्तारे निम्न भूतले ॥ ११ ॥ गजा अष्टा दशैवोर्द्ध पंचैव मुदये तथा ॥ अष्टाविंशति संख्या स्तु सर्वा सेतौ रियं स्थितिः ॥ १२ ॥ षड्त्रिंश दुपयन्मिति शोभमाना सोपान माला महतो हि सेतोः ॥ विभाति कोष्ठत्रितयं तदेतद्भूपाल पालं वनकारि नूनं ॥ १३ ॥ धर्मा बुधावत्र महास्मृतीना मुपस्मृतानां विदधत्तु संगं ॥ देवत्रयं चात्र करोति वासं कलिप्लुतांम्लेच्छ भुवं विमुच्य ॥ १४ ॥ राजमन्दिर दिश्यस्ति स्थानंतु चतुरस्त्रकं ॥ सेतौ तत्राथर्वणाख्यो वेदस्तिष्ठतिं मंत्रवान् ॥ १५ ॥ जलहट्ट मयं तत्र शोभतेत्रार हट्टकं ॥ तद्राजमन्दिराख्ये स्मिन्दुर्गे वाप्यां जलार्थकं ॥ १६ ॥ आस्ते नव चतुष्कीयुङ्मंडपं तत्र सुन्दरं ॥ जल दर्शि गवाक्षाक्त मतिचित्रकरंन्नृणां ॥ १७ ॥ महासेतौसंगिकार्य वर्येविजयतेपरं ॥ युक्तं नवचतुष्कीभीराजमंडप युग्मकं ॥ १८ ॥ नवखंडस्थ लोकानां दर्शना च्चित्रकारकं ॥ पट्चतुष्की विलसित मेकंवाभातिमंडपं ॥ १९ ॥ पश्चाद्भागे महासेतौ मंडपं त्रितयं तथा ॥ सभामंडप मेकंहि महासेतोरियं स्थितिः ॥ २० ॥ निंबसेतु प्रमाणंतु वक्ष्यामि क्षितिपालते ॥ दैर्घ्ये गजानां द्वात्रिंशदग्रंशत चतुष्टयं ॥ २१ ॥ विस्तारे पंचदशवे निम्न भूमौ गजास्तथा ॥ पंचोर्द्ध मुदयेचैव दशाथो भद्रसेतुके ॥ २२ ॥ चतुश्चत्वारिंशदग्रं गजानां दैर्ध्यतः शतं ॥ विस्तारे द्वादशगजा स्तलेपंचैव मस्तके ॥ २३ ॥ त्रयोदशोदये भद्रं सुभद्रं चतुरस्त्रकं ॥ कोष्ठकं विंशतिगजा मृद्भृताविति संस्थितिः ॥ २४ ॥ कांकरोलि ग्रामसेतौ दैर्घ्ये निम्न धरातले ॥ पंचाशद्युक् पंचशती गजानां मूर्द्धनि सप्तवै ॥ २५ ॥ शतानिवा षट्पंचाशत्पंचत्रिंशच्च विस्तरे ॥ निम्नभूमौ सप्तगजा मस्तकेतूदये तथा ॥ २६ ॥ निम्न भूमौ सप्तदश गजा उपरिवाभुवः ॥ गजा अष्टत्रिंशदेव कोष्टक त्रितयंत्विह ॥ २७ ॥ सभामंडप दिक्संस्था कोष्टेऽष्टा विंशतिर्गजाः ॥ विस्तारे निर्गमेमाने चतुर्दश तथोदये ॥ २८ ॥ सार्द्धषड्त्रिंशदेवाथ सुभद्रे मध्य कोष्ठके ॥ षड्विंशद्विस्तरे पंच दश निर्गम

ने गजा: ॥ २९ ॥ उदयेष्टत्रिंशदेव तृतीयेपूर्वादिक् स्थिते ॥ कोष्टेऽष्टा विंशति र्माने विस्तारे निर्गमे गजा: ॥ द्वादशैवो दयेसप्त त्रिंशदेव मृदाभृतौ॥ पंच चत्वारिं-शदग्रं गजानां शतकं तत: ॥ ३० ॥ पाश्चात्यभागे सेतोस्तु गजानां चतुरस्त्रकं ॥ दैर्घ्येविस्तारत: पंचदश निम्न क्षितौ गजा: ॥ ३१ ॥ दशमूर्द्धन्यु दयेत्वद्य द्वाविंशति मिता गजा: ॥ अत्रोदयस्तु भवति अष्टात्रिंशद्गजावधि: ॥ ३२ ॥ अयोध्या रेणुका क्षेत्रव्रजेभ्यो म्लेछ भीतित: ॥ भांत्या गत्या ध्यात्म रूपे त्रिरामा कोष्टकत्रये ॥ ३३ ॥ भृतौजीर्णेशनि लयमागते स्थापितं हितत् ॥ मार्गेस्य स्थापित स्तस्य-दर्शनं जायतेसदा ॥ ३४ ॥ रामसेतौ यथाभाति श्रीरामेश्वर मंदिरं ॥ तत्तुल्यं कांकरोलीस्थ सेतौभाति शिवालयं ॥ ३५ ॥ कांकरोलीस्थ सेत्वग्रभागे वामंड पात्त्रय: ॥ चतु: स्तं भाविशोभंते सभामंडप एकक: ॥ ३६ ॥ कांकरोली स्फुरत्से तोरग्रेतू परिभूभृत: ॥ शिलाकार्यं कृतंतत्र दैर्घ्ये गजशतत्रयं ॥ ३७ ॥ विस्तारो दययो: पंचगजा: पंचाथ नाशकं ॥ गोघट्ट पार्श्वे दैर्घ्येत्र चतु: पंचाश दुत्तमा: ॥ ३८॥ गजा दशैव विस्तारे उदुयेतु त्र — — — — — — गोवु — — — दैर्घ्ये — — चतु: पंचाश देवतु॥ चतु: पंचाशदेवात्र विस्तारे घट्ट भूतले॥ उदयेतु गजा: पंच भात्य कामह — प ॥ ३९ ॥ — — षा ग्राम पार्श्वेतु सेतोर्दैर्घ्ये गजावले:॥ द्वेसहस्त्रे ऽष्ट षष्टिश्च विस्तारेष्टा दशस्फुटं ॥ ४० ॥ तलेमूर्द्धनि गजा: सप्त चतुर्विंशति सद्गजा: ॥ उदये कोष्टक द्वंद्व मत्राष्टा समथैककं ॥ ४१ ॥ गजा अष्टाविंशति स्तुतत्र दैर्घ्येथ निर्गमे ॥ चतुर्दशो दयेसंति चतुर्विंशति सद्गजा: ॥ ४२ ॥ सप्तांगस्यापि राज्यस्य धर्मस्या त्रास्तिसुस्थिति: ॥ राणराज्ये ज्ञापकोष्ट रेखाकं किमुकोष्टकं ॥ ४३ ॥ द्वितीय मर्द्ध चंद्राख्यं दैर्घ्ये विंशति सद्गजा: ॥ विस्तारे दशसंत्यत्र द्वादशैवो दये-गजा: ॥ ४४ ॥ अर्द्धचंद्र धर श्रीमद्रुद्र क्रीडा स्थलं हितत् ॥ पंचचत्वारिंश दग्र शतमाना मृदोभृतौ ॥ गजा: पाश्चात्य भागेतु सेतो दैर्घ्ये त्रयोदश ॥ शतान्येव गजानांतु निम्न भूमौ तथोपरि ॥ ४५ ॥ गजादशैव विस्तार उदये पंचवागजा: ॥ वांसोलग्राम पार्श्वस्थ सेतौदैर्घ्ये गजावले: ॥ चतुर्विंशति संयुक्त सुद्वादश शता-निहि ॥ ४६ ॥ विस्तारे ऽष्टादशगजा स्तलेपंचैव मस्तके ॥ त्रयोदशो दयेकोष्ट त्रयमाद्ये त्रकोणगे॥ ४७ ॥ गजाविंशति रेवात्र दैर्घ्य विस्तारयो: समा: ॥ द्वाद-शैवो दयेत्वेत च्चतुरस्त्रं सुभद्रकं॥ ४८॥ सुभद्रदंसाऽरहट्ट सारहट्ट तदौचिती ॥ मध्य-कोष्टे द्वादशैव दैर्घ्य निर्गमयोर्गजा: ॥ ४९ ॥ उदये सप्तदशवा अर्द्धचंद्रा कृति-त्विदं ॥ यद्दर्शनादर्द्ध चंद्रप्राप्ति दु:खं द्वि — गले ॥ ५० ॥ अष्टास्त्रकोष्टं कमल बुरिजा ह्वय मत्रतु ॥ दैर्घ्य विस्तारयो स्त्रिंशद्गजा नवतथोदये॥ ५१ ॥ अत्रोज्वलो

पललसन्मंडपं सेतुमंडनं ॥ दृष्टाष्ट पुत्रिका स्पष्ट क्रीडा दृष्टि मनोहरं ॥ ५२ ॥ जनाराज समुद्रं हिरना करमिहांबुनि ॥ स्थित्वाष्टपट्ट राज्ञीस्ता: पश्यनूकिं शेरनेहरि: ॥ ५३ ॥ अग्रसेतो रग्रभागे राजते मंडपत्रयं ॥ इति राजसमुद्रस्य वेरिंद्रोक्त मया स्थिति: ॥ ५४ ॥ इति श्री राजप्रशस्तौ भट्ट रणछोड़ विरचिते एकादश: सर्ग: ॥ ११ ॥ आसोटियास्त सेत्वग्र भागे सन्मंडप त्रयं ॥ ६ ॥

श्रीगणेशायनम: ॥ ओटालेका त्रलंबत्वे सार्द्ध द्विशत संमिता: ॥ गजादश च विस्तारे साङ्क सुगजो दया: ॥ १ ॥ ओटाद्वितीय विस्तारे दैर्घ्यं पूर्व समोदये ॥ सार्द्धद्विगजमानास्ति तृतीयोटातु दैर्घ्यत: ॥ २ ॥ गजत्रिंशत मानास्ति विस्तरे सगजादश ॥ उदये सगजद्वंद्वा मंडपत्रय मत्रहि ॥ ३ ॥ ओटात्रय मिदं भाति यावद्गज सुविस्तरं ॥ तावद्ग्राम गणं नीरे पूर्णं वितनुते ध्रुवं ॥ ४ ॥ मोर्चना ग्राम सीम्न्यस्ति तटाके तल्लघुर्गिरि: ॥ शृंगेस्य मंडपो दृष्टा पश्चिमेर्थं दमप्पने: ॥ ५ ॥ पड्स्थंभो मंडपोस्त्यत्र गोष्ठी पल्यंक सेवका: ॥ कुर्वंति मंडपास्तत्रे त्येकविंशानि मंडपा: ॥ ६ ॥ ग्रामास्तड़ागे आयाता: सिवालीच भिगावदो ॥ भाणो कुहाणो वासोल गुडली त्यखिला इमे ॥ ७ ॥ मोर्चना च पसोंदश्च खेडि छापर खेडिका ॥ तासोल एषां ग्रामाणां सीमा मंडा वरस्यच ॥ ८ ॥ तडागे आगता नद्यो गोमती ताल नाम युक् ॥ केलवास्त नदीसिंधो गंगाद्या विविशुर्यथा ॥ ९ ॥ काकरोली लोहाणाख्या सिवालीनां जलाशया: ॥ निपान वापी कूपाश्च त्रिंशत्संख्या इहागता: ॥ १० ॥ सर्वसेतु मितिर्दैर्घ्ये चतु: षष्टि शतानिच ॥ त्रयोदशा ग्राणि तथा गजानाम परंवदे ॥ ११ ॥ श्रीराजसिंह नृपते रग्रे गजधरै: कृता ॥ गाला योगेन दैर्घ्येष्ट सहस्राणि गजावले: ॥ १२ ॥ विश्वकर्मोक्त वानेवं तडागानां तुलंवता ॥ कर्तव्या पड्सहस्रोय द्गजमाना वधि: परा ॥ १३ ॥ तावत्संख्या मितंकोपि तडागंकृतवान्नयं ॥ त्वया सत सहस्रोय द्गजलंबो जलाशय: ॥ १४ ॥ सेतुंकृत्वाविरचितो धर्मसेतु र्धरापते ॥ श्रीरामसेतुप्रतिम: कीर्त्तिसेतु: प्रभातिते ॥ १५ ॥ कोष्ठानिद्वादशा त्रैत दृष्टान्हणां फलंभवेत् ॥ पाठस्य द्वादशस्कंध युक्तभागवतस्यसत् ॥ १६ ॥ एकविंशति संख्यानि मंडपानि तदीक्षणात् ॥ एकविंशतिदु:खानामभावो भविनांभवेत् ॥ १७ ॥ चत्वारिंशदथाष्ट युक्तसमभवन्सेतोमहा मंडपा स्तेष्वादौवहुमूल्य वस्त्र रचिता: महारुसृष्टास्तत: ॥ पाषाणै: ससुधाभरै र्विरचिता: केचित्तुतेपुस्थित: स्वाज्ञां कार्यकृते दिग्न्विजयते श्रीराजसिंहो नृप: ॥ १८ ॥ वस्त्रकोष्ठाश्मसृष्टाष्ट चत्वारिंशन्मितेपुहि ॥ मंडपेष्व वशिष्टौद्वौ शिलाकल्पित मंडपौ ॥ १९ ॥ तद्दर्शन कराणांस्या द्वनधान्य सुखं ध्रुवं ॥ इतिराजसमुद्रस्य सोक्तासर्वा स्थितिर्मया

॥ २० ॥ श्रीराणोदयसिंहेद्रः स्थानेस्मि न्कृतवान्पुरा ॥ सेतुंबद्धुंमहायत्नं निष्फलं तदभूदिह ॥ २१ ॥ ततोजलाशयं चक्रे श्रीमानुदयसागरं ॥ तत्राकरो त्सेतुबंधं संबंधं धर्मपद्धतेः ॥ २२ ॥ अस्मिन्स्थले राजसिंहो राणेंद्रो राजराजवत् ॥ धन व्ययं वितन्वानः सेतुंचक्रे तदद्भुतं ॥ २३ ॥ सेतोस्तु कर्त्ता रघुवंशकेतू रामश्चराणो दयसिंहदेवः ॥ श्रीराजसिंहो नृपतिस्तथैव मन्योनभूतो भविता न चास्ति ॥ २४ ॥ पूर्णेशतेसप्तदशे सुवर्षे त्रिंशन्मिते भाद्रइहागताद्राक् ॥ वेताल सूत्ताल जवाथताल नाम्नी नदीताल गभीर नीरा ॥ २५ ॥ संप्लावितं नीर भरैःपुरंद्राक् तया गृहान्यत्र विनाशितानि ॥ चकारबंधं नृपति स्तद स्या न्यायेन युक्तं भूविनीचगेयं ॥ २६ ॥ तथात्र वर्षे त्विष आगताद्राक् निशीथकाले भिनवे तडागे ॥ श्रीगोमती धन्य नदी जलंवा वभूव हस्ताष्टक मात्रमुच्चं ॥ २७ ॥ तद्रक्षितं राण नृपेण गंगा स्पर्द्धा करीयं भुविवर्द्ध माना ॥ श्री गंगया सार्द्ध महो तुला-र्थे झंपाग्रहा द्धौन्य पतत्तडागे ॥ २८ ॥ शते सप्त दशे तीते त्रिंशदाख्याब्द माघके ॥ पूर्णिमायां हिरण्यस्य पल पंच शतैः कृतं ॥ २९ ॥ ददौ सुवर्ण पृथिवीं महादान विधानतः ॥ श्रीराणा राजसिंहाख्यः पृथ्वीनाथो महामनाः ॥ ३० ॥ अष्टाविंशति संख्यानि रूप्य मुद्रा बलेरिह ॥ सहस्त्राणि विलग्नानि महादानस्य भूपतेः ॥ ३१ ॥ दत्तायां कनक क्षितौ तुभवता विप्रेभ्य एवग्रहे रुद्रंभिक्षु मवेक्ष्यभिक्षक गणो दिग्दंति नामष्टकं ॥ हिंस्त्रोजंतु चयश्च विष्णु गरुडं नागव्रजो वेधसं भूतौघो मघवान मेव महितो दूरं प्रयाति द्रुतं ॥ ३२ ॥ दत्तायां कनक क्षितौ तुभवता विप्रेभ्य एषांग्रहे श्रीराणामणि राजसिंह सकलं दुःखं प्रनष्टं ध्रुवं ॥ वन्हेः शीतभवं तमो भवमिना न्मालिन्यजं चाथते चंद्राद्ग्रीष्मभवं रजो जमनिला चेंद्राच्च दुर्भिक्षजं ॥ ३३ ॥ दत्तायां हेमपृथ्व्यां प्रभुवर भवता सद्विजेभ्यस्तु सर्वे कार्यं कुर्वंत्य गर्वं निखिल सुखकृते तद्गृहे राजसिंह ॥ गो-विंदो दुग्ध दोग्धा पशुपति रपिवा रक्षकः सत्पशूनां जीवोबाल प्रपाठी रिपु गण विजये षण्मुखः संमुखो भूत् ॥ ३४ ॥ पूर्णे शते सप्तदशेब्द एक त्रिंशन्मिते श्रावण शुक्ल पक्षे ॥ सुपंचमी दिव्य दिने तडागे जहाज संज्ञा विदधुः सुनौकाः ॥ ३५ ॥ लाहोर सद्गुर्जर सूरतिस्थाः सत्सूत्रधारा वरुणस्य मन्ये ॥ सभा द्वितीये जलधौतु सेतुं द्रष्टुं सुहार्देन समागतस्य ॥ ३६ ॥ शते सप्तदशे तीते एकत्रिंशन्मितेव्दके ॥ स्वजन्म दिवसे हेम पलपंच शतैः कृतं ॥ ३७ ॥ विश्वचक्रं महादानं विधिना दाच्चशक्रवत् ॥ भूचक्रे राजसिंहोस्ति विश्वचक्रेस्य तद्यशः ॥ ३८ ॥ दत्तेहाटक विश्वचक्र उचितं विप्रेभ्य एषांग्रहे उच्चैर्याति

तदर्भका निशि रविं धृला विधुं वादिने ॥ तद्रात्रौ दिन मन्हिरात्रि रघुना कर्माणि कुर्युः कुतो विप्राधर्म कृतालया कथमथ स्थाप्योत्र धर्मः प्रभो ॥ ३९ ॥ सौवर्णे विश्वचक्रे क्षितिधव भवता दत्तएषां द्विजेभ्यो गेहेष्वेकत्रवासं विदधति विवुधा स्तत्-स्थिता वाहनानि ॥ देवानां तत्स्थितानि स्फुटमिभ वदनो धेनवो राहु रिंदुः सूर्यो वा शेषश्राखुः सुरगज इतिवा शंभुनंदी विचित्रं ॥ ४० ॥ दत्ते हाटक विश्वचक्र मुचितं विप्रेभ्य एपांगृहे दारिद्र्यं खलुसर्वथैव विगतं श्रीराण वीरलया ॥ यल्लक्ष्मीः किलकल्प वृक्ष धनदो चिंतामणिः कामगो मेरुः स्पर्शमणिः खनिश्च निधयो रत्ना करो यत्ततः ॥ ४१ ॥ इतिश्री राजप्रशस्ति काव्ये द्वादशः सर्गः ॥

॥ श्रीगणेशायनमः ॥ एवंप्रतिष्ठा विधियोग्यरूपे कृते तडागे क्रियमाण कार्ये ॥ उत्साहपूर्णो नृपराजसिंहो निमंत्रणे प्रेशितवा न्नृपेभ्यः ॥ १ ॥ पूर्णादरं दुर्गगणे श्वरेभ्यः स्वगोत्र भूपेभ्य उतापरेभ्यः ॥ अथो यथायोग्य महोमहाश्वान् रथास्तथा सारथि वर्य युक्तान् ॥ २ ॥ शिवोपधानाः शिविका वलीस्ताः संप्रेषया मासमुहस्ति नीश्च ॥ विश्वासयोग्यान्सनुजान्द्विजा दीन्विशेषवेत्ता नयनायतेषां ॥ ३ ॥ ॥ कुलकं ॥ अथोविशालेषु महागृहेषु राणामणेः कार्यकरैर्नरैस्तैः ॥ पट्टांबराणां च पट व्रजानां सुवर्ण सूत्रोत्तमवाससांवा ॥ ४ ॥ अलंकृतीनां विलसत्कृतीनां प्रयत्ननीता तुलरत्नकानां ॥ मनोज्ञमुक्ता वलिपुष्पराग प्रवालगारुत्मतहीरकाणां ॥ ५ ॥ गोमेद वैडूर्यक नीलकानां रूप्यस्य हेम्नश्च महासमूहः ॥ सुवर्ण मुद्रा रजताच्छ मुद्रा गिरिर्गुरुश्चित्र सुपात्रसंघः ॥ ६ ॥ कस्तूरिका शस्तचयोग रूणां कर्पूर पूरश्चगणोऽ गुरूणां ॥ काश्मीरजानां निकरः सुगंध द्रव्यस्य नव्यो विविधः प्रबंधः ॥ ७ ॥ संस्थापितः स्थापित पुण्यकीर्त्ते रुपर्युपर्ये वधनप्रपूर्त्तेः ॥ धान्यादिहट्टाः शिबि राणिशालाः कृताः पुनस्ते विविधा विशालाः ॥ ८ ॥ कुलकं ॥ अमुष्य वस्तु प्रसरस्य लोकैः पूर्वंकदाप्या नयनं नदृष्टं ॥ प्रथक्कयातेनवितर्कि एष प्रकल्पितः कर्कशतार्किकौघैः ॥ ९ ॥ रघोः सकाशा त्किलकौत्सनाम्ना प्रदातु मद्या गुरु दक्षिणांतां ॥ द्रव्यं सुभव्यं वहुयाचितंत न्निभालितं सद्मनिभूभृतान ॥ १० ॥ लब्धुं विजेतुं धनदं प्रतस्थे तनुः सशीघ्रं धनदस्तदैव ॥ रात्रौधनं भूरिरघो र्गृहौघे संस्थापया मास महाभयाढ्यः ॥ १२ ॥ युग्मं ॥ तथारघोरुत्तम वंशजस्य श्रीराज-सिंहस्य वसुप्रदातुं ॥ कृतप्रतिज्ञस्य गृहेकुबेरः संस्थापया मास धनंतु युक्तं ॥ १३ ॥ गोधूम गोत्राश्चणको च्चशैलाः सत्तं तुलानां पृथु पर्वताश्च ॥ क्षमा भृतोमुद्ग गण-स्य तुंगा गोधूम पिष्टस्य विशिष्ट शैलाः ॥ १४ ॥ घृतस्य तैलस्य तुवापिकास्तु महाद्रयोवा गुड मंडलस्य ॥ अखंड खंडस्य महा महीध्रा धराधराः प्रोज्वल शर्कराणां ॥ १५ ॥ घृतौघ पक्वान्न महा गिरींद्राः शिलोच्चया मौक्तिक मोद

कानां ॥ दुग्धोल सन्मोदकभूधराश्च फलावले वोदक तुंग संघाः ॥ १६ ॥ कृता मुदाकार्य करे नरेंद्रात् जयंति चैते नृप राजसिंह ॥ पाषाण शैलान्व हवोद्र यस्तु देशे श्रुतं दृष्ट मिहाद्य चित्रं ॥ १७ ॥ शैलैरसीभिः पटशैवलैश्च रत्नै स्तुरंगैः करिभिश्च गोभिः ॥ युक्तश्च दानाय घृत प्रवाहै राजं स्तवायं नगरः समुद्रः ॥ १८ ॥ अश्वाजनैः श्वासजितः स्वगत्या प्रचंड वेतंड गणाः सुशुंडाः ॥ रथा स्तथा धन्य वृषैः सनाथाः संस्थापितादान कृते नृपस्य ॥ १९ ॥ हेला रवेणा पिगजा महांतो महामदा विंशति संख्ययात्ताः ॥ आनीय राज्ञे विनिवेदितास्तान् गृहीतवा न्सप्त दश क्षितीशः ॥ २० ॥ तथा परेणापि गजद्वयंसदानीत मीशेन गृहीत मेलत् ॥ जलाशयो त्सर्ग विधौ मयंते देया विचार्येति गजाः सयुक्तं ॥ २१ ॥ निमंत्रितास्ते नरनाथ संघाः समागताः सर्व कुटुंब युक्ताः ॥ अश्वैस्तथैषां करिभिर्गजैर्वा रथैः पुरे दुर्गम एव मार्गः ॥ २२ ॥ तथैव सर्वे मनुजा द्विजातयः प्रचंड विद्याः खलु पंडितो त्तमाः ॥ कवीश्वराणां निवहास्तु चारणाः सुवंदिनोऽ मंदगुणाः समायुः ॥ २३ ॥ पुरंतदामर्त्य मयंच गोमयं स्वनोमयं वापि हया वलीमयं ॥ करेणुपूर्णं करिसद्घटामयं दृष्टं महाश्चर्यमयं जनव्रजैः ॥ २४ ॥ अन्नस्य पक्वान्नगणस्य भूयः समस्त भोज्यस्य समागतेभ्यः ॥ अनंतसंख्ये भ्यइहा दरेण कृत प्रदानं प्रभुणा समानं ॥ २५ ॥ स्वीयैः परैर्वापिनिमंत्रणार्थ मश्वादि हस्त्यादि विभूषणादि ॥ वस्त्राद्य मानीतमथो गृहीला योग्यं परावृत्य ददौ तदन्यत् ॥ २६ ॥ एवंबहुष्वे वदिनेषु लोके निवेद्यमाने हिनिमंत्रणस्य ॥ वस्तुव्रजं योग्यमहो गृहीत्वा अन्यत्परावृत्त्य ददौ वदान्यः ॥ २७ ॥ शते सप्तदशे पूर्णे वर्षे द्वात्रिंश दाब्दके ॥ माघ शुक्ल द्वितीयायां राजसिंहस्य भूपतेः ॥ २८ ॥ परमार कुलोत्पन्ना श्रीराम रसदेवधूः ॥ राजसिंह नृपाज्ञातो वाप्या उत्सर्ग मातनोत् ॥ २९ ॥ दहबारी घट्ट मध्ये लग्ना रजत मुद्रिकाः ॥ चतुर्विंशति संख्यायुक्तसहस्र प्रमिता इह ॥ ३० ॥ ततस्तु सेतौ धरणी धवोत्तमो जलाशयो त्सर्ग कृते तुलाकृते ॥ हेम्नस्तथा हाटक सप्तसागर त्यागाय वैत्रीणि सुमंडपान्ययं ॥ ३१ ॥ कर्तुंसमाज्ञापयदत्रराणा श्रीराजसिंहो बुधसूत्र धारान् ॥ कृतानि कुंडानि नवैवतत्र वेदी चतुर्हस्त मिताकृतावा ॥ ३२ ॥ सुमंडपः षोडश हस्तमान इष्टक्सु संख्या मितकार्य सिद्धै ॥ वदाम्यहं तन्नवखंडयुक्तं क्षितौ प्रसिद्धै नृपतेः सुनाम्नः ॥ ३३ ॥ अस्यासुदृष्ट्यै वचतुः पुमर्थ प्राप्तिस्तु योग्ये समये नराणां ॥ यशोस्तु वैषोडश सत्कलेंदु प्रभं प्रभोर्वेतिकृतः प्रकारः ॥ ३४ ॥ स्तंभाकृता षोडश संमितास्ते.दानानि

किंपोडश वामहांति ॥ कृतानि कर्त्तुंच कृताः प्रतिज्ञा लेपाहि दिग्भित्तिषु भूमिभर्त्रा ॥ ३५ ॥ द्वाराणि चत्वारि कृतानि तेषां संदर्शनान्मुक्ति चतुष्टयं स्यात् ॥ एतादृशो मंडपराज एवं कृतस्तु यूपो पिचसूत्रधारैः॥ ३६ ॥ तुला विधानस्यच सप्तसागर दानस्य वा मंडप युग्म मुत्तमं ॥ तुलाक्रमोद्भासित मेवमद्भुतं श्रीराजसिंहेन कृतं मनोहरं ॥ ३७ ॥ एवं त्रयं मंडित मंडपानां त्वयाकृतं हेतुरयं महींद्राः ॥ तापत्रयं दर्शन तोस्य न्दृणां हर्त्तुं त्रिनेत्र प्रियतांच लब्धुं ॥ ३८ ॥ गते शते सप्तदशे सुवर्षे द्वात्रिंश दाख्ये तपसी तिराज्ञा ॥ पांडौ दशम्यां च शनौगृहीतो जलाशयो त्सर्ग विधे मुंहूर्त्तः ॥ ३९ ॥ आदौ तुमाघे सित पंचमी तिथौ मही महेंद्रेण पुरो धसा सह ॥ जलाशयो त्सर्ग कृतेधिवासनतद ल्विजां सद्वरणं कृतं मुदा ॥ ४० ॥ होतारौ जापकौ द्वार पाला वेकां श्रुतिं प्रति ॥ षट् चतु र्विंशतिः संख्या ऋत्विजा मिति कीर्त्तिता ॥ ४१ ॥ एको ब्रह्मा तथा चार्य षड्विं शति रतो ऽखिलाः ॥ तेमीमत्स्य पुराणोक्ता स्तत्र प्रोक्त फल प्रदाः ॥ ४२ ॥ चतुर्विंशति तत्वानां पुंसस्पा दान मात्मनः॥ तद्राणावरणं वीरः षड्विंश दृत्विजा निति ॥ ४३ ॥ इति त्रयोदशः सर्गः ॥ १३ ॥

श्री गणेशायनमः ॥ श्री पट्टराज्ञ्या परमार वंश्या श्री इंद्रभाना भिधरावपुत्र्याः॥ आज्ञा सदाकूंवरिनाम भाजा कृतामुदा रूप्य तुला कृतेद्राक् ॥ १ ॥ अकारि राज्ञा विहमंडपंजने रखंड कुंडे रभिमंडितं जवात् ॥ नृणां महाश्चर्य महोभवत्ततो ऽधिवासनं तत्रकृतं विधानतः ॥ २ ॥ गरीवदासाख्यपुरोहितेन वै पुत्रप्रयु- क्तेन तु हेमरूप्ययोः ॥ कर्त्तुं तुलामंडप युग्मकं कृतं पुरोधसाकारि ततोधि वासनं ॥ ३ ॥ राणामणिश्री अमरेशसूनो र्भीमस्य राज्ञस्तुवधूः पवित्रा ॥ तोडा स्थितेर्भूपति रायसिंह मातातुलां रूप्यमयीं विधातुं ॥ ४ ॥ आज्ञापयामास तदैव सृष्टं राणेंद्र लोके र्निशिमंडपंसत् ॥ समस्तवस्तु स्फुरितं कृतंवा धिवासनं तत्र तथोक्तरीत्या ॥ ५ ॥ चोहानवंशो त्तमवेदलापुर स्थितेर्बलूराव वरस्यसत्सुतः ॥ सरामचंद्रः किलतस्य चात्मजःसत्केसरीसिंह इतिद्वितीयकः॥ ६ ॥ रावोद्वितीयः कृतएपराणा श्रीराजसिंहेन सलूंवरस्थः॥ कर्त्तुंतुलां रूप्यमयीं विचारं भ्रात्रा करोद्वै सबलादिसिंहः॥ ७॥ उवाचरावोथ महान्महामतिः रावोभवानेष कृतोसि भूभुजा॥ तुलां करोत्वेवतदा तुलाकृते सकेसरीसिंह इहोद्यतो भवत् ॥ ८ ॥ सकेसरीसिंह महामनामुदा विधायवस्तु प्रसरं सविस्तरं ॥ सकुंडसन्मंडल वेदि मंडपं कलाकरोद्वा गधिवासनं ततः ॥ ९ ॥ सुमंडपं चारणवार्हटोवा सत्के सरीसिंह इतीह सेतोः ॥ तटे तनोद्रूप्य तुलांविधातुं तथांतिके खादर वाटि

काया: ॥ १० ॥ माघेत्र शुक्ल सप्तम्यां राजसिंह नृपप्रिया ॥ राठौड रूपसिंहस्य पुत्रीजोधपुरी व्यधात् ॥ ११ ॥ त्रिंशत्सहस्र रजत मुद्रासृष्टां प्रतिष्ठितां ॥ वापिकां राजनगरे राजसिंह नृपाज्ञया ॥ १२ ॥ ततो नवम्यां नवदुंदुभीनां नाना विधानां नवकाहलानां ॥ विचित्र वादित्र वरप्रजानां सुरंजिता: सर्व जना निनादै: ॥ १३ ॥ ततोमहा मंडपमध्य ऊर्द्ध्व स्तंभेषुवेद्या विदधे वितानं ॥ नृपोमहा सत्वमय: सुयुक्तं रजोनिवृत्यै तदिहार्थयुग्मं ॥ १४ ॥ पट्टांवराणां रचिता: पताका विचित्ररुपा: शुभमंडपस्य ॥ सर्वासुदिक्षू र्द्धमहो नृपेण जगज्जयस्येति कृतस्यनूनं ॥ १५ ॥ सुगंधिभि र्माल्यगणै: प्रसूनै: सत्पल्लवैश्चंदन मालिकाभि: ॥ माघेप्यवद्रा एवमंडपेषु वसंतएव प्रविभातिचित्रं ॥ १६ ॥ प्रकल्पितं तत्रचरंग वल्लिभि: सत्पद्मगर्भं भृतसप्त मंडलं ॥ सषोडशारं शुभवृत्त मद्भुतं चक्रं चतुर्वक्र विराजितं पुन: ॥ १७॥ समंततोवा चतुरस्त्र मद्भुतं सद्वारुणं मंडलमत्र कारणं ॥ श्रीपद्मनाभस्य सुखायसप्त द्वीपप्रभो: षोडश सत्प्रमाणकै: ॥ १८ ॥ ज्ञेयस्य भूपेन सुवृत्त लब्धये चक्रश्रियेवा चतुरास्य तुष्टये ॥ वीरेणसृष्टं चतुरस्त्र वेदिका सद्रंगवल्ली निभरत्नपूर्तये ॥ १९ ॥ राजाधिराज: स्व पुरोहितेन युक्त: समेतो गुरुणायथेंद्र: ॥ यथावसिष्ठेन चरामचंद्रो विराजते मंडप मध्यदेशे ॥ २० ॥ सहोदराद्यै स्तनयैश्च पौत्रै र्नानाक्षितीशै रपिदुर्गनाथै: ॥ निमंत्रणायातनरेश संघै र्विशोभितो देवगणै र्यथेंद्र: ॥ २१ ॥ महीमहेंद्रो नृपराजसिंहो धर्मैकमूर्त्ति र्धरणी धवेड्य: ॥ कृतैकभुक्त: प्रथमेदिनेद्य कृतोपवासो नियमी नवम्यां ॥ २२ ॥ देहस्य शुद्धिं प्रविधायप्राय श्चित्तंच कृत्वातिविशुद्ध चित्त: ॥ श्रुतिस्मृति प्रेरित कर्मवृंदे श्रद्धामयो ब्राह्मणमावदान: ॥ २३ ॥ श्री राजसिंह: कृतवान् प्रायश्चितं यदा तदा ॥ प्रायश्चित्तं शुद्धमस्या तिशुद्धमभवत्पुन: ॥ २४ ॥ ततो नृप: स्वस्ति सुवाचनंच पुरोधसा विप्रवरै: समेत: ॥ स्वस्ति प्रदंवै कृतवान्धरित्र्या: पूजांच पृथ्वीश्वर भावदायीं ॥ २५ ॥ गणेश पूजां पृथिवी श्वरस्फुर द्गणेशताप्राप्तिमहासुखप्रदां ॥ श्रीगोत्रदेव्या अपिगोत्रवृद्धिदां गोविंदपूजां बहुगोधनप्रदां ॥ २६ ॥ कृत्वा कृतार्थं विलसत्पुमर्थं स्वमन्यमान: क्षितिपेषुधन्यं ॥ रामोवसिष्ठस्य यथाश्वमेधे चकार पूजां वरणं तथैव ॥ २७ ॥ गरीवदासाख्यपुरोहितस्य कृत्वातु पूर्वं वरणं परेषां ॥ निजाश्रिताना मखिल द्विजानां सदृत्विजां वावरणंशुचीनां ॥ २८ ॥ मुदाकरो दत्रतु पीठदानं स्वराज्य पीठाचल भावकारि ॥ प्राग्जन्म पापा धिकधावनार्थं श्री विप्रपंक्ते: पदधावनंच ॥ २९ ॥ कलापकं ॥ प्ररोचना कृज्जगतोहि धर्मे सुरोचनाभि स्तिलकं द्विजानां ॥ श्रियो ऽ क्षतत्वाय सदक्षतार्वा प्रसूनपूजा मपिसूनुदात्रीं ॥ ३० ॥ कृत्वाव तादं मधुपर्कदानं कुसुंभ सूत्रं धृतधर्म सूत्रं ॥ आकल्प कीर्त्तिस्थितयेत्वनल्पं संकल्प

नारं प्रददौ द्विजेभ्यः ॥ ३१ ॥ अनर्घ्यता कारक मर्घ्यदानं कृत्वाददौ वा द्विज पुंगवेभ्यः ॥ सुदक्षिणाः संगर कर्मधर्म त्यागेषु वा दक्षिण भावदात्रीः ॥ ३२ ॥ गरीबदासाख्य पुरोहितस्य पुत्रप्रयुक्तस्य महार्चनायां ॥ वासः समूहं शुभवासनादं ताभ्यां ददौ भूपति राजसिंहः ॥ ३३ ॥ मुक्तामणि भ्राजितकुंडलेच श्रीमंडलाप्त्यैमणि मुद्रिकाश्च ॥ स्वकीयमुद्रा चलनायजंबू द्वीपे खिलेस्वो त्कटकं गदाढ्यं ॥ ३४ ॥ प्रासुंस रत्नान्कटकांगदांश्च यज्ञोपवीतानि सुवर्णवंति ॥ जलाशयोत्सर्ग सुयज्ञ सिध्यै ददौ नरेंद्रोन्नत राजसिंहः ॥ ३५ ॥ युग्मं ॥ नाना विधान्याभरणानि नूनं स्वस्य क्षितीशाभरणत्वसिद्ध्यै ॥ जलाशयोत्सर्गविधिप्रसिद्ध्यै जलाच्छपात्राणि-सुवर्णवंति ॥ ३६ ॥ श्री भोजनाम्नाधिकदान जातपुण्याप्तये भोजनपात्रपंक्तिं॥ निवेद्य पूज्यं तम पूजय त्सत्पुत्र प्रयुक्तं स्वपुरोहितंसः॥ ३७॥ युग्मं ॥ ततोऽपरेभ्यश्च सुवर्ण भूषण संघान्सुवर्णस्थितये तदालये ॥ ददन्महींद्रो मणिमुद्रिकागणा-न्स्थित्यै मणीनांच तदीयमंदिरे ॥ ३८ ॥ सुरूप रूप्योत्तमपात्रपंक्तिं रूप्याति पूर्त्यै च तदालयेषु ॥ वासः समूहा नतिनूतनांश्च मनस्सुतेषां सुखवास सृष्ट्यै ॥ ३९ ॥ एवंससवर्चिन मंत्र कृत्वा नानानृपै रर्चितपादपद्मः ॥ सुभाग्यभाजं कृतकार्यवर्यं स्वंमन्यमानोत्र विभातिवारः ॥ ४० ॥ ॥ कुलकं ॥ इतिश्री चतुर्दशः सर्गः ॥ १४ ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ ततः सवादित्र विचित्र नादं कुरंग वेगो च्चतुरंग संगं ॥ उत्तुंग मातंग घटासमेतं नानाजनस्तोमसमाकुलंच ॥ १ ॥ चलत्पताका वलि शोभिताश्वं संस्थाप्य विप्रान्स्फुरद्वलि जश्च ॥ अलंकृता नल्प गजा वलीनां स्कंध प्रदेशेषु सुबंधुरेषु॥ २ ॥ तान्लोकपालानि वभूरिभूषान् पश्यन्नवश्यं वशगः क्षितीशः॥ अग्रे सरांस्तान्प्र विधायसर्वा न्विचित्र वादित्र धरान्नरांश्च ॥ ३ ॥ अखंड सौभाग्य भृतोतिभव्या नारीर्विचित्राभरणाश्चनव्याः ॥ जलाहतिप्रोद्धृतधन्यकुंभाः कृत्वा पुरस्ता ज्जितदिव्यरंभाः ॥ ४ ॥ धीरंपुरस्कृत्य पुरोहितंजलयात्रां विचित्रां कृतवा-न्नरेश्वरः ॥ युधिष्ठिरस्या पिचराजसूयके शोभानवै तादृशरीति रीरिता ॥ ५ ॥ ॥ कुलकं ॥ प्रोक्तं जनैर्लोक इतोय मुद्यतो जलार्थ मर्थो प्यपरो स्तितंवदे ॥ दानाय तच्छत्र गलत्सुहाटक ग्रहं प्रसन्ना द्वरुणा करिष्यति ॥ ६ ॥ तथात्र कृत्वा वरुणस्यपूजां विधान पूर्वं सकलांगयुक्तां॥ आनाय्यनीरं कलशेषुकृत्वा नारीः पुरः सत्कलशाः कलोक्तीः ॥ ७ ॥ महामहोत्सा हमयः स्फुरज्जयो लसद्दयः स्पष्ट-नयः सविस्मयः ॥ द्विजावली मंडित मंडपे शुभे ऽ भवत्प्र विष्टोति विशिष्टतुष्टि-मान् ॥ ८ ॥ संस्थाप्यवेद्यां कलशान् जलाढ्या न्वस्त्रावृता न्दिक्षु चतुर्मितासु ॥

मध्येजगद्येय मुखो मखेस्मिन्विराजते भूपतिराजसिंहः ॥ ९ ॥ चतुर्षुकोणेषुसुमंडपस्या करोन्नृपः स्थापित देवपूजां ॥ सवास्तुपूजां शुभवस्तु पूर्णां वेदोक्त वेदी स्थित देवतानां ॥ १० ॥ नवग्रहांस्ता नधिदेवताश्च संस्थापय न्प्रत्यधि देवताश्च ॥ नवग्रहंसा ग्रहमेषशत्रुश्रिय प्रियोक्षणां प्रकरिष्यतीशः ॥ ११ ॥ संस्थापय न्सत्कलशंच रौद्रं रुद्रंप्रसन्नं क्षितिपो करोद्वाक् ॥ रौद्रंभयं शत्रुकृतं नदेशे स्यादस्य भद्रं भवतात्सुदेशे ॥ १२ ॥ ततोमहा मंडप मध्यदेशे विप्रैः समेतो विलसत्पुरोधाः ॥ धराधवो जागरणं वितन्वन्वेदोक्त कार्यं कृतवा न्समस्तं ॥ १३ ॥ ततोनिशांते प्रविधाय नित्यं स्नानादिराणा मणिराजसिंहः ॥ जात ः प्रविष्टः शुभ मंडपेवै सहोदरा-दींश्च तदाकुमारान् ॥ १४ ॥ पत्नीः समस्ताश्च पितृव्यजायाः स्नुषाश्च वंशोद्भव सर्वपुत्रीः ॥ पुरोधसां धन्यवधू र्नृपाणां वधूः समाहूय मुदोपविश्य ॥ १५ ॥ सुकर्मणो स्याद्भुत दर्शनार्थं श्री पट्टराज्ञी सहितो हिताढ्यः ॥ कृत्वा मुदाश्री वरुणस्य पूजां समस्तदेवा तुलपूजनंच ॥ १६ ॥ रत्नाकरं कर्त्तु मिहद्वितीयं तडागमेनं नव रत्नराजिं ॥ निक्षिप्तवान् मध्यइहास्य शस्यं मत्स्यं पुनः कच्छप मच्छमेव ॥ १७ ॥ श्रेयस्करं वामकरं ततोत्र निधिद्वयं स्थापितमेव मन्ये ॥ ततोत्रसर्वे निधयोजवेन समागमिष्यंति ततो जलस्य ॥ १८ ॥ नूनं समृद्धिर्भविता सदास्मिन्समुद्र रूपत्व मथास्य भावि ॥ मयास्य वैराजसमुद्र नामो त्पत्तौतु हेतुः कथितोयमेव ॥ १९ ॥ क्षिप्ता निरत्नान्य परेससुद्रे त्वया तडागेत्र नृपेन्द्रजातं ॥ रत्नाकरत्वं त्वथवाडवाग्नि सिद्धिं कुरुस्या दिति पुण्यपूर्त्तिः ॥ २० ॥ गोः पूजनं वत्स युजो विधान पूर्वंनृपालः कृतवान्कृतींद्रः ॥ हिंकृण्वतीं गांप्रसमीक्ष्य भूपः पुरोहितं प्रत्यवदत्किमेतत् ॥ २१ ॥ शुभं भवेत्प्रत्य वदत्पुरोहितो वेदोक्त मेतच्छकुनं यतः प्रभो ॥ गोतारणारंभणमातनोत्पुनः सर्त्विक् सहायो धरणी पुरंदरः ॥ २२ ॥ तडागमध्ये कृतवान् सुखेन गोतारणारंभ महोमहींद्रः ॥ गोशब्दमात्रस्यतु येसदप्य स्मिन्नाम तुल्यार्थक कर्म लब्ध्यै ॥ २३ ॥ ब्रुवेतदर्था न्भुविनाक सौख्य लाभाय युद्धे शरसत्यतार्थं ॥ गवांच लाभाय सुवागवाप्त्यै करस्थ वज्रेण रिपुक्षयाय ॥ २४ ॥ दिक्षुस्फुरत्कीर्त्ति कृतेजनाली नेत्रातितोषाय विभाप्तयेच ॥ समस्त भूराज्य कृते नृपस्य तडागनीरस्यतु पूर्णतार्थं ॥ २५ ॥ लक्ष्येष्ट लाभायच दृष्टि तुष्ट्यै श्री राजसिंहाख्य महीपतेः सदा ॥ ऋत्विग्गणै रीदृशसत्फलाप्तये कृतंहि गोतारणकं सुशर्मदं ॥ २६ ॥ गोतारणादुस्तरमत्र कर्त्तुं तडागमुख्यस्य तुनामनव्यं ॥ प्रश्नंकृतीत्थं कृतवान्महींद्रः पुरोहितं प्रत्यथ राजसिंहः ॥ २७ ॥ तदा वदत्तत्र पुरोहितोयं वदत्यवश्यं त्वरिसिंह नामा ॥ तदोक्त मेवं वदतात्पुरोधा आज्ञाकृता भूमि भुजात्र भूयः ॥ २८ ॥ नामास्य

वाच्यं क्षिति तत्पुरोध सानामोक्तमेकं क्षितिराजसागरः ॥ नामापरं राजसमुद्र इत्यतो नृपस्तडागस्यतु जन्मनामवै ॥ २९ ॥ इत्युक्तवाने वहि राजसागर स्तदुत्तरं राजसमुद्र इत्यपि ॥ नामास्य चक्रे दिनपंचकोत्तरं दिव्येमुहूर्त्ते क्षिति भूमिनायकः ॥ ३० ॥ महोत्सवं द्रष्टु मिमंपुरंदरः समागतो ह्यत्र विनिश्चितं बुधैः ॥ यतस्तदग्रे सरवारिदव्रजः प्रवर्पतिस्मां बुकणं शनैः शनैः ॥ ३१ ॥ ततोमहा मंडप मध्य उत्तमा होमक्रियाया मभवन्परायणाः ॥ श्रीवेदपाठेपु जपेपु तत्पराः क्रियासु सर्वासु तथैव मृत्विज ॥ ३२ ॥ नवेपु कुंडेपु नवस्वथाग्नयः श्रीगार्ह पत्या हवनीय सन्निभाः ॥ प्रजज्वलु स्तत्र वितान मंडलं धूमेन धूम्रं सकलं तदा भवन् ॥ ३३ ॥ धूमावलीभि र्गगने तदा भवन् महावितानानि पराणि भूपते ॥ रजस्सुरक्षो कृतये जगत्कृता कृतानि किं धूसरवर्णवाससा ॥ ३४ ॥ महा वितानेप्वथ धूममालया कृतं तुमालिन्यमिदं तदा भवत् ॥ अनेक मालिन्य हरंहि मंडपस्थितस्यलोक प्रसरस्य पश्यतः ॥ ३५ ॥ अनंत धूमालि मनंत संस्थित ज्योतींपि वन्हेः शुभगंध वाहकान् ॥ सुगंध वाहान्नृपकल्प यस्वहो संक ल्पनीराणि सदाव्दपूर्त्तये ॥ ३६ ॥ ततः कृतार्थः समरे समर्थ श्चापश्च — क्रस्य पुमर्थकांक्षी ॥ मनो दधे राजसमुद्र भद्र प्रदक्षिणार्थं सकलार्थसिध्यै ॥ ३७ ॥ यस्या क्षितौ पूर्व महोऽभवन् शिला निम्नो न्नतत्वं पटु कंटका जनैः ॥ साम्यंच संमार्जन मत्र निर्मितं भाग्यं भुवस्त न्नृपतेः समागमे ॥ ३७ ॥ अरण्य वऽल्या वलि रज्जवो भवत् यस्यां क्षितौ वीर नृपा ज्ञया पुरा ॥ क्रोशा-दि कक्षानकृते जने र्व्रवात् धृतो वतादो कुशसूत्र रज्जवः ॥ ३९ ॥ इति राज प्रशस्तौ भट्ट रणछोड कृते पंचदशः सर्गः

श्री गणेशायनमः पूर्णेतु पोडश शते शुभ कारि वर्षे द्वाविंशाति प्रमितके किल माधवेच ॥ पक्षे सिते उदयसिंह नृप स्तृतीया मध्ये करो दुदय सागर मु प्रतिष्ठां ॥ १ ॥ उदयसागर नाम जलाशयो त्तमपरि क्रमणे रमणी युतः ॥ उदयसिंहनृपः शिविका स्थितः समतनो दिति सूत्रनिवेशनं ॥ २ ॥ जसवंतसिंह रावल इति जल्पित वान्प्रभोः पार्श्वे ॥ एवं कार्यं भवता अथवा श्वारोहणं कृत्वा ॥ ३ ॥ कार्या प्रदक्षिणार्थे द्विजायसो श्वस्ततो देयः ॥ श्रुत्वाति पक्ष युगलं तूर्ष्णीं स्थितवा न्महाशयो भूपः ॥ ४ ॥ ततो नृपः सामगवेद पाठिभि र्युक्तः पुरः स्थापित ऋत्विगा दिकः ॥ नाना प्रतीहार करस्थ यष्टिका रवौघ दूर स्थित सर्व मानुपः ॥ ५ ॥ विचित्र वादित्र महा रवश्रवाः पुरः स्थित प्रोन्नतदंति पंक्तिकः ॥ विराजि वाजि व्रजराजिता

ग्रकः शिवां शुक श्री शिबिका पुरःसरः ॥ ६ ॥ पुरस्थ पूर्णो न्नतकुंभ सत्फलो महामहोत्साह मयो महोत्सवः ॥ समस्त जीयां वसना चल स्वकां शुकांचल ग्रंथि विधान सुंदरः ॥ ७ ॥ वेदो दितं राजसमुद्र राज त्सुसूत्रसंवेष्टन कर्म कर्त्तु ॥ स्वपाणि संस्थापित नव्य भव्य सत्कुंकुमोघ न्नवतंतु पंक्तिः ॥ ८ ॥ सुखपरिक्रमणाय महीभुजो धरणिमूर्द्धनि सुचेलकतूलिकाः ॥ अथधृताः स्वजनेन पदा स्पृशन्स सुकुमारपदोऽ त्यजदद्भुतं ॥ ९ ॥ वसनोपानयुगलं पदयो र्धृतापि भूभुजा त्यक्ता ॥ सुकुमार पदेनापिच धर्माद्भुतपद्धतिं प्रकल्पयता ॥ १० ॥ अपाद चारी मृदुलां घ्रिपद्मो विपादुकः संप्रतिपाद चारी ॥ लसन्भरा भाति महा प्रभावो राजाधिराजः प्रभु राजसिंहः ॥ ११ ॥ प्रदक्षिणा दक्षिणतो वितन्वन् सदक्षिणो दक्षिण मार्ग गामी ॥ प्राची दिशा दक्षिण दिक् प्रतीची सौम्या गतान्दद्न् बहु दक्षिणाभिः ॥ १२ ॥ द्विजा दिकान् धन्य धनैश्च धान्यै रतोषय त्सर्व जना स्तथैव ॥ सद श्वमेधो त्तम राजसूया दिकं फलप्राप्तु मिहप्रवृत्तः ॥ १३ ॥ युग्मं ॥ तडागं वेष्टयन् राना अखंड नवतंतुभिः ॥ नवखंड धरा मध्ये कीर्त्तिं स्थापितवां श्चिरं ॥ १४ ॥ शुक्लांबरं चंद्र मिव क्षितीश राज्ञां सुतारा इव तार हाराः ॥ सेवंत एवत्युचितं हि गौर्यः सहीर मुक्ता भरणाति रम्या ॥ १५ ॥ इममुत्सवमद्भुतं महेंद्रो रुचिरं द्रष्टु मुपागतो मुदात्र ॥ जलदास्तु पुरःसरा स्तदीया इति वर्षंति जलानि हर्षपूर्णाः ॥ १६ ॥ प्रथमं रुचि शैत्य शोभितानां प्रमदानां प्रमदाति भूषितनां ॥ अथ वर्षण नीर पूरितानां सकलांगेष्वभव त्सुशीतलत्वं ॥ १७ ॥ जलधारा वलिषु स्थिताः स्त्रियः कृतकंपासु तडागसत्तटस्थाः ॥ द्रुतजांबूनदकांतकांतयः क्षणदारुत्सव दर्शना गताः किं ॥ १८ ॥ वनिता अनि मेखलोचना स्ताश्चकिता उत्सव दर्शना गताः किं ॥ जलधारा वलिमार्ग गामिनोसुरकन्या इतिवक्ति धन्यधन्याः ॥ १९ ॥ तनुलग्ना र्द्रपटातिदृष्टदेह घटनानां घटसन्निभस्तनीनां ॥ घनधारा वलिपूरितांगिकाना मिव कौतूहलदं जलांगनानां ॥ २० ॥ पदचंक्रमणेषु सोढ मेतत् अरिसिंहस्य सहोदरं समीक्ष्य ॥ सुकुमारतरं सुखिन्नचित्तः शिबिका रोहण मादिशन्महींद्रः ॥ २१ ॥ पदचंक्रमणे कृतोद्यमां निजराज्ञीं परमारवंशजां ॥ महतीं समवेक्ष्य सुश्रमां शिबिकारोहण मादिशत्प्रभुः ॥ २२ ॥ अथ राज समुद्र मंडलेस्मिन्परितः सूत्रसुवेष्टनं वितन्वन् ॥ निजभूवलये सु धर्मसूत्रं सततं रक्षति राजसिंह राणा ॥ २३ ॥ अथ परिक्रमणेषु समागता विविधपुष्प विराजित मालिकाः ॥ सपदि राजसमुद्र वरेर्पिता वरुणदेव मुदे करुणाभृता ॥ २४ ॥

वसनग्रंथिविधानभूपिताभि र्युवतिभिः परिवेष्टितो नरेंद्रः ॥ भुविनाना विध दिव्य सुन्दरीभिः परितो वेष्टित इन्द्र एवनूनं ॥ २५ ॥ वसन ग्रंथि विधान भूपिताभि र्वनिताभि र्नृपमावृतं समीक्ष्य ॥ जनता वीक्ष्य हि रासमंडले श्री हरि रेवं कृतवान्ध्रुवं विहारः ॥ २६ ॥ चतुर्दशोद्भापित लोकवासि प्राणीस्फुर तृप्ति विवर्द्धनाय ॥ चतुर्दश क्रोश मितस्तडागो जलेनपूर्णो भवदेवतूर्णं ॥ २७ ॥ प्रदक्षिणायां शिविराणि पंच श्रीराजसिंहः कृतवानि हेति ॥ हेतुस्तुपंचेंद्रियजान्विका रान्हर्त्तुं प्रवृत्तोय महोसुवृत्तः ॥ २८ ॥ ईपत्फलाधार धरोधरेंद्रो महाफल प्राप्तियुतोहि जातः ॥ धृत्वासमस्ता न्नियमांन्यमांश्च तनोसिपुण्यं यमयातनाहृत् ॥ २९ ॥ कमल नुरिजस्यपार्श्वे तटाकतोये त्रयोदश्यां ॥ एकोगजोनिमग्नो झटितिप्रकटो भवद्गभीरेपि ॥ ३० ॥ यत्तद्वरुणेनाय मुपायनाधी धरेंद्रपुण्यस्य ॥ राज्ञोस्य प्रेषितइति विशेष विद्भिस्तदा प्रोक्तं ॥ ३१ ॥ ग्राम प्रदानै र्घृतपक्वदानैः पक्वान्नदानै र्वसनप्रदानैः ॥ द्रव्यप्रदानै र्नृपआगतांस्ता नतोपयन्तोप युतोमनुष्यान् ॥ ३२ ॥ एवंफलाधार धरोधरेंद्रः पट्टेदिनानाम भवन्ततोयं ॥ पडर्त्तुनीरोग तनुः पडूर्मि विवर्जितो वाच्यमतः किमन्यत् ॥ ३३ ॥ ततोनरेंद्रेण चतुर्दशीदिने सुशर्मणा भर्मतुलाख्य- कर्मणः ॥ प्रकल्पितं सुंदररूप सागरं दानस्यवादा वधिवासनंमुदा ॥ ३४ ॥ चित्रंवितानं चपलाः पताकाः सुपल्लवा श्चंदन मालिकाश्च ॥ सत्सर्वतो भद्रकरीच पल्ल्यो विनिर्मिता मंडप युग्ममध्ये ॥ ३५ ॥ कृलार्चनं मंडप युग्ममध्ये भूतेहरे र्विप्रप — श्चवास्तोः ॥ पुरोहिता देर्वरणंनरेंद्र ऋत्विग्गणस्या प्यकरोत्क्रमेण ॥ ३६ ॥ ततश्चतुर्दिक्षुच मंडपद्वये कोणेपुपीठेपु समस्तदैत्यः ॥ अभ्यर्च्यवास्तु प्रभृतीन् ग्रहादिका न्वेधांचदेवा न्प्राविभाति भूपतिः ॥ ३७ ॥ ततोभवत् मंडप युग्ममध्ये होमेवरान्सर्त्विज उत्तमास्ते ॥ श्रीवेदपाठेपु जपेषु सर्वक्रियासु सक्ता नृपतेः सुखाय ॥ ३८ ॥ ततः शिवाढ्यः शिविकांतरस्थितः शिवप्रसादा च्छिविरं प्रतिप्रभुः ॥ अकल्पयन् हयगतिं गतक्रमः सचामरच्छत्र धरादिकैर्वृतः ॥ ३९ ॥ श्रीराणवीरः शिविरं प्रविश्य शश्वत् फलाधार विधिं प्रकल्प्यच ॥ जलाशयोत्सर्ग विधेरुपस्करं कर्त्तुंसमाज्ञा पयदेष मानुषान् ॥ ४१ ॥ इतिश्री पोडपसर्गः संपूर्णः ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ सप्तदश सर्गो लिख्यते ॥ आनंदपूर्णः किल पूर्णि मायां पूर्णेंदुवक्त्रो नृपराजसिंहः ॥ राज्ञीसमेतः सपुरोहितोवा भवत्प्रविष्टः शुभमंडपेस्मिन् ॥ १ ॥ भ्रात्रा विशोभी अरिसिंह नाम्ना पुत्रेण युक्तो जयसिंह नाम्ना ॥ सद्भीमसिंहेन सुतेन सक्तः पुत्रेण राजा गजसिंह नाम्ना ॥ २ ॥

सुतेन वा सूरजसिंहनाम्ना तथेंद्रसिंहाभिधसूनुना च ॥ सुतेन युक्त श्च महा वहादुर सिंहेन राजन्यगणै रुपेतः ॥ ३ ॥ अमरसिंहशुभाभिधपौत्रवान जयसिंहमुखोत्तमपौत्रयुक् ॥ प्रियमनोहरसिंहसमन्वितः प्रविलसद्दलसिंहविशो भितः ॥ ४ ॥ सुतेन युक्तोपि नरायणादिदासेन योग्यैः कुलठकुरै श्च ॥ महा पुरोधो रणछोड़ राया दिकैश्च भीषू वरमंत्रिमुख्यैः ॥ ५ ॥ विराजितो मंडप मध्य देशे पूर्णाहुतिं पूर्णमनाः प्रकल्प्य ॥ जलाशयो त्सर्ग विधिं च तूर्णं संपूर्ण मेवं कृतवा न्नरेंद्रः ॥ ६ ॥ समस्त जीवा वलि तृप्तयेवै जलाशयो त्सर्ग मयं विधाय ॥ मत्वा जगज्जीवन मे तदस्य सुजीवनं राणमणि र्विभाति ॥ ७ ॥ यथा दिलीपो हयमेधकर्त्ता सत्सेतुकर्त्ता भुवि रामचंद्रः ॥ युधिष्ठिरो वा कृत् राजसूय तथैव राणा मणि रेव भाति ॥ ८ ॥ ततः सुवर्णा द्भुतसप्तसागरदानोल्लसन्मंडपमध्य उत्तमे ॥ श्री राजसिंहः परिवार संयुतः प्रविष्ट एवाति विशिष्ट दिष्ट युक् ॥ ९ ॥ शास्त्रेरितं कांचनसप्तसागर दानस्य सर्वा हुति पूर्व कानिवै ॥ कर्माणि कृत्वा किल निर्मलोत्तम स्वतः सुधर्मा धिप धन्य वैभवः ॥ १० ॥ सप्तैव कुंडानि च कांचनेन विनिर्मितान्यंवुधि रूप कानि ॥ संस्थापि तान्यग्रत एव तानि सोपस्कराणि क्रमतो वदामि ॥ ११ ॥ ब्रह्मप्रयुक्तं लवणेनपूर्णं कुंडंतथैकं सपयः सकृष्णं ॥ परंघृताद्यंश महेशमन्यत् तथापरं सूर्ययुतंगडाद्यं ॥ १२ ॥ दध्नातिधन्यः समहेंद्रमन्यत् परंरमायुक् धृतशर्करंच ॥ गौरीयुतं वा परमंवयुक्तं सप्तेति कुंडानि मयेरितानि ॥ १३ ॥ एतानि सर्वाणि सवस्तुकानि दत्वेवराज्ञी सहितो ग्रहीत्वा ॥ धन्या शिषोधीर पुरोहितोक्ता त्सुर्लिंग् प्रयुक्ता जयतिक्षितीशः ॥ १४ ॥ महादानं सदत्वायं राज सिंहो महीपतिः ॥ सप्तसागर पर्यंतं भातिकीर्त्तिं प्रकाशयन् ॥ १५ ॥ जलाशय त्याग विधौ समस्त सज्जला वलित्यागविधिर्मये त्यलं ॥ कार्या हिमत्वा शुभसप्त सागर दानंकृतं दानिवरेणयुक्तता ॥ १६ ॥ ग्रंथेषु दृष्टं किलसप्तसागर दानं तदाधिक्य कृतौस्फुरत्पणः ॥ स्वकल्पिताद्यन्वित सप्तसागर दानंनचाष्टांबुधिदो भवन्नृपः ॥ १७ ॥ गांभीर्याद्राज सिंहोयं जित्वात्र सप्तसागरान् ॥ तान्महादान विधिना द्विजेभ्यः प्रददौ मुदा ॥ १८ ॥ ज्योतिर्विन्मतमेकतो जलधयः षट्भाग केंतर्भुव क्षाराब्धि र्ममवामते जलधयः सप्तैकतोवावनेः ॥ मध्येराजसमुद्र एष तदिदं स्पष्टीकृतं तत्रत दानोत्सर्ग विधानयो र्ममतं तत्सत्यमेव ध्रुवं ॥ १९ ॥ रत्नाकरेणैव विधिस्तुवाडवा नलस्यपोषं तनुतेयथाप्रभुः ॥ तथाकरोत्कांचन सप्त सागर दानंनवैवाडव वह्निपोषणा ॥ २० ॥ ततस्तुलामंडप संप्रविष्टः श्री

राजसिंहः परिवारयुक्तः ॥ तुलाप्रयुक्तं सकलंविधानं प्रकल्प्यपूर्णाहुति मत्रकृत्वा ॥ २१ ॥ तुलाकर्दंडस्थ हरौसुशालग्रामंकरेदृष्टि मयंनिधाय ॥ स्पृष्टायुधः शुक्लपटः सितस्रक् श्रुतस्फुरन्योत्र विचित्रवाक्यः ॥ २२ ॥ श्रुतश्रुतिर्ब्रह्म परायणश्च ततोतुलांहेमतुला मनल्पां ॥ मुदासमारुह्य नृपोवदद्वा दिव्याः सुदासीः प्रतिदानशौंडः ॥ २३ ॥ सुवर्णमुद्रा परिपूरिताः शुभाः समानयंते वजवेन कोथलाः ॥ ताभिर्धृतास्ता बहुशस्तुलापुटे परासमानेतु मिमास्ततोगताः ॥ २४ ॥ अत्रांतरेचाप्य वदद्धराधवो न्यूनंसुवर्णं यदिवाभवेत्तदा ॥ सप्तस्वथोसागर एक उत्तम आनीयतामाशु सुवर्णनिर्मितं ॥ २५ ॥ गरीबदासाख्य पुरोहितेन तदोक्त मेवं नृपतिंप्रतीति ॥ अपेक्षितैवा त्रहिसागरस्य युक्तान्पदोः समतातुलायाः ॥ २६ ॥ एतादृशंकाव्य महोसुनव्यं पुरोधसोक्तं किलभव्यभव्यं ॥ श्रुत्वानृपालो भवदेव तुष्टः स्मेराननो दानि गणेविशिष्टः ॥ २७ ॥ त्रियुक्नवसहस्त्रकं प्रमिततोलकप्रोल्लस त्सुवर्ण परिपूरितां किलतुलां सुवर्णोद्भवां ॥ विधायपुरुहूतव क्षितितले महादानसद्विधान कृतिपूर्वकं जयति राजसिंहोन्नृपः ॥ २८ ॥ समस्तदेवा वलिशोभतेयं दिक्पालमाला कलिताति दृश्या ॥ अलंसुवर्णाच्छ सुवर्णपूर्णा हैमीतुलामेरु निभावभाति ॥ २९ ॥ सुवर्णमतुलंप्राप्य यशस्त्यागीसउच्यतां ॥ धत्तेतन्नमनंसृष्टं सुवर्णतुलयोचितं ॥ ३० ॥ ऊर्ध्वस्थितंनृपंवीक्ष्य जातासर्वांगसुन्दरी ॥ सुवर्णपूर्णाविनता कुलस्त्रीवत्तुलोचितं ॥ ३१ ॥ अमरसिंहशुभा भिधमद्भुतं सुभगपौत्रवरं मधुरोधिकं ॥ कनककांत तुलास्थितमादरा त्समतनोन्नृपतिः प्रियतामयः ॥ ३२ ॥ एवंतुलादान विधिं प्रकल्प्या भवत्कृतार्थो नृपराजसिंहः ॥ पूर्णतुला सर्वविधौसुसक्तो विचित्रमत्रास्ति वुधोक्तिमध्ये ॥ ३३ ॥ नममेतित्यागवान् वा दानेज्ञानेतथेरितान् ॥ कर्मज्ञानोद्भव सुखं राजसिंहत्वयार्जितं ॥ ३४ ॥ जलाशयोत्सर्ग सुसप्तसागर दानस्फुरत् स्वर्णतुला भिधानकं ॥ कर्मत्रयं निर्मितवान्नरेश्वरः पापत्रयं हर्त्तुमिहेति कारणात् ॥ ३५ ॥ त्रयी महत्तर्कसदर्थकल्प कृते तुलोकत्रय तुष्टि सृष्ट्यै ॥ गुणत्रयोद्भूत विकार शान्त्यै त्रिमूर्त्ति मद्वेद समर्पणाय ॥ ३६ ॥ युग्मं ॥ त्रिभिर्मखै रेभि रथास्य जातं शताश्वमेधाय फलंहि मन्ये ॥ तदिंद्रता कुद्धरणींद्रता तत् श्रीराज सिंहस्य विभाति भव्या ॥ ३७ ॥ ग्रामौघ दानं गज राजिदानं हयालि दानं घटतोप्रदा नं ॥ गोवृंद दानं नृपतिः प्रकल्प्य नानाविधं दानमथो तानिष्ट ॥ ३८ ॥ तुलाकृते मेरु रहोगृहीत स्त्वया यदादेव तदैव जातः ॥ सशंकरः श्रीधर ईश्वरेंद्रो हिरण्य गर्भश्च कविः स्वरूपं ॥ ३९ ॥ द्विजपति गुरुभास्वन्मोददास्वर्ण पूर्णा विविधविबुध सेवा मंडपा डंवराभा ॥ दिगधिपकृत शोभा सिद्धगंधर्व गीताऽ भवदतुल तुलाते

मेरुरेव द्वितीयः ॥ ४० ॥ आसीद्भास्कर तस्तुमाधवबुधो ऽ स्माद्रामचंद्रस्ततः सत्सर्वेश्वर कः कठोडि कुलजो लक्ष्म्यादि नाथस्सुतः ॥ तैलंगोस्यतु रामचंद्र इतिवा कृष्णोस्यवा माधवः पुत्रोभून्मधुसूदन स्त्रय इमेब्रह्मेश विश्नूपमा ॥ ४२ ॥ यस्यासीन्मधुसूदन स्तु जनको वेणीच गोस्वामिजा ऽभून्माता रणछोड एष कृतवान् राजप्रशस्त्याह्वयं ॥ काव्यंराणगुणौघ वर्णन मयंवीरांकं — — — पूर्णः सप्तदशोत्रसर्ग उदगाद्वागर्थ सर्गः स्फुटः ॥

॥ श्रीगणेशायनमः ॥ घांसो दिव्यगुढो तथासिरथलः सालोल आलोदको मज्भेरोपिधने रियोधनमयो भाडीदिका सादडी ॥ अंवेरी शुभ ऊसरोल उदित श्रीमानसानो पुनर्भावो द्वादशसंख्यया परिमितान् ग्रामानि मानेकदा ॥ १ ॥ श्रीमद्राजसमुद्र सुंदरतरोत्सर्गे ग्रहारी कृतान् श्रीराणामणि राजसिंह नृपति र्धन्यः पुरोधोविधिं ॥ विश्राणायगरीबदास विलसन्नाम्ने मुदादत्तवान् सर्वाध्यक्ष वराय सर्व विषये चित्तानुसंधानिने ॥ २ ॥ गरीबदासाख्य पुरोहिताय ग्रामानि मान्द्वादशसं मितांस्तान् ॥ दत्वाददौ ब्राह्मणमंडलाय ग्रामान्धरां भूरिहल प्रमाणाः ॥ ३ ॥ ब्रह्मार्पणं कर्मसमस्त मेतत् ब्रह्मण्यदेवः परिकल्प्य नूनं ॥ गृह्णन् द्विजेभ्यः श्रुति निर्मिताशीः सतंजयत्येष महीमहेंद्रः ॥ ४ ॥ वर्षतिमेघा बहवोमुहुः शनैर्दिनत्र याणानुमितं यदग्रतः ॥ दृष्ट्वोत्सवंते हरिरेष सार्थकं कर्त्तुंसहस्रं स्वदृशां समागतः ॥ ५ ॥ यत्पौर्णमास्यां कृतवान्नरेंद्रः कर्मत्रयंते नतुपूर्णिमायां ॥ यथैवचंद्रः परिपूर्णकांतिं स्तथाप्रपूर्णा तिरुचिर्नृपः स्यात् ॥ ६ ॥ मनोरथः पूर्णतमोस्य भूयात्फलं तथास्या त्परिपूर्णमेव ॥ पूर्णपरं ब्रह्म तथातितुष्टं प्रमोदसंपूर्ण तमोनृपोस्तु ॥ ७ ॥ निवर्त्यसर्वं स्वतुला विधानं पूर्णाहुतिंयात मनन्यचेताः ॥ तुलाधिरूढा तुलपट्टराज्ञी जातैवसौ भाग्यसु पुण्यपूर्णा ॥ ८ ॥ सुवर्णवर्णा जितवत्पलंरुचा यशोविशेषेण चराजतींरुचिं ॥ श्रीपट्टराज्ञी किलजेतु मुद्यता तुलाकरोद्रूप्य मयींतुलांततः ॥ ९ ॥ निवर्त्य ऽसांगं सकलंतुलाविधिं पूर्णाहुतिं प्राप्तमनंत मोदयुक् ॥ गरीबदासाख्य पुरोहितस्तदा सुवर्णपूर्णा कृतवा न्महातुलां ॥ १० ॥ ततः प्रसन्नो रणछोडराय नामानमाह प्रियमात्मजंसः ॥ आरोप्यरूप्या तिलसत्तुलायां प्रमोदपूर्णो भवदेवतूर्णं ॥ ११ ॥ सर्वेपुवर्णेपुयतः सुवर्णवान् तुलांसुवर्ण प्रचुरां ततोतनोत् ॥ रूप्याभकीर्ति स्फुरितेनराज त्तुलांतथाकार यदेपसूनुना ॥ १२ ॥ तोडास्थितेः श्रीयुतरायसिंह भूपस्यमाता रजतेनपूर्णां ॥ तुलासतुल्या मकरोदुदारो ल्लसन्मनाधर्म धुरंधराभूत् ॥ १३ ॥ चौहानवंश्य स्तुसलूंबरस्थः सकेसरीसिंह इतिप्रसिद्धः ॥ रावस्तुलां रूप्यमयीं विधायधन्यो भवद्धर्म मयोविशुद्धः ॥ १४ ॥

सचारणो वारहट प्रसिद्धः सत्केसरीसिंह इतिप्रपूर्णे ॥ रूप्येणरूप्या भयशः प्रकाशं कुर्वंस्तुलां तामकरो दुदारः ॥ १५ ॥ अस्मिन्दिने राजसमुद्र नामकः प्रोक्तस्तडागो गिरिमंदिरंमहत् ॥ प्रोक्तंनरेंद्रेण चराजमंदिरं राजादिशब्दं नगरं पुरंतथा ॥ १६ ॥ अथात्र घस्त्रेतु सहस्त्रनेत्र समानसंपत्ति विराजमानः ॥ श्रीराजसिंहो वलिकर्णभोज श्रीविक्रमार्को पमदानवीरः ॥ १७ ॥ पूर्वैरितान्धान्य धराधरांस्ता न्पक्वान्नशैला नपिशर्कराद्रीन् ॥ गुडादिखंडादिक पर्वतांश्च ददौद्विजादि भ्यइहागतेभ्यः ॥ १८ ॥ ततोगिरीणाम भवद्विलक्ष्यता चित्रंहितेषा मभवज्जनुः पुनः ॥ आनीयधान्यादि सुकार्यकृज्जनैः कृतंकृतार्थै रिहसेवयाप्रभोः ॥ १९ ॥ नैतादृशंजन्म नवाप्यलक्ष्यता ईदृग्गिरीणा मभवज्जनुः पुनः ॥ एतेस्थिता एवतु यावकावले गृहव्रजोमित्र नचित्रमत्रतत् ॥ २० ॥ अत्रोत्सवे सद्घृतवापिकाः पुनर्मुहुः कृताकार्य करैर्महाजनैः ॥ मुहुर्मुहुस्तारि रिचुर्नचित्रता पानीयवाप्योरि रिचुस्तदद्भुतं ॥ २१ ॥ अस्यश्रियं प्रेक्ष्यलोके दिक्पालांश युतोह्ययं ॥ इंद्रप्रचेतो धनदश्रीशानां शाधिकत्वयान् ॥ २२ ॥ ततोबहुतरं भव्यं द्रव्यंदत्तं पुरोधसे ॥ ऋत्विग्भ्यो ब्राह्मणेभ्यश्च प्रभुणा सादरंमुदा ॥ २३ ॥ प्रभोराज समुद्रस्य रिंगत्तुंग तरंगकेः ॥ तटस्थद्विजदारिद्र्य द्रुमाद्दूरीकृताध्रुवं ॥ २४ ॥ मन्येराज समुद्रस्य लोलैः कल्लोल संचयैः ॥ याचकाले द्रैरिद्रास्य पंकप्रक्षालनंकृतं ॥ २५ ॥ वसन् राजसमुद्रस्य तटेसद्द्वार्वतीपुरी ॥ द्रागदरिद्र सुदाम्नोमे श्रीदः स्याः श्री पतेनृप ॥ २६ ॥ तटेराज समुद्रस्य वसन् श्रीशनृपश्रियं ॥ द्राक्दरिद्र सुदाम्नोमे देहि तातं तुलार्पणात् ॥ २७ ॥ सप्तसागर दानेन तत्सप्त पुरुपार्जितं ॥ द्विजानांदीर्घ दारिद्र्यं प्रभोर्दूरी कृतंत्वया ॥ २७ ॥ सप्तसागर दानस्य सुवर्णौघ प्रवाहतः दूरी कृतस्त्वया राज न्द्विजदारिद्र्यसद्द्रुमः ॥ २८ ॥ दत्तैर्हेम तुलास्वर्णैः सुवर्ण गिरि सन्निभान् ॥ कुर्वन्सतां गृहंत्वंत दारिद्र्य दमनो ध्रुवं ॥ २९ ॥ तुला सुवर्ण दानेन राजसिंह प्रभोत्वया ॥ दूरीकृता द्राग्विदुपा मतुलासा धमर्णता ॥ ३० ॥ खंशेते राजसमुद्र रूपमपरं रूपं दधानोंबुधिः ॥ मध्ये प्रोल्लोलकल्लोलः फेनाः स्फटिककूटभाः ॥ सारसाः सरसास्तीरे भांत्यस्यनवकावकाः ॥ ३१ ॥ मुक्तास्वीयं कुलंवैव मति किलतटे यस्यसद्द्वारकांतां कृत्वारम्यां पुराद्रींग्यवनभयमयः केशवोद्धारि केशः ॥ गोमत्युत्तुंग संगान्दलति विगदसच्छंख चक्रोच्छपद्मः श्रीराणाराजसिंह प्रभुवरभवतः श्रीतडागः समुद्रः ॥ ३२ ॥ विभ्राणः सेतुबंधं गिरिवर रुचिरः पूरितोजीवनौघै र्नानानद्यात्रसंगं शिवसदनयुतः पोतपङ्क्त्याप्रसक्तः ॥ नैतावत्या समुद्रस्तदधिक इतितेभूपते श्रीतडागो मर्यादांवाडवाग्निं कलयति नचवा

क्षारनीरं कदाचित् ॥ ३३ ॥ प्रियतम मथुराया मंडलाच्चंड कालयवन कलितभीत्या गत्यगोवर्द्धनेशः ॥ वसतितवतडाग स्यांतिकेत्वन्मुदेत जलधिमपरमेनं राजसिंहे तिजाने ॥ ३४ ॥ अमावास्यां विनानैव स्पृश्यः सिंधुः सगर्जनः ॥ तडागस्ते तदधिकः सदास्त्यस्य विगर्जनं ॥ ३५ ॥ समुद्रयातुः स्वीकारो नकलौयातु रत्रतु ॥ त्वयाकृते यत्स्वीकारे वीरायं सिंधुतोधिकः ॥ ३६ ॥ श्रीराणोदयसिंह सूनुरभवत् श्रीमत्प्रतापः सुतस्तस्य श्रीअमरेश्वरोस्य तनयः श्रीकर्णसिंहोस्यवा ॥ पुत्रो राण जगत्पतिश्च तनयो स्माद्राजसिंहोस्यवा पुत्रः श्रीजयसिंह एषकृतवा न्वीरः शिलालेखितं ॥ ३७ ॥ पूर्णसप्तदशे शतेतपसिवा सत्पूर्णिमाख्येदिने द्वात्रिंशन्मित वत्सरेनरपतेः श्रीराजसिंहप्रभोः ॥ काव्यंराजसमुद्र मिष्टजलधेः स्टष्टप्रतिष्ठाविधे स्त्येत्राक्तं रणछोडभट्टरचितं राजप्रशस्त्याह्वयं ॥ इति अष्टादशसर्गः ॥ १८ ॥

॥ श्रीगणेशायनमः ॥ लक्ष्मी सत्कांतिचंद्रा मृतशुभ विषसत्कामधुक् शार्ङ्ग धन्व प्राक्वैद्यो ऽ पारिजातामरयुवति मणी सत्सुराद्यो दयश्च ॥ शंखाच्छोच्चैः श्रवो युक त्रिदश गजमहा भंगभृद् भूतिरद्धा धन्वंतर्युद्भवो वांबुभिरिति भवतः क्षीर सिंधु स्तडागः ॥ १ ॥ कुंभोद्भव प्रकर कृष्टजलोविशुष्को जात स्ततो लवण नीरमयः समुद्रः ॥ कुंभोद्भव प्रकर कृष्टजलोतिवृद्धा मिष्टस्तवक्षितिप राजसमुद्र एषः ॥ २ ॥ श्रीद्वारिकोद्भव कृते परिमुक्तभूमिर्न्यून ः क्वचित्तदुदधिः किलकृष्ण वाक्यात् ॥ यत्तीर भिन्नधरणी पुरवासि कृष्णोनूनंसुपूर्ण इतिते ऽ ब्धिवरस्तडागः ॥ ३ ॥ खातेषष्टिसहस्र भूपतनयाः पूर्तौसहस्रास्ययुग्गांगाद्या भवणीकृतावपि परो ऽन्यः सेतुबंधेंबुधेः ॥ खाते पूर्त्तिषुमिष्टसृष्टि शुभवा न्यत्सेतुबंधेस्यतत् सिंधो रेककृतेरवि ह्यसमयान्मन्यामहे धन्यतां ॥ ४ ॥ अलपस्य साम्यं नददातिकश्चित् समस्यसाम्यं नचदृष्ट मस्य ॥ ततोमहत्वेन जलाशयोयं प्रोक्तः समुद्रः कविभि र्नचित्रं ॥ ५ ॥ जलेनिमग्ना येग्रामा नतेमग्ना महीपते ॥ तेलग्ना वरुणद्वारे भग्ना स्तत्पाप पंक्तयः ॥ ६ ॥ येषांविशिष्ट ग्रामाणां क्षेत्राण्यत्र जलाशये ॥ मग्नानि तीर्थ क्षेत्राणि तानिजातानि भूपते ॥ ७ ॥ येजन्मिनां जीवनदाः स्थले तेजीवन प्रदाः ॥ यादसांच नृणांग्रामा गुणग्राम भृतोंबुगाः ॥ ८ ॥ भूस्थावृक्षा जलेमग्ना स्तेषां वीजां कुरैर्द्रुमाः ॥ जलेभवन्वाटिकातो वरुणस्यत्वयाकृता ॥ ९ ॥ वोधिद्रुमोजल स्थायी तपस्तपति दुःकरं ॥ प्रवाल मालयाशाखां गुलाभिः सार्थकाह्वयः ॥ १० ॥ वटवृक्षास्थिता स्तोये तपंति प्रचुरं तपः ॥ क्षालयंति जटाजालं नूनमत्ते त्रयोगिनः ॥ ११ ॥ त्वत्कीर्त्ति स्वर्णदी भृद्यदुपति सहित प्राप्तकालिंदिका युग्मी त्वच्छायानुमाना त्स्नपनकर गजोत्कुंभ सिंदूर संगात् ॥ भ्राजत्सारस्वतौ घस्तदिति नरपते तेतडागः

प्रयागो न्यग्रोधा अक्षयाख्याः प्रविदधाति पदं युक्त मस्मिन्निकामं ॥ १२ ॥ यथा स्थले तथा जले बुधावदंति जंतवः ॥ विचित्रमत्र शाखिनस्तथा जयंति भूपते ॥ वनस्थिताद्रुमाः सर्वे वनस्थाएवतेभवन् ॥ युक्तंविशेषोधर्मो ऽत्र वरुणस्योपयोगतः ॥ १३ ॥ पूर्वयत्रवनेसिंहगर्जनानि जलाशये ॥ जातेत्रजलकल्लोल गर्जनानि जयन्त्यलं ॥ १४ ॥ वरुणालयतस्तोया नयनात्सजितस्त्वया ॥ प्रेक्षंतेतन्मृगाक्ष्यस्त्वां पद्मछद्मकटाक्षकैः ॥ १५ ॥ कमलौघस्त्वयानीत स्तडागेवरुणालयात् ॥ कमलाद्य स्थापितोत्र कमलादानतत्परः ॥ १६ ॥ प्रदक्षिणा स्वागतायामाला भूपालतां त्वया ॥ तडागे वरुण प्रीत्यै प्रेषिताः करुणानिधे ॥ १७ ॥ वटानां जलमग्नानां जटा राजंति तत्रते ॥ मीना गृहाणि कुर्वंति नीडानि पतगा इव ॥ १८ ॥ निर्मलो जीवरक्षा कृद्विश्व तर्पण कृत्त्वया ॥ नव सूत्रार्पणे नायं तडागो द्विजता मितः ॥ १९ ॥ पूर्व पश्चिम सुदक्षिणोत्तर देश भूमिषु न दृष्टिगोचरः ॥ ईदृशः खलु जलाशयो बुधैः सिंधु रुक्त इतिनात्र चित्रता ॥ २० ॥ श्रीराजनगर स्यास्य — — रद्भुत भूतले ॥ विराजते राज सिंहो गोडा मंडल मातनोत् ॥ २१ ॥ तत्र द्विजातयो नाना देशात्प्राप्ताः सुवेषिणः ॥ षट् चत्वारिंश दाख्या युक् सहस्त्र मितयः स्थिताः ॥ २२ ॥ एतावंतो ग्राम नाम सहिता अधिकाः पुनः ॥ ब्राह्मणास्तु असंख्याता आगता नात्रसंशयः ॥ २३ ॥ ततो गरीबदासाख्यः पुरोहित वरो हि सः ॥ तत्रस्थित्वा स्वयं स्वाज्ञा कारिणः कार्य कारिणः ॥ २३ ॥ स्थापयित्वा स्वहस्ताभ्यां तद्धस्तै रप्य हर्निशं ॥ सप्तसागर दानस्य तुलादानस्य वाप्रभोः ॥ २४ ॥ धन श्रीपट्ट राज्ञ्याश्च तुलाद्रव्यं तथा बहु ॥ स्वकल्पितं स्वर्ण तुलादानस्य बहुहाटकं ॥ रणछोड राय कृतं तुला द्रव्यं दामितं दत्वा पूर्वोक्ते-भ्यः सदापूर्व मुदान्वितः ॥ २५ ॥ विवेकादर पूर्वं स तान् व्यधात्तुष्टमान सान् ॥ अन्नदानं बहुविधं कृतवां स्तत्र भूपतिः ॥ २६ ॥ ततः सभा मंड पस्थो राजसिंहो महीपतिः ॥ द्विजेभ्यो याचके भ्यश्च चारणेभ्यो दिवा निशं ॥ २६ ॥ वंदिभ्यः सर्व लोकेभ्यः सुवर्ण दिव्य वर्णकं ॥ रूप्य मुद्रा स्तथा ऽक्षुद्रा अलं कारां (— — — —) ॥ २७ ॥ वासांसि हेमहृद्यानि-वाजिनो जितवाजिनः ॥ उत्तुंग मातंग गणा न्दत्वा संमोद मादधे ॥ २८ ॥ हलानां बहलानांच ताम्रपत्राणि भूपतिः ॥ ग्रामाणां विलसद्धान्य ग्रामाणां दत्तवां स्तथा ॥ २९ ॥ याचकैः कनक विक्रयं परं कर्तुमत्र कनकं प्रसारितं ॥ वीक्ष्यराज नगरं महाजनाः सत्सुवर्ण मयमेव मूचिरे ॥ ३० ॥ याचकै स्तुरग विक्रया यताक्ष्या — — न्विपणिषूच्चवाजिनः ॥ वीक्ष्य राजनगरं जनोवदत्सिंधु देश

क्षिति सिंधु सुंदरं ॥ ३१ ॥ याचकैर्भवतएव भूपते याचनान्निजगणो पिचस्मृत: ॥ स्थापितंतु धनरक्षणे मनस्तैर्यतो विगुण तास्तितेषुच ॥ ३२ ॥ तुलाकर्त्तुर्द्रव्यं क्षितिपभवत: प्राप्य गुणिनस्तुलाकर्त्ता रोल्पाधिक मितिकृते विक्रयविधौ ॥ स्वविश्वासार्थं तद्बहुलकनकस्या प्रतिपलं तुलाकर्त्तु (– –) जयसिरचयन् याचकगुणान् ॥ ३३ ॥ निमंत्रणायात धराधवेभ्य: स्वेभ्य: परेभ्य: सकलद्विजेभ्य: ॥ वैश्यादिकेभ्यो ऽखिलमानुषेभ्यो वासांसिगांगेय गुणोत्तमानि ॥ ३४ ॥ अश्वाँस्तथा वातगतीन् गजेंद्रान् गिरिप्रमाणान् मणिभूषणानि ॥ दत्वाविवेकाद्गमनायतेभ्य आज्ञां ददानो जयति क्षितींद्र: ॥ ३५ ॥ युग्मं ॥ निमंत्रितेभ्यो खिल भूमि पेभ्यो दुर्गा धिपेभ्यो निज बांधवेभ्य: ॥ स्वेभ्य: परेभ्य: कनको त्तमानि वासांसि चाश्वान् प्रशदश्व वेगान् ॥ ३६ ॥ तुंगाँश्च मातंग गणा न्मदाढ्या न्विभूषणा लीर्गत दूषणांश्च ॥ संप्रेषयित्वा प्रविभाति भूपो महा महोदार चरित्र (– –) ॥ ३७ ॥ आसीद्भास्करतस्तु माधवबुधो ऽस्माद्रामचंद्रस्तत: सत्सर्वेश्वरक: कठोडि कुलजो लक्ष्म्यादिनाथस्सुत: ॥ तैलंगोस्यतुरामचंद्रइतिवा कृष्णोस्यवामाधव: पुत्रोभून्मधुसूदनस्त्रयइमे ब्रह्मेशविष्णूपमा: ॥ यस्यासीन्मधुसूदनस्तुजनको वेणीचगोस्वामिजा ऽभून्मातारणछोडएवकृतवान् राजप्रशस्त्याह्वयं ॥ काव्यंराणगुणौघवर्णनमयं वीरांकयुक्तंमहत् द्वाविंशोद्भवदत्रसर्ग उदितो वागर्थसर्ग: स्फुट: ॥ चतुर्विंशत्याख्य इहा भवद्भवमुदे सर्गोर्थसर्गोन्नत: ॥ ३८ ॥ इति एकोनविंशतितम: सर्ग: ॥ १९ ॥

श्रीगणेशायनम: ॥ जसवंतसिंहनाम्ने राज्ञेराठोडनाथाय ॥ सार्द्ध नवसत्सहस्त्र प्रमितरजत मुद्रिकामूल्यं ॥ १ ॥ परमेश्वर प्रसादाभिधं गजंपंचविंशति प्रमितै: ॥ राजतमुद्राशतकै र्गृहीतमति नूतनं तुरगवरं ॥ २ ॥ फत्तेतुरंग संज्ञं षट्शत मित रजतमुद्रिका क्रीतं ॥ कनक कलश हयमपरं हेमपूर्ण वसनानि ॥ ३ ॥ नानाविधानि बहुतर संख्यानि महादरेण जोधपुरे ॥ राणेंद्र: प्रेषितवान् हस्ते रणछोड भट्टस्य ॥ ४ ॥ अथ रामसिंहनाम्ने राज्ञे किलकच्छवाह भूपाय ॥ राजतमुद्रा सार्द्धद्विशता प्रायुतरचित मूल्यं ॥ ५ ॥ सुंदरगजनामानं गजोत्तमं रजतमुद्राणां ॥ पंचदशशतै: कल्पित मूल्यंछवि सुन्दराख्यहयं ॥ ६ ॥ अथ सार्द्धसप्तशत मित राजतमुद्रा प्रमित मूल्यं ॥ हयहदनाम तुरगं कनक कलित बहुलवसनानि ॥ ७ ॥ आंबेरि नगर मध्ये प्रेशितवान् राणपूर्णेंदु: ॥ हस्ते प्रशस्त कीर्ति: स्वपुरोहित रामचंद्रस्य ॥ ८ ॥ बीकानेर प्रभवे अनूपसिंहाय रावाय ॥ सार्द्ध सुसप्तसहस्त्रं राजतमुद्रा प्रमित मूल्यं ॥ ९ ॥ मनमुक्तिनाम करिणं सार्द्ध सहस्त्रा च्छरजतमुद्राभि: ॥ कृतमूल्यं तुरगवरं साहण सिंगारसंज्ञ मन्यहयं ॥ १० ॥ शतसार्द्ध सप्तशतमित राजतमुद्रा रचित मूल्यं ॥ तेजानि

धानाभिध मपिहेममयान्यं वराणि बहुलानि ॥ ११ ॥ प्रेमादर पूर्वकिल बीकानेर स्फुटाभिधे नगरे ॥ प्रेषितवान् राणेंद्रो माधवजोसीहस्तेहि ॥ १२ ॥ रावाय भावसिंहा भिधायहाडा नृपालाय ॥ षड्सप्ततियुक् त्रिशताग्रे दशसहस्रैस्तु ॥ राजतमुद्राणां कृतमूल्यं द्विरदतु होणहाराख्यं ॥ १४ ॥ सार्द्धसहस्रप्रमितिक राजतमुद्रा रचितमूल्यं ॥ तुरगंनर्त्तन चतुरं तुंगतरं सर्वशोभाख्यं ॥ १५ ॥ सत्सार्द्धसप्तशतमित राजतमुद्रा प्रमितमूल्यं ॥ शिरताजाभिधमपरं हयंसहेमाम्बराणि राणमणिः ॥ बूंदीनगरे भास्कर भट्टकरेप्रेषयामास ॥ १६ ॥ चंद्रावत चंद्राय मुहुकमसिंहाभिधाय रावाय ॥ सार्द्ध द्विशताग्रलसत्सप्त सहस्राच्छ रूप्य मुद्राभिः ॥ १७ ॥ कृतमूल्यं गजराजं फत्तेदोलत शुभाभिधं तुरगं ॥ सार्द्ध सहस्र प्रमित राजतमुद्रारचित मूल्यं ॥ १८ ॥ मोहसंज्ञसार्द्ध सप्तशते रूप्यमुद्राणां ॥ कृतमूल्यं हयसरसं हयमन्यं हेमपूर्ण वसनाढ्यं ॥ १९ ॥ राजाज्ञया गृहीत्वा भट्टोगा द्वारिकानाथं ॥ रामपुरानगरेत्वथ सर्वमिदंतु सोर्पयामास ॥ २० ॥ भाटी भूपालाय रावलवर अमरसिंहाय ॥ राजसमुद्रैकादशसहस्र मूल्यं प्रतापशृंगारं ॥ २१ ॥ करिणं राजतमुद्रा सार्द्धसहस्र प्रमित मूल्यं ॥ हयमुकुटाख्यंसार्द्ध सप्तशत प्रमित रूप्यमुद्राभिः ॥ २२ ॥ कृतमूल्य मपरमश्वं सूरति मूर्त्तिचहेम वसनौघं ॥ एतत्सर्वं जोसीदेवानंदस्य किलहस्ते ॥ २३ ॥ दत्वा जेसलमेरौमहापुरे प्रेमपूर्वमपि ॥ संप्रेषितवानेतं सराणवीरोनृपति धीरः ॥ २४ ॥ जसवंतसिंहनाम्ने रावलवर्याय षट्सहस्रैस्तु ॥ पंचशताग्रै राजतमुद्राणां रचितमूल्य मिभंहेम ॥ २५ ॥ शुभसारधारसंज्ञं द्विवेदि हरिजीकहस्तेतु ॥ डूंगरपुरेनरपतिः प्रेषितवान् हेमयुक्त वसनानि ॥ प्रथमं राजसमुद्रोत्सर्गेस्मै रजतमुद्राणां ॥ तत्रसहस्रेण कृतमूल्यं जसतुरगनामहयं ॥ २६ ॥ पंचशत रूप्यमुद्राकृतमूल्य तुरगमपरंच ॥ कनकमयांवर वृंदंदत्तवान् राजसिंहनृपः ॥ २७ ॥ राजत मुद्रैकादश सहस्रमूल्यं प्रतापशृंगारं ॥ द्विपमंबराणि च ददौ दोसी-भीपू प्रधानाय ॥ २८ ॥ सिरनागं कृतमूल्यं सप्त सहस्त्रै स्तुरूप्य मुद्राणां ॥ द्विपमंबराणि सददौ राणावत रामसिंहाय ॥ २९ ॥ राजसमुद्र जलाशय कार्यकृता मग्र गण्याय ॥ राजत मुद्राणांवा कृत मूल्यान् पंचविंशति सहस्रैः ॥ एकाधिक पंचाश युत पंचशताग्र कैस्तुरगान् ॥ सुखदैक षष्ठि संख्यान् कुशराज त्पराजयेसददौ ॥ ३० ॥ कुलकं ॥ एकाग्र सप्तति लसत्पंच शताग्रेतु सप्तविंशतिकैः ॥ दिव्य सहस्रै राजत मुद्राणां रचित सन्मूल्यान् ॥ ३१ ॥ षडाधिक शतद्वयमितास्तुरंगमाश्चा-रणेभ्य इहादात् ॥ प्रवाहमध्ये भाटेभ्यो भूपतिः प्रददौ सप्त सहस्रैः ॥

विरचित मूल्यं रजतमुद्राणां द्विरदन मनूपरूपं द्विरदवरं सार्द्धनव शतकैः ॥ ३२ ॥ राजत मुद्राणां च कृतमूल्यं विनय सुंदरकं ॥ हयमन्यं दिलसारं राजत मुद्राचतुःशतगृहीतं ॥ ३३ ॥ कनकमयांवर वृंदं सुलब्ध राज्या यवांधवेशाय ॥ नृपभावसिंह नाम्ने राणेसं प्रेषयामास ॥ ३३ ॥ लाधूम सानिहस्ते लाधूकं तीर्थयात्रार्थं ॥ दत्वा वहुलं द्रव्यं प्रेषितवा न्प्रेमकृद्रूपः ॥ ३४ ॥ राजत मुद्राणांवा त्रिंशत्य ग्रचतुः सहस्र कृतमूल्यान् ॥ सददेष्टा दश तुरगान्निमंत्रणायात नृपतिभ्यः ॥ ३५ ॥ त्रिसहस्र रजतमुद्रा मूल्या-करिणी सहेलीति ॥ तोडेश रायसिंह नृपस्यमात्रे ददौ कुमारेभ्यः ॥ ३६ ॥ सार्द्धचतुः शतयुक् त्रिसहस्र सुरूप्य मुद्रिका मूल्यान् ॥ तुरगांस्त्रयोदश ददौ निमंत्रणायात नृपतिभ्यः ॥ ३७ ॥ एकाग्रपष्टि संयुत पंचशत प्रमित रूप्यमुद्राणां ॥ सप्त ददौ भूपोश्वान् निमंत्रणायात नृपतिभ्यः ॥ ३८ ॥ षट्त्रिंशदधिक शतयुक् त्रिसहस्र त्रयंतुरूप्यमुद्राणां ॥ द्विशत तुरंगान् सददौ शासनयुत चारणौघ भाटेभ्यः ॥ ३९ ॥ तत्र विवेफास्त्रिसहित विंशति तुरगान् स्वशासनिभ्योदात् ॥ पूर्वोक्तसंख्य तुरगान् राणा जगत्सिंह शासनिभ्योपि ॥ ४० ॥ श्रीकर्णसिंह शासनिकेभ्योश्वानां चतुष्टयं सददौ ॥ अमरेशशासनिभ्यः सप्ततु-रंगान् प्रतापसिंहस्य ॥ ४१ ॥ शासनिकेभ्यो द्वादशहयानुदयसिंह शासनिभ्यस्तु ॥ अष्टत्रिंशत्तुरगान् हयमेकंविक्रमार्क शासनिने ॥ ४२ ॥ युग्मं ॥ हयमेकंतु रतन सीशासनिने राणवीरोदात् ॥ शुभसप्त विंशति हयान् संग्राम नृपस्य शासनिभ्योदात् ॥ ४३ ॥ श्रीरायमल्ल शासनिके भ्योश्वानेक विंशति प्रमितान् ॥ कुंभाशासनि काया श्वमेकमेकोनविंशति प्रमितान् ॥ ४४ ॥ मोकलशासनिकेभ्य स्तुरगान्हम्मीर शासनिभ्योदात् ॥ पंचहयान् लाखानृपशासनिकेभ्यो हयान्सप्त ॥ ४५ ॥ युग्मं ॥ खेताऽजेसीशासनिकाभ्यां हयमेकमेकमदात् ॥ रावलसुशालिवाहन महासमरसीक शासनिभ्यांतु ॥ ४६ ॥ हयमेक मेकमेकं रावत वाघस्य शासनिने ॥ मोकलसहोदरस्य द्विशत हयान् भूपएवमत्र ददौ ॥ ४७ ॥ लक्षैक द्वाविंशति सहस्रशत युग्म साष्टषष्टिमितैः ॥ राजतमुद्रा वृंदैः क्रीताः शतपंचकं द्विपंचाशत् ॥ ४८ ॥ तुरगान् लक्षक द्विसहस्र शतकाष्टकै रितिक्रीताः ॥ करिणीगजा स्त्रयोदश दत्तावीरेंद्र राजसिंहेन ॥ ४९ ॥ पंडितेभ्यः कविभ्यश्च वंदि चारण पंक्तये ॥ अश्वान्धनानि वासांसि ददौ (— — — — — — —) ॥ ५० ॥ जलाशयोत्सर्ग विधानमेवं कृत्वा महादान समूहमेवं ॥ तथैवनानाविध दानराजी विराजते राजित राजवीरः ॥ ५१ ॥ इति श्री राजसमुद्र प्रशस्त्या भट्टरणछोड़ विरचिते विंशति सर्गः ॥ २० ॥

श्रीगणेशायनमः॥ पूर्णे सप्तदशे शते शुभकरे लब्धा दशा स्त्वेब्दके माघे सद्बुध कृष्ण सप्तमितिथा वारभ्य कालादितः ॥ पंच त्रिंशदभिख्य वर्ष उदिता पाढावधीत्थंवदे लग्नं राजसमुद्र नामकमहा नव्ये तडागे धनं ॥ १ ॥ पञ्च-त्वारिंशदाख्यानथ रजत महा मुद्रिकाणां शुभानां लक्षाणीत्थं सहस्राण्यपि रुचिर चतुः षष्टि संख्या मितानि ॥ षट्संख्या युक् शतानि प्रकटितपदयुक् पंचविंशत्युपात्त स्वग्राण्येवं विलग्नान्युत गणनमिदं लेकपक्षे मयोक्तं ॥ २ ॥ विवेकमत्र वक्ष्यामि रूप्यमुद्रा वलेहितत् ॥ सप्त विंशति लक्षाणि षट्त्रिंश त्प्रमितानिच ॥ ३ ॥ सहस्राणि चतुः संख्या शतानि नवति स्तथा ॥ सार्द्धं सप्ताग्र कान्यत्र रामसिंहस्य वैतफे ॥ ४ ॥ पंचलक्ष चतुः संख्यसहस्राष्टशतानिच ॥ सपादाशीतिका भाद्र पितृव्यस्यतफे तथा ॥ ५ ॥ पुत्र मोहमसिंहाख्य सीशोद्या संग शोभितः ॥ लक्षद्वयं सहस्राणि द्वादशैव शतानिच ॥ ६ ॥ पंचाष्टत्रिंशदधिक पदषा गणनाभवत् ॥ एषा सांव ऊदासस्य पंचोलीकुलशालिनः ॥ ७ ॥ चतुर्लक्षाण्यष्ट्युक्त सप्तति प्रमितानिच ॥ सहस्राण्येकशतकं सप्ताग्रं भरणे मृदां ॥ ८ ॥ चतुष्कीनिः सृतानां तु लेखने गणना भवत् ॥ द्वात्रिंशत्सुसहस्राणि षट्शतानि सपादकं ॥ ९ ॥ एकमत्रा न्यदायातं द्रव्यं वा प्रभुपार्श्वतः ॥ तथा प्रसाद दानादि तल्लेखे गणना त्वियं ॥ १० ॥ सप्त लक्षाणि सैकानि प्रतिष्ठा करणे मितिः ॥ एतद्राज समुद्र-स्य पूर्व संख्या प्रमेलनं ॥ ११ ॥ पूर्वोक्त द्रव्य गणना विवेकः क्रियते पुनः ॥ द्वात्रिंशत् संख्य लक्षाणि सहस्र द्वितयं तथा ॥ १२ ॥ गणनाष्ट शतान्यासी त्सपादा शीति र-प्युत ॥ एषाराजसमुद्रस्य कार्यार्थंच भृतेः कृते ॥ १३ ॥ सप्तलक्षाण्येक षष्टि सहस्राणि ससप्तवे ॥ चतुश्चत्वारिंशदग्र युक्तानि शतकानिच ॥ १४ ॥ श्रीमद्राजसमुद्रस्य कार्येये ठक्कुराः स्थिताः ॥ तेषांग्रामोत्पत्ति रूप्य मुद्राणां गणनाभवत् ॥ १५ ॥ एवंपूर्वोक्त संख्याया मेलनं भवतिस्फुटं ॥ एकपक्षे लग्नरूप्य मुद्रासंख्येयमीरिता ॥ १६ ॥ देशग्रामभुजां मुख्य क्षत्रादीनां महोधनं ॥ चतुष्की खनने लग्नं वक्तुं शक्यश्चतुर्मुखः ॥ १७ ॥ गृहाच्चतुर्गुणं लग्नं तडागे वासतोधनं ॥ तद्विपक्ष त्रिपादोनां षोडशांशंतदिष्यते ॥ १८ ॥ गोभूहिरण्य रूप्याणां दत्तानामन्नवाससां ॥ वराह मिहिरश्चेत्स्याद्गणको गणनाभवेत् ॥ १९ ॥ श्वासानां गणनां कुर्याद्यद्यश्वानां सदातदा ॥ श्वसना ऽऽवेगजयिनां गणनाकृद्भवेद्गुणी ॥ २० ॥ मत्तानां शणदत्तानां तुंगानां गणनामुचां ॥ मतंगानां गणेशश्चेद्गणना जायते तदा ॥ २१ ॥ एकाकोटिः पंचलक्षाणि रूप्यमुद्राणां वासत्सहस्राणि सप्त ॥ लग्नान्यस्मि

न्षट्शता न्यष्टकंचैकार्यै प्रोक्तं पक्षएव द्वितीये ॥ २२ ॥ सहस्त्र लक्ष कोटीनां संख्या ज्ञातातुयावहुः ॥ तैरत्र लग्नद्रव्यस्य संख्योक्ता मंतुरस्तुमा ॥ २३ ॥ लग्नं राजसमुद्रेतु यावत्तावद्धनं बुधः ॥ तरंगगणनांकुर्याद्यद्यस्यैव तदाचरेत् ॥ २४ ॥ स्पर्द्धा लक्ष्म्या सरस्वत्या लग्नालक्ष्मीस्तुयावती ॥ नवक्ति तावतीयुक्तं तडागेत्र सरस्वती ॥ २५ ॥ सप्तदशेतीते पंचस्त्रिंशन्मिताब्द जन्मदिने ॥ द्विशतपलमिताच्छहाटक कल्पद्रुम नामकं महादानं ॥ २६ ॥ षडशीतितोलमितियुल सुहिरण्याश्वाभिधं महादानं ॥ श्रीराजसिंहनामा पृथ्वी नाथो रचितवान्सः ॥ २७ ॥ युग्मं ॥ शतेसप्तदशे पूर्णे चतुस्त्रिंशन्मितेब्दके ॥ श्री राणा राजसिंहेंद्रो जीलवाडावधि व्रजन् ॥ २८ ॥ वैरीसालं सिरोहिस्थं शत्रु संघेन पीडितं ॥ रावं सिरोहिनृपतिं चक्रेनिज पराक्रमैः ॥ २९ ॥ एकलक्ष प्रमितिका रूप्य मुद्रास्ततो ग्रहीत् ॥ पंचग्रामान्कोरटा दीन् जग्राहोग्राहवोनृपः ॥ ३० ॥ राणासुवर्णकलश चौर्यं तद्देश आगतं ॥ तद्रूप्यमुद्राः पंचाशत् सहस्त्राण्यग्रहीत्ततः ॥ ३१ ॥ शते सप्तदशे तीते चतुस्त्रिंशन्मितेब्दके ॥ श्री राणेंद्रोघत्संख्याः (- - -) रजगृहेगजं ॥ ३२ ॥ त्रिविक्रमाश्रय कृतो विक्रमार्कस्य दानतः ॥ वर्कुकः सुक्रमाच्छक्तो राजसिंह पराक्रमान् ॥ ३३ ॥ राजसिंह विचित्रोयं प्रताप तपनस्तव ॥ वने संस्था-नपिरिपूं स्तापयत्यद्भुतं महत् ॥ ३४ ॥ राजन्भवत्प्रतापाग्निः शत्रु स्त्रीवाष्प सिंचनैः ॥ ज्वलत्यत्र नचित्रंतद्द्विट्कीर्त्ति नव - - पः ॥ ३५ ॥ शत्रुस्त्रीनेत्रपद्मानि संतापयति संततं ॥ श्री राजसिंह भवतः प्रताप तपनो-द्भुतः ॥ ३६ ॥ प्रतापोद्दीपस्ते क्षितिप जगदालोक किरणः शिखाभिः शत्रूणांवदन निकुरंबंमलिनयन् ॥ दिशां दिव्यांस्नेहं कवलयतिवा प्राणपटली पतंगालीं दग्धां कलयति तनूपात्र वसतिः ॥ ३७ ॥ यशश्चंद्रेसांद्रं किरति कर वृंदं रिपुगणाः शिवोजातः कर्णस्फटिक विलसत्कुंडलधरः ॥ विधुंभाले गंगांशिरसि भुजयोः शुभ्र भुजगान्दधानो भस्मांगो वसति धवले शैलशिखरे ॥ ३८ ॥ भूभार मेषभुजयो र्विदधातिपाणौ खड्गोरगं मुखरुचौ प्रचुरंप्रतापं ॥ कर्णेपिभाति विमलां विधुशीतलायत् कीर्तिस्तवात्र भुवनं त्वथबभ्रमीति ॥ ३९ ॥ राजेंद्रो भवतादयं जयकरो वैरिव्रजानां जवात् ॥ गांभीर्यात्किल सिंधुरेव हयसद्दांति प्रदस्तत्किल ॥ चक्रेसर्वविशेषणा दिविलसद्वर्णैर्युतं नामते श्रीराणामणि राजसिंह नृपते विभ्यत्सुमेधाधरः ॥ ४० ॥ राष्ट्रप्रदो जलधिजाप्रदउत्तमेभ्यो भाव्यष्टसिंह तुलनो हरिसेवनोयत् ॥ आख्याविशेषणगवादिमवर्णयुक्ता चक्रेविधि स्तदुचितं

तवराणवीर ॥ ४१ ॥ श्रीराणोदयसिंह सूनु रभवत् श्रीमत्प्रतापः सुत स्तस्य श्रीअमरेश्वरोस्य तनयः श्रीकर्णसिंहोस्यवा ॥ पुत्रोराणजगत्पतिश्च तनयोस्माद्राजसिंहोस्यवा पुत्रश्रीजयसिंह एष कृतवान् वीरः शिलालेखितं ॥ ४२ ॥ पूर्णेसप्तदशेशते तपसिवा सत्पूर्णिमाख्ये दिने द्वात्रिंशन्मितवत्सरे नरपतेः श्रीराजसिंहप्रभोः ॥ काव्यं राजसमुद्रमिष्ट जलधेः सृष्टप्रतिष्ठाविधे स्तोत्रार्क्त रणछोडभट्टरचितं राजप्रशस्त्याह्वयं ॥ ४३ ॥ आसीद्भास्कर तस्तुमाधववुधोऽस्माद्रामचंद्रस्ततः सत्सर्वेश्वरकः कठोडिकुलजो लक्ष्म्यादिनाथस्सुतः ॥ तैलंगोस्यतुरामचंद्रइतिवा कृष्णोस्यवा माधवः पूत्रोभून्मधुसूदनस्त्रयइमे ब्रह्मेशविष्णूपमाः ॥ ४४ ॥ यस्यासीन्मधुसूदन स्तुजनको वेणीच गोस्वामिजा भून्माता रणछोड एषकृतवान् राजप्रशस्त्याह्वयं ॥ काव्यं राण गुणौघ वर्णनमयं वीरांक युक्तं महत् सर्गो भूदधुनैक विंशति शुभाभिख्योर्थ वर्गोत्तमः ॥ इति एकविंशतितमः सर्गः ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ शते सप्त दशे तीते पंचत्रिंशन्मितेऽब्दके ॥ शुक्लैकादशिकायांतु चैत्रे प्रस्थान मातनोत् ॥ १ ॥ श्रीराजसिंहस्या ज्ञातो जयसिंहाभिधोबली ॥ महाराज कुमारोयं अजमेरौ समागतः ॥ २ ॥ औरंगजेबं म्लेच्छेशं द्रष्टुं दिल्लीपतिं ययौ ॥ पश्चाद्राज कुमारोयं ययौसेना समावृतः ॥ ३ ॥ दिल्लीतः क्रोश युग्मस्थे अर्वाकिं शिबि रोत्तमे ॥ दिल्लीश्वरं ददर्शायं सोस्यादर मथा करोत् ॥ ४ ॥ मुक्तामाला उरोभूषा अस्मै हेमांबराण्य दात् ॥ महागजेंद्र भूषार्क्तं तादृक् तुंगतुरंगमान् ॥ ५ ॥ झालाख्य चंद्रसेनाय पुरोहित वरायच ॥ गरीबदाससन्नाम्ने हैमवासां सिवा हयान् ॥ ६ ॥ महद्भ्यष्ठक्कुरेभ्योदादन्येभ्योपि यथोचितं ॥ ततोयं जयसिंहा ख्यो गण युक्तेश्वरांशिवं ॥ ७ ॥ दृष्ट्वा गंगा तटे स्नात्वा महा रूप्य तुलां व्यधात् ॥ करिणींच हयं दत्वा यातो वृंदावनं प्रति ॥ ८ ॥ मथुरांच ततोदृष्ट्वा ज्येष्ठेराण पुरंदरं ॥ ददर्श दर्शनीयोयं राणेंद्रो मोद मादधे ॥ ९ ॥ शते सप्त दशे तीते वर्षे षट्त्रिंश दाह्वये ॥ पौषस्य कृष्णैकादश्यां मेवाडे दिल्लिकापतिः ॥ १० ॥ आया तस्तस्य पुत्रस्य आदौ अकबरा भिधः ॥ तथा तह वरः खानः प्राप्तः सेना समा वृतः ॥ ११ ॥ सुंदरे राजनगरे राज मंदिर मंडवः ॥ तल्लो कैः कल्पिता तत्र शक्तः शक्ता वतो त्तमः ॥ १२ ॥ पुत्रः सबलसिंहस्य पूरावत वरस्यसः ॥ भ्रातरं मुह्कमसिंहस्य घोरं रणमिहा करोत् ॥ १३ ॥ वीरश्चोंडावतः कोपि तथा विंशति सद्भटाः ॥ कृत्वा युद्धं दिवं याता भित्वा भास्वत्सुमंडलं ॥ १४ ॥ विधेः कलेर्बला दाज्ञां ददौ राणा पुरंदरः ॥

दहवारे महाघट्टे दन्यघट्टाच वाहुजाः ॥ १५ ॥ आयांतु कृतसंकल्पा अपि योद्धुंमदुक्तितः ॥ नालिकोलकसंस्तोमाः सौरसंघामहोन्नताः ॥ १६ ॥ राणोक्तितस्तथाजातं ततो दिल्लीश आगतः ॥ दहवारी महाघट्टे कृत्वातद्वार पातनं ॥ १७ ॥ एकविंशति तिथ्यंतं स्थितोत्र निशिचैकदा ॥ दिव्योदयपुरं प्राप्तो गुप्त एषास्त्युपश्रुतिः ॥ १८ ॥ तदा अकबरः प्राप्तो महोदयपुरेततः ॥ तथा तहवरः खान स्तत्कृत्यंतद्भटैः कृतं ॥ १९ ॥ एकलिंगं द्रष्टुमगाद्दैवादकबरस्ततः ॥ अंबेरी चीरवाघट्टौ दृष्ट्वा शिबिरमागतः ॥ २० ॥ झाला प्रतापः कर्कट पुर वासी गजद्वयं ॥ दिल्लीश सैन्यादानीय राणेंद्रायन्यवेदयत् ॥ २१ ॥ भदेसर स्थावल्लाख्या हयौघान्हस्तिनांगजौ ॥ न्यवेदय न्नृपेंद्रवृंदे नैनवारास्थित प्रभोः ॥ २२ ॥ पंचाशत्क सहस्राणि नृणानष्टानि तद्विधेः ॥ दिल्लीश्वरस्ततः प्राप्त श्चित्रकूटेन्यथा पृथां ॥ २३ ॥ ज्ञापयित्वा अकबर स्थितस्तत्र समागतः ॥ तथा हसनअलीखां छप्यन्नादत्र नागतः ॥ २४ ॥ नाहींप्रतितदायातो राणेंद्रो रोष पोषितः ॥ कोटडी ग्रामतः शीघ्रं ततः सेनासमाहृतः ॥ २५ ॥ संप्रेषितो भीमसिंहः कुमारो राण भूभुजा ॥ ईडरध्वंस मतनोत्सैदहसाततोगतः ॥ २६ ॥ वडनगरं लूटित मथचत्वारिंशत्सहस्र मिताः ॥ राजतमुद्राजग्रहे दंडविधौ भीमसिंह इह ॥ २७ ॥ अहमदनगरे लक्षद्वयं प्रमित रूप्यमुद्राणां ॥ वस्तूनांलुंटनमिह कारितवान् भीमसिंहोबली ॥ २८ ॥ एकामहा मसीदिर्विखंडिता लघुमसीदिसुत्रिंशत् ॥ देवालयपातनरुषः प्रकाशिता भीमसिंह वीरेण ॥ २९ ॥ राणा महीमहेंद्रस्य आज्ञयांविज्ञ उत्सुकः ॥ महाराजकुमार श्री जयसिंहो (– –) नाम ॥ ३० ॥ झालाख्यचंद्रसेनेन चोहानेनचमूभृता ॥ तथा सबलसिंहेन रावेण रणसूरिणा ॥ ३१ ॥ केसरीसिंहनाम्नातद्भ्रात्रारावेण शोभितः ॥ राठोड गोपीनाथेन अरिसिंहस्य सूनुना ॥ ३२ ॥ भगवंतादिसिंहेन धन्यराजन्य राजिभिः ॥ सहितः स्वाहितजयं जयंकर्तुंसमीहिते ॥ ३३ ॥ त्रयोदशसहस्राणि अश्ववार वरावलेः ॥ सद्विंशतिसहस्राणि पदातीनां महात्मनां ॥ ३४ ॥ संगेगृहीत्वाप्रययौ चित्रकूटतटिंप्रति ॥ ततस्तेठक्कुरारात्रौ संगरं चक्रुसन्नदाः ॥ ३५ ॥ सहस्रसंख्या न्दिल्लीश लोकान् जघ्नुर्गजत्रयं ॥ येनागंतास्तां स्तुरगा न्निःसृतस्तदकव्वरः ॥ ३६ ॥ पंचाशत्तुरगान्वीरा गृहीत्वा तान्न्यवेदयन् ॥ कुमार जयसिंहाय जयसिंहोंमुदं दधे ॥ ३७ ॥ जयसिंहः कुमारोथ श्री राणेंद्रस्य दर्शनं ॥ कृतवान्कृतकृत्यावा महाराणकृतौ कृतिः ॥ ३८ ॥ शक्तावतस्यशक्तस्य केसरीसिंह वर्म्मणः ॥ गंग कूंवर इत्येप कुमार पदवींदधत् ॥ ३९ ॥

अष्टादश द्विपान्मत्ता न्हयौघानुष्ट्रसंचयान् ॥ दिल्लीश सैन्या दानीय राणेंद्राग्रे न्यवेदयत् ॥ ४० ॥ राणेंद्रेण कुमारोथ भीमसिंहो बलान्वितः ॥ प्रेपितोऽकवरास्येन तथा तहवरेणच ॥ ४१ ॥ खानेन संगरंचक्रे शक्र-रक्षो रणोपमं ॥ उल्लंध्य देवसूरींता महानालिं नलोपमः ॥ ४२ ॥ घानो-रानगरे चक्रे नियुद्धंयोधविक्रमः ॥ वीकासोलंकि वीरोथ युद्धरक्षां रणांव्यधात् ॥ ४३ ॥ राणेंद्रेण कुमारोथ गजसिंहो बलान्वितः ॥ प्रस्थापितो बभंजायं तद्वेगमपुरंमहत् ॥ ४४ ॥ राष्ट्र त्रयं रूप्यमुद्रा लक्षत्रय मथापिवा ॥ दत्वैव मिलनंकार्यं मयाराणेन निश्चितं ॥ ४५ ॥ औरंगजेबो दिल्लीश उक्तवा-न्सतदुत्तरं ॥ विधेः कलेर्वलाज्जातं यत्तदत्र वदाम्यहं ॥ ४६ ॥ श्री राणो दयसिंह सूनुरभवत् श्रीमत्प्रतापः सुत स्तस्यश्री अमरेश्वरो स्यतनयः श्री कर्णसिंहोस्यवा ॥ पुत्रोराण जगत्पतिश्च तनयो स्माद्राजसिंहोस्यवा पुत्रः श्री जयसिंह एपकृतवा न्वीरः शिलालेखितं ॥ ४७ ॥ पूर्णे सप्तदशेशते तपसि-वा सत्पूर्णिमास्येदिने द्वात्रिंशन्मित वत्सरे नरपतेः श्रीराजसिंह प्रभोः ॥ काव्यं राजसमुद्र मिष्ट जलधेः सृष्टप्रतिष्ठाविधेः स्तोत्रात्कं रणछोड भट्टरचितं राज प्रशस्त्याह्वयं ॥ ४८ ॥ युग्मं ॥ आसीद्भास्कर तस्तुमाधवबुधोऽस्मा द्रामचंद्रस्ततः सत्सर्वेश्वरकः कठोडिकुलजो लक्ष्म्यादिनाथस्ततः ॥ तैलंगो-स्यतु रामचंद्र इतिवा कृष्णोस्य वा माधवः पुत्रो भून्मधुसूदनस्त्रयइमे ब्रह्मेशविश्नू पमाः ॥ ४९ ॥ यस्यासीन्मधुसूदन स्तुजनको वेणीच गोस्वामिजाऽभून्माता रणछोड एपकृतवा न्राजप्रशस्त्याह्वयं ॥ काव्यं राणगुणौघ वर्णनमयं वीरांक युक्तंमह द्वाविंशोभवदत्र सर्ग उदितो वागर्थ सर्गः स्फुटः ॥ ५० ॥ इति श्री राजप्रशस्ति श्रीराजसर्ग द्विविंशतिः सर्गः ॥ २२ ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ शतेसप्तदशेतीते सप्तत्रिंशन्मितेब्दके ॥ कार्त्तिके शुक्लदशमी दिने राणापुरंदरः ॥ १ ॥ नानाविधानि दानानि द्रव्यंदत्वा त्वनंतकं ॥ द्विजादि-भ्योहरिंध्यात्वा जपमालांकरे दधत् ॥ २ ॥ हृदिसंस्थाप्यचजपन् शमनाम स्वनामच ॥ सयशः स्थापयन्लोके भूलोकंत्यक्तवान्नृपः ॥ ३ ॥ ददानोमहादान वृंदंद्विजेभ्य स्तथागाः सवत्साः सुवर्णादिपूर्णाः ॥ तदुत्थंफलंशंवलंसंदधानो नृपो दुर्गमस्वर्गमार्गायथातः ॥ ४ ॥ महादान सन्मंडपस्तंभसंघाः कृतादारुणाते भवन्स्वर्णरूपाः ॥ तदायोगनिः श्रेणिकाश्रेणिकाभिः क्षितिस्पर्शहीनं विमानंसमानं ॥ ५ ॥ महेंद्रेणसंप्रेपितंमेदिनींद्रः समारुह्यादिव्यैर्गणैः संवृतश्च ॥ सनाकं सुखंप्रापधर्मेणसाकं महाराजसिंहो नरेंद्रेषुसिंहः ॥ ६ ॥ महेंद्रेणसंमानितस्तेन

दिव्यासने स्थापितो मानितस्तोषितंयत् ॥ महादानमाला तडागप्रतिष्ठा करोविल्लु नामग्रही धर्मपूर्णः ॥ ७ ॥ ततः स्वीयवैकुंठ लोकेत्वकुंठ प्रभावो हरिः प्रेषयित्वा विमानं ॥ मुदा कार्य संस्थापयामासयुक्तं स्वपूर्वोद्भवैः संयुतं राजसिंहं ॥ ८ ॥ ततः कडैजे नगरे शिबिरंव्यतनोद्दली ॥ जयसिंहो जयमयः सत्पंचदशवासरान् ॥ ९ ॥ उल्लंघ्यकृतवान्वीरो राणसिंहासनस्थितः॥ ररक्षरणदक्षोयं क्षोणीमक्षौहिणीपतिः ॥ १० ॥ शतेसप्तदशेपूर्णे सप्तत्रिंशन्मिते ब्दके ॥ मार्गशीर्षेशौर्यमार्ग प्रकाशीमार्गणार्थदः ॥ ११ ॥ वसत्कडंजेनगरे जयसिंहो महामनाः ॥ श्रुत्वातहवरंखानं देवसूरी विलंघ्यच ॥ १२ ॥ आयांतं घट्ट मर्यादा लोपिनं कोपपूरितः ॥ स्वभ्रातरं भीमसिंहं भीमंवा प्रेषयत्सतु ॥ १३ ॥ वीका सोलंकिनं दृष्ट्वा तंसमाश्वास्यतत्परां ॥ महाभीमो भीमसिंहो वीकासोलंकि नांबरः ॥ १४ ॥ जघ्नतुर्म्लेच्छसत्यानि रुद्धस्तहवरो भवत् ॥ दिनाष्टकांत मुक्तोप्य राहु मुक्तेंदु विच्छविः॥ घानोरा पार्श्व आयातो जयसिंहो दलेलखां ॥ छपन्नदेशशैलेष्वा यातोह्यागवृतोस्यतु ॥ १६ ॥ मार्गो दत्तो राणलोकै र्गोगूंदा घट्ट आगतः ॥ रुद्धाघट्टा स्ततोराणा लोकैर्लोकेषु विश्रुतैः ॥ १७ ॥ रत्नसी रावतेनापि स्थितं घट्टे शिलोत्कटे ॥ दलेलखां न शक्तोभूत्तदागंतु कथंचन ॥ १८ ॥ अथश्री जयसिंहेन झालाख्यो वरसाभिधः ॥ प्रेषितो मिलनं कर्तुं तेनोक्तं मार्गगामिना ॥ १९ ॥ दलेलखांनं प्रत्येवं भवान्दिल्लीश मानितः ॥ सहस्राण्यश्ववाराणां संगेयच्च दशात्रते ॥ २० ॥ राणेंद्रस्यैक राजन्यो घट्टं रुद्ध्वास्थितो भवान् ॥ निःसरत्वे वनिश्चित्तो राणेंद्रस्य तवस्फुटं ॥ २१ ॥ स्नेहस्तदत्र पर्यंत मायातस्त्व मतःपरं ॥ नवाबे नोच्यतेचत्तं घाटा न्निः सारयाम्यहं ॥ २२ ॥ उच्यते चेत्स्थापयामि नवाबेन तदेरितं ॥ पश्चात्सैन्यं ममायाति मास्तुतेनापि वारणं ॥ २३ ॥ घट्टत्रयस्य मार्गस्य दृष्ट्यर्थं प्रेषिताभटाः ॥ तैः सनवाबेनतू – – कंदष्टाघट्टास्त्रयो दृढं ॥ २४ ॥ ततोननिः सतस्तत्र नवाबस्तदनं तरं ॥ सहस्र रूप्यमुद्रास्तु दत्वैकस्मै द्विजातये ॥ २५ ॥ अग्रेसकृत्यचतं नवाबो रणकेसरी ॥ निःसृतो न्येनमार्गेण रात्रौ तत्रापि सैन्यवान् ॥ २६ ॥ रत्नसी रावतोरत्नं योधाना मार्गतोजवात् ॥ रणंचक्रेनिःसरणं नवाबः कष्टतोव्यधात् ॥ २७ ॥ इत्थं दलेलखानस्तु निःसृतो घट्टतश्छलात् ॥ दिल्लीशांतिक मायातः पृष्टोदिल्लीश्वरेणसः ॥ २८ ॥ त्वंनिःसृत्यकिमायातो सणाकस्यानुयोगतः ॥ दलेलखांतदोवाच रानंलब्धंमयाप्रभो ॥ २९ ॥ राणेंद्रो ममपश्चात्तु हंतुंमां समुपागतः ॥ योधामे मारितास्तेन नानाहंतेन निसृतः ॥ अन्नाभावा न्नित्यमेव लोकानांतु चतुः शतं ॥ मृताहं तान्निःसृतस्त

श्रुत्वादिल्लीश आकुलः ॥ ३० ॥ अथाकबर आयातो मिलनंकर्त्तु मुद्यतः ॥ राणा श्री कर्णसिंहस्य द्वितीयस्तनयोबली ॥ ३१ ॥ गरीबदासस्तत्पुत्रः श्यामसिंह इहागतः ॥ कृतामिलन वार्त्तातं परावृत्यगतौदृढां ॥ ३२ ॥ ततो ऽदलेलखानस्तु मिलने दार्ढ्यमातनोत् ॥ तथा हसन अलीखां मिलनस्य विधिं व्यधात् ॥ ३३ ॥ जयसिंहोथ मिलनं कर्त्तुमुद्योग मातनोत् ॥ श्री मद्राजससुद्रस्य अग्रभागेस्थितस्ततः ॥ ३४ ॥ सहस्राण्यश्व वाराणां सप्तसंसप्तकलिषां ॥ मध्येस्थितः सप्त सप्ति समतेजाः समावभौ ॥ ३५ ॥ जयसिंहः स्थितः सप्तनाम सप्तिसमेहये ॥ तत्प्रेक्ष-कजनैःप्रोक्तं अश्ववारमयं जगत् ॥ ३६ ॥ पदातीनामयुतकं संगेस्थापितवान्प्रभुः ॥ तदापत्तिमयं प्रोक्तं जगद्दष्टाजनैर्ध्रुवं ॥ ३७ ॥ महाशौर्यो महाधैर्यो जयसिंह स्ततोवली ॥ झालेंद्रं चंद्रसेनाख्यं चोहानं स्थापयन्पुरः ॥ ३८ ॥ रावं सबलसिंहाख्यं परमार शिरोमणिं ॥ वैरीसालं महारावं राठोरान्वीर ठक्कुरान् ॥ ३९ ॥ चौंडावता न्रणेचंडान् शक्तान् शक्तावतांस्तथा ॥ राणावतान् रणजेयान् राजन्याजन्य दुर्जयान् ॥ ४० ॥ सचातिखर्व राढ्यान्स संगे संस्थाप्य सत्सवः ॥ राणेंद्रो रण दुर्धर्पो मिलनार्थं मुदाऽचलत् ॥ ४१ ॥ रक्तध्वजैः शोभमाना भांतिनाना पदातयः ॥ सपल्वलद्रुमा गोत्रा एकत्र स्थापिताः किमु ॥ ४२ ॥ वैरिग्राह गणैर्मही धरकुलैः सद्रत्न वृंदैरहो राजच्चक्र चयैश्च वाडव शिखि स्फुर्ज त्प्रतापै र्वृतः ॥ उद्यन्नोगिवरै र्महोर्मिनिवहै र्मर्यादया पूर्वया गांभीर्येण युतो विराजति जयीराणाऽर्णवः किंपरः ॥ ४३ ॥ औरंगजेब वीरस्य दिल्लीशस्य सुतस्यसः ॥ जगत्राण सुरत्राण आजमस्य प्रतापिनः ॥ ४४ ॥ आज्ञयाति-ज्ञता सिंधु गांभीर्य गुणसागरः ॥ दलेलखां महावीरो हसन्ना जदपूरितः ॥ ४५ ॥ तथाहसन अलीखां अन्येपि म्लेच्छ भूभुजे ॥ राठोडो रामसिंहाख्यो रतलाम पुर स्थितः ॥ ४६ ॥ हाडा किशोर सिंहाख्यो गौड़ भूपा स्तथा पुरे ॥ हिंदू म्लेच्छ महावीरा आयाताः संमुखं सुखात् ॥ ४७ ॥ दिल्लीपतीयैः स्वीयैश्च देश पालैः समावृतः ॥ जयसिंहो विभाजाव दिव्यालै र्मघवा वृतः ॥ ४८ ॥ ततः श्री जयसिंहाख्यः पूर्वोक्तै ष्ठकुरैर्वृतः ॥ गरीबदास नाम्नास्वपुरोहित वरेणवा ॥ भीपू प्रधान वैश्येन युक्ते सुयोनिते जसाः ॥ महा भाग्यो महा शौर्यो महोत्साहो महामनाः ॥ ४९ ॥ हिंदू म्लेच्छ महा वीर देशनाथ विशोभिनः ॥ वमाख्य सुरत्राण सणे दर्शन मातनोत् ॥ ५० ॥ आज माख्य भुस्त्राणो राणेंद्रस्या दरं भृशं ॥ अकरो द्विनयो पेतः सुस्नेह मनु दर्शयन् ॥ ५१ ॥ एकादश गजानश्वां श्च-लारिंशन्मितान् शुभान् ॥ आजमाख्याय रानेंद्रो प्रेषयामास दर्पवान् ॥ ५२ ॥

आजमाख्यः सुरत्राण एकमदल द्विप ॥ अष्टाविंशति संख्याश्वान् सहेम वसन त्रयी ॥ ५३ ॥ पंचाश त्प्रमिता भूषा समूहं रान भूभुजे ॥ ददौ महानं हेम मय मिलनं त्वनयोरभूत् ॥ ५४ ॥ दलेलखां तदोवाच सुलतान शृणु प्रभो ॥ अयं-वीर श्चंद्रसेनो राना झाला शिरोमणिः ॥ राव : सवलसिंहोयं रत्नसी नाम रावतः ॥ चोंडावता रणे चंडा : शक्ता : शक्तावता स्तथा ॥ ५५ ॥ परमाराश्च राठोडा स्तथा राणावतोत्तमाः ॥ रणेसिंहा : पर्वतेषु मार्ग मद दुरुत्तमाः ॥ ५६ ॥ युयुधुर्नमहायोधा ज्ञातव्यंविज्ञतांवुधे ॥ दिल्लीशेन परारानोक्त्या रक्षितुं ध्रुवं ॥ आजमाप्युक्त वानेवं सत्यमेव नसंशयः ॥ संतुष्टो जयसिंहाय ददावाज्ञां कृतादरः ॥ ५७ ॥ जयसिंहोमहाभाग्यो वीरः शिविरमागतः ॥ अस्यासींद्भाग्यतः शीघ्रं मिलनंतुजितावदत् ॥ ५८ ॥ पूर्णः सर्गः ॥ इति त्रयोविंशति नाम सर्गः ॥ २३ ॥

श्रीगणेशायनमः ॥ प्रेम्णाअमरसिंहाख्य पौत्रयुक्तस्यधर्मणः ॥ राणेन्द्र राजसिंहस्य राजराजस्यसंपदा ॥ १ ॥ हेम्नोदशसहस्रौघ तोलकैः पूर्णतोभृतः ॥ शुद्धात्मनेवसृष्टाया स्तुलायाअतुलाजुषः ॥ २ ॥ महासेतौहस्तिनीसत् स्कंधेवंधुर सुंदरं ॥ तोरणंभातिगौरोच्चा धोरणंतुलयाध्रुवं ॥ ३ ॥ महोज्वलतयाकिंवा ऐरावतकुलस्थितिः ॥ हस्तिन्येषामुर्द्धनिधत्ते चित्ररूप्योच्चभूषणं ॥ ४ ॥ दत्तां कुशद्वयंप्येषा अचलैवाभवत्ततः ॥ दर्शितंतून्नतीकृत्य हस्तिपेनांकुशद्वयं ॥ ५ ॥ महातोरणमेतत्तु गौरकीर्त्योन्नतीकृतं ॥ प्रांजलिसांजलियुगं भुजयोर्भातिभूपतेः ॥ ६ ॥ द्वितीयंतोरणंतत्र पार्श्वेस्तिलघुसुन्दरं ॥ तथाअमरसिंहाख्य पुत्रस्यातिविचित्र कृत् ॥ ७ ॥ राणेन्द्रराजसिंहस्य पट्टराज्ञ्यातिविज्ञया ॥ श्रीराणाजयसिंहस्य मात्रामित्रप्रतापया ॥ ८ ॥ सदाकुंवरिनाम्न्याया तुलारूप्यमयीकृता ॥ आस्ते तत्तोरणंचित्रं हस्तिन्यांहस्तयुग्मवत् ॥ ९ ॥ आस्तेगरीबदासस्य पुरोहित शिरोमणेः ॥ कृतायाः स्वर्णपूर्णाया स्तुलायास्तोरणंमहत् ॥ १० ॥ गरीबदासस्य पुरोहितस्य ज्येष्ठः कुमारो रणछोडरायः ॥ आस्तेकृतायाः किलतेनरूप्यः भ्राजत्तुलायाः शुभतोरणंसत् ॥ ११ ॥ श्रीराणोदयसिंहसूनुरभवत् श्रीमत्प्रतापः सुत स्तस्य श्री अमरेश्वरोस्य तनयः श्री कर्णसिंहोस्यवा ॥ पुत्रो राणजगत्प-तिश्चतनयो स्माद्राजसिंहो स्यवा पुत्रः श्री जयसिंहएष कृतवान्वीरः शिला ऽ लेखितं ॥ १२ ॥ पूर्णे सप्तदशे शते तपसिवा सत्पूर्णिमाख्ये दिने द्वात्रिंशन्मित वत्सरे नरपतेः श्री राजसिंहप्रभोः ॥ काव्यंराजसमुद्र मिष्टजलधेः सृष्टप्र-तिष्ठाविधेः स्तोत्राढ्यं रणछोड भट्टरचितं राजप्रशस्त्याह्वयं ॥ १३ ॥ युग्मं ॥

आसीद्भास्कर तस्तु माधवबुधो ऽस्माद्रामचंद्रस्ततः सत्सर्वेश्वरकः कठोडि कुलजो लक्ष्म्यादिनाथस्सुतः॥ तैलंगोस्यतु रामचंद्र इतिवा कृष्णोस्यवा माधवः पुत्रोभून्मधुसूदन स्त्रयइमे ब्रह्मेश विष्णूपमाः॥ १४॥ यस्यासीन् मधुसूदनस्तु जनको वेणीच गोस्वामिजाऽभून्माता रणछोड एपकृतवान् राजप्रशस्त्या ह्वयं॥ काव्यं राण गुणौघ वर्णनमयं (– – – – –) चतुर्विंशत्यास्य इहा भवद्भवमुदे सर्गोर्थे सर्गोन्नतः॥ १५॥ राजप्रशस्ति ग्रंथोयं प्रसिद्धः स्याज्जगत्यलं॥ लक्ष्मीनाथादि वालानां पाठार्थं जायतां ध्रुवं॥ १६॥ नारायणादि पुण्यात्म राणेंद्रान्वय वर्णनं॥ कर्णस्थितं स्या (–) णांत्रं पुत्रपौत्र सुखप्रदं॥ १७॥ रामादि राजस्तुति युक्काव्यं रामायणोपमं॥ श्रुत्वा धनं धनेशः स्यात्काव्ये काव्यो गरुर्गिरं॥ १८॥ नानाराजेतिहासाक्तं ग्रंथः स्याद्भारतोपमं॥ भारत्यां भारती तुल्यः पठन् भारत खंडके॥ १९॥ ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चस्वी बाहुजो बाहुवीर्यवान्॥ वैश्योलभेद्धनं श्रुत्वा शूद्रो भद्रं तथाखिलं॥ २०॥ संस्तभ्य चित्तमन्येभ्य पठन्सभ्यत माप्नुयात्॥ इभ्यताभुवने मर्त्यैनालभ्यं तस्य किंचन॥ २१॥ विप्रोग्नि होत्रग्रामेभ्यः क्षत्रियो ऽखिलभूमिपः॥ वैश्योधनीस्यात्कायस्थः श्रियासुस्थो भवेद्ध्रुवं॥ २२॥ राजाश्रुत्वा चक्रवर्ती शौर्य गांभीर्य धैर्यवान्॥ देशस्वास्थ्यं लभेद्वैरि विजयं कुरुते सदा॥ २३॥ पठन्स्फुरद्भागवते नवमस्कंध सत्कथा॥ आकंठं सुखभुग्भूत्वा वैकुंठं प्राप्नुयादिदं॥ २४॥ दयालसाह कृतवान् खेराबादस्य मारणं॥ तत्केतु दुंदुभिग्राहं वनहेडास्य लुंटनं॥ २५॥ धारापुरा मारणंच मसीदितति पातनं॥ ध्वस्तं चक्रे अहमद नगरं लुंटनं कृतं॥ २६॥ महामसीदि पतनं कृतवान् समरे कृती॥ इत्युक्तः प्रभुवीराणां पराक्रम विनिर्णयः॥ २७॥ जगदीशमिश्रतनयो माथुरहीरामणि महामिश्रः॥ राजसमुद्र जलाशय सूत्रनिवेशे परिक्रमणे॥ २८॥ द्वादशशतमण मितिकं धान्यमहीध्रमहासेतौ॥ द्वादशशतमणमितिकं धान्याद्रिकांकरोलीस्थे॥ २९॥ सेतौस – – प्यतथासार्ध सहस्राछ रूप्यमुद्राणां॥ कृत्वा ढव्वूकगणं सरूप्यमुद्रादिकं तदार्थिभ्यः॥ ३०॥ षड्दिनपर्यंतमयं – – तदाराजसिंह देवेन॥ उक्तं जनसमदमिश्रो ऽस्मन्निकटतः पुरः कुरुते॥ ३१॥ इत्युत्साहेनतदा भक्त्या मिश्रः पुरः स्थितो नृपतेः॥ धान्यादि धनंसार्थि व्रजायदत्वा प्रियोनृपस्यासीत्॥ ३२॥ श्रीराणोदयसिंहसूनुरभवत् श्रीमत्प्रतापः सुतस्तस्य श्री अमरेश्वरोस्य तनयः श्रीकर्णसिंहोस्यवा॥ पुत्रोराणजगत्पतिश्च तनयो स्माद्राजसिंहोस्यवा पुत्रः श्रीजयसिंह एपकृतवान्वीरःशिलाऽऽलेखितं॥ ३३॥ पूर्णेसप्तदशेशते तपसिवा सत्पूर्णिमास्येदिने द्वात्रिंशन्मितवत्सरे नरपतेः श्री राजसिंह प्रभोः॥ काव्यं राजसमुद्र मिष्टजलधेसृष्टप्रतिष्ठाविधेः स्तोत्राक्तं रणछोडभट्टरचितं राजप्रशस्त्याह्वयं॥ ३४॥ युग्मं॥

आसीद्भास्कर तस्तुमाधवबुधोः ऽस्माद्रामचंद्रस्ततः सत्सर्वेश्वरकः कठोड़िकुलजो लक्ष्म्यादिनाथस्सुतः ॥ तैलंगोस्यतुरामचंद्र इतिवा कृष्णोस्यवा माधवः पुत्रोभून्मधुसूदन स्त्रयइमे ब्रह्मेशविष्णूपमाः ॥ ३५ ॥ यस्यासीन्मधुसूदनस्तु जनको वेणीच गोस्वामिजा ऽभून्माता रणछोड़एष कृतवान् राजप्रशस्त्याह्वयं ॥ काव्यं राणगुणौघ वर्णनमयं (- - - - -) चतुर्विंशत्याख्य इहा भवद्भवमुदे सर्गोर्थ सर्गोन्नतः ॥ ३६ ॥ दुहा ॥ राणा कोइ रजपूत जेवडता जायो नहर ॥ समुद्रफेरणसूत राणातुहीज राजसी ॥ १ ॥ ऐजो ओरंगकाह मेंगलमुगल मारिजे ॥ राणो राषेराह रजवट भरीया राजसी ॥ २ ॥ संवत् १७१८ माहा वदि ७ नीमषोदवारो मुहुर्त हुओ जद अतरा ठाकुर मिल कांमकरावे राणावत माहसिंघजी रामासिंघजी, राणावत भाउसिंहजी चूंडावत दलपतजी, मोहणसिंघजी, रावत लुणकरणजी, चूंडावत केशरीसिंघजी, चूंडावत मोकमसिंहजी, मांजावत नरसिंघदासजी, मांजावत गरीबदासजी, राठोड़सिंघजी, राठोड़ रामचंदजी, राठोड़ हेमजी, राठोड़ मोकमसिंघजी, वितगरा साह रामचंद चेचांणी, साह कलु पंचोली राम जगमालोत, साह मुकुंददास पंचोली, हरराम सिघवी, लषुपंचोली, वाघो गजधर, सुकुंद गजधर, किल्याण सुत जगनाथ उरजण सुतलालो लषो जसो हरजी जगनाथ सुत मेघो मनो ॥ संवत् १७३२ प्रतिष्ठा हुई शुभं भवतु ॥ श्रीरस्तु ॥

शेषसंग्रह नम्बर ५.

उदयपुर - अंबामाताकी चरणचौकी की प्रशस्ति.

संवत् १७२१ वरषे जेठ शुदि १० रवौ वरखसंन्यास्यापन्न विरषसितातः बिरे श्रीराणा राजसिंहजी राज वृतमान नगररौवे परमधंध्ये धरती सुरतमी अंबाजीरि सुतार सुरजानहरट ८८८१ करा धरती ताँबापत्र दियो सुतार मपवजी धरतपबडा सुरजपथमान श्रीसेवगनाम रावतखाटनाम श्रीमाताजी सेवतरुमापत् सुभकारजसीधइ संतारस्तान हैं धरती दिद्धि तरत घर नोरा दिया घरहर चालवधरो वोटाहै तांबापत्र दिधो नदेजनीरो माहे गधेगाल छे

शेपसंग्रह नम्बर ६.

वड़ीके तालावकी प्रशस्ति.

सिद्धश्रीएकलिंगजी प्रसादात् महाराजाधिराज महाराणाजी श्री राजसिंहजी विजयराज्ये तलाव जानसागररो काम करायो कुँवरजी श्री जेसिंहजी भीमसिंहजी कुँवर पदभुक्तव्यं गजधर सूत्रधार किशना सुत जसा संवत् १७२१ मार्गशीर वदी १० गुरे नीमरो मुहूर्त हुवो सं० १७२५ वर्षे काम पूरोहुवो प्रशस्ति प्रतिष्ठितं शुभंभवतु वैशाख शुद ३ गुरे.

श्रीगणेशायनमः ॥ कलयतुकमलायाः कामदः कर्मरूप स्तुहिनकिरणबिंब द्योतितानंदवक्रः ॥ विकचकमलचक्षुः क्षीरधौवद्धनिद्र स्सजलजलदनित्यं भावनी यस्सभव्यं ॥ १ ॥ गुणगणगुरुगीत्या गंगयागीतगात्रः कनककदनकांत्या कांतयाकांतकायः ॥ धुतघनधृतिधाम धैर्यधारीधरण्यां भवतुभविकभूमिर्भूतये भूतभर्त्ता ॥ २ ॥ वंदेलंबोदरंवंद्यं जगदंबोदरोद्भवं ॥ बिंबोदरद्युतिर्देहे विबोदर मिवद्विपं ॥ ३ ॥ तैलंगज्ञातितिलकं कठौडीकुलमंडनं ॥ श्रीमंतंमिसरंकृष्ण भट्टं वंदेप्रतिक्षणं ॥ ४ ॥ महाराजाधिराजश्री राजसिंहनिदेशतः ॥ लक्ष्मीनाथकविः कुर्वे जनासागरवर्णनं ॥ ५ ॥ अस्तिसर्वत्रविख्यातो रामवंशः सुपुण्यवान् ॥ यस्यसाम्यंनयातीह वंशः कोपिमहीतले ॥ ६ ॥ तत्रान्ववायेशिवदत्तराज्यो बापाभिधानोजनिमेदपाटे ॥ संग्रामभूमौपटुसिंहरावं लातीत्यतोरावलइत्यभाणि ॥ ७ ॥ राहप्पराणाजनितस्यवंशे राणेतिशब्दंप्रथयन्प्रथिव्यां ॥ रणोहिधातुः खलुशब्दवाची तंकारयत्येपरिपूर्न्दुतार्तान् ॥ ८ ॥ तस्मान्नरपतिराणा दिनकर राणावभूवाथ ॥ अजनिजसकर्णराणा तस्मादभूच्च नागपालाख्यः ॥ ९ ॥ श्री पूर्णपालनामा पृथ्वीमल्लस्ततोजातः ॥ अथभुवनसिंहउदित स्तत्पुत्रोभीमसिंहो भूत् ॥ १० ॥ अजनिजयसिंहराणा तस्माज्जज्ञेचलखमसीराणा ॥ अरसीततो हमीरस्ततोप्यभूत्क्षेत्रसिंहोस्मात् ॥ ११ ॥ तस्माल्लाखाभिख्यो राणाश्रीमोकल स्तस्मात् ॥ श्रीकुंभकर्णउदभूद्राणा श्री रायमल्लोस्मात् ॥ १२ ॥ संग्रामसिंह राणाभूपालमणिस्ततोजातः ॥ श्रीराणोदयसिंहः प्रतापसिंहस्ततोजातः ॥ १३ ॥ अमरसमोमरसिंह स्ततोनृपः कर्णसिंहोभूत् गुणगणनिधि स्ततोभूद्राणा श्रीमज्ज- गत्सिंहः ॥ १४ ॥ जगत्सिंहमहीभर्त्ता कल्पवृक्षः कथंसमः ॥ चिंतनावधि दः सोयं चिंतितादधिकप्रदः ॥ १५ ॥ भास्वान्श्रीमज्जगत्सिंह स्तुलामारुह्य यद्दयधात् ॥ स्वातिवृष्टिंततोमुक्ता नस्याजन्मोत्सवः कथं ॥ १६ ॥ तस्यधर्मा- त्मजस्साक्षा द्विष्णुरूपस्यचाभवत् ॥ राज्ञीसमगुणाचारा जनादेवीतिनामतः ॥

१७ ॥ पुत्रीराठौडनाथस्य राजसिंहमहीभृतः ॥ मेडताधिपतेर्नित्यं विष्णुपूजा रतस्यच ॥ १८ ॥ शंभोर्गौरीहरेः श्रीः कलशभवमुने राजपुत्रीगुणाढ्या लोपा मुद्रायथास्ते नृपमनुजननी स्याच्चसंज्ञोष्णरश्मेः ॥ रामस्यासीद्यथावै जनक नृपसुता साशचींद्रस्य पत्नी तद्वद्रेजे विराजद्गुण कलित जगत्सिंहपत्नी जनादे ॥ १९ ॥ दात्री दानव्रजस्या प्रियरिपु निधने पार्वती वोग्रभावा दीनेनित्यं दयालुर्नृपमुकटजगत्सिंह राणा प्रियासीत् ॥ कर्मेती नामधेया जनक गृह वरे साप्रसूतेस्म पुत्रं राणा श्री राजसिंहं गुणगणनिलयं चारिसिंहंद्वितीयं ॥ २० ॥ राणा श्रीराजसिंहे कलयति मुकुटे राजलक्ष्माणि चाथो मातासेयं जनादे लभत वहुसुखान्युत्सवंतं विलोक्य ॥ तस्याभव्याथ धीमान् प्रियवचन निधी राजसिंहो नृपेंद्रो नाम्नामातु स्तडागं सदुदयपुरतः पश्चिमस्यां व्यधात्तं ॥ २१ ॥ वडी ग्रामस्य निकटे तत्कासारस्य राजतः॥ जनासागर इत्येवं प्रसिद्धि स्समजायत ॥ २२ ॥ किंदुग्धं दधिवाघृतं मधुसुरा चेदिक्षुवार्द्धे रस स्साम्यंनो लभतो जलस्य लसतः श्रीमज्जनासागरे ॥ क्षारोमत्सर भावतो ज्वलितहृत्तद्वाडवो दुःखभाग्लंकां प्राप्य विमुक्त लोकवसती रत्नाकरो प्यंवुधिः ॥ २३ ॥ पांडव लोचनमुनिभूपरिमित (१७२५) वर्षे तपो मासे ॥ शुक्लदशम्यां जननी वहुपुण्य प्रातयेनूनं ॥ २४ ॥ मही महेन्द्रः किल राजसिंह श्चकार पद्माकरवासवस्य ॥ उत्सर्गमुत्साह विलासि चित्त स्सद्वित्तविस्तार विराजमानं ॥ २५ ॥ युग्मं ॥ उत्सर्गे पूर्णतांयाते तस्मिन्सेतौ सुखस्थितः ॥ सुश्राव श्री राजसिंहो द्विजराजो दिताशिपः ॥ २६ ॥ वीराधीशोधिनीरात्सि तितमरुचिमान् वीरगीरार्त्तवंधुः क्षीराब्धिस्यानहीरा धिकवि-मलयशः पुंजधीराब्जनेत्रः ॥ साराक्तस्स्वीयदारा लयहृदयलसत् कौस्तुभारा धितांघ्रि स्ताराधीशास्यहारा धिकलसिततनुः पातुनारायणोवः ॥ २७ ॥ भक्तप्रत्यक्षलक्ष्मी मृदुलजनुलता संगमान्मोदमानः कामंमाद्यन्मिलिंदी भवद-खिलजग द्वंद्यमानांघ्रिपद्मः ॥ भक्तंयद्भुक्तशेषं सपदिसुखमया भुंजमानावभूवु र्दद्यात्सद्यो ऽनवद्यं फलमिहसुजगन्नाथदेवः प्रसादात् ॥ २९ ॥ भक्तानंदातिसक्ता खिलकलितनति स्साधुवक्त्राहितस्या लक्तादिप्राज्यरक्ता नलवहुललस न्मंत्रशक्ता-तितेजाः॥ कामाश्यामाभिरामा लिकरुचिरविधुः कांतिधामाननेंदु र्वामारिव्रातहामा रुचिरपशुपतिः पुण्यनामावताद्वः ॥ ३० ॥ दक्षाधीशस्सुवक्षा विमलसुरधुनी जीवनक्षालितांगो यक्षाधीशातिपक्षा चलपतितनुजा नेत्रलक्षार्कतेजाः ॥ साक्षाद्या यत्सुहाक्षामरिपुवरगणो मल्लिकाक्षारकामो लाक्षावल्लोहिताक्षा दितिजकृतनतिः पातुदाक्षायणीशः ॥ ३१ ॥ सार्वादिक्शूलधारी मृत्युंजयइति जगद्गीतः ॥ श्रीविश्वेश्वरदेव श्चित्रचरित्रं करोतुशिवः ॥ ३२ ॥ श्रीवैद्यनाथइतियः प्रथितः

पृथिव्यां संताप संतति हृति व्यसनेविदग्धः ॥ सोयंपुरत्रयविनाश विकाशबुद्धि र्निश्शंकमं कुरुयता दिहशंकरश्शं ॥ ३३ ॥ योगीन्द्रध्यान रूपो धरणिधर सुता स्वांतधैर्या पकर्षी कंजाक्षो जन्हुपुत्री जलजनित जटा द्वैतकांति प्रतानः ॥ नंदीयत्पादपंकेरुहयुगल रज स्थापनापूत पृष्ठो वीराविर्भूतकंपं कलयतु कुशलं वीरभद्रे श्वरोवः ॥ ३४ ॥ मंगलकदंबकंवः करोतु शंभोर्जटा जूटः ॥ कुरुते सुरस्त्रवंती यत्रेंदुगलत्सुधा भ्रांतिः ॥ ३५ ॥ क्षीरांभोधि प्रसुप्त द्विजपति विलसत् केतनांगाव्ज राजन् माल्ये — — भ्रमंतोमधुरमधु करीवृंदशोभां वहंतः ॥ चित्रंभक्तयुल्लसन्तो नरहृदयसरः कंजपुंजायमाना रक्षातुक्षीण दुःखाः क्षपितारिपुचल ल्लक्षलक्ष्मी कटाक्षाः ॥ ३६ ॥ घनसारगौर घनसारभवस्त्रो बहुभूषण प्रभुमदारुण नेत्रः ॥ वनमालि मित्र मतिचित्र चरित्रो मुशला युध — — — — — स्सशांतिः ॥ नवनीपककाम संगकामा नवनीशाच्युत देहि कामधामा ॥ ३८ ॥ ब्रह्मरुद्रलसदिंदु चंद्रकस्सांद्र देवनिवहोस्ति यद्यपि ॥ अस्तुनंदनिलयां गणेलस द्वस्तुनः किमपिधाम तन्मुदे ॥ ३९ ॥ उत्सर्गे पूर्णतांयाते तस्मिन् सेतौ सुखस्थितः ॥ सुश्राव श्रीराजसिंह इतिविप्रोदिताशिषः ॥ ४० ॥ येन सर्वे कृताभूमौ जना पूर्ण मनोरथाः ॥ श्रीराजसिंह भूमींद्र श्चिरंजीवतु भूतले ॥ ४१ ॥ इतिश्री मन्महाराजाधिराज महाराणा श्रीराजसिंह निदेशा त्तैलंग तिलक कठोडी ग्रामाधिप श्रीमन् कृष्णभट्ट तनयाभ्यां श्रीलक्ष्मीनाथ भट्ट भास्कर भट्टाभ्यां विरचिता श्रीमज्जनासागर प्रशस्तिः संपूर्णतां प्राप संवत् १७३४ वैशाख कृष्ण १३ लिखित मिदं कठोडी श्रीमत्कृष्णभट्टात्मज भास्करभट्टेन लिखितं सूत्रधार सगराम सुत नाथू ज्ञाति भगोरा ॥ एक षष्टि सहस्राग्र लक्ष युग्मं सुपुण्यदं ॥ कार्येस्मिन् रूप्यमुद्राणां लग्नं भद्र पदंसदा २६१००० दोयलाख इगसठ हजार रूपिया तलावरी प्रतिष्ठा हुई जदी रूपारी तुला कीधी गामगलूंड चित्तौड तिरा गाम देवपुर थामलातीरा प्रोहित श्री गरीबदासजीहे आघाट करे मया किधो तलावरी पालरो पांवलेने खाडाखोद्या सीसोफेरेने नीम सोंधेन गज १५ आसार कीधा कमठाणारा गजधर सुतार सगराम सुत नाथू तेन कोठारी १७३५ वर्षे.

शेषसंग्रह नम्बर ७.

देबारीके दरवाजेकी उत्तरीय शाखकी प्रशस्ति.

महाराजाधिराज महाराणाजी श्रीराजसिंहजी आदेशात सावण सुद ५ सोमे संवत् १७२१ विषे पोलरा कमाड़ चढाव्या लिखतु जोसी गोरखदास साह पंचोली नाथू पंचोली.

शेषसंग्रह नम्बर ८ - ९.

देबारीके भीतर त्रमुखी बावड़ीकी प्रशस्ति.

॥ श्रीगणेशायनमः ॥ तुहिन किरण हीरक्षीर कर्पूरगौरं वपुरपजलदाभं कालिका पांगवल्ल्याः प्रति कृति घटना SSISSISS कलयतु कुशलंवो राजसिंह क्षितींद्र ॥ १ ॥ चतुर्मित पुमर्थ सद्दि तरणाय सद्भ्य: सदा चतुर्भुजधर श्चतुर्युग विराजि राज द्यशाः ॥ चतुर्भुज हरिः शिवं दिशतु राजसिंहप्रभो श्चतुः श्रुति समीरितं निज चतुर्भुजा भिर्भृतं ॥ २ ॥ श्री रामरसदे सृष्ट वापी वर्णन सुंदरी ॥ कुर्वे प्रशस्तिः शस्ता श्री राजसिंह नृपाज्ञया ॥ ३ ॥ आदौ वाप्पो रावलोभू द्वैरिस्ताडन तापदः ॥ तद्वंशे राहपः पूर्वं राणा नाम धरो भवत् ॥ ४ ॥ ततस्तु हरसू राणा नरूराणा ततो भवत् ॥ जसकर्ण स्ततो राणा नागपाल स्ततो नृपः ॥ ५ ॥ भूणपाल स्ततः पीथा ततो भुवनसिंहकः ॥ ततस्तु भीमसिंहो भूज्जयसिंह स्ततो भवत् ॥ ६ ॥ लक्ष्मीसिंह स्ततो राणा अरिसिंह स्ततो भवत् ॥ ततो हमीर राणेंद्रो खेता राणा स्ततो भवत् ॥ ७ ॥ ततोलाखा भिधोराणा ततो मोकल नामकः ॥ ततः श्री कुंभकर्णो भूद्रायमल्लस्ततो भवत् ॥ ८ ॥ ततः सांगा भिधोराणा रत्नसिंह स्ततो भवत् ॥ तद्भ्राता विक्रमादित्यो विक्रमादित्य विक्रमः ॥ ९ ॥ तद्भ्रातोदयसिंहेंद्रो राज्योदयमयः सदा ॥ ततः प्रतापसिंहोभू त्प्रतापपरिपूरितः ॥ १० ॥ श्री मानमरसिंहोभू त्ततो ऽमरवरप्रभः ॥ ततः श्री कर्णसिंहेंद्रः कर्ण राजपराक्रमः ॥ ११ ॥ ततः श्री मज्जगत्सिंहो जगत्पालनतत्परः ॥ प्रत्यक्ष राजततुलां कुर्वत्सर्वप्रदोभवत् ॥ १२ ॥ कृतवान्मोहनंलोके श्रीमन्मोहनमंदिरं ॥ मरुप्रथमजगृहे तथाश्रीमेरुमंदिरं ॥ १३ ॥ ॐकारेश्वरमीशानं समीक्ष्याऽमर कंटके ॥ सुवर्णस्यतुलांकृत्वा वर्षन्स्वर्णैरराजसः ॥ १४ ॥ श्वेताश्वदानंव्यतनो द्धैमंकल्पतरुंददौ ॥ सुवर्णपृथिवींदत्वा सौवर्णान्सप्तसागरान् ॥ १५ ॥ विश्वचक्रं सुवर्णस्य दत्वासुंदरमंदिरे ॥ श्री जगन्नाथरायंश्री युक्तंसंस्थापयन्बभौ ॥ १६ ॥ दानीरायंशिवंशक्तिं गणेशंभास्करंतथा ॥ प्रतिष्ठाप्यतदेवाऽदा द्वोसहस्त्रंविधानतः ॥ १७ ॥ हैमीकल्पलतावापी हिरण्याश्वंददौतथा ॥ पंचग्रामान्जगत्सिंहो रत्न धेनुंचदत्तवान् ॥ १८ ॥ ततः श्री राजसिंहेंद्रो राज्यसिंहासनेस्थितः ॥ आखंड लोपमः श्रीमान् जयतिक्षितिमंडले ॥ १९ ॥ श्री सर्वर्तुविलासाख्यं स्वारामंकृतवां स्तथा ॥ दहबारीमहाघट्टे द्वारंकाष्टकपाटयुक् ॥ २० ॥ स्वसुर्विवाहसमये - एकप्रतिकन्यका ॥ ददौमहाक्षात्रियेभ्यो गजवाहांबराणिच ॥ २१ ॥ दाराशिको षसहित सतादुल्लहखानत ॥ राठोडकच्छवाहेश युक्तः शाहिजहांभिधं ॥ २२ ॥

दिल्लीश्वरंसमायांतं श्रुत्वेवाभिमुखोभवत् ॥ निःसार्यशौर्यसंपन्नो राजसिंहोविराजते ॥ २३ ॥ दग्धंमालपुराभिख्यं नगरंव्यतनोदिह ॥ दिनानांनवकंस्थित्वा लुंटनं समकारयत् ॥ २४ ॥ रूपसिंहोमंडलाद्य गढस्थोम्लेच्छपाज्ञया ॥ यस्यराघव दासस्य वंश्यस्याग्रेपलायितः ॥ २५ ॥ सोयंतद्रूपसिंहस्य दिल्लीशार्थेसुरक्षितां ॥ पुत्रींपाणिग्रहाणोत्सव सौभाग्यांकृतवान्प्रभुः ॥ २६ ॥ जशवंतसिंहरावलमिह डुंगरपुरगतंनिजं कृतवान् ॥ दंडंचचासवालास्थिते रुपारिकुशलसिंहस्य ॥ २७ ॥ देवलियापतिमनिशं कृतवान्निस्तेजसंहरीसिंहं ॥ मीनाक्षयीकृत्य मेवलदेशंगृहीत वान्नृपतिः ॥ २८ ॥ पुत्र्याविवाहसमये नवतिलक्षाधिकांसुकन्यां ॥ सुक्षत्रेभ्यो दत्त्वागजवाजि सुवस्त्रभोजनानिददौ ॥ २९ ॥ जननींरूप्यतुलायां स्थितांविधायविष्णु लोकगते ॥ तस्यानाम्नारचितो महानजनासागरोनरेंद्रेण ॥ ३० ॥ तस्योत्सर्गेराज्ञा रूप्यतुलाकल्पितार्पितौग्रामौ ॥ गुणहंडदेवपुराख्यौ पुरोहितश्रीगरीबदासाय ॥ ३१ ॥ ब्रह्मांडमहादानं श्वेताश्वाख्यनृपोकरोद्दानं ॥ रूप्यतुलायांस्थित्वा गजंददौ वाहिरण्यकामदुघां ॥ ३२ ॥ ददौमहाभूतघटं हिरण्याश्वरथंनृपः ॥ हेमहस्ति रथंदिव्यं पंचलांगलकंतथा ॥ ३३ ॥ भावलीग्रामसहितं हैमींकल्पलतांददौ ॥ स्वर्णपृथ्वींनृपोविश्वचक्रं रूप्यतुलादिकृत् ॥ ३४ ॥ नाम्नाराजसमुद्रं जलाशयं सुप्रतिष्ठितंकृतवान् ॥ सौवर्णसप्तसागरदानं हैमींतुलांमहीपालः ॥ ३५ ॥ सत्पौ त्रमगरसिंहंहेमतुलास्थंविधायतत्रददौ ॥ एकादशसुग्रामान् पुरोहितोयद्गरीबदासाय ॥ ३६ ॥ श्रीराजमंदिरवरं शालायकल्पराजनगरंच ॥ कृत्वादेशपतिभ्यो गजाश्व वस्त्राणि दत्तवान्भूपः ॥ ३७ ॥ भूकल्पवृक्षोराणेंद्रः कल्पपादपनामकं ॥ महा दानंप्रकल्प्याय माकल्पंकीर्त्तिमादधे ॥ ३८ ॥ राधाकृष्णचरित्रस्य राजसिंहमही पतेः ॥ श्रीरामरसदेनाम्नी राज्ञीजगतिराजते ॥ ३९ ॥ श्रीपुष्करेतदजमेरि महाप्रदेशे शार्दूलवीरइतिकल्पतभूमिभोगः ॥ राठोडराजमदखंडनएवजातो दाना द्यनेकसुकृतीपरमारवंश्यः ॥ ४० ॥ तस्यात्मजोजगतिरायसलः प्रसिद्धो जात प्रतापतपनद्युति तापितारिः ॥ शौर्याभिमानमयएवमुदारदानं दानंददत्ससततं कनकप्रधानं ॥ ४१ ॥ जातस्तदीयतनुजस्तुजुभ्कारसिंहः सत्सिंहसंघजयकारि सरीरसाक्षात् ॥ खड्गप्रहाररणखंडितवैरिवारो क्ष्मासिंहरत्नगुणभारसमोत्युदारः ॥ ४२ ॥ तनयाथतस्यविनयान्विता भवत्सनयासमापिरमयातथोमया ॥ सदया ऽभयादिधनदा थयाधिकाऽभिरामरामरसदे शुभाभिधा ॥ ४३ ॥ सोलंकिनोदिव्य सुजानकुंवरिनाम्न्याः सुपुत्रीच विचित्रसद्गुणा ॥ स्वजन्मनाया चितमातृतात वंश द्वयासत्कविसृष्टशंसना ॥ ४४ ॥ रानामंडनराजसिंहसुखदा भूयोमहादानकृद्रत्नां

तंकृतियुक्समस्तगुणभृ देवप्रबोधोद्भवा ॥ स्यादेशेतिविषेशणादिद्विजव द्वर्णैर्युतं नामते सत्तेनेविधिरत्ररामरसदे नाम्नीतिराज्ञीमणे ॥ ४५ ॥ सेयंश्रीराजसिंहस्य राज्ञीसौभाग्यसुंदरी ॥ श्रीरामरसदेनाम्नी जयतिक्षितिमंडले ॥ ४६ ॥ वैदर्भी नल भूभुजो दशरथस्यासीत्सुमित्रा विधो रोहिणीवसु दाक्षिणा किल यथा पत्नी दिलीपस्यसा ॥ देवक्या नक दुंदुभेरपिहरेः श्रीसत्यभामा तथा नाम्नेयं रमणीति रामरसदे श्रीराजसिंह प्रभोः ॥ ४७ ॥ पातिव्रत्य पवित्र पुण्य सरणि श्चिंतामणि र्विद्वतां चित्तस्थापित कंठ कौस्तुभमणि श्रीशागुणीनां पतिः ॥ बुद्धिस्तोम जरर्णि शिरोमणि रियं स्त्रीणां गणे सुन्दरं श्रीचूडामणि रेव रामरसदे राजा चिरं जीवतु ॥ ४८ ॥ दहबारी महाघट्टे शाला श्लष्टे विशंकटे ॥ जया वहा जयानाम्नी वापी पाप प्रणाशिनी ॥ ४९ ॥ विदधे राजसिंहस्य प्राणाधिक महाप्रिया ॥ अभिराम गुणै र्युक्ता श्रीरामरसदेवधूः ॥ ५० ॥ शतेसप्तदशे पूर्णे १७३२ वर्षे द्वात्रिंशदा ह्वये ॥ माघे धवल पक्षेच द्वितीयायां वृहस्पतौ ॥ ५१ ॥ श्रीमान् गरीबदासाख्य पुरोहित शिरोमणिः ॥ प्रतिष्ठित प्रतिष्ठायां वाप्या रचित वान् विधिः ॥ ५२ ॥ श्रीराजसिंह देवेन साधिता हितकारिणी ॥ वापि प्रतिष्ठा विदधे श्रीरामरसदे वधूः ॥ ५३ ॥ अत्र दानं कृतवती बहुगोदान पंचकं ॥ हलद्वय मितां भूमिं हरिराम त्रिपाठिने ॥ ५४ ॥ व्यासाय जयदेवाय क्ष्मामेक हलसंमितां ॥ कन्हाख्य ब्राह्मणा यापि तथैव हलसंमितां ॥ ५५ ॥ भानाभट्टाय वसुधा तथैव हलसंमिता ॥ कृष्णाख्यं ब्राह्मणा यापि क्ष्मामेक हल संमितां ॥ ५६ ॥ हल षट्कमितां भूमिमेवं राज्ञी मुदाददौ ॥ निष्क्रयं गोशतस्यापि रूप्यमुद्रा शतद्वयं ॥ ५७ ॥ राना श्रीराजसिंहस्य श्रीरामरसदे वधूः ॥ महोत्साहं कृतवती वापि उत्सर्ग उत्सवे ॥ ५८ ॥ वर्षे पुष्कर वेद शैलधरणी संख्येसमे माधवे पक्षे शुक्ल तमे तथा बुधमहा वारे द्वितीया दिने ॥ श्री बप्पा रणछोड सत्कविवरः संसृष्टवान्स्वो — — — ॥ ५९ ॥ सहस्त्रै रूप्यमुद्राणां चतुर्विंशति संमितः ॥ एकाग्र्यैः पूर्णतां प्राप्तं वापीकार्य महाद्भुतं ॥ ६० ॥ श्री इतिश्री महाराजाधिराज महाराणाजी श्रीराजसिंहजी महीपति पत्नी श्रीरामरसदे विरचितं वापीप्रशस्ति भट्ट रणछोड़ कृता संपूर्ण लाल चेचाणी वापी महे चहुवाण धाभाई शतीदाशस्य वधु चंद्रकुंवर तत्पुत्र रामचंद वीर साह लाला पोरवाड़ गजधर नाथू गोड भूधररो नाथू सुगरारो

शेषसंग्रह नम्बर १०.

श्रीगणेशायनमः जलधरसमकांतिः कांतकंदर्पमूर्तिः कलिजनितमलौघ ध्वंस-कोभक्तिभाजां ॥ निजकरधृतचक्र क्रंदितारातिवृन्दः जनकजनिपतिर्यः पातुरामे श्वरोवः॥ १ ॥ भास्वद्वंशावतंसा जयंतिबाणौघ सादितारिकुलाः॥ दिल्लीशमानहनने प्रतापपटवोगिरीशलब्धवराः॥ २ ॥ उदयादुदयनरेशात्प्रतापभूपो धराजानिः॥ श्री मोकलेशसमना मकवरभूपे करोद्वेपम् ॥ ३ ॥ तस्मात् प्रताप भूपा द्बभूव वसुधा पतिर्वीरः ॥ अमरसमोऽमरसिंहः प्रतापवित्रस्तशत्रुकुलः ॥ ४ ॥ भूमीश्वराणांनिवहान्विजिला बालोपिवातप्रसमप्रतापः ॥ दलामहींविप्रजनेपुभूयः स्वर्गंययौदैवरिपून्निहन्तुम् ॥ ५ ॥ तस्मादभूद् भोजसमान दानी श्रीकर्णसिंहो धरणीसनेजः॥ भीमादिभिःक्षत्रिभि रुग्रधन्वा दिल्लीश्वरं यः समरेजुहाव ॥ ६ ॥ तस्य श्री कर्णसिंहस्य बभूवतनयोनृपः॥ श्रीजगत्सिंह राणेति विदितो धरणीतले ॥ ७ ॥ अभिनवहम्मीरेण स्वबलवित्रासविद्रुतारिकुलेन ॥ स्मरसुंदरेणजगति धुरंधरेणेहपालिताधरिणी ॥ ८ ॥ कर्णसमान चरित्रेकर्णतनूजे ह्रुतंप्रथितं ॥ यशसा धरणीतल मिदमर्जुन रूपत्व माकलितं ॥ ९ ॥ लक्षं हयान् सप्तशतं गजानां ग्रामान् शतंपोडश दानयुक्तम् ॥ योदत्तवानर्थि जनाय भूपतिः कस्तं नृपं स्तोतु मिहप्रसन्येत ॥ १० ॥ यूपंनिखाय प्रासादं यज्ञैरिष्ट्वासदक्षिणैः ॥ मांधातृ दर्शने वर्पतस्वर्णकोटिं धराधरः ॥ ११ ॥ यश्शाहजादान्नगराणि जित्वाकौमारके मोदयतिस्मतातं ॥ श्रीराजसिंहा द्वरं सलेभे ऽरसीकुमारं वसुधा-हिमांशुः॥ १२ ॥ वदंतुविदुपोभीम मरिसीभूपजन्मिनं ॥ द्विषोद्भूयतवैजज्ञे कर्णसूनु सुखावहं ॥ १३ ॥ सराजसिंहस्य सदानुयायी वाल्येपि बालेंदुसमः कलाभृत् ॥ हयान् हिरण्यं धरिणीं द्विजेभ्यो वर्पन्भुवां भोजसमो बभूव ॥१४॥ अयंजीव हरोरीणा - - - मपिकामदः॥ भूतेपु तोपदोनित्यं भूतेश तनुजोनृपः ॥ १५ ॥ अरिसिंहस्य जननी जवादि तनया शुभा ॥ रामीजी वसुता माता भगवद्भक्ति तत्परा ॥ १६ ॥ तया स्वकुल माणिक्य भूपया राधितो हरिः॥ तेनै वनोदिता स्वप्ने प्रासाद मकरोदसौ ॥ १७ ॥ यद्वेदशास्त्रसर्वस्वं

रूपं वैकुंठ वासिनः ॥ रामेश्वरस्य तद्रूपं बभूव निजमंदिरे ॥ १८ ॥ यावद्धरा द्वीपवती भानुर्भाति प्रतापवान् ॥ तावद्वसतु गोविंदः प्रासादे शुभशंसिनि ॥ १९ ॥ काशीं गत्वा तुसारामी गोविंदः प्रीतये ददौ ॥ वसुधां हरिनाथाय सेवांयः कुरुते प्रभोः ॥ २० ॥ हयशत चंद्रमितेब्दे तपसिच मासे तथासिते पक्षे ॥ रविमित दिवसे सगुरौ संपूर्णो देवालयासीत् ॥ २१ ॥ वसुंधराधीश निदेशनाद्यो रामेश्वरस्यो दयराजधान्यां ॥ बाजूतनूजः किलजोधनामा प्रासाद मभ्रं लिहमाततान ॥ २२ ॥ अरसीभूप निदेशा दुदयपुरे लेखिता कविना ॥ मथुरानाथेनेयं प्रशस्ति निर्माणपटु मतिना ॥ २३ ॥ इतिरामेश्वर प्रासाद प्रशस्तिः संवत् १७०० वर्षे माघ शुद्ध १२ गुरौ अरसीजीरी धाय देवरो करायो धरमसिंहजी लिखितं.

छप्पय.

त्रिदिव गौन जगतेश राजहरि राज छत्रधर ।
जाहर शाह जहान क्रमिय अजमेर क्रुद्धकर ॥
लै दल दुल्लहखान धकिय चित्तौर ढहावन ।
चन्द्रभान हित चाह यवन प्रेषित इत आवन ॥
दाराशिकोह प्रेरित सुदल जान रान हितठान जब ।
सुल्तान सिंह जुवराजकों लर पठाय ढिग साह तब ॥ १ ॥
साहजहांके सुतन लरत जब राजसिंह लखि ।
लैभल दल बल लार देश मिस मार साह दखि ॥
रचि सनेह अवरंग काल लखि दहुन जाल कर ।
रूपनगर रट्ठोर स्वसा ताकी महीप बर ॥
अवरंग मान यह कृत असह उपालंभ अति चंड दिय ।
नृप राजसिंह उत्तर निरख कारण चुप अवरंग किय ॥ २ ॥

वग्गड़ देश वखेरजेर समसेर जोरकर ।
देवदुर्ग भय देर देर दल साह सदुत्तर ॥
दृढ़सर राजसमुद्र रान किन्नो निज कारण ।
ताको उच्छव तुमुल हुवो विध विध मनु हारन ॥
अवरंग कोप व्रजतें उठन नाथ उदय गिरि रक्खलिय ।
दिल्लीश रचित जिजिया दुसहमान रानदल मुक्कलिय ॥ ३ ॥
जिजिया दल जशवन्त पुत्त पच्छन प्रति पच्छिय ।
अग्गरूप अवरंग लैन राना धर लच्छिय ॥
कर प्रकोप कूपार निखिल मेवार निमज्जन ।
अखिल छत्रि इसलाम लरे निज निज मत लज्जन ॥
परलोक गमन राजर नृपत कहि सुभाव संतत कथा ।
दिल्लीश घोर आहव दलन ज्वलन फैल फुल्लिय जथा ॥ ४ ॥
कुल रठोर कवंध वंश विकसपुर विक्कह ।
अखिल सार इतिहास जहां जैसो जुर जिक्कह ॥
कृष्णवंश गढ कृष्ण ख्यात जैसी कह दिन्नी ।
रीवां नगर वघेल निखिल तारीख सुलिन्नी ॥
सज्जन नृपाल आशय समुझ सासन फतमल रानतें ।
कविराज दास श्यामल कियो पूरन खंड प्रमानतें ॥ ५ ॥

महाराणा राजसिंह—अव्वल.

आठवां प्रकरण समाप्त.